

DUE DATE SLIP**GOVT COLLEGE LIBRARY**

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER'S No	DUE DATE	SIGNATURE

निर्देशन के मूल तत्त्व

लेखक
डा० (धीमती) इन्दु शर्मा
एव
डा० भरविन्द फाटक



राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर

शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की विश्वविद्यालय प्रथम योजना के अंतर्गत राजस्थान हिन्दी प्रथम अकादमी द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९७३

मूल्य १५००

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

प्रकाशक

राजस्थान हिन्दी प्रथम अकादमी
ए २६/२ विद्यालय मार्ग तिलक नगर
जयपुर-४

मुद्रक

धनश्याम आर्ट प्रिन्टर्स
मनिहारों का रास्ता
जयपुर-३

प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता के बाद उसकी राष्ट्रभाषा को विश्वविद्यालय शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रश्न राष्ट्र ने सम्मुख पा। किन्तु हिन्दी में इस प्रयोजन के लिए अपेक्षित उपयुक्त पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध नहीं होने से यह माध्यम-परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। परिणामतः भारत सरकार ने इस 'यूनता' के निवारण के लिए वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दावली आयोग की स्थापना की थी। इसी योजना के अन्तर्गत पीछे १९१६ में पाँच हिन्दी भाषी प्रदेशों में शब्द अकादमियाँ की स्थापना की गयी।

राजस्थान हिन्दी प्रायः अकादमी हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के उत्कृष्ट शब्द निर्माण में राजस्थान के प्रतिष्ठित विद्वानों तथा अध्यापकों का सहयोग प्राप्त कर रही है और भाषाविकी तथा विज्ञान के प्रायः सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट पाठ्य ग्रन्थों का निर्माण करवा रही है। अकादमी चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त तक तीन सौ से भी अधिक शब्द प्रकाशित कर सकेगी ऐसी हम आशा करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक इसी दम में तैयार करवायी गयी है। हम आशा है कि यह अपने विषय में उत्कृष्ट योगदान करेगी।

चन्दनमल बन्

अध्यक्ष

हमारे विद्यार्थियों को
जोकि इस पुस्तक सृजन
के मूल प्रेरणा-स्रोत
रहे हैं ।

प्राक्कथन

बीसवीं शताब्दी की शक्ति विचारधारा में दो आग्रह स्पष्टरूपेण उभरते हुए दृष्टिगोचर होते हैं—ओर व हैं अन्वेषित तथा वा व्यावहारिक प्रगति प्रस्तावना में अनुप्रयोग तथा सद्धान्तिक चिन्तन का प्रकार्यात्मक काम-योजनात्मक में संपुष्टिकरण। वही प्रकार्यात्मक अनुप्रयोग वा एक प्रतीक-गुण निर्देशन तथा उपबोधन के द्युतन विधान का स्वरूप लेकर शिक्षा के विकासमान उदयन में प्रस्फुटित हुआ। इसके सरस सौन्दर्य-सौरभ में शिक्षाविद्वा वा अध्यापन प्राक्कथित किया तथा उन्होंने इसे अपने कल्प-कानन में सहृदय स्वीकृति भी प्रदान की। किन्तु आवश्यक पापण व अभाव में वसना गवजात कनेपर कुम्हाला सा प्रतीत होता है। वास्तविकता तो यह थी कि उस नवन कुमुद के मूलभूत स्वरूप तथा इसके विशिष्ट भरण पोषण के विषय में इन कार्यकर्ताओं को पचापत अभिज्ञता नहीं थी। भतएव उस पुस्तक व लसना में आवश्यक समझा कि निर्देशन-उपबोधन व वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए भारत में उसके समुचित विकास तथा इसने द्वारा शिक्षा के समुत्थयन व विषय में कुछ प्रकार्यात्मक प्रयास किया जाव। प्रस्तुत पुस्तक जोकि हमारे कई वर्षों के अध्ययन अध्यापन क्षेत्रीय कार्य तथा शोध अनुभव पर आधारित है इसी प्रयास का साकार परिणाम है।

आदिकाल से मानव जीवन के विविध आयामों में अन्दरग रूप में हुन मिल निर्देशन के मूल महत्त्व की उभारते हुए हमने सवप्रथम उसके विकासात्मक स्वरूप का एक समाहारी चित्र प्रस्तुत किया है। तत्परवान विविध वद्यमान विषयों में उमरे मूलाधारों का सतत सम्यक्-स्थापन करके आधुनिक युग के विभिन्न क्षेत्रों में वसकी सहज सवस्थापिना वचाई है। इस सचल सद्धान्तिक पृष्ठभूमि के सद्दम में वास्तविक निर्देशन सचाया के परिणय तथा एक प्रकार्यात्मक निर्देशन-काम्यम के सगठन वा स्परे-शामो को अधिक प्रपणुण बनाने का प्रयत्न किया गया है।

इस समग्र विज्ञ के स्पष्टीकरण के पश्चात् भी निर्देशन के क्षेत्रीय नामिक का कतिपय कार्य जिनासाए हो सकती हैं यथा प्रकृति व अध्ययन हनु किस प्रकार की प्रविधिमा निमित्त की जावें? उनका प्रयोग किस प्रकार किया जाव? व्यक्ति को सर्वांगीण समजव हनु सहायता दन क लिए किस प्रकार की पमावरणीय सूचनाए किन साधनों द्वारा किन्ने स्तरो पर सकलित की जावें? तत्परवान उनका किनि वत प्रसारण किस भांनि किन प्रविधिया द्वारा हो? एस किन्ने ही व्यावहारिक पक्ष ही रावते हैं जोकि कार्यकर्ता के मानस में उदभयन पण करते हैं। अध्यापन व उ में वस प्रकार व प्रश्ना वा समाधान करने का प्रयत्न किया गया है।

किसी भी वनानिक-तकनीक क्षेत्र में उपरोक्त सभी प्रकार की प्रबुद्धताएँ प्राप्त कर लेने पर भी एक मौलिक आवश्यकता जो कि क्षेत्रीय क्रियान्विता को प्रभावित करती है वह है कायकर्त्ताओं के विधिवत प्रशिक्षण तथा उनके अर्पित कार्यों के विषय में स्पष्टता की। अतएव हमने निदेशन के विविध स्तरीय कार्मिकों के वनानिक प्रशिक्षण तथा भारत में निदेशन अभिवरणों के कायकलाओं के सम्बन्ध में भी सूचना तथा सुभाव दिये हैं।

समूचा पुस्तक के प्रचार्यात्मक पट के अनुरूप ही अन्तिम अध्याय में भारतीय उच्चतर महाविद्यालय के लिये एक प्रस्तावित निदेशन-कायक्रम का उच्चनी स्तर के प्रारम्भित किया गया है।

मूलरूप से तो पुस्तक एम ए तथा बी एड की कक्षाओं में निदेशन तथा उपबोधन में विशेषता अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए लिखी गई है। वस्तुतः इस नूतन वनानिक विषय पर हिन्दी में पुस्तक लिखने हेतु उनका सतत आग्रह इस प्रयास का मूलभूत प्रेरक रहा है। किन्तु पुस्तक की अन्तवस्तु का चयन तथा प्रस्तुतिकरण इस ढंग से किया गया है कि निदेशन के विभिन्न प्रशिक्षण-केन्द्रों में अध्ययन अग्रेसर करने वाले प्रशिक्षार्थी पाठ्यवस्तु के रूप में इसका सफल उपयोग कर सकत हैं।

जसाकि हमने बारम्बार बत दिया है पुस्तक का ध्येय केवल सैद्धान्तिक प्रशिक्षण तक ही सीमित न रह कर प्रचार्यात्मक आयोजनकार्यों को प्रेरित करने तक विस्तृत हुआ है। तदनुसार इसके आयोजन-लेखन में इस बात का बराबर ध्यान रखा गया है कि निदेशन के क्षेत्रीय कायकर्त्ताओं की प्रचार्यात्मक राहों को भी यह पुस्तक एक वास्तविक निदेशन-आलोक प्रदान करती रहे। जहाँ एक ओर हमारे निदेशन-भ्यूरोज तथा एम्प्लायमेंट एक्मचेज में कार्य करने वाले कार्मिकों को यह चिन्तन के लिये सामग्री दे सकती है वहाँ हमारी यह भी तीव्र अभिलाषा है कि माध्यमिक शाला से सम्बन्धित शिक्षाविदों को अपनी शालाओं में व्यावहारिक निदेशन-सेवाएँ प्रारम्भ करने हेतु प्रेरणा-प्रवण प्रदान करे। यदि राजस्थान शिक्षा-विभाग इस पुस्तक की सिफारिशों के अनुरूप कतिपय शालाओं में ही एक नूतन निदेशन-काय प्रारम्भ करने की सुविधाएँ प्रदान करे तो हम अपने प्रयास का एक बहुत बड़ी सीमा तक सफल मानेंगे। साथ ही हम वर्तमान क्षेत्रीय कायकर्त्ताओं से हमारे सुझावों के प्रति अनुक्रियाएँ प्राप्त करके भी लाभान्वित हाना चाहेंगे।

पुस्तक-मूजन का मूल ध्येय तो जैसे पहले ही बत चुके हैं हमारे निष्ठावान विद्यार्थियों को ही जाता है। अतः हम सबप्रथम उन्हीं के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहेंगे। साथ ही वास्तविक तथ्य यह भी है कि यदि राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रान्तीय भाषाओं में तकनीकी साहित्य-मूजन का उद्देश्य लेकर हमें यास-प्रेरणा प्रदान न करती तो कदाचित्त यह ग्रन्थ इतना शीघ्र प्रकाशन-

प्रकाश न देख पाता। अतएव उस अवसर पर हम अज्ञान की प्रति अपना अनुभूत आभास व्यक्त करते हैं।

इसमें तबिल भी सन्देह नहीं कि कोई भी मौखिक पुस्तक का सृजन करने में भी कई विद्वानों के निहित तथा व्यक्त विचार लेखक के प्रेरणाधार तथा पुस्तक के पुष्टि पदाय बनते हैं। हममें भी हमारे मौखिक विचारों के विकास में भी कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों के चिन्तन की चेतन अभिव्यक्ति से आत्मसात किया है। पुस्तक का समाप्ति पर हम उन सभी को हृदय से धन्यवाद देना चाहेंगे।

नूतन विचारों को माया के माध्यम से व्यक्त करने पर भी उन्हें अधिक सजीव तथा प्रभावशाली बनाने हेतु कई बार चित्र आरेखों तथा सारणीयों की प्रायश्चकता होती है। हमारे चिन्तन को इस प्रकार का मूल रूप देना श्री कयूम अली बोहरा ने जिस अन्तःपि का परिचय दिया है वह प्रणतनीय है। हम इस काय के लिए उनके कृतज्ञ हैं। मुद्रित होने के पूर्व पाण्डुलिपि का समयानुसार टंकन समाप्त करना भी आजकल के वर्तमान सज्जित काल में एक समस्या है। श्री शंकर शर्मा ने बड़ी ही दक्षतापूर्वक यह काय उस व्यस्त समय में सम्पन्न किया जबकि वे एम. एड. के शोध प्रबंध अथवा श्रीध्यावकाश की काय सगोष्ठियों सम्बन्धी टंकन के भार से दबे हुए थे। हम उन्हें इसके लिए हृदय से धन्यवाद देते हैं।

हमारा अन्तिम तथा सबसे महत्वपूर्ण आभार है अपने कुटुम्ब के सदस्यों की प्रति। पुस्तक के लेखन को समयानुसार सम्पन्न करने हेतु आवश्यक काय रत रहते समय न केवल उन्होंने कई निजी उत्तरदायित्वों में सह्य हाथ बटाया अपितु सतत प्रोत्साहन देकर काय पूरा करने में निरंतर प्रेरणा प्रदान की।

अपने विशेषज्ञ-क्षेत्र में यह मौखिक पुस्तक लिखते समय हमारी एक मूलभूत कामना यही है कि निर्देशन तथा उपबोधन का क्षेत्र अपना सही स्वल्प लेकर भारतीय शिक्षा जगत में विकसित हो।

जम्मपुर

दिनांक ३१ १ १९७३

डॉ. दु. दवे

परिचिन्तक

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
१	त्रिविध प्रवेश	१
	मानव जीवन के विकास क्रम में निर्देशन का वर्तमान रूप (४)	
	मूल सामाजिक प्रौद्योगिक शिक्षा (४) प्रौद्योगिक शिक्षा (५)	
	विषयो का विशिष्टीकरण (६) विशिष्ट निर्देशन की आवश्यकता (७)	
	मानव अध्ययन का क्षेत्र (८) समाहार (९)	
	शिक्षा तथा निर्देशन (१०)	
	परिस्थिति की सजदिलता (१) शिक्षा की वर्तमान विचार-धाराएँ (१) उपसंहारत्मक कथन (१५)	
२	पृष्ठभूमि	१६
	परिवर्तित सप्रत्यय व्यवस्थित (१७)	
	निर्देशन के उदभव तथा विकास का विहंगमालोकन (१७) प्राथमिक बीजांकुर-यावसायिक निर्देशन (१७) साहित्यिक स्फूर्ति (१८) साक्षर-माणा अभिकरण (१८) भारत में व्यवस्थित निर्देशन का प्रारम्भ (१९)	
	यावसायिक उपसर्ग का महत्त्व एवं अभिप्रेत ग्रह (२१) निर्देशन के सप्रत्यय का विकास शैक्षिक निर्देशन (२३) निर्देशन के सप्रत्यय में शक्ति-विस्तार-व्यक्तिगत समाजिक निर्देशन (२७) इस सप्रत्यय विस्तार के अभिप्रेत ग्रह (२८) प्रथम मन्त्रमुह निर्देशन पर मनोविज्ञान का प्रभाव (३) निर्देशन के सप्रत्यय पर तत्कालीन प्रभाव (४)	
	निर्देशन-पदावलिओं का स्पष्टीकरण (३४)	
	माग दर्शन एवं निर्देशन (३५) निर्देशन एवं निर्देशन (३६)	
	निर्देशन परामर्श (३६) निर्देशन एवं 'अनुदेश' (३७) निर्देशन तथा उपबोधन (३८)	
	निर्देशन का वैज्ञानिक स्वरूप (३९)	
	ग्रन्थ का विस्तार (३९) मानव का सन्तुलित विकास (४) सहायता—न कि सलाह (४१) उपसंहारत्मक कथन (४१)	
३	निर्देशन के मूल आधार	४२
	वैज्ञानिक आधार (४२)	

जीवन मूल्य तथा मूल्य की धारणा (४२) स्वयं का दर्शन (४) व्यक्तित्व का आधार (४)

सामाजिक संरचना का आधार (४६)

व्यक्ति समाज का उत्तम इकाई (४६) मानवायु ऊर्जा का संरक्षण (४६) सामाजिक परिवर्तनशीलता (४६) औद्योगिक क्रान्ति (४६) नारियों की परिवर्तित भूमिकाएँ (५) संस्कृति का मूल्य (५१)

शैक्षिक आधार (५४)

ज्ञान का विस्तार तथा विशिष्टीकरण (५४) शिक्षा की उद्देश्य हीनता (५५) मूल्यों का मृज्जन एवं स्पष्टीकरण (५६)

मानवीयमानिक-आधार (५८)

व्यक्ति समन्वयन एवं विकास (५८) स्व वास्तविकरण (६) व्यक्तिगत विमिलनाएँ (६१) व्यक्तित्व की प्रकृति (६) उपसहारात्मक कथन (६५)

४ निर्देशन सेवाओं का परिचय

६७

मूलमूल अभिप्रेक्षण (६८)

वर्तमान विद्यार्थी का व्यक्तिगत अभिप्रेक्षण (६८) विद्यार्थी अभि कार-यंत्र (७४) प्रकार्यात्मक सेवाएँ (७५)

निर्देशन-सेवाएँ-आदर्श स्वरूप (७६)

कनिष्ठ मूलभूत विद्या (७६) अवधान व्याख्या एवं धारणा रूप (७६) एकक सेवा का विद्या धरण (७८) गति का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्याएँ (८) व्यावसायिक अवसर (८१) व्यावसायिक प्रशिक्षण (८१) सामाजिक धार्मिक (८१) उपवाहन सेवा (८४) निर्देशन सेवाओं का अनुवर्तन (१८) प्राप्ति एवं आवश्यक तथ्य (१८) शान्ति-धन (१८) नवृत्त (१८) सहयोग (११) अथर्वव्यवस्था (११) कर्तव्य सेवा यता (११) निर्देशन सेवाओं की भारत में सम्भावनाएँ (१११) उपसहारात्मक कथन (११२)

५ निर्देशन कार्यक्रम का संगठन

११३

संगठन का मूलभूत सिद्धांत (११४) शास्त्रीय कार्यक्रम का अन्त रण भाग (११४) शान्ति की नीति का अनुसूप (११६) आस्था (११६) न्यूनतम धार्मिक व्यवस्था (११७) उद्देश्य (११७) सहयोग की सम्भावना (११८) उपरान्त साधन शोधा का आधार पर (११८) अपनव (११८) उपकरण का दृष्टिकोण स

(११८) तकनीकी दृष्टिकोण (१२) कार्मिका का तत्परता-स्तर
 (१२) मानसिक तत्परता (१२) बौद्धिक तकनीकी तत्परता
 (१२१) उद्देश्य की स्पष्ट व्याख्या (१२१) आदेश व्यावहारिक
 (१२१) अन्तिम तात्कालिक (१२२) स्पष्ट योजना (१२३) कार्मिक
 की भूमिकाएँ एत आसम्बन्ध (१२४) प्रधानाध्यापक (१२५)
 वित्तीय प्रावधान (१२७) कर्तव्य का वितरण (१२७) भौतिक
 कार्य-व्यवस्था (१२८) समय-सारणीय प्रावधान (१२९) निर्देश
 यन समिति का अध्यक्ष (१३) उप-बोधन (१४) छात्रों को
 उपबोधन (१३१) अज्ञात छात्रों को सामान्य समस्याएँ (१३१)
 अज्ञात छात्रों की विशिष्ट समस्याएँ (१३२) अतिरिक्त निर्देश
 सेवा (१३) शिक्षका की सहायता (१३४) व्यक्तिगत विभि-
 न्नाताओं के निदान में (१३४) व्यक्तिगत अनुसूची दत्त-समूह
 (१३५) निर्देशन अभिव्यक्तित्व अध्यापक (१३५) पाठ्य
 सहायता-कार्यक्रम का समूचित व्यवस्था (१३६) पर्यावरणाय
 सूचना प्रसारण (१३६) निर्देशन कार्यक्रम में अभिव्यक्तित्व
 (१६) शाला-समुदाय संयोजक (१३७) शाला शिक्षक (१३८)
 अभिभावक-संलग्नता (१४३) समुदाय (१४५) छात्र (१४६)
 निर्देशन कार्यक्रम आयोजन के विविध साधन (१४६)
 निर्देशन आवश्यकताओं का सर्वेक्षण (१४७) स्थानीय साधनों
 का सर्वेक्षण एवं उपयोग (१४८) तत्कालीनक दल (१४९)
 जीवन-वृत्तीय लक्ष (१५) सामाजिक-विज्ञान के विषय (१५१)
 कार्मिकों के तत्परता-स्तर का निर्माण (१५१) समितियों का
 निर्माण (१५१) उपसहारात्मक कथन (१५२)

६

पक्ति के अध्ययन हेतु प्रयुक्त प्रविधि एवं साधन
 भारत में उपकरण परीक्षण के कुछ उदाहरण (१५४) व्यक्ति
 अध्ययन का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग (१५५) व्यक्ति अध्ययन
 सम्बन्धी कुछ प्रमुख सिद्धांत (१५६) व्यक्तिगत सूचनाओं के स्रोत
 (१५७) व्यक्तिगत सूचनाओं के क्षेत्र (१५७) व्यक्तिगत अध्ययन हेतु
 प्रयुक्त प्रविधि (१५८) बर्तनिक प्रेक्षण के लक्षण (१५८) प्रेक्षण
 का उपयोग (१५९) प्रेक्षण के प्रकार (१६) प्रेक्षण प्रविधि
 का सीमाएँ (१६२) साक्षात्कार (१६२) साक्षात्कार से लाभ
 (१६३) साक्षात्कार की सीमाएँ (१६४) साक्षात्कार के उप-
 योग (१६५) साक्षात्कार के प्रकार (१६६) साक्षात्कार के कुछ
 प्रमुख सिद्धान्त (१६७) समाजमिति (१६९) समाजमितिक
 स्तर का अध्ययन (१६९) लोकप्रिय एकाकी एवं तिरस्कृत सन्तस्य

१५३

(१७) समाज मानस (१७)

व्यक्तिक अध्ययन के साधन (१७१)

मानकीकृत माधन (१७२) निमित्त एवं निष्पादन माधन (१७२)

परीक्षण (१७३) सूचियाँ (१७४) चिह्नावन सूचियाँ (१७४)

व्यक्तिक एवं सामाजिक साधन (१७५) अमानकीकृत अथवा

शिकक निमित्त माधन (१७६) स्वन प्रेरणा (१८) ग्राम

निवरणामक माधन (१८४) व्यक्तिक सूचना सञ्चन हेतु प्रयुक्त

साधना के उपयोग व प्रमुख सिद्धान्त (१८४) मानकीकृत

साधना के उपयोग व सिद्धान्त (१८५) अमानकीकृत सिद्धान्त

व उपयोग के सिद्धान्त (१८७)

भारत में उपलब्ध परीक्षणों के कुछ उदाहरण (१८८)

वृद्धि परीक्षण (१८८) उपसारात्मक कथन (१८९)

७ पर्यावरणीय सूचनाएँ

१६१

पर्यावरणीय सूचनाओं के सञ्चन के सिद्धान्त (१९३)

सूचनाओं का सञ्चन छात्रों की आवश्यकताओं के आधार पर

हो (१९) अद्यतनता (१९३) परिशुद्धता (१९४) यापकता

(१९४) पूर्णता (१९४) सूचनाओं की उपयोगिता (१९४)

पर्यावरणीय सूचनाओं के क्षेत्र (१९४)

शिक्षा सम्बन्धी सूचनाएँ (१९४) विषय के चयन सम्बन्धी सूच

नाएँ (१९६) उच्च शिक्षण सम्बन्धी सुविधाएँ (१९६) यव

माया सम्बन्धी सूचनाएँ (१९६) आर्थिक सहायता सम्बन्धी

सूचनाएँ (१९६) अध्ययन आगतो एवं कुशलताओं सम्बन्धी

सूचनाएँ (१९६)

पर्यावरणीय सूचनाओं के स्रोत (१९६)

शिक्षण संस्थाएँ (१९६) अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण (१९७) राष्ट्रीय

स्तर व अभिकरण (१९७) राज्य स्तरीय अभिकरण (१९८)

शैक्षणिक प्रतिष्ठान एवं व्यावहारिक संस्थाएँ (१९८) स्थानीय

अभिकरण (१९)

पर्यावरणीय सूचनाओं के सञ्चन की विधियाँ (१९९)

व्यावसायिक संवर्धन (१९९) व्यावसायिक संवर्धनों से प्राप्त

न वसुक्त सूचनाएँ (१९९) व्यावसायिक संवर्धनों से छात्रों को

सयुक्त करना (२) व्यावसायिक संवर्धन के सञ्चान से सम्ब

न्धन कृत्रिम सिद्धान्त (२)

पर्यावरणीय सूचनाओं का निरीक्षण एवं संप्रह (२)

सिद्धान्त (२) कार्यात्मक (२) स्थान (२)

पर्यावरणीय सत्तनाओं का संचरण (२२)
 संचरण का सिद्धांत (२३) संचरण विधियां (२३) उपसहा
 रात्मक कथन (२६)

८ निर्देशन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

२११

निर्देशन प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर (२१२)

प्रधानाध्यापकों एवं शाला प्रशासकों के लिए (२१२) सामान्य
 शिक्षकों के लिए (२१२) करियर मास्टर्स के लिए (२१३)
 शिक्षक उपबोधकों के लिए (२१३) शाला उपबोधकों के लिए
 (२१३)

निर्देशन प्रशिक्षण के अभिवरण (२१४)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (२१४) स्टेट
 यूरो आफ गान्डेस (२१४) शिक्षक महाविद्यालय (२१४)

प्रशिक्षण कार्यक्रम (२१४)

प्रधानाध्यापकों एवं प्रशासकों के लिए आसक्तन पाठ्यक्रम
 (२१४) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (२१६) करियर
 मास्टर्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (२१८)

व्यावसायिक क्षम (२२)

शिक्षक उपबोधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (२२) पाठ्यक्रम
 की अंतवस्तु (२२१) शाला उपबोधकों के लिए प्रशिक्षण कार्य
 क्रम (२२३) सद्धान्तिक (२२४) व्यावहारिक (२२५) उप
 सहारात्मक कथन (२२६)

९ भारत में निर्देशन अभिकरण

२२७

अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण (२२७)

राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण (२२८)

केंद्रीय शैक्षिक एवं व्यावसायिक यूरो (२२८) डाइरेक्टरेट
 जर्नल आफ रीसेटलमट एण्ड एम्प्लायमेंट (२२९) अभिकरण
 जिन्हें फिल्म तथा फिल्मस्ट्रिप्स प्राप्त की जा सकती हैं (२३)
 प्रकाशन विभाग (२३१) विभिन्न केंद्रीय मात्रानय (२३१)
 भक्तिव भारतीय शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन सघ (२३१)
 राज्य स्तरीय अभिकरण (२३२)

राज्य शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन यूरो (२३२) राज्य
 मनोविज्ञान यूरो (२३३) शिक्षक महाविद्यालय (२३३) विश्व
 विज्ञानय (२३३) नियोजन कार्यालय (२३३) रजिस्ट्रो प्रसारण
 (२३३)

अन्य अभिचरण (२३४)

उपसहारामक कथन (२ ४)

१ एक भारतीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लिए यूनानम
 आवश्यक निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा २३५

निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने की कुछ पूर्वावश्यकताएँ (२३५)

भारतीय विद्यालयों के लिए आवश्यक निर्देशन सेवाएँ (२३५)

शाला निर्देशन कार्यक्रम के उत्तरदायित्व (२ ६)

निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने की कुछ पूर्वावश्यकताएँ
 (२ ७)

प्रशासकों को निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता का आभास कर
 वाना (२३७) अनुस्थापन कार्यक्रम (२३७) छात्रों की निर्देशन
 आवश्यकताओं का अध्ययन (२३६) उपन्यास साधनों का सर्वेक्षण
 (२३६) निदेशन समिति का निर्माण (२४) निर्देशन कार्य
 कर्ता को निर्देशन कार्य के लिए पर्याप्त समय का प्रावधान (२४१)
 कर्तव्य सहायता का प्रावधान (२४२) निर्देशन कार्यक्रम के
 लिए कुछ न्यूनतम भौतिक सुविधाएँ का प्रावधान (२४२) भारतीय
 विद्यालयों के लिए आवश्यक निर्देशन सेवाएँ (२४३) व्यक्तिगत सूचना
 सेवा का भारतीय परिस्थितियों में विशेष स्वरूप (२४३) पर्याप्त
 सूचना सेवा का भारतीय परिस्थितियों में विशेष स्वरूप
 (२४६) शाला निर्देशन कार्यक्रम के उत्तरदायित्व (२४६) सत्र
 के कार्यक्रम की योजना (२५) निर्देशन उपसमितियों के कार्य
 का समन्वयन (२५) अनुस्थापन कार्य (२५) व्यावसायिक
 वार्ताओं व्यावसायिक सम्मेलन एवं निर्देशन विद्वानों का
 आयोजन (२५१) नए छात्रों का अनुस्थापन (२५१) अध्ययन
 प्रणाली के विषय में माग दर्शन (२५१) विषयों के चयन में
 सहायता (२५१) व्यवसाय के चयन में सहायता (२५२) छात्रों
 को महाविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने में सहायता (२५२)
 औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों महाविद्यालयों आदि से
 भट का आयोजन (२५२) प्रकाशना कार्य (२५२) अभिभावक
 शिक्षक सगमों का संचालन (२५) उपसहारामक कथन
 (२५३)

विषय-प्रवेश

जावन का माण माना नहीं है। सृष्टि की इन ऊँचा नाचा टेढा नया राहा पर सतन सुतरण करेने दान समस्त जावधारिया के निय समुचित माण का न्यत प्राप्त करना कल्पित सत्व स हा एक सत्व प्रकय रण होया। निर्देश का शक्ति गुणाय भी हुना है निगा निखाना। अतएव प्राचिनक युग को एक खोततम विचारधारा तथा नूनतम काय-येव निर्देश को मानव-जावन का एक चिर पुरातन प्रकय कया जाय तो अनुचित नहीं हागा। मानव क आदि-मान स तथा कयाचिन उसस भा पूव जीवविका-भापनी पर स्थित निम्नतर जीवधारिया का जीवनायापन ह्यु की जात बाका वषावरखीय अत क्रियाया म भी वयस्क तथा परिपक्व प्राणिमा द्वारा अपगातर अतिरिक्क जावियों की माण-मान दना सम्पूर्ण जीवन की हा एक स्वाभाविक प्रक्रिया रहा होगी।

उच्चतरा जाति म भा मह सहज जीव-सधमण स्वाभाविक रूप स ही विकसित हुया। शिशु एक बुद्धिनीय प्राणा हान क बारण मह लक्षण बचन समक मौलिक पर्या बरण एक ही सीमित न रहा। या प्राण कान म तो अपनी मौलिक धानुरािक (अनुरक्षण-मय्य-गी) आवश्यकताया की पूर्ति के त्रिए भी अल्पकयम्य मानव का न बवल अपने वयस्का पर कर् माना म निमर रहता पडता है यकिनु आत्मनिभरता की राह पर अग्रतर मान म उनका निर्देशन नी लः पडता है। किन्तु असाकि कह चुका है मानव एक उच्चस्तरीय बुद्धिजानी प्राणी है। अतएव निम्नतर जीवा क सहज हा अपनी मौलिक आवश्यकताया स उद्भूत प्राथमिक प्ररना के अतिरिक्त भी उस कर् प्रकार का मगत्साए व्यचित करता रहती है। उसक विनास त्रम क साय-साय उमकी मौलिक समयाया का स्वहय भी माना अनवगु डित होना जाता है। जीवन क प्राथमिक काल म तो उमकी प्राथमिक निव्याए मया खाना पीना चरना आदि भी अय जीवा क समान किसी वयस्क प्राणी की सहायता स सम्पत् होती है। किन्तु शन शन एक स्वरूप म भा एक विवेकप्ररित अतर दृष्टिगोचर होने लगता है। मय्या की अगुनी घाम कर पनता साखने बाका मानव कुद्ध सभय पश्चान विविध शानों की विभिन्न निशाओं सम्बन्धी जिनासाए प्रकट करन लगता है। अपनी प्राथमिक आवश्यकता पून का नी की ममतामयी श्रो म शमन करेने वाला शिशु अपन विकास क माण पर चरना हए तथा पून तथा एमी कर् अय मौलिक आवश्यकताया की पूर्ति के निये माना प्रकार क प्ररना स जूमता है। ऐसे प्ररना जिनासाया तथा सम्बन्धित

समस्या का अस्तित्व विकसितमान मानव के त्रिणीय जीवन की एक सहज वास्तविकता है।

अपने बहुभाषायी अस्तित्व के नाना पक्षों में तथा अपने बहुमुखी परिवरण के कई क्षेत्रों में कई प्रकार की समस्याएँ उनके सम्मुख आती हैं। अतएव जीवन का प्रथम विस्तार के अनुरूप ही उनके स्वरूप में भी अनन्त विभिन्नता होती है। एक व्यक्ति इसलिये अक्षयित हो सकता है कि उसकी दृष्टि अल्पपक्षीय अल्पपक्षीय उद्देश्यों पर अटकती हुई है किन्तु अज्ञानिन वह अक्षयित भी सम्भ्रान्त हो सकता है कि उसके विचारित तन्त्र तक पहुँचने हेतु एक नैतिक राह तथा वह उनमें से चपन नहीं कर पा रहा है। कोई व्यक्ति अपनी अक्षयिता का आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके पर भी एक अक्षयिता की दुःखदायी भावना से निरन्तर पीड़ित होता रहता है। अपने अक्षयिता कायकलाओं की व्यवधान रहित पूर्ति करत हुए भी उसकी बुद्धि उच्चतर बुद्धियों के स्फुरण हेतु मचलनी-सी रहती है। एक भाग्य मानव अपनी अक्षयिताओं के अनुकूल साधन-सुविधाओं के अभाव के कारण अक्षयित रह सकता है पारस्परिक सम्बन्धों की अनुपस्थिति में व्यवस्थित हो सकता है और कभी-कभी किसी निष्ठापूर्ण मानविक ऋण से भी अक्षयित रह सकता है।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि बुद्धिजीवी मानव के बहुभाषायी जीवन का नाना प्रकार की समस्याएँ विकसित कर सकती हैं।

यहाँ यह ध्यान रहे कि इस प्रकार की समस्याओं का अस्तित्व मानव में दुर्बलता का चिह्नक ही यह आवश्यक नहीं। अतएव कई बार समस्याओं का अक्षयिता ही अक्षयिता की सूचक हो सकता है। किसी कमी की अनुभूति ही व्यक्ति को यह कमी पूर्ण करने की ओर प्रेरित करती है। अतएव मानव जीवन में जिन समस्याओं का हमने उदाहरण दिया है वह उसके जीवन की एक सहज वास्तविकता के रूप में दिया है। यदि यह कमी ही अक्षयिता ही न होना कि बुद्धिजीवी होने का चिह्नक ही वह इस प्रकार की समस्याओं का अनुभव ही कर सकता है। जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा चुके हैं—जीव विकास मापन के उच्चतर बिंदु पर स्थित होने के कारण उसका यह विशेषाधिकार है कि वह अपने जीवन में इस प्रकार की कमी से अक्षयित होकर उन्हें पूर्ण करने का प्रयत्न करे। विवेक बुद्धि सम्पन्न होने के कारण ही वह अक्षयिता से मुक्त होता है—और अक्षयिता ही अक्षयिता है। कहने का तात्पर्य यह कि समस्याओं के अस्तित्व को किसी निष्ठापूर्ण दृष्टिकोण से न देखा जावे यह हमारा वाच्यता से अक्षयिता है। यदि शोधकर्ता किसी समस्या से पीड़ित न होना तो उसे सम्बन्धित अक्षयिता सूचनाएँ एकत्रित करने हेतु निष्ठापूर्ण भाव न हो सकता। प्रकृति पर मानव की अक्षयिता के मूल में उनका अक्षयिता प्रश्न रह है और इन प्रश्नों का माधान करने में अक्षयिता किसी भी प्रकार की अक्षयिताओं की परवाह नहीं की है। अक्षयिता के स्वरूप का अक्षयिता का अक्षयिता करने में उसने अपने जीवन की अक्षयिता दी है। तीर्थ अक्षयिता पाठा अक्षयिता अक्षयिता—इन शब्दों को हम

बुद्धिजाती मानव के एक सक्षम जीवन सत्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। विषय नए स्थान पर पहुँची बार पहुँच कर उसने विविध स्थलों के सम्बन्ध में निम्नासा यत्न करना उन स्थानों तक पहुँचने के मार्गों के सम्बन्ध में प्रश्न पछताय सब जिस प्रकार जीवन के सामान्य अनुभव हैं उसी प्रकार अपने बौद्धिक भावात्मक समयात्मक आयामों के विकास मार्गों में कई जिज्ञासाओं से युक्त होना भी मानव का विशेषाधिकार है। विन्तु समस्याओं के सहज प्रतिरूप की वस स्वीकृति के साथ ही एक अधिक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता यह है कि समस्या की सजटिलता एक व्यक्ति की प्रकृति के अनुसूचित परिवर्तित होती रहती है। मिन न बना खने के कारण एकाही होना जहाँ एक व्यक्ति के लिये सतत होना-भाजना का प्रेरक हो सकता है वहाँ पर यथावत् के बने समूह में अपने आपको पाना ही अन्य व्यक्ति में निरंतर व्यग्रता उद्भूत कर सकता है। साथ ही एक ही परिस्थिति में भी दो व्यक्तियों को समान अनुभूति हो सकती नहीं। श्रौं की पीना यदि प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप में यथित कर सकती होती तो न जान कितन बाल्मीक अभी तक उत्पन्न हो गए होते। बहने का तात्पर्य यह कि समस्या की सजटिलता एक व्यक्ति की प्रकृति के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है। जो सामान्यतः हम सोचते हैं उसे स्वीकार कर सकते हैं कि समूह समस्या सरल है—अथवा अशुभ कठिना। विन्तु अतिसंवेदनशील समस्या की सजटिलता तथा उसकी अनुभूति की गहनता दोनों ही एक व्यक्ति की विशिष्ट पृष्ठभूमि उसने जीवन अनुभव तथा उसके विकसित सदानों के अनुसार अनुभवित होती है।

सब विवेचनों का आधार पर निम्न विन्दु स्पष्ट होते हैं —

— मानव जीवन में समस्याओं का होना एक सामान्य वास्तविकता है।

— बहुपक्षी मानव के बहुप्रायामी जीवन में पाई जाने वाली समस्याओं में भी अलग-अलग भिन्नता हो सकती है।

— समस्या का स्वरूप तथा उसकी संवेदना की गहनता एक व्यक्ति की प्रकृति तथा पृष्ठभूमि द्वारा अनुभवित होती है।

एक विद्वान् के सहज अनुभवतः प्रश्न उठता है— मानव इस प्रकार की परिस्थितियों में क्या करता है? जहाँ तक सामान्य अनुभव की बात है सबसे प्रथम तो वह स्वयं ही अपने प्रश्नों का हल ढूँढने का प्रयास करता है। अपने आपमें अपर्याप्त होने पर वह कसकर से समाधान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। मिला कि विचार विमर्श करता है सम्बन्धित साहित्य में शोध करता है अथवा किसी विशेषज्ञ से सलाह प्राप्त करता है। सदैव में कहा जा सकता है कि औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से अपनी समस्या के समाधान हेतु प्रयत्नशील रहना मानव जीवन का सहज प्रथम है। स्वाभाविक ही है कि इस सहज प्रथम का स्वरूप भी सत्प्रति की वर्धमान सजटिलता के अनुरूप परिवर्तित होता गया। इस विकासमान सजटिलता के अनुभवतः में ही आधुनिक विवेचन के बीज बोध जा सकते हैं। अतः वर्तमान युग की इस

नवीन कहलाने वाली बानानिक ज्ञान प्रणाली का सब विम प्ररार तथा विन विन स्वरूपो मे प्रस्फुटन विवसन हुआ उसका विकासारमक बयानक एक शृखलाबद्ध रूप म निम्न अनुच्छेदो म प्रस्तुन करने का प्रयास करेंगे । इसी वधमान गाथा में ही बयानचित् यह भी देला जा सके कि विशेषकर शिक्षा के साथ निर्देशन का सम्बन्ध कब कयो तथा किस प्ररार स्थापित हुआ । शिक्षा-क्षेत्र के इस आधुनिक अपक्षित अग का सामान्यत मानव जीवन तथा विशेषकर शिक्षा के विकास अम मे क्या स्थान है यह जानने हेतु शिक्षा के इतिहास म निर्देशन के जन्म तथा अमिक विकास की परिस्थितियो पर एक विहंगम दृष्टि डालना समीचीन होगा ।

मानव-जीवन के विकास अम मे निर्देशन का वधमान स्वरूप

जीवन शिक्षा तथा निर्देशन के पारस्परिक सम्बन्ध का एक प्राथमिक परिचय प्राप्त करने हेतु हम इस विकासमान गाथा को कुछ विशिष्ट भागा म विभाजित करके प्रस्तुन करेंगे ।

(१) सरन समाज अनौपचारिक शिक्षा

यो तो शिक्षा के स्वरूप तथा कायों के सम्बन्ध म ही शिक्षा शास्त्री एकमत ही हो यह आवश्यक नै । अत शिक्षा की प्रकृति तथा लक्ष्यो से सम्बन्धित विभिन्न भागो क मूल म इस समय न उलभकर सामान्य रूप से स्वीकृत एक निर्विवाद तथ्य स हम यह विवेचन प्रारम्भ कर सकते हैं । साधारणतया यह स्वीकार किया जाता है कि शिक्षा प्रक्रम का एक मौलिक उत्तरदायित्व है युग के सञ्चित ज्ञान तथा अर्जित अनुभवो का व्यवस्थित रूप से नूतन पीढी तक प्रेषण करना तथा इस प्रेषण द्वारा व्यक्ति को अपने यातावरण मे उपयुक्त सामायोनन करने हेतु सामय्य दान करना । इसी प्रेषण के अभावस्वरूप व्यक्ति के व्यवहार प्रारूपो मे बाह्यलीय परिदलन पसी भूत विण जा सकते हैं । इन परिवलनो का मूल उद्देश्य ही है व्यक्ति को अपने सञ्चित स्वय तथा सञ्चित पर्यावरण के सम्बन्ध मे प्रबद्धता प्रदान करके उसे इन पर अविक विवकपूर्ण नियन्त्रण कर सकने योग्य बनाना इहे अपने विकास के अनुकूल मोलते हुए उनकी तथा अपने स्वय की शक्तियो का अधिकाधिक उपयोग कर सकना तथा उस प्रकार व्यक्तिक तुष्टि प्राप्त करते हुए सामाजिक उत्पन्न को प्ररित करना ।

मानव के इतिहास का प्राथमिक काल यह था जबकि उसका पर्यावरण अत्यन्त ही सरल था उसम कोई वेधीदगियां नही थी । आदिम मानव को अपने इस सरल पर्यावरण म सफलता पूर्वक जीवनयापन करन हेतु निन ज्ञान सूचना कला कुशलताओ की आवश्यकता होती थी वे सब उसे अत्यन्त ही स्वाभाविक रूप स समाज के वयस्का के साथ अनदिन जीवन व्यतीत करने म ही प्राप्त हा ज़ाया आती थी । जिस समाज म प्रकृति के मध्य उपनन्ध फलफूल अथवा निम्नकाट क जावो द्वारा दुधा का शमन हा संवता था तथा स्वानाविक दहिक वन के आधार पर आश्रय रसण योन आदि की अय मौनिक आवश्यकताए पूरण की जा सकती थी—वहा पर जीवन-यापन हेतु न तो बहुत अधिक सूचना-सामग्री की आवश्यकता पन्ती थी न

माना भाति की जना पुस्तकालयों की। बहुत उस काल में कलाविद् व्यवस्था द्वारा उनके अपरिपक्वों को प्रेषित की जाने वाली सामग्री का ही मात्र प्रकार न ता बहुत विशाल था न उसका स्वरूप ही अत्यन्त सजटिल। साथ ही उसको प्रेषित करने की प्रक्रिया भी बलि गही थी। जताकि कह चुके हैं—समाज के व्यवस्था के साथ अपने दनन्दिन जीवन में ही मानव शिशु ने कुशलताएँ प्राप्त कर जाता था। जीविकोपार्जन के व्यवसाय भी उस युग में इतने मूल्य तथा सरल थे कि उनमें विद्विष्ट प्रशिक्षण के बिना केवल अपने व्यवस्था का क्रियाशीलता में अवलोकन तथा उन्हें कार्य में सहायता ही यक्ति को उस व्यवसाय में प्रक्रियात्मक रूप से निपुणता प्रदान कर देता था।

(२) औपचारिक शिक्षा

शन शन समय की गति शोध की उत्पत्ति तथा ज्ञान की प्रगति के साथ साथ ज्ञान-सूचना समूहों में अप्रुव वृद्धि होनी गई। मानव का पर्यावरण अधिक सजटिल होता गया। या यो कहा जाय कि यह विवेकपूर्ण प्राणी अपने सत्कार पर अप्रिय नियंत्रण प्राप्त करने हेतु "सब" विविध आपात न सम्बन्ध में परिवर्धित सूचना समूहों से सम्पन्न होने लगा। अतएव अपने बहुपक्षा पर्यावरण सम्बन्धी अति अधिक ज्ञान प्राप्त करता हुआ मानव विभिन्न प्रकार के ज्ञान-क्षेत्रों का सञ्जन करने लगा। स्वभावतः इस ज्ञान-राशि के ? का कार्य भी उत्तरोत्तर रूप से पेचादधी होता गया। जहाँ पुरातन सरल समाज में बालक अपने पुरखा के साथ स्वामाविव रूप से ज्ञान-प्राप्ति द्वारा ही अपने पर्यावरण में समजन हेतु बाह्यीय ज्ञान तथा आवश्यक सूचनाओं में सहज ही एक अनौपचारिक ढंग से दीक्षित हो जाता था वहाँ अब इस परिवर्धित परिस्थिति में समाज के पर्योवृद्ध नस सहज उत्तरदायित्व के लिए अपने ज्ञानको अशमय अनुभव करने लगे। नूतन पीढ़ी के व्यक्ति भी आवश्यक ज्ञान सूचनाओं के इस प्राचात स्रोत को अपर्याप्त समझने लगे।

मानव समाज के रक्षायित्व अनुरक्षण तथा अतिजीविता के लिये पर्यावरणीय ज्ञान सूचना-कुशलताओं का संचरण तो अनिवार्य ही था। अतएव स समस्या को हल करने हेतु कतिपय औपचारिक संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। सबप्रथम इन संस्थाओं का यह उत्तरदायित्व हुआ कि तत्कालीन बधमान ज्ञान सामग्री का निश्चित विषय क्षेत्रों के रूप में वर्गीकरण किया जाये जिससे निश्चित रूपरेखा के अनुसार ज्ञान प्रगति होनी रहे। तत्पश्चात् एक-एक विषय क्षेत्रों की महती सामग्री को भी प्रपण हेतु अति व्यवस्थित करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। परिणामस्वरूप प्रत्येक विषय क्षेत्र की बधमान सामग्री में से विविध बध-स्तरो पर प्रपणाय ज्ञानाशा का अपने वर्गीकरण तथा व्यवस्थीकरण हांन गया। यह अपेक्षित था कि ये नूतन क्लिष्ट-वस्थाएँ सरल व्यवस्थित जगिक तथा सन्तुलित रूप से बाह्यीय ज्ञान सामग्री को अपेक्षाकृत अपरिपक्व यक्तियों तक प्रेषित करके उन्हें तत्कालीन समाज में सुचारु रूप से समायाजित कर सकेंगी। यह है शिक्षण संस्थाओं के जन्म की कहानी या यो कहा जाय कि औपचारिक शिक्षा के प्रारम्भ होने की गाथा। समाज अनौप

चारिक शिक्षा से औपचारिक शिक्षण-व्यवस्था की ओर उन्मुख हुआ। मानव की शिक्षा-योजना में एक नवीन युग का सूत्रपात हुआ। निरन्तर बढ़ती हुई ज्ञान राशि में विषय-क्षेत्रों का तथा व्यवस्थित पाठ्यक्रमों की संख्या भी बढ़ती गई।

औपचारिक शिक्षण संस्थायों में उपयुक्त उत्तरदायित्वों का उचित रूप से निर्वाह करने हेतु दक्ष व्यक्तियों की भी आवश्यकता पड़ी। अतएव व्यक्तियों को इन विभिन्न वृत्तान्तों में दक्ष करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजनाएँ बनने लगीं।

एक युग में शिक्षण का स्वरूप आदिम युग की तुलना में कुछ अधिक विभिन्न हुआ। व्यक्तियों को समाज के वयस्क से जा स्वामाहिक माग-दान सहज रूप से दैनिक जीवन की नैमी श्रियाओं में ही प्राप्त हो जाया करता था उसके स्थान पर नियतकारीन पाठ्यक्रमों का माध्यम से प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा आवश्यक ज्ञान व्यवस्थित तथा क्रमिक रूप में प्रेषित होना लगा।

एक प्रेषण में प्रेषित करने वाले व्यक्तियों के प्रशिक्षण की बात अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी युग में यदि मानव ज्ञान का केवल अन्त करके ही अपने उत्तरदायित्व की इतिहास समझें तो कदाचित् मानव जाति की अतिजीविता तथा अनुरक्षण को क्षतिग्रस्त की घाशका हो सकती है। नवीन ज्ञान का नूतन पीढ़ी तक संचरित किए बिना मानव-जाति प्रगति की राह पर अग्रसर नहीं हो सकती।

(२) विषयों का विभिन्नकरण

उन्नति की राह पर अपने प्रगामी चरण बनाने हुए मानव को विभिन्न विषयों का भी विभिन्न क्षेत्रों में वर्गीकरण करने की आवश्यकता पड़ी। औपचारिक शिक्षण संस्थायों के प्रारम्भिक ज्ञान में तो केवल विषय-क्षेत्रों में वर्तमान ज्ञान राशि का जयन सर्वोपरि तथा व्यवस्थीकरण करने की ही समस्या थी। अर्थात् या कि नवीन युग में रहने वाला व्यक्ति इन सभी विषयों की सूचनाओं से सम्पन्न होगा। भाषा गणित तथा विज्ञान के मौलिक विषयों का ज्ञान पर्यावरणीय नियंत्रण तथा वस्तुगत दक्षता के लिये एक प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक था। शन शन अपने व्यक्तिगत ज्ञान तथा पर्यावरणीय सूचनाओं से अधिक सम्पन्न होने के प्रक्रम में मानव ने इतिहास भूगोल के विषयों का सृजन आयोजन किया। तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार सामान्य विज्ञान सामाजिक-ज्ञान आदि भी अनिवार्य विषय क्षेत्रों के रूप में विकसित होने गए। अब अपने पर्यावरण में दक्षतापूर्वक मनुष्यप्रण जीवन व्यतीत कराने हेतु व्यक्ति के लिये इन मौलिक विषयों का व्यवस्थित ज्ञान अनिवार्य-सा हो गया तथा वह व्यवस्थित रूप से यह ज्ञान औपचारिक शिक्षण-संस्थाओं में प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा प्राप्त करने लगा।

किन्तु इसके पश्चात् समाज के इतिहास में वह युग आया जिसे वैज्ञानिक-तत्त्वज्ञानी युग का प्रारम्भ कहा जाता है। औद्योगिक क्रांति हुई विज्ञान की उन्नति

द्वितीय नान का अभूतपूर्व विस्फोटन हुआ। इस अनन्त राशि का समावेश केवल मौलिक विषयों की परिधि में ही कर सकना सम्भव नहीं था। अतएव सामान्य विषयों के साथ विभिन्न नान क्षेत्रों में कई विशिष्टीकरण हुए। इन विशिष्टीकरणों की वृद्धभूमि में तत्कालीन औद्योगिक विकास भी था। औद्योगिक प्रगति के पक्षस्वरूप विशिष्ट व्यावसायिक क्षेत्रों का बढना स्वाभाविक था और इन क्षेत्रों में काम करने हेतु विशिष्ट प्रशिक्षण भी एक महती पूर्वावश्यकता थी। अतएव विषय क्षेत्रों में ही विषय-बढन का फलस्वरूप जो विशिष्टीकरण हो रहा था उसके अतिरिक्त भा वृत्तन कौशल्य-क्षेत्रों का सजन विकास होने लगा। हम कह सकते हैं कि नान का यह बढन एक विशिष्टीकरण मानव की निरन्तर बढमान जिज्ञासा तथा उत्तरोत्तर रूप से सज्जित होने हुए समाज का प्रतिबिम्ब मात्र था। विविध क्षेत्रों तथा विषयों के सम्बन्ध में बढमान कलात्मक-कुशलताओं के लिए उतने ही प्रकार के पाठ्यक्रम शिक्षक तथा शिक्षण-संस्थाओं की आवश्यकता हुई। नान राशि के अभूतपूर्व समूहों का उचित रूप से नतन पीढ़ी तक संचरण आधुनिक काल के प्रारम्भ में शिक्षा-क्षेत्र की एक सवर्ण धुनीती रही।

(४) विशिष्ट निर्देशन का आवश्यकता

इस बढमान विशिष्टीकरण से उत्पन्न चुनौतियाँ केवल नूतन पाठ्यवर्षों के आयोजन तथा शिक्षकों के विशेष प्रशिक्षण तक ही सीमित नहीं रहीं। एक सम्बन्धित समस्या अधिकाधिक रूप से दृष्टिगोचर होने लगी शिक्षार्थियों के क्षेत्र से। जब प्रथम तो अत्यन्त द्रुत गति से बढमान विषयों विषय क्षेत्रों विशिष्टीकरणों के सदृश में यह 'पारम्परिक' रूप से सम्भव नहीं प्रतीत हुआ कि नई पीढ़ी का प्रत्येक व्यक्ति—नवीन विषय-क्षेत्रों का हर विशेषता में दीक्षित हो सके। किन्तु इस व्यावहारिक कठिनाई के साथ-साथ उस सदृश में एक तरहकी समस्या भी शिक्षाविदों को उत्तरोत्तर रूप से 'बढ कर' लगी। यह अधिकाधिक अनुभव में आत गया कि प्रत्येक व्यक्ति हर एक विषय क्षेत्र में निपुणता प्राप्त नहीं कर सकता। सभी विशिष्टीकरणों में तो प्रशिक्षण की योजना ही अत्यवहारिक थी किन्तु सामान्य नान के माने जाते वान मूल विषयों में भी देखा गया कि 'वक्तियों की उपलब्धियों में पर्याप्त अन्तर होना है।

बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ काल उस विज्ञान के जन्म से सम्बन्ध रखता है जब मानव-व्यवहार सम्बन्धी इस प्रकार के बढानिक प्रयत्न व्यवस्थित रूप से पूछे जाने लगे थे। अगले दशकवर्षों में तो मनोविज्ञान भी इन प्रश्नों का उत्तर देने हेतु अनावश्यक रूप से बशानुक्रम पुरावरण का विघात में उतका रहा। उस समय शिक्षा का काम था शिक्षा देना उमरों उत्तरदायित्व यही तक सीमित था। विद्यार्थी यदि ग्रहण करने में असमर्थ है तो बात उसकी जन्मजात दुबलता तक सीमित रख कर समाप्त कर दी जाती थी।

बुद्धि नामक शक्ति जिसको सीखन से सीधा सम्बन्ध माना जाता था भी एक सम्पूर्णरूपेण जन्मजात वरदान के रूप में ही देखी जाती थी तब तो सीखन के समायाजन के आवश्यक प्रथमा में बुद्धि के अतिरिक्त और अन्य विशेषता के सम्बन्ध में मानव को बहुत अधिक सूचनाएँ नहीं थी।

किन्तु शन शन पान राशि के वधन विषयो के विशिष्टीकरण तथा प्रत्येक व्यक्ति के हरे क्षेत्र में समीजन न हो सकने के फलस्वरूप जो जिज्ञासा जिज्ञासियों को उत्तरात्तर रूप से व्यग्र करती रही वह थी— कौनसा विषय किसके लिये ? कौनसा वाय-क्षेत्र किस व्यक्ति के लिये ?

इसी प्रकार के प्रश्नों में बतानिक निर्देशन के बीजाकुरी को शोधा जा सकता है। बतानिक निर्देशन के व्यवस्थित विकास का इतिहास तो अगन अध्याय में कहेंगे। यहाँ पर तो केवल मानव-जीवन तथा शिक्षा के विकास क्रम में निर्देशन के स्थान पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं। इस काल में पान के क्षेत्रों में वधन एवं कई विशिष्टीकरणों के सदन में प्रत्येक व्यक्ति के लिये समुचित माग-दशन का प्राप्न वाप्कार शिक्षा के क्षेत्र में उभरने लगा।

(५) मानव -अध्ययन का केन्द्र

मानव के स विकास क्रम में वर्तमान युग को मानव अध्ययन का युग ही कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अभा तक तो प्रगतिगामी मानव अपने वातावरण पर उत्तरोत्तर विजय प्राप्त करने में ही दत्तचित्त था। विभिन्न विषय-क्षेत्रों का आविष्कार करते हुए उसने जल-यल-नभ तथा पातान— किसी भी क्षेत्र का अन्वेषण वाकी नहीं रखा। जहाँ पर गगन के नक्षत्रों की गति का वह विश्वासपूर्वक गणन करने लगा वहाँ पर भूगर्भों में अवगुण्ठित खनिजों रनों के विषय में सफलतापूर्वक प्रागुक्ति करता गया। कृति के कर्ष विनष्टकारी त वा को भी उसने अपनी सवा में एक प्रकार माडा कि विविध भाति की उजाए उसकी अनुचरी बन उसने नियंत्रित होकर सुख समृद्धि का वधन करने लगी।

किन्तु मह-वाकाशी मानव को इस समय एक अभिनाया अधिकाधिक रूप से चुनौती देने लगी और वह थी उसका स्वयं अपने सम्बन्ध में बतानिक पान। जो सामान्य रूप से तो अपने स्वयं के स्वरूप-सम्बन्धी जिज्ञासा मानव की आदिम समस्या रही है। आदि नान-क्षेत्र दशन के माध्यम से उसने प्रारम्भ से ही अपने स्वयं का दान करना चाहा था। किन्तु यह दशन सामान्यतः चिन्तन मनन की व्यक्ति निष्ठ पद्धतियों से ही होता था। विज्ञान की वस्तुनिष्ठ पद्धतियों द्वारा विश्व के नाना रहस्यों का उद्घाटन करते हुए मानव इन पुरातन उपागमा से अधिकाधिक असन्तुष्ट होता गया। प्रारम्भ में तो योतिप हस्तरेखा वाचन आदि कूट विज्ञानों द्वारा ही वह अपने आपका भाग्य वाचन करके भविष्य सम्बन्धी प्रागुक्तियाँ करने का प्रयत्न करता रहा। शन शन उसके स्वयं तथा उसकी जाति के विकास से सम्बन्धित

विज्ञान-यथा समाज विज्ञान मानव विज्ञान आदि माध्यम से भी मानव तथा मानव जीवन के किसी न किसी पक्ष की व्याख्या करने लगी। इधर विकासमान शरीर निया विज्ञान उसका स्थूल स्वरूप को अधिकाधिक स्पष्ट करने लगा। मानव का नाना पक्षों से अध्ययन करने वाले इन विज्ञानों के विकास के साथ ही जन जन मनाविज्ञान भी अपने आपको अपने पतृक विभाग दर्शन से मुक्त करके एक मानव के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करने के उद्देश्य से अपने को स्वतंत्र रूप से विकसित करने लगा।

मनोविज्ञान के विकास में स्वयं इसके शरीर से मानव जीवन से सम्बन्धित कई सामान्योपपत्तियाँ वा प्रस्तुत हुआ और मानव उत्तरोत्तर रूप से अपने अध्ययन का क्षेत्र विस्तृत करने लगा। जहाँ विकासमान शरीर निया विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान द्वारा अपने अपने शारीरिक विकास वृद्धि आदि पर नियंत्रण प्राप्त किया गया मनाविज्ञान विज्ञान द्वारा वह अपने धेतन अचेतन मन की गति विधियाँ के सम्बन्ध में अधिक प्रबुद्ध होने लगा। इसलिये कहा जा सकता है कि जिन विज्ञानों को उसने जन्म दिया था उन्हें भी वह अनैतिक अपने स्वयं के अध्ययन की ओर मोड़ने लगा।

मनोविज्ञान जो कि अब स्वतंत्र रूप से मानव के व्यवहार के विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था उसने व्यवहार के नियंत्रण तथा प्राणुक्तिकरण में अधिकाधिक रुचि लेने लगा।

अपने स्वयं के सम्बन्ध की इस प्रबुद्ध स्थिति ने पर्यावरणीय विशिष्टीकरणों से साथ मिल कर मानव के समञ्जन का प्रक्रिया को अत्यन्त सजटिन बना दिया। वैसे-वैसे विशिष्टीकरण किसके लिये? के जिस प्रश्न में निर्देशन का जन्म हुआ था उस प्रश्न का स्वरूप अब और भी कठिन हो गया। अब तक तो उस प्रश्न का उत्तर देने में विभिन्न विषय तथा क्षेत्रों का विशिष्ट ज्ञान सामान्यतः पर्याप्त था। मानव पक्ष से सम्बन्धित घटकों में उसकी बुद्धि का परिचय प्राप्त करना ही आवश्यक समझा जाता था। किन्तु अब मानव पक्ष के ही कई अधिक घटक स्पष्ट होने लगे तथा उसे माग-बचान देने में उनका ज्ञान आवश्यक होने लगा। केवल मनोविज्ञान ने ही बुद्धि के प्रतिरिक्त स्वयं बुद्धि का भी प्रभावित करने वाले कई कारणों के सम्बन्ध में बताया अब मानव ज्ञान राशि के सञ्चरण के समय व्यक्ति की रूचि अभिवृत्ति अभिधमता चित्तप्रवृत्ति आदि की भूमिकाएँ स्पष्ट होने लगी। मानव के पर्यावरणीय समञ्जन में भी समाज विज्ञान और संस्कृति विज्ञान द्वारा कई सामाजिक सांस्कृतिक घटक स्पष्ट हुए। मानव का अपने विषय में ही ज्ञान अतना प्रचुर तथा बहुप्रायामी होने लगा कि व्यक्ति को ही पूर्णरूपेण समझ सकता एक चुनौती या सिद्ध होने लगा। इस युग में उसके लिये माग दर्श के प्रश्न को भी अधिक सख्तीकी वैज्ञानिक स्वरूप धारण करना पड़ा।

(६) समाहार

मानव के विकास क्रम में निर्देशन के विवेचन का सारांश निम्न बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है तथा निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है (देखिए चित्र १)

आदिम मानव एक सभ्य समाज में रहता था। उस काल से जीवनयापन तथा सुख समन्वय हेतु अत्यन्त ही घन ज्ञान-सामग्री की आवश्यकता होती थी जिस वह अपने वयस्क के मध्य दशदिन रहते हुए अनौपचारिक रूप से प्राप्त करता था।

—पर्यावरणीय ज्ञान के अधन के साथ आवश्यक ज्ञान प्राप्त के ये अनौपचारिक साधन अपर्याप्त सिद्ध हुए। अतस्वरूप अनौपचारिक शिक्षण संस्थाओं का जन्म हुआ जहाँ श्वेदम्विन विषय-क्षेत्रों के माध्यम से वह आवश्यक ज्ञान कीशय प्राप्त करता रहा।

—ज्ञान की उन्नति तथा शोध का प्रगति के साथ सामान्य विषय क्षेत्रों की परिधियाँ भी अपर्याप्त सिद्ध होने लगी तथा फलस्वरूप विषय-क्षेत्रों का विशिष्टीकरण होने लगा।

—कई विशिष्टीकरण होने से शिक्षाविदों को जो प्रश्न व्यग्र करने लगे वह था कौनसा क्षेत्र किस व्यक्ति के लिये? प्रत्येक व्यक्ति के लिये क्षेत्र में सफल न हो सकने के तथ्य ने इस प्रश्न को और भी अधिक गंभीर प्रदान किया। इसी प्रश्न के मूल में निर्देशन के बीज बोये जा सकते हैं।

—वर्तमान युग में मानव अपने आप के सम्बन्ध में अधिक रुचि लेने लगा है। वह अधिकाधिक अपने स्वयं के अध्ययन का काल बनता जा रहा है। पर्यावरणीय सजटिलताओं के साथ-साथ उसके स्वयं से सम्बन्धित वर्तमान ज्ञान शिक्षाविदों के सम्मुख उसके मांग-दर्शन की नवीन चुनौतियाँ स्तुत कर रहा है।

एक सामान्य विवेचना के अनुवर्तन में अब शिक्षा तथा निर्देशन का सम्बन्ध हम अति विशिष्ट रूप से देख सकेंगे।

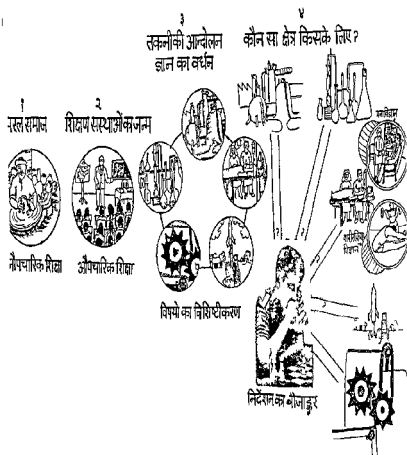
शिक्षा तथा निर्देशन

(१) परिस्थिति की संजटिलता

या तो शिक्षा के स्वरूप तथा उद्देश्यों पर एक स्वतंत्र अध्ययन ही किया जा सकता है। किन्तु प्रस्तुत अध्याय के प्रारम्भ में हमने शिक्षा का जो सामान्य स्वरूप स्वीकार किया था उसी को इस विशिष्ट विवेचन का भी आधार बनाना समुचित रहेगा। सामान्यतः यह स्वीकृत है कि शिक्षा का प्रमुख उत्तरदायित्व है युग के सर्वांगीण ज्ञान के समुचित प्रेषण द्वारा व्यक्ति को उसके वातावरण के साथ अनुकूलतम समायोजन कर सकने हेतु योग्य बनाना। अतएव शिक्षा का प्रथम समन्वय के दो पक्ष—व्यक्ति तथा उसके पर्यावरण से सम्बन्धित होता है। इन दो पक्षों में से अभी तक शिक्षा केवल एक ही पक्ष पर्यावरण से अधिक सम्बन्धित थी। उसकी समस्या

मानचित्र सरया १
 (पुस्तक पृष्ठ सरया १० देखें)

मानव-जीवन के विकासक्रम में निर्देशन का व



यही थी कि पर्यावरण सम्बन्धी वर्तमान ज्ञान राशि को कितना अत्येकदम सस्तर-यवस्थित तथा ग्राह्य बना कर प्रेषित किया जाए। यदि हम या कहे तो अति शयोक्ति नहीं होगा कि मानव का पर्यावरण विभिन्नताप्रा का एक सतत परिवर्तनशील समूह है जिसका समुचित प्रभू करने हेतु उसका चयन सफल यवस्थीकरण तथा संवर्धन करना औपचारिक विज्ञान का उत्तरदायित्व रहा था।

किंतु हमन देखा कि वर्तमान युग के परिवर्धित ज्ञान प्रत्याम जो नवीनतम अध्ययन द्वारा वह या स्वयं मानव का अध्ययन। प्रथम परिस्थिति यह हो गई है कि जिस व्यक्ति तर शिक्षा द्वारा ज्ञान का प्रेषण करना है उस व्यक्ति तथा उसने-यत्नत्व का ही अध्ययन किया तथा कराया जाए। मानव के इस न्यूनतम बहु-आयामी अध्ययन ने मानव को बतलाया कि प्रत्येक स्थिति अतिसम्बन्धित विभिन्नताप्रा का एक अस्तित्व प्रति रूप है। एक ओर तो मनोविज्ञान न न कवन प्रत्येक-यक्ति की बुद्धि रुचि कृति एव प्रवृत्तियों में अन्वेषण बताया अतितु इन विशेषों में नाना प्रकार की आन्तरिक विविधताओं को दर्शाया जिन्हें तृतीय अध्याय में अतिक स्पष्ट किया जाएगा। दूसरी ओर सामाजिक मनोविज्ञान न-यक्तियों में पारस्परिक सुखद अन्तर्भ्रमों की स्थापना में भी एक-यक्ति की-यत्नगत विभिन्नता की भूमिका का ओर इंगित किया। इस नवीनतम परिस्थिति क सन्दर्भ में शिक्षा क अग्रगण्यतर उत्तरदायित्व का स्वरूप भी आधुनिक सज्जित हुआ। अनेक में इसकी धारणा ह—विभिन्नताप्रा क दो समूहों क मध्य उपयुक्त समाजन स्थापित करना।

अपनी सामान्य परिस्थिति में अतीत शिक्षण सत्वाप्रा ने अपने आप को इस सज्जित उत्तरदायित्व के लिये अधूरा-सा पाया। इसी अधूरापता की भावना में शिक्षा के क्षेत्र में नाना-निर्देशन का प्रादुर्भाव एव विकास हुआ।

विज्ञान के इतिहास में विषयों के विशिष्टीकरण युग के समय ही हम निर्देशन क प्रथम प्रश्न कौनसा ज्ञान या कार्य क्षेत्र किसके लिए? की ओर इंगित कर ही चुके थे। अथ शानिक इतिहास के नूतनतम अध्याय में पर्यावरणीय ज्ञान तथा शिक्षार्थी का व्यक्तित्व दोनों से सम्बन्धित परिवर्धित ज्ञान राशि के सन्दर्भ में शिक्षा में माग दर्शन का स्वरूप और भी अधिक विशिष्ट हुआ। स्थिति यह थी कि समा-याजन के दोनो पक्ष विभिन्नताप्रा के दो सज्जित प्रतिरूप थे। अतएव उपयुक्त समा-याजन हेतु दोनों ही पक्षों का समुचित ज्ञान शिक्षा प्रक्रम के लिए अनिवार्य हो गया। एक ओर जन्म विविध पर्यावरणीय विषय-क्षेत्रों की तकनीकी विज्ञापताप्रा का ज्ञान आवश्यक था वही प्रथम प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि रुचि योग्यता प्रकृति प्रवृत्ति आदि से सम्बन्धित अवधारणों में अनिवार्य हो गया। इस नूतन अवबोध हेतु किसी व्यवस्थित विज्ञान की आवश्यकता पड़ी जो कि शिक्षा में निर्देशन के रूप में अवतरित हुआ। इस सन्दर्भ में उसके विशिष्ट ध्येय इस प्रकार रहे—

—व्यक्ति को अपने आप का सही अवबोध प्राप्त करने में सहायता देना

- अपनी क्षमताओं तथा सामितताओं के वास्तविक स्वरूप से अवगत कराना
- अपनी क्षमताओं का दृष्टतम विनाश व उपयोग पर सवने में सहायता देना
- अपने सम्पूर्ण वातावरण में अनुकूलतम समायोजन स्थापित करने में सहायता देना
- अपने जीवन का विविध समस्याओं को समझने व मुलभाने में स्वतंत्र रूप से सुयोग्य बनाना और
- अपने सर्वोत्तम योगदान समाज को देने में सफल बनाना ।

उपरोक्त ध्येयों के स्वरूप को देखकर एक महज प्रश्न उठ सकता है कि शिक्षा व निर्देशन में अंतर क्या हुआ ? उक्त कथित ध्येय प्राधुनिक शिक्षा के स्वीकृत उद्देश्यों से किस प्रकार भिन्न हैं ?

जिस प्रस्तावना के अध्याय में हमारे प्रारम्भिक विवेचना के स्तर पर ही इन युक्तिमय प्रश्नों का उत्तर एक स्वयं मूल में पिरोना उपयुक्त होगा । विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में तो कार्यकर्ताओं को सच व स्मरण रखना चाहिए कि निर्देशन शिक्षा से कोई भिन्न प्रथिया नहीं है वह शिक्षा प्रथम का एक अविच्छिन्न तथा महत्वपूर्ण अंग है ।

इस तथ्य का स्पष्टीकरण निम्न चित्र तथा व्याख्या द्वारा किया जा सकता है (दिए गए चित्र 2)

यदि शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास तथा अनुकूलतम समायोजन है तो निर्देशन इन मनोनीत ध्येयों की प्राप्ति में सहायता प्रदान करता है । सर्वांगीण तथा समरस विकास शिक्षा का निर्धारित ध्येय होते हुए भी वस्तुतः एक असाध्य प्रथम है । वास्तविकता तो उस तथ्य में है जिसके साथ हमने यह अध्याय प्रारम्भ किया था—कि जावन का माग सीधा नहीं है । अतएव वस्तुस्थिति यह है कि मानव के समरस बनाने वाले विकास के जीवन के कई अचानक निचोड़ों या के भय होकर गुजरना पड़ता है । कल्पना का समरस विकास वह सरल सी रेखा नहीं जो कि मानव-जीवन में अनुवरोधित रूप से अप्रसर जाती जाए । सर्वांगीण सतत तथा समरस विनाश के ध्येय को प्राप्त करने हेतु अनिवार्य होगा कि विकास माग की व्यावहारिक कठिनाई को स्वयं का अवबोध प्राप्त करके उन पर यथा सम्भव विजय प्राप्त की जाए । किन्तु इस विजय प्राप्ति हेतु व्यक्ति को कठिनाईयों के सन्दर्भ में ही अपने स्वयं की क्षमताओं सामितताओं का सही ज्ञान भी अनिवार्य हो जाता है तो जीवन के माग की प्रवृत्ति का अवबोध तथा उस पर सतत अप्रणामी से सवने हेतु अपने स्वयं की क्षमताओं का उचित अनुमान जो व्यक्ति ज्ञान में समर्थ हो सकता है वही शिक्षा के निर्धारित ध्येय सर्वांगीण विकास की उपनधि के साथ अपन

बहुपक्षी पयावरण में समुचित समझन भी प्राप्त कर सकना ।

निर्देशन की बानिक् कला द्वारा उपयुक्त ज्ञान प्रकार की कुशलताएँ व्यक्ति को प्राप्त हो सकती हैं । और य कुशलताएँ प्राप्त होने पर ही शिक्षा के ध्येय को उपरिधि हो सकती है ।

अतएव शिक्षा और निर्देशन के सम्बन्ध को स्पष्ट करत हुए हम कह सकते हैं कि निर्देशन का बगन शिक्षा बगन का ही बानिक् विगिष्ठीकरण है । ध्येय को साधुनिक काल की सजन्तिलता में उपलब्ध बनाने हेतु शिक्षा के इस प्रकारागतक अग का प्रादुर्भाव इथा है ।

(२) शिक्षा की वर्तमान विचारधाराएँ

यहाँ तक तो शिक्षा के वर्धमान सञ्जटिल स्वरूप के सदम में हमने निर्देशन का प्राथमिक परिचय प्राप्त किया । इसने अनुवर्तन में ही शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान विचारधाराया की पृष्ठभूमि में भी निर्देशन की उदीयमान महत्ता का वेग देना समीचीन हागा ।

(क) सद्दान्तिक्ता से प्रकारात्मकता की ओर—सामान्यत मानव क इतिहास और विशय कर शिक्षा के क्षेत्र में उन्नीसवीं शताब्दी को यदि एक सद्दान्तिक् चर्चाया का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । परिबर्धित ज्ञान रागि के साथ-साथ स समय मानव का वाग वर्तन्व्य भी अपनी चरम समा पर था । जीवन ससार तथा स्वयं मानव से सम्बन्धित प्रश्ना का उत्तर वाग विदग्धतापूण विचार सगोष्ठिया में शाया जाता था । बीसवीं शताब्दी के बानिक् उपागम न इस प्रकार की सद्दान्तिक् चर्चाया से प्राप्त परिणामा को सदिग्ध दृष्टिकोण से दसा । फलस्वरूप प्रयोग निरीक्षण द्वारा चर्चाया के विषय तथा उनक परिणामा का व्यावहारिक परिस्परिधियों में परीक्षण सायापन होने लगा । परिणाम यह हुआ कि शिक्षा के अस्पष्ट अमूर्त तथा अयुपवर्ण्य ध्येय की भी नियापरक व्याख्या करने की आवश्यकता प्रतीत हुई । विकास समझन समरसता सर्वांगीण आदि शान्त के प्रकारात्मक स्वरूप को स्पष्ट करने के प्रयत्न होने लग ।

उक्त उदाहरण हमने शिक्षा-दशन के क्षेत्र में व्यावहारिक व्याख्याया के प्ररन सम्बन्धा आन्दोलन से दिए । किन्तु वस्तुतः यह आन्दोलन वर्तमान युग के परिवर्तित उपागम का ही प्रतिबिम्ब मात्र है । बीसवीं शताब्दी का मानव मानव अध्ययन से सम्बन्धित विविध क्षेत्रा में वसी प्रकार की जिनासाण प्रदर्शित करने लगा । विभिन्न क्षेत्रा में वर्धमान ज्ञान को अर्पण लिए उपयोग में लान हेतु वह उनके व्यावहारिक शान्तवर्तिया में व्याख्या की माग करत लगा । एक दो उदाहरण इस बात को अधिक स्पष्ट कर देंगे । एक ओर शिक्षा-दशन ने प्रत्यक व्यक्ति के मूय के लिए आदर की घोषणा की ही थी । अर्त्ति के अध्ययन से सम्बन्धित मनोविज्ञान न वर्धत्तन विभिन्नता की आस्था ति पाणित करने इस घोषणा को एक प्रकार से बानिक् सम्पूर्ति प्रदान की । वर्त्तिपय अय क्षेत्रा यथा—समाज विज्ञान मानव विज्ञान सस्कृति विज्ञान

आदि म भा कितो न किसी प्रकार मानव की समृद्धि की एक महत्वपूर्ण इकाई मान कर उसका अग्रगण्य अग्रगण्य रूप से अध्ययन करने की चप्टाए प्रकट हान लगी थी। किंतु पूर्व युग का सद्धातिक अध्ययन उपागम उक्त सभी क्षेत्रों में भलवता था। सद्धातिक रूप से व्यक्ति का नाना भाति से मायता दत्त हुए भी 'यक्ति'ों त अध्ययन व्यावहारिक नहीं था। वीसवीं शताब्दी की प्रवर्धमानता न अग्रगण्य पूर्व युग की विभिन्न सद्धातिक मायताओं को एक त्रियामर रूप देना चाहा। निर्देशन का नतन क्षेत्र बनमान युग के नाना क्षेत्रों की सद्धातिक शास्त्राओं का व्यावहारिकरण करने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ। व्यक्ति के अवबोध की आवश्यकता को 'अन अवबोध' के अतगत अज्ञान वान घटक तथा उन घटकों का अध्ययन करने हेतु साधना की व्याख्याओं द्वारा स्पष्ट किया। उसके सर्वांगीण विश्वास की सवमाय अस्पष्टता को मानव के विविध अंगों तथा उसके विकास के स्वरूप का दानातिक विवरण स्तुन करके उन अधिक अवबोधगम्य बनाया। समजन की शास्त्रिक सुदरता को समजन के विविध आयामों उनकी अया यंत्रियाओं तथा उनके लक्षणों के रूप में एक दानातिक वास्तविकता प्रदान की। अतएव यति संक्षेप में कहा जाए कि मानव के अतगत अध्ययन क्षेत्रों के वान 'आभासा' तक वाक्या को एक प्रवर्धमानक प्रकाश देने के उद्देश्य से निर्देशन का नतन नक्षत्र मानव जीवन के गगनागण में उनीयमान हुआ तो अनिशगोर्तक नहीं होगी।

(ख) ज्ञान का मानवीकरण — आधुनिक युग की त्रितीय महत्वपूर्ण विचार धारा है ज्ञान का मानवीकरण। प्रगतिगामी मानव अग्रगण्य तथा अग्रगण्य अग्रगण्य के सम्बन्ध में नाना भाति के विषय क्षेत्रों से ज्ञान सूचनाएं प्राप्त करता जा रहा था। किन्तु कई बार यह ज्ञान केवल ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से ही जाना था। वतमान युग में केवल ज्ञान के लिए ज्ञान अधन के स्थान पर जीवन में अनुप्रयोग के लिए ज्ञान के विकास का अधिक मायता मिलन लगी। पत्रस्वरूप विभिन्न विकासमान ज्ञान-क्षेत्रों का परिवर्धित उपलब्धियों का मानवीकरण होने लगा। शुद्ध शोध द्वारा विषय सिद्धांतों को स पन्नता ता प्राप्त हुई ही साथ ही न निदानता द्वारा मानव का दानातिक जीवन त्रिम प्रसार अधिक सुखी बनाया जा सकता है। स अग्र शास्त्रवत्ताओं का ध्यान आविषित हाने लगा।

यह वह युग था जबकि पशुओं की प्रयोगशालाओं से उद्भूत जीवन-व्यवहारों की व्याख्याओं तक ही सीमा न रहकर दानातिक स्वतंत्र रूप से मानवीय भाव सङ्ग प्ररण अग्रगण्य अग्रगण्य में शक्ति देने लग था। शुद्ध विज्ञान। यथा भौतिकशास्त्र रसायन शास्त्र गणित नाना शास्त्र अग्रगण्य सिद्धांतों का मानवीय उन्नयन हेतु अनुप्रयोग तो परिवर्धित हो रहा था। किन्तु 'सक साय' के अवधार विज्ञानों का एक स्वतंत्र क्षेत्र हाने मानव के अध्ययन में विशिष्ट रूप से शक्ति देने लगा।

दानातिक-सकनाली युग की कई मूयवान देना की स्वीकृति के मध्य भी एक आभासी आभासित हो रहा था कि कहा जीवन के अति-दानातिकरण से मानवाय

मृत्यु का अत्यधिक लक्ष्य न होन पाए। औद्योगीकरण की द्रुत जीवन-गति व्यापक सापेक्षिक प्रगति से उद्भूत सामाजिक गतिशीलता तथा तकनीकी विकास की देन यात्रिकता तीनों ही माना मानव को मानव से दूर सींचती प्रतीत हो रही थी। जहाँ उक्त विकासो के पक्षस्वरूप मानव जीवन में सजटिलता आती जा रही थी वहाँ उनी के परिणाम स्वरूप मनुष्य का ध्यान साथी के लिए समय की कमी का भा अनुभव होने लगा था। प्राचीन युग के सरल समाज में मानव मानव के अधिक निकट था अब वह यंत्रों के अधिक समीप होता जा रहा था। पहले वह अपने सरल प्रश्नों के सम्बन्ध में भी एक दूसरे से बात कर लेता था मन का बोझ हलका कर सकता था। अब अपने स्नेही का कुशल समाचार प्राप्त करने हेतु उसे दूरभाष पर केवल उमका यात्रिक कण्डस्वर नबण करना पन्ता है। आज मानव की शोध निष्ठा तथा मानव महाकाक्षा इतनी प्रथिन प्रचल हो गई है कि वह चन्मा के आन्धी से मिलन हेतु अपने प्राणों की बाजी लगान को तत्पर है किन्तु वह अपने पत्नी से बात करने में असमर्थ होना जा रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है माना समय की कमी के साथ यंत्रों के आधिक्य के कारण उसकी स्नापन योग्यता में उत्तरोत्तर रूप से कमी आती जा रही है तथा मानवीय सम्बन्धों में दुबलता प्रविष्ट हो रही है।

ऐसे समय मानवीय विज्ञानों की सबसे बनी चुनौती है मानव का उद्धार। अत्यन्त द्रुत गति से परिवर्तित वर्तमान युग में न्याचित पच्चीस वर्ष पूर्व का व्यक्ति आज का ससार पहिचानने में असमर्थ हो। उस अपने आप को तथा अपने साथियों को पहिचानने हेतु भी आज विशिष्ट सहायता की आवश्यकता भा पनी है। युग की इस वास्तविक भाग में ही निर्देशन के नूतन क्षेत्र का आविर्भाव हुआ तथा बानिक युग की बानिक विधाया द्वारा ही उसने इस आवश्यकता की पूर्ति की। इसके लिए उसका ध्यान के युग में विशेष महत्व है।

उपसंहारात्मक बचन

प्रस्तुत अध्याय में हमने समस्त मानव जीवन में निर्देशन के सावधिक महत्त्व का विभिन्न दृष्टिकोण से परीक्षण किया। मानव विकास क्रम के विविध स्थानों पर उसके विभिन्न स्वरूपों का विहणालोचन करते हुए हमने आज के युग में इसके बानिक स्वरूप की महत्ता देगी। तत्परनात् वर्तमान युग की कतिपय महत्त्वपूर्ण आस्थाया सिद्धांतों का व्यावहारीकरण तथा मानव का मानवीकरण के एव महत्त्वपूर्ण प्रणामात्मक प्रतिविम्ब के रूप में इसके उत्पन्न का निरीक्षण किया।

इस विस्तृत परिचयात्मक पृष्ठभूमि में सन्दर्भ में अब निर्देशन के विकास आत्मक स्वरूप का अधिक विशिष्ट विवेचन प्रणाल अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा।

गत अध्याय के सामान्य विवेचनो के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव के इतिहास व साथ ही जीव ससार की आन्तम प्रक्रिया माग दर्शन का दैनिक जीवन की एक स्वाभाविक प्रक्रिया से व्यवस्थित निर्देशन के रूप में विकसित हुआ। मानव व्यवहार को वाछनीय दिशाओं में परिवर्तन हेतु निर्देशन करने वाल शिक्षा प्रक्रम में व्यवस्थित निर्देशन की आज एक महत्वपूर्ण भूमिका है। या तो समस्त ससार में निर्देशन बनमान शिक्षा क्षेत्र के एक नतनतम अंग के रूप में देखा जाता है किन्तु हमारे देश में तो इसके सम्बन्ध में सन्तान ही लगभग दो दशक पूर्व जाग्रत हुआ है।

या किसी भा क्षेत्र के यतियुक्त विकास एवं संस्थापन हेतु दो दशक भी कोई बहुत ही अपमान नहीं है। किन्तु भारत में दो दशकों की अवधि में भी मानो यह क्षेत्र अभी जन्म नहीं पकड़ पाया है। कतिपय अंग प्रगतिगामी देशों में तो निर्देशन न केवल शिक्षा के एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यात्मक अंग के रूप में संस्थापित होकर अपनी विभिन्न विशिष्टीकरण शाखाओं उपशाखाओं में विकसित हो रहा है अपितु सामान्य जन जीवन के नाना पक्षों में भी अपने महत्वपूर्ण योगदान देकर उसे अग्रिम सुगी तथा सम्पन्न बना रहा है। किन्तु भारतवर्ष में सामान्य जनता को तो निर्देशन से कोई विशेष परिचय ही नहीं प्रतीत होता। बच्चा को गौकरी बगरा के बारे में कुछ बातों की धारणा के साथ ही सामान्यतः अभिभावकगण तथा समाज के सदस्य निर्देशन का समीकरण करते हैं। शिक्षा जगत् में भी अमका संप्रत्यय बहुत स्पष्ट नहीं है। क्या कारण है इस परिस्थिति का? संप्रत्यय की अस्पष्टता में तो निर्देशन का इतिहास भारतवर्ष तथा पश्चिम दोनों में ही एक समानान्तर स्थिति प्रस्तुत करता है। अपने प्रारम्भिक काल में पश्चिम में निर्देशन का संप्रत्यय स्पष्ट नहीं था। शत शत उनके विकास के साथ संप्रत्यय में स्पष्टता तथा कार्यक्षेत्र में वृद्धावृद्धि आती गई। किन्तु भारत में जो अस्पष्टता प्रारम्भ में थी वही बीस वर्षों के पश्चात् भी बनी आ रही है। चूंकि इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं को निर्देशन के मूल तत्वों से परिचय कराना है अतः गत अध्याय के परिचयार्थक विवेचन के पश्चात् हम निर्देशन के वैज्ञानिक स्वरूप के सम्बन्ध में स्पष्टता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। इस सम्बन्ध में अस्पष्टता अथवा भ्रान्ति

ए कारणा को सके इतिहास में घोषित हुए हम यह देखेंगे कि जिस देश में इसका व्यवस्थित उद्भव तथा वहा पर किन किन स्थितियों में से गुजर कर इसने अपना प्राधुनिक स्वरूप प्राप्त किया। इसका प्राधुनिक वनातिक स्वरूप की रूपरेखा क्या है ? तथा इस विकास की अवधि में इसका स्वरूप तथा कार्यों के सम्बन्ध में क्या प्रातिया किन कारणों से रहा थी ? तथा वे किस प्रकार दूर हुई ? सक्षम में इसके परिवर्तित सप्रत्यय की पृष्ठभूमि में हम इसका प्राधुनिक वनातिक स्वरूप का अधिक सम्पूर्ण एवं युक्तिमग्न अवधारण प्राप्त करेंगे। पश्चिम में इसका विकास तथा वनातिक विकास का समानांतर ही भारत में भी इसका उद्भव विकास तथा वनातिक स्थिति पर अधिक युक्तियुक्त अवधारण प्राप्त हो सकता है।

परिवर्तित सप्रत्यय व्यवस्थित

निर्देशन के उद्भव तथा विकास का विहंगावलोकन

(१) प्राथमिक बीजाक्षुर - वावसायिक निर्देशन

या तो मानव जीवन के सहज प्रथम के रूप में निर्देशन अपने जन्मसमय पश्चिम में भी वहा के कुटुम्बा में ही स्वाभाविक रूप में अवस्थित था। लगभग उन्नासवा शताब्दी के अंत तक इस सम्बन्ध में वहा का स्थिति प्रायः दशों से बहुत भिन्न नहीं थी। प्रायः किन्हीं सम्बन्धों द्वारा प्रवार के प्रश्नों का उत्तर तथा व्यवसाय सम्बन्धी विविध भावों का मातृ-पितृ कुटुम्ब के व्यवसाय द्वारा ही व्यक्त प्राप्त करता था।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की औद्योगिक क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व में एक वनातिक रूप दिया था। पश्चिमीय जीवन में इसका प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ। इस क्रान्ति का प्रथम प्रत्यक्ष प्रभाव मानव जीवन के प्राथमिक स्थल के रूप में—उपायों पर पडा। विरासत नगरी में व्यवसाय के औद्योगिकीकरण से न केवल कई घरेलू व्यवसायों तथा कुटीर-उद्योगों को क्षतिग्रस्त हुआ अपितु औद्योगिकीकरण के सहज परिणाम व्यवसाय विभिन्नता तथा विशोष्टीकरण ने कई नवीन प्रकार की समस्याएँ प्रस्तुत कीं। सबसे प्रथम तो विभिन्न प्रकार के विशेष उद्योगों में कार्य कर सकने हेतु विशिष्ट शिक्षणों की आवश्यकता हुई। इसके साथ ही पतृ व्यवसाय का स्वाभाविक रूप से अनुवर्तन करने की सरल स्थिति के स्थान पर जन्म प्रकार के कार्य प्रवृत्तियों में से उपयुक्त चान का प्रयोग ही उपस्थित हुआ। जैसाकि हम गत अध्याय में पढ़ चुके हैं— जिस व्यक्ति के लिए कौन सा प्रशिक्षण ? अथवा उसके लिए कौनसा व्यवसाय ? इस प्रकार के निर्णायक प्रश्न समाज में अव्यक्त उत्पन्न करने लगे। स्पष्ट था कि त्रैद्विभक्त सदस्य कई नवीन व्यवसायों तथा सम्बन्धित शिक्षण कार्यक्रमों से प्रायः अनभिज्ञ थे अतः उनके लिए उक्त प्रश्नों के सम्बन्ध में विवेकानुभव सम्पत्ति देना सम्भव नहीं था। उनकी यह अपर्याप्तता जीवन में प्रवेश करने वाले नव किशोरों में एक प्रकार की कुण्ठा उत्पन्न करने लगी। इस कुण्ठा का उद्भव हुआ सामाजिक गतिशीलता से उत्पन्न समस्याओं से। इस प्रकार

एक घरेलू समस्या अधिकाधिक हल न सामाजिक उत्तरदायित्व प्रदत्तों गई। पश्चिम के विभिन्न देशों में स्थानीय स्वायत्तता शिक्षा क्षेत्र तथा औद्योगिक क्षेत्रों में इस उत्तरदायित्व को सम्मानना। उन्होंने निम्नी न निम्नी रूप में व्यवस्थित रूप से नव विद्यार्थी को सम्बन्धित सहायता देना तथा वायत्तता प्रारम्भित किए। इसमें म यह वाय अधिकाश में स्थानाध्य स्वायत्तता तथा औद्योगिक क्षेत्रों का रहा। किन्तु अमरीका में यह आन्दोलन सामान्य जनता में प्रारम्भ होकर भी उत्तरोत्तर रूप से शिक्षा के क्षेत्र का अन्तर्गत भाग बनता गया। अतएव व्यवस्थित निर्देशन का पश्चिम में सामान्य उत्पन्न दस्तन के पश्चात् विश्वभर अमरीकन-समाज में इसका बीजांकुश को शोभना अधिकाश उपाध्य रहा। इसका एक कारण तो यह है कि अमरीका में ही इस आन्दोलन की उत्पत्ति प्रकट हुई है तथा इसका अधिकाशतम योगदान रहे हैं। दूसरे अमरीका में इस विरासत की कहानी का भारत में इसके उद्भव से एक सबब साम्य है।

(क) साहित्यिक स्फूर्ति

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों से ही कतिपय अमरीकन नवक जीवन तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के प्रयत्न के सम्बन्ध में खिचने लगे थे तथा उन्होंने नानाप्रिय समाचार-पत्रों और छापीलों के पुस्तिकाओं के माध्यम से उन महत्त्वपूर्ण विचारों पर अपने विचार व्यक्त करने प्रारम्भ कर दिया था। जावन किस प्रकार प्रारम्भ किया जाय? एक नौजवान क्या कर सकता है? जीविकोपार्जन की चुनौती - यदि सामयिक विवक्षा पर उनके निश्चित उत्तर दत्तकारीन समाज की अनुभूत आवश्यकताओं के प्रतिप्रथा स्वल्प होने के कारण पर्याप्त स्वीकृति प्राप्त कर रहे थे। समाज के कुछ साकहित्यीय भागरीन तास प्रकारण जान बाल निर्देशन के स्वल्प को और भी अधिकाश विस्तृत करके उसमें युवकों का सामाजिक नतिक वदतिक भाग दशान भी समाहित करने के पक्ष में थे। किन्तु अधिकाश में उस समय सद्भावित तथा व्यवहारित दोनों ही दृष्टिकोणों से व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन को ही सर्वाधिक मायना प्राप्त हुई।

(ख) लोक कल्याणी अभिकरण

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उक्त कथित साहित्यिक सृष्टि को निश्चित परिपुष्टि प्राप्त हुई कतिपय आवश्यकताओं के व्यवहारिक भाग से। था। उस समय अमरीका के कई विद्यालय नगरों में नाना स्तरों पर नानाप्रिय (व्यक्तिक अथवा सामूहिक रूप में) युवकों को निर्देशन देने में नेतृत्व दे रहे थे। किन्तु इस सन्दर्भ में सबसे अधिक उल्लेखनीय कार्य रहा 'यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ वाशिंगटन नगर' में। फ्रैंक पारसन्स Frank Parsons नामक एक नगरिक वाशिंगटन के नानाप्रिय (सिवालय) में एक स्वयंसेवक के रूप में अपना कार्य प्रारम्भ किया था। वहाँ गिता तथा व्यवसाय में प्रसन्नजित वर्ग नवयुवकों के सम्पर्क में आकर उनकी सहायताय कुछ अधिकाश विविध कार्य करने की उमकी दत्त सबबतर होती गई। अतएव १९५ के लगभग उमन

ब्र = बिनस स्टीवियट (जीविकोपार्जन सस्या) स्थापित की तथा इसके माध्यम से वह नवयुवकों को यावसायिक निर्देशन देने का कार्य सगठित करता रहा। मानवीय इतिहास में सबप्रथम यावसायिक निर्देशन 'यवसायिक यूरो' तथा यावसायिक परामर्श दाता पदाधारियों का प्रयोग हुआ। निर्देशन सेवाओं के इतिहास में एक पासस यावसायिक निर्देशन का पिता तथा वास्टन का शहर व्यावसायिक निर्देशन का पाठना के नाम से विख्यात हुए।

१९६५ में पासस के असामयिक निधन के उपरांत भी यूरो का कार्य उसके उत्साही अनुयायियों द्वारा चालू रहा। एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम उस घोर विध्वंसक प्रज्वलन काय द्वारा उठाया गया — और अतृप्तता यह यूरो विश्वविख्यात हारवर्ड विश्वविद्यालय का यावसायिक निर्देशन यूरो बना। उस समय वास्टन के विद्यालयी सतार ने भा विद्यार्थियों को यावसायिक सहायता देने के कार्य में हाथ बटाना प्रारम्भ किया तथा शालाया अधिकारियों ने दूर क्षत्र में सक्षिय उत्तरदायित्व सम्भाला। व्यावसायिक निर्देशन का भोका वास्टन से अत्यंत स्थाना पर अतना द्रव गति से पहुँचा कि १९६१ में व्यावसायिक निर्देशन की एक राष्ट्रीय सभा का अस्तित्व में आयोजन हुआ उस सभा में अमरीका के अन्तर्गत अन्तर्गत का प्रतिनिधित्व रहा।

इस प्रकार स्थानीय अभिवरण तथा शक्षिक सस्याओं के सम्मिलित प्रभाव से यावसायिक निर्देशन का कार्य अत्यंत अक्षयवान में भी अत्यंत प्रभावशाली रूप से अपने निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति करता रहा। अमरीका के विभिन्न क्षेत्रों में अत्यंत अत्यंत लोकाप्रियता तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई।

(ग) भारत में यवस्थित निर्देशन का प्रारम्भ

जसाकि हम पहले ही कह चुके हैं निर्देशन का इतिहास भारतवर्ष तथा अमरीका में एक प्रबल साम्य दर्शाता है। जो समय के दृष्टिकोण से यह पश्चिम से लगभग आधी शताब्दी पिछड़ा हुआ है किन्तु निर्देशन सम्बन्धी सप्रत्यया के जन्म तथा विकास दानी देशों में लगभग समान परिस्थितियों में सहात हुए एक समान रूप में प्रतीत होते हैं।

भारतवर्ष में निर्देशन का इतिहास लगभग दो दशक प्राचीन ही है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात उसके सम्बन्ध में यह है कि भारत में भी यवस्थित निर्देशन का जन्म मानव की यावसायिक आवश्यकताओं में ही हुआ। नवयुवकों का यवसाय सम्बन्धी सचक्षाएँ देने हेतु किए गए 'लोकहितपी नागरिकों के उदार प्रयासों में ही इसका प्राथमिक प्रादुर्भाव हमारे देश में ही दृष्टिगोचर होता है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में विश्व की उद्योग क्रांति की लहर के भोके से सामीप्य भारत भी बिरकुल अक्षुण्ण नहीं रहा था। फिर इस देश में भी विशाल औद्योगिक नगरों की समस्याएँ किसी भी अ्य देश के औद्योगिक केन्द्रों से बहुत अिन

नहीं हो सकती थीं। औद्योगिक भारत में वर्म्वर्क पारव र का म व ही एक ऐतिहासिक महत्व रहा है। बीमरी शान्ति के लगभग मध्यकाल में औद्योगिक हस्तचक्र की संवदना म नगरी म अग्रिम हुई। यहाँ के व्यापार मस्तिष्की नागरिकों ने नवयुवकों को व्यापार उद्योग की नई नितियों के लिए तैयार करने के लिए उन्हें व्यावसायिक जीवन के प्राथमिक तथ्यों से परिचित प्रबुद्ध करना चाहा।

तदनुसार वर्म्वर्क म इस समय पारसी पचायत 'यूरो' नामक एक नाव-हृतपी अनीवाचारिक संस्था की स्थापना हुई। पश्चिम म उद्भूत निर्देशन की प्रारम्भिक व्यवस्थित संस्थाओं के संज्ञा हा मकरा नामकरण भी पारसी पचायत वाक्यशतक का देस 'यूरो' हुआ।

एतत्काल म दूसरा अयत्त ही रचिकर साम्य यह है कि पश्चिम के समान ही इस 'यूरो' ने भी अपनी प्राथमिक निर्देशन किया साहित्यिक प्रकाशना के माध्यम से की। छात्रो-छात्रो पुस्तिकाओं के द्वारा यह यूरो अयत्त ही सरन तथा व्यावहारिक रूप से नवयुवकों को नवीन व्यवसायों सम्बन्धी सूचनाएँ प्रसारित करने लगा। इसके साथ ही यह 'यूरो' का सबसे महत्वपूर्ण कार्य रहा एक चिरस्मरणीय पत्रिका का प्रकाशन जिसका नाम 'गणतन्त्र' था। बोक्सेटल माइन्स कहा। इस पत्रिका म 'रावर' उल्लिखित होती गई तथा यह भारत म निर्देशन आन्दोलन और गतिविधियों के सम्बन्ध म सूचना प्रसारण का एक मुख्य माध्यम रही। यह पत्रिका आज भी प्रायः इण्डिया बोर्डिंगन एण्ड बोर्डिंगन गान्डेस प्रसोत्तियशन की मुख पत्रिका है। आ यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भारतवर्ष म निर्देशन सेवाओं के क्षेत्र म यह 'यूरो' का काम अयत्त ही महत्वपूर्ण रहा।

यस 'यूरो' के संचालक डा. होशाग मेहता थे जिनका नाम आज भी व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र म अयत्त प्रादुर पुर्वक किया जाता है तथा जा अशी भी के द्रीय मन्त्रालय के बोर्डिंगन गान्डेस यूनियन म सम्माननीय पद पर स्थित हैं। इनकी विद्वत्पत्नी डा. श्रीमती परित मेहता न भी प्रारम्भ से ही इस कार्य म रुचि ली तथा कोनम्बिया विश्वविद्यालय से निदेशन म अग्रिम योग्यता प्राप्त की। व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्रीय 'यूरो' की भी वे संचालिका रही। मिनिस्ट्री आफ लेबर मे डा. होशाग मेहता द्वारा व्यवसायिक निर्देशन के क्षेत्र म राष्ट्रीय महत्व का कार्य किया गया। अमरीका म राष्ट्रीय स्तर पर विकसित 'ट्रिगनरी' आफ 'आक्यूपेशन्' की ही दिशा मे क्षेत्रीय बोर्डिंगन गान्डेस यूनियन म मेहता ने भारतवर्ष म भी व्यवस्थित ढंग से व्यवसायों का राष्ट्रीय सर्वोपरि (नेशनल कन्सिफिकेशन् आफ आक्यूपेशन्) करवाया तथा राष्ट्रीय और प्रान्तीय दोनों ही स्तरों पर विविध व्यवसायों म प्रशिक्षण अवसरों पर अयत्त मयवान साहित्य का प्रकाशन किया। निर्देशन आन्दोलन के प्राथमिक काल म अमरीका मे प्रकाशित व्यवसाय सूचना सम्बन्धी सरन साहित्य की ही भाँति डा. मेहता के डी.जी.आर.एण्ड ई (डान्देवटरेट जनरल आफ रिहर्विनिटेन्स एण्ड एम्प्लायमट) ने भारत म प्रचलित विविध व्यवसायों से सम्बन्धित छोटे छोटे

केरियर पेन्शनरटम काशित किए जिनमे व्यवसाय सम्बन्धी सत्रम सूचना के साथ साथ उसम आवश्यक प्रशिक्षण सम्बन्धित सूचनाएँ भी सुरूपष्ट रूप से समाहित की जाती रही । ये पत्रिकाएँ विद्यार्थियो तथा उनके अभिभावका के लिए भी अत्यन्त ही लाभप्रद सिद्ध हुई ।

अमरीका के समान ही व्यावसायिक निर्देशन आन्दोलन भारत के अन्य प्रान्ता म भी प्रसारित हुआ । कुछ प्रान्ता म स्वतन्त्र रूप से व्यावसायिक निर्देशन ब्यूरोज स्थापित करने व अतिरिक्त कनिषम मनोवैज्ञानिक ब्यूरोज ने भा निर्देशन के साथ म वैज्ञानिक रचि केना प्रारम्भ किया । इनम प्लाहावाद ब्यूरो आफ साइकोलाजी का नाम उल्लेखनीय है ।

किन्तु भारतवर्ष के सम्बन्ध मे स्मरणीय तथ्य यह है कि महा निर्देशन का बीजाकुर तो व्यावसायिक क्षेत्र म हुआ ही किन्तु इसके विकास तथा वनमान स्थिति म 'व्यावसायिक' सप्रत्यय की पुष्ट अत्यन्त प्रबल रही ।

(घ) 'व्यावसायिक' उपसर्ग का महत्त्व एवं अभिप्रेत अर्थ

पूर्वीय तथा पश्चिमीय दोनो ही देशो मे निर्देशन के प्राथमिक बीजाकुरो की उपयुक्त गाथा एक तथ्य की ओर सचेत करती है । स्पष्ट है कि व्यवस्थित निर्देशन के सप्रत्यय का ही जन्म 'व्यक्तियो की व्यावसायिक आवश्यकतायो तथा व्यावसायिक समायोजन के प्राथमिक प्रयत्नो म हुआ । जो भी यह सत्य है कि कालान्तर म इसका साथ शिक्षण तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्रो मे विविध विवर्तित हुआ पर्यपि तसा कि हमने देखा इसके प्रारम्भिक काल स तो शिक्षाविदा अथवा मनोवैज्ञानिका को इससे कोई सम्बन्ध नही रहा । इसके मौलिक उत्पन्न की गाथा तो व्यक्ति के 'व्यावसायिक' जीवन के साथ ही संबल रूप से सगठित है । कदाचिन यही कारण रहा होगा जिसने निर्देशन शब्द व पूव प्रयुक्त उपसर्गो म से 'व्यावसायिक' विशेषण को सर्वाधिक लोकप्रिय बनाया । जवसे निर्देशन शब्द का प्राविधिक प्रयोग जीवन मे शोध चारिक मागदर्शन अथ साधारण अर्थ से अधिक विविष्ट अर्थ म होने लगा तभी से व्यावसायिक विशेषण निर्देशन के साथ जुडा और आज भी सर्वसाधारण लोकधारणा के अनुसार निर्देशन का गुणाथ ही है व्यावसायिक निर्देशन । अपने धाधुनिक वैज्ञानिक स्वरूप को प्राप्त कर चुकने पर भी यह विषय निर्देशन शब्द के साथ इतना अधिक सम्बन्धित हा चुका है कि पश्चिम तथा भारत दोनो स्थानो पर यह उपसर्ग एवं लम्बी अवधि तक निर्देशन के साथ प्रयुक्त होता रहा । भारतवर्ष म तो अभी भी न केवन सामान्य जनता के मानस मे अपितु शिक्षा जगत म भी निर्देशन का सप्रत्यय व्यावसायिक निर्देशन के रूप में ही प्रवस्थित है शाश्वतलिया के प्रयोग में भी इसी पदावली का प्रचलन लोकप्रिय है । इसके इस सम्बन्ध प्रयोग व विषय में एक ओर तथ्य की ओर वाचको का ध्यान आकषित करना चाहता हूँ ।

यह एक सामान्य अनुभव तथा साधारण ज्ञान की बात है कि व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन समञ्जन में उसका यावसायिक समञ्जन एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। वस्तुतः उसके जीविकापान में सम्बंधित क्रियाएँ या उमर समस्त जीवन में कर्त्तीय महत्त्व हाना एक अविचार्य वास्तविकता है। जीवन की मोर्चिनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का मुख्य साधन हान के कारण व्यक्ति अपने व्यवसाय को सर्वाधिक मायता ता देता है। किन्तु एक साथ ही उसके सामाजिक ध्यनितगत जीवन का सन्तोष प्रसन्नता भी एक बड़ा घना सीमा तक उमर यावसायिक समञ्जन से अनुबंधित रहता है। अपने जागृत जीवन का लगभग दो तिहाई भाग व्यक्ति अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्व पूर्ण करने में व्यतीत करता है। प्रताण्ड स्वाभाविक है कि उमर जीवन का सामाजिक पक्ष भी उमर व्यावसायिक महत्त्वमित्री के साथ अंतरंग रूप में घना मित्रा रहता है। उनके साथ समान रचि सूचना ज्ञान आदि की सम्भागिता हाने के कारण व्यवसाय की औपचारिक सगति व अतिरिक्त अपने अनौपचारिक सामाजिक सम्बंधों में भी सामान्यत एक ही व्यवसाय के यत्नित एक-दूसरे के निकट आ पाते हैं। वे एक ही भाषा बोलते हैं वस्तुतः एक दूसरे की चोरी सम्भन है। निरंतर किए जाने वाले काय में रचि विश्वास अवधान अनास्था कौशल्य अनुभिनता यत्नित के उस व्यवसाय की क्रियाओं में प्राप्त यत्नितान सन्तोष को भी प्रभावित करती है यही सन्तोष अन्तोष अपने मन में समटे प्राय ध्यवित्त काम करके घर लायता है। स्वभाविक है कि यह साथ की सुशिक्षा उसका घर में भी बिगने पर वहा पर प्राप्त मायताओं व सन्तोषों का प्रकाश उमरक गृह जीवन को भी आनीकित कर दे। किन्तु यह भी आशंका हो सकती है कि वहा के तनावपूर्ण पर्यावरण की दमिती धृष्टाण्ड विश्चिया उसके सहज सुख से परिपूर्ण घरेलू जीवन में एक ऐसा विष घोलने जिनकी कटुता की वृत्त तथा उमरके कुम्भ के सदस्य दोनों ही न सम्भन पाव। कार्यालय में अपने स्वामी के हाथ अनावश्यक रूप में अपने सम्मान पर ठम पाते हुए विवशता पूर्वक मौन साधने वाला यत्नित जब न ध्या समय घर आते ही अपने भोजने वालक की स्वाभाविक जिना आभा पर भुभला उठता है अथवा निर्दोष पानी के मुख से घर की नेमी आवश्यकताओं का विवरण सुनकर सन्तुलन खो बन्ता है तब उसकी मन अपसामान्य मनोस्थिति पर उसके घर के यत्नित किन्तयविमूढ हा जाते हैं। कर्त्त वार व स्वयं अपनी अचिन्ता दुराग्रत दुबनता के कारण नहीं सम्भन पाता उमरक सजान हा सकना कर्त्तन है कि घर की ये सामान्याभासित घटनाएँ तो केवल ये अवक्षेपक कारण हैं जोकि कर्त्त सचित पुर प्रवतक तथा शाश्वतक कारणों के गहन के लिये केवल एक नगी सी अग्नि कशिका का काय कर रहे हैं। वहन का तापय यह कि यत्नित के व्यावसायिक जीविका का सन्तोष प्रसन्नता केवल उसकी व्यावसायिक दृष्टि अतृष्टि तक ही सीमित नहीं रहता। वह उसके सम्पूर्ण सामाजिक व्यक्तिक तथा घरेलू जीवन को भी सबन रूप से अनुबंधित करता है।

एनी परिवर्तित न बना गाएनप है यदि यक्ति अपन समूह जीवन म अपन प्रवृत्तय को प्राथमिकता द ? सोप म हग कह सऱने है कि यक्ति का समस्त जीवन समजन तक बन्त बनी सीमा तक उसके यावसायिक समजन पर निर्भर करता है । व्यवस्थित निर्देशन र बीजाकुरा की भाषा स यह भी स्पष्ट हुआ रि मानव की व्यावसायिक समस्थाया म ही उन विविध माग दर्शन देने की प्राथमिक याजनाए भी बनी था । अतएव जीवन-समजन के मुख्य आधार यावसायिक समजन के हा इ गिद यदि हम अत्र न वायवर्तना का निन्तन बढवा रहा ता बसमे को धारतय की बात नही है । फलस्वरूप निर्देशन शब्द के साथ नाना उपयोगों में से यावसायिक सबसे अधिक समय तक उनके साथ प्रयुक्त रहा । जीवन की सजाव आवस्यकताया म जो प्रथम विशेषण निर्देशन क नाम के साथ जुग बह आज निर्देशन के विरहित तथा यापक युग म भी जनमन म गन्रा के साथ अहित है । हमारे दश म ता घनी भी निर्देशन अधिकरणो का नामकरण अधिकांश म यावसायिक निर्देशन मूरा ही होता है ।

निर्देशन शब्द के साथ हम प्रकारक उपयोग प्रयुक्त करने से हमके सदा निक सप्रत्यय तथा व्यावहारिक भाय क्षत्र म जो अज्ञेयताय दीमिनाए उत्पन्न हानी है उनका विवचन आग करये । यगी तो इसक परिवर्तित तथा विराममान सप्रत्यय म यावसायिक निर्देशन की धारणा का महत्व निर्देशन आन्दोलन के प्राथमिक बीजाकुर क रूप म प्रस्तुत मात्र किया जा र्ना है ।

(२) निर्देशन क सप्रत्यय का विकास शक्ति निर्देशन

(क) पश्चिम मे

पश्चिम क यावसायिक जीवन म निर्देशन के बीजाकुरा के प्राथमिक प्रस्तुतन क विवरण म हमन गिद कर दिया था कि स्थानीय भागिक अधिकरणो क श्रेय हितया नाम की परिपुष्टि म यह गिद तथा मस्याया मे भी विद्यायिया को सह दिना म व्यवस्थित सम्पदा ये हंग सन्धय चरण उठाए म । यावसायिक निर्देशन मूरा तथा व्यावसायिक निर्देशक प्रशिक्षण कद्रो की स्थापना कतिपय विख्यात विस्त विद्यालया के अन्तरय विभागा के रूप म जो कुली थी तथा मा-प्रगिक स्तर पर शिक्षा बिदु मूर शिक्षा अधिकारी भी इस शिक्षा में सन्धय रुचि देने लग थ । फिर भा सामायत निर्देशन वायवर्तना का ध्यान इसके व्यावसायिक पक्ष पर ही केन्द्रित था । अमरीका में इस समय व्यावसायिक निर्देशन आन्दोलन को प्रभावित करण वाला दो राष्ट्रीय विचारधाराए बगानिक प्रयत्न व्यवस्था तथा सन्धारा शिक्षा के नाम से प्रचलित था ।

औद्योगिकरण क इस तकनीकी युग में व्यवसाय सम्बन्धन हेतु प्रबन्ध-व्यवस्था की अधिकाधिक रूप से बनावित बगाना आवश्यकता था । लागत के न्यूनतम उपयोग स मनहुतवम उत्पादन हो सक यह सामायत उद्योग की मूल समस्या रहती है ।

म हन के समाधान में मनुष्य कायकर्ताओं के प्रशिक्षण चयन नियुक्ति तथा पत्रोन्नति के प्रश्न निहित रहते हैं। स्वभाविक है कि औद्योगीकरण की प्रगति के साथ व्यवसाय व्यवस्थापक इस प्रकार के प्रश्नों से चिन्तित रहते थे। व्यावसायिक निर्माण का भी इन आन्दोलनों से सम्बन्ध था वनानिक व्यवसाय व्यवस्था आन्दोलन से उसे और भी अधिक स्फूर्ति प्राप्त हुई। औद्योगिक उन्नति हेतु वनानिक ढंग से कार्य संचालन का पत्रस्वरूप यासायपट्ट उद्योगशास्त्रियों ने यह भी अधिकाधिक अनुभव किया कि किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने हेतु कार्यकर्ताओं में एक विशिष्ट क्षमिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है। पृष्ठभूमि में प्रवेश व्यवसाय की आवश्यकताओं का अनुस्यूत बनाने से सम्बन्ध है। विविध व्यवसायों के अन्तर्गत लिए गए व्यवसाय विशेषणों तथा समय व गति शोधा का माध्यम से वनानिक औद्योगिक व्यवस्थापक इस प्रकार की विशिष्ट कुशलताओं का निर्माण विभिन्न व्यवसायों हेतु कर रहे थे। इनके परिणामों का आधार पर ही विविध व्यवसायों में प्रवेश तथा सफलता प्राप्त करने हेतु अनुस्यूत प्राविधिक प्रशिक्षण की योजना बनाई जा सकती थी। साथ ही चयन तथा पत्रोन्नति के समय भी कार्यकर्ताओं में इन कुशलताओं का अस्तित्व एक वनानिक मापदण्ड हो सकता था।

इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना तथा पारण में प्रवेश पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के स्वरूप के सम्बन्ध में एक तथ्य प्रविधाधिक स्पष्ट होता था। उत्तरोत्तर रूप से यह आस्था प्रबल होने लगी कि इन कार्यक्रमों में एक व्यावहारिक वास्तविकता का पुष्ट होना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों की वक्षताओं में लिये जाने वाले सैद्धांतिक ज्ञान की सम्पूर्ति व्यवसाय स्थल पर दिये गये वास्तविक प्रशिक्षण द्वारा की जानी चाहिए। इस प्रकार की सम्पूर्ति को प्रतिपादित करने वाली विचारधारा सहकारी शिक्षा का नाम से विकसित हुई। फ्रैंक पामर्स के समय में यह डाइडर का नाम इस आन्दोलन में उल्लेखनीय है। डाइडर इस समय सिसिनोटी विररविद्यालय में इंजीनियरिंग महाविद्यालय के प्रमुख थे। व्यावसायिक निर्देशन आन्दोलन से निकट रूपेण सम्बन्धित होने पर भी सहकारी शिक्षा पद्धति में व्यावसायिक निर्देशन की अती आवश्यकता नहीं थी जितनी कि कार्यक्रम-संयोजकों की। जगति इस नामकरण से ही स्पष्ट है। कार्यक्रम संयोजकों से यह अपेक्षित था कि उनमें—व्यवसाय की आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रवेश पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण के उद्योग क्षेत्र की परिस्थितियों—तीनों के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान व अवबोध हो। इस अवबोध का आधार पर वे प्रशिक्षण के दोनों पक्षों—ज्ञान का सैद्धांतिक ज्ञान तथा व्यवसाय क्षेत्र का व्यावहारिक अनुभव—में समचित्त सम्बन्ध स्थापन कर सकते थे। साथ ही शक्षकिक प्रशिक्षण क्षेत्रों में अनुभव तथा व्यावसायिक कार्य में एक सुन्दर समायोजन उपलब्ध कर सकते थे। इस प्रकार के प्रवेश पूर्व संयोजित प्रशिक्षण से प्रशिक्षार्थी कार्यक्षमता में व्यवसाय में सफलता हेतु अपेक्षित ज्ञान, सूचना तथा व्यावहारिक दक्षता

दोना के ही विकसित हान का वन्त अधिक सम्भावनाएँ थीं। पहल हा कहा जा चुका है कि व्यवसाय में अधिन कुशलताया का निदान व्यवसाय विश्लेषण तथा अन्य शोध प्राविधिया द्वारा कर लिया जाता था तथा इनके परिणामों के आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अधिक वास्तविक योजनाएँ बनाई जाती थीं। इस प्रयोग द्वारा उत्पादन की परिमाणगतक तथा सुरक्षात्मक—दोना प्रकार से बढ़ि हुई तथा व्यावसायिक क्षत्र में अधिक सफलता प्राप्त हुई।

व्यावसायिक निर्देशन के उद्देश्यों से निकट सामाज्य रत्नक कारण वन्त प्रयोग का भी निर्देशन आन्दोलन पर पर्याप्त प्रभाव पना। सबसे अधिक स्पष्ट तो यह प्रभाव निर्देशन के परिवर्तित होत हुए सप्रत्यय में प्रतिबिम्बित हुआ। उद्योग में वधानिक प्रवृत्त व्यवस्था तथा सहकारी शिक्षा पैना ही आन्दोलना ने व्यावसायिक तथा शक्षणिक निर्देशन के निकट अन्तसम्बन्धों की ओर कायकताया का ध्यान आकर्षित किया था। इस क्षेत्र में यह उत्तरात्तर रूप से स्पष्ट होना गया कि शक्षणिक निर्देशन का श्रुयता में व्यावसायिक निर्देशन नहा दिया जा सकता। किसी भी व्यवसाय का चयन करने हेतु तथा उत्तम प्रयोग प्राप्त करने हेतु निर्देशन देने के पूर्व व्यक्ति को सम्बन्धित शक्षणिक कार्यक्रमों के चयन तथा समुचित प्रशिक्षण के माध्यम से अपेक्षित व्यावसायिक दक्षताएँ प्राप्त करने के उद्देश्य से निर्देशन देना भी एक महत्वपूर्ण पदावश्यकता है। इस प्रकार की आस्थाया व पत्रस्वरूप अभी तक के व्यावसायिक निर्देशन के प्रकार प्रकार में एक अन्तर-ही प्रायाम शक्षणिक निर्देशन के नाम से जुटा निर्देशन के स्वरूप की व्यावसायिक सप्रत्यय की अनुचित सीमाओं से मुक्ति हुई तथा उसका अधिन-व्यावसायिक निर्देशन के अपेक्षावृत्त विरगृत क्षत्र में विकास हुआ। जना अद्यपुण व्यावसायिक निर्देशन देने हेतु सम्बन्धित पत्र प्रशिक्षण की महत्ता अधिनविक स्पष्ट होने लगी वहा सप्रयोजन शक्षणिक निर्देशन देने के लिये भा व्यक्ति की व्यावसायिक अपेक्षाया आशाया अधिनयाया तथा क्षमताया को ध्यान में रखना आवश्यक समझा जान लगा।

इस प्रकार दासवा शताब्दी के द्वितीय दशक में व्यावसायिक तथा शक्षणिक निर्देशन के निकट अन्तसम्बन्ध एक उनका अधिनवाय अधिन्यायिता अधिकाधिक स्पष्ट हा चली। न्य अन्तसम्बन्ध में वधानिक सज्ञान में हूमन केनी का नाम उन्नत नीय है। इन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से सन १९१४ में अपनी डाक्टरल थीसिस शक्षणिक निर्देशन में व्यावसायिक तथा शक्षणिक निर्देशन का सम्बन्ध शक्षण के आधार पर प्रदर्शित किया।

हम देख चुके हैं कि "ग्लोब" में भी निर्देशन का प्राग्भ मानव की व्यावसायिक आवश्यकताया में हा हुआ था तथा वहा पर नी राष्ट्रीय औद्योगिक केन्द्रों वन्त विषय में विशेष रचिनी था। विन्नु समय की गति के साथ ब्रिटन में व्यावसायिक निर्देशन की व्यवसाय-सम्बन्धी सहाह प्रशिक्षण तथा नियोजन के रूप में देखने की अपेक्षा उत्त मोटे रूप से शक्षण कार्यक्रम का ही एक अग्र गानने की

प्रवृत्ति रहा। इन्द्रजित् ने मनु १६४४ के अङ्कगणन एवम् के प्रभावस्वरूप जय शक्ति वायु शास्त्रीय शिक्षा का ब्यवहार बढ़ा दिया तब माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन का यात्रा का अधिक समय बनाने का आवश्यकता का प्रारम्भ का ध्यान प्रकटित हुआ। भारत में १९४० के आरम्भ के बाद ही निर्देशन का प्रारम्भ हुआ। भारत में १९४० के आरम्भ के बाद ही निर्देशन का प्रारम्भ हुआ।

माध्यमिक स्तर पर विद्याभ्यास का व्यावसायिक आवश्यकता के प्रति हम सोचना के फलस्वरूप शास्त्रीय मन्त्रालय 'कॉमर्स' के पक्ष का प्रारम्भ हुआ। यह एक शक्ति तथ्य है कि भारतवर्ष में माध्यमिक शिक्षा में शक्ति व्यावसायिक सूचनाएँ प्रसारित करने के लिए निर्देशन कार्यक्रमों का निर्माण 'कॉमर्स' के स्वीकार किया। यह एक शक्ति तथ्य है कि भारतवर्ष में माध्यमिक शिक्षा में शक्ति व्यावसायिक सूचनाएँ प्रसारित करने के लिए निर्देशन कार्यक्रमों का निर्माण 'कॉमर्स' के स्वीकार किया।

(ख) भारतवर्ष में

भारत में यह कहा जा सकता है कि भारतवर्ष में निर्देशन के तत्त्व बहुत चिन्तित 'व्यावसायिक' मन्त्रालय से विस्तृत होकर शक्ति वायु से मयक्त हान के प्रकृत में लगभग 'मा' प्रकार का विचारधारा एवं गतिविधियों रही जिन प्रकार की हमने परिचय में देखा। यों तो निर्देशन 'प्राथमिक' स्तर में ही निर्देशन के शक्ति तथा व्यावसायिक दोनों के अन्तर्भावों का मन्तव्य तो पाया जाता था। किन्तु माध्यमिक शिक्षा के विद्याभ्यास के लिए शक्ति निर्देशन का महत्वपूर्ण आवश्यकता के प्रति दार्शनिक संकल्पना मनु १९२२ के माध्यमिक शिक्षा सर्वेक्षण के पश्चात् तत्पश्चात्। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शालाया विद्याभ्यासों का परिर्वर्षित सम्यक् का ध्यान प्रकटित करने के लिए शक्ति विभिन्नताओं का मन्तव्य प्रकटित का। उसने स्पष्ट किया कि शिक्षा यात्रा का हम मन्तव्य विकासमान जनता का बुद्धि शक्ति शक्ति प्राप्त में वर्धित हान के कारण मन्तव्य के लिए एक ही शक्ति कार्यक्रम के उपाय नहीं सिद्ध हो सकता। एक साथ ही विद्यार्थियों का शैक्षणिक शक्ति के परिर्वर्षित में भारत में ही विभिन्न प्रकार के उपायों का व्यावसायिक प्रकटित कार्यक्रम प्रकटित करने के उपाय प्रकटित किया। उक्त दाना आवश्यकताओं के सम्बन्ध में शक्ति न केवल शक्ति के माध्यमिक विद्याभ्यास का यात्राएँ प्रकटित का।

किन्तु हम प्रस्तावित के साथ। उक्त एक अन्तर्गत महत्वपूर्ण तथ्य की शक्ति शिक्षा में ही ध्यान प्रकटित किया। उक्त स्पष्ट रूप से कि उक्त शक्ति पाठ्यक्रमों का यात्राएँ मन्तव्य म हा मन्तव्य निवारित शक्ति की शक्ति ही कर सकता। यदि व्यक्ति का क्षमताओं के उपाय मन्तव्य के साथ शक्ति के उपाय मन्तव्य मन्तव्य अन्तर्गत मन्तव्य करना है तो व्यक्ति मन्तव्य क्षमताओं तथा शक्ति का व्यावसायिक यात्राओं के मन्तव्य म हा शक्ति मन्तव्य पाठ्यक्रमों में निर्देशन करना शक्ति वायु हाश।

अतः जिन उद्देश्यों को लेकर बहुउद्देशीय शक्षिक संस्थाओं का जन्म हुआ था उनकी वास्तविक उपनधि धनु शक्षणिक तथा यावसायिक निर्देशन के निकट अन्तसम्बन्ध तथा अवाग्यायिता की अनुभूति शिक्षा जगत के लिए आवश्यक समझी गई। अतः हम कह सकते हैं कि भारतवाय समाज में विकासमान शक्षिक कार्यक्रमों को लागू करण की परिधिधित योजनाओं तथा इन योजनाओं में अन्तगत आयोजित विभिन्न व्यवसायों के विशिष्टीकरण न शक्ति तथा यावसायिक निर्देशन के पारस्परिक सम्बन्धों की स्पष्ट किया।

यह मास्था दस में सन सन बन्द पकचने लगी। निर्देशन ब्यूरो के नामकरण में निर्देशन शब्द के पूर्व शक्षिक - व्यावसायिक दोनों ही उपसर्ग सम्मिलित रूप में प्रयुक्त होन लगे। राष्ट्रीय स्तर पर निर्देशन सघ का नामकरण भी अन्तः दृष्टिवाय एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेस असासिण्डन द्वारा तथा पारसी पचायत ब्यूरो की जा प्रारम्भिक मुखर्षि का इय असासिण्डन द्वारा चन रही थी उसका नाम भी अन्तः अय एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेस हुआ।

(३) निर्देशन के सप्रत्यय में अग्रिम विस्तार - यक्तिगत - सामाजिक निर्देशन

(क) परिचय में

अपने प्रारम्भिक विकासमान वर्षों में निर्देशन का काम शक्षिक-व्यावसायिक निर्देशन के नाम में सामान्यतः मात्रात्मिक शान्ता के विद्यालयों एक उनके समवर्षी नवनिशोरा तन ही सीमित रहा। ऐसा अनुमान था कि महाविद्यालय में पढन वाले नवयुवकों को इस प्रकार के निर्देशन की बहुत आवश्यकता नहीं था।

अमरीका में महाविद्यालयों में निर्देशन का काम इस स्तर पर अध्ययन करने वाली नवयुवकियों का सामाजिक यक्तिगत आवश्यकताओं में प्रारम्भ हुआ। जब प्रथम बार वन में महाविद्यालयी जीवन में युवतियाँ उच्च अध्ययन हेतु प्रवेश देने लगी तो सह शिक्षा से उद्भूत सामाजिक यक्तिगत समस्याओं की आशका शैक्षिक अर्थि परिवारों को चिन्तित करने लगी। अतएव उद्दे सन एनो में निर्देशन देने हेतु एक मर्हता पदाधिकारी बाडन एन की स्थापना की गई। तत्पश्चात् उस पद का विश्व विद्यालयों में विद्यालयों के डीन के रूप में विकास हुआ। तदनन्तर महाविद्यालयों में भा गिर्तायियों का संस्था वषमान हान के कारण नवयुवकों के लिए भी डीन की प्रवस्था की जाने लगी। जब जब अमरीका के कई महाविद्यालयों में युवक युवतियों के यक्तिगत सामाजिक समस्याओं में विविध भाति का निर्देशन देने हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जाने लगे। महाविद्यालयों में छात्रों की संख्या में वद्धि विश्वविद्यालयों के आधार प्रकार में अग्रतपूर्व वषन तथा इनमें दिए जाने वाले शक्षिक कार्यक्रमों का भा असीम विविधता के कारण पाया जाने लगा कि प्रायः शाला के अग्र सशुत संरक्षित पयावरण से आने वाले छात्र सहसा इतने विकास शक्षिक क्षेत्र के बहुमापामी अधिध्य में सम्भ्रात हो जाते थे अपने आपको खोया हुआ

सा पाते थे। इनके बच्चे बड़े विश्वविद्यालयों में जाकर प्रथम श्रेणी में छोटी मोटी नगरियाँ के सहृदय ही थे शक्ति चयन तथा समायोजन के अनिश्चित भी बच्चे प्रथम समस्याओं का सामना प्रदर्शार्थियों को करना पड़ता था। वहाँ के छात्रावास प्रथम उमर बाहर आवास-स्थान प्राप्त करना भोजन विद्यालय मनोरंजन की सुविधाओं के विषय में प्रवृत्त होना प्राथमिक समय-यथसाय के अवसरों के विषय में मूचनाएँ प्राप्त करना प्रथम विविध भाँति के बच्चों से पुस्तकों प्राप्ति सम्बन्धी सहायता प्राप्त करना ये घोर हस्त प्रकार की प्रथम समस्याएँ थीं जिनमें महाविद्यालयी छात्र की सहायता की आवश्यकता होता था। इस प्रकार की सहायताएँ देना हनु विश्वविद्यालय में भाँति भाँति के व्यवस्थित अभिप्रायण वापसियों की भी प्राप्ति होनी पड़ी। निर्देशन का प्रत्यय के इस विस्तृत विचार में हम दो प्रकार का परिवर्तन स्पष्ट देखते हैं प्रथम तो व्यवस्तर सम्बन्धी तथा द्वितीय जीवन के प्राथमिक सम्बन्धी। व्यवस्तर में निर्देशन का कार्य क्षेत्र का विस्तार माध्यमिक कक्षा के नवनिष्कारण से महाविद्यालय की उच्च कक्षाओं में अध्ययन करने वाले व्यक्तियों तक हुआ। जीवन प्राथमिक के दृष्टिकोण से निर्देशन का केवल व्यवसाय चुनाव में सहायता देने से विस्तृत होकर प्रथम शक्ति के व्यावसायिक व्यक्तिगत तथा सामाजिक सभी प्रकार के क्षेत्रों में व्यक्ति का मार्गदर्शन करने में विस्तृत होने लगा।

(ख) भारत में

इस प्रकार के विस्तार का भारत में परीक्षण करने पर पता चला ऐतिहासिक समानांतरता पाई जाती है जोकि इस विद्वत् पूर्वाश्रय विवेचना में हम दृष्टिगाचर हुई थी। भारतवर्ष में भी निर्देशन का मानव के व्यक्तिगत सामाजिक पर तत्काल विस्तार महाविद्यालय में प्रवेश पाने वाले नवयुवक-युवतियों अथवा उच्चतर माध्यमिक शालाओं की प्रतिष्ठित कक्षाओं में सन्निहित प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं की समझन-समस्याओं में हुआ। हमारे यहाँ भी सह-शिक्षा और सत्रात्मक बय दोनों में मिश्रित निर्देशन कार्यकर्ताओं का ध्यान इस बय की विशेष कठिनायियों के प्रति आवृत्त किया। मनोविज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिगामी बढती विश्वविद्यालय में प्रथम बार विद्यार्थी निदेशन की व्यवस्थित रूप से स्थापना हुई। यो हम व्यवस्तर पर तथा महाविद्यालयों में छात्रों के व्यक्तिगत सामाजिक समझन में निर्देशन की आवश्यकता की संवेदना तो भारत में बर्तमान समय पर हुई किन्तु इस सम्बन्ध में व्यावहारिक कार्य बहुत अधिक नहीं हो पाया। बम्बई तथा दिल्ली के महाविद्यालयों से सम्बन्धित कतिपय व्यक्तियों ने इस विषय पर साहित्य-सृजन अवश्य किया किन्तु इसका कोई प्रकाश्यात्मक स्वरूप हमारे यहाँ स्पष्ट रूप से विकसित नहीं हो पाया। सुरक्षित शारीरिक जीवन से महाविद्यालयों के अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र तथा स्व-उत्तरदायित्वपूर्ण वातावरण में प्रविष्ट हस्त समय तथा उस शिक्षा स्तर पर अध्ययन अध्यापन की परिवर्तित परिस्थितियों के सम्बन्ध में भी महाविद्यालयों में प्रवेश पाने वाले छात्रों को बर्तमान विविध समझन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस

प्रकार की कठिनाइयों में निर्देशन देने की धोर भारतीय कार्यकर्ताओं ने कोई सनिय काम नहीं उठाए। इसके अतिरिक्त हम देख चुके हैं कि अद्यतन विश्वविद्यालयों की अपना कतिपय विशिष्ट समस्याएँ होती हैं। अतएव ऐसे स्थानों पर पश्चिम में नवीन प्रवृत्तियों के लिये 'यथस्थित रूप से अभिस्थापन कार्यक्रमों का आयोजन करना निर्देशन का एक विशिष्ट उत्तरदायित्व समझा जाता है। भारत में इस प्रकार की भी चेतना विशिष्ट रूप से परिचित नहीं हुई। वस्तुतः भारतवर्ष में 'यत्किञ्च निर्देशन का सप्रत्यय सद्भाषित स्तर पर ही छोड़ा बहुत विवक्षित हो पाया। अधिकांश में बहु शैक्षिक 'यावसायिक निर्देशन तक ही सीमित रहा।

(४) इस सप्रत्यय विस्तार का अभिप्राय

यदि अर्थों में निर्देशन शब्द के साथ प्रयुक्त विविध उपसर्गों के समुक्त होने की जिस विकासक्रमिक राधा का हमने परिचय तथा भारत दोनों स्थानों पर विहंगव जीवन दिया उसमें निर्देशन के सप्रत्यय सम्बन्धी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य उभरता या दृष्टिगोचर होता है। निर्देशन शब्द के साथ मानव जीवन के प्राथमिक क्षेत्रों से सप्रत्यय उत्तरोत्तर रूप से समुक्त होकर इन विविध क्षेत्रों के अन्तर्मुख की धोर स्पष्टरूप से दृष्टि करत से प्रतीत होत हैं। हमने देखा कि अक्षयिक प्रयत्न 'यावसायिक निर्देशन में कोई स्थिति नहीं पा। बल्कि वे कालान्तर में एक दूसरे के पूरक के रूप में ही विकसित हुए। तत्पश्चात् पामा गया कि मानव की शैक्षिक-व्यावसायिक समस्याओं को भी उसके 'यत्किञ्च सामाजिक प्रश्नों की शून्यता में दखना सम्भव नहीं पा। अतएव निर्देशन के कार्य में व्यक्ति के इन पक्षों का समावेश को भी समाहित किया गया। किन्तु ध्यान देने का तथ्य यह रहा कि किसी भी क्षेत्र में निर्देशन का कार्य एक दूसरे पक्ष की शून्यता में ही हो सका।

यह वास्तविकता मानव व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों की अन्तर्मुखित सुसंगठितता का सुस्पष्ट करती है। यदि न केवल शैक्षिक पक्ष होना है न केवल व्यावसायिक प्रयत्न केवल सामाजिक। मानव व्यक्तित्व एक ऐसी सम्बद्ध इकाई है जहाँ एक पक्ष की स्थिति अन्य पक्षों की गतिविधियों पर प्रभाव डालती है। इस तथ्य का विशिष्ट विवचन ता अद्यतन अर्थशास्त्र में प्रस्तुत किया जावेगा। यहाँ तो निर्देशन के सप्रत्यय विकास से सम्बन्धित तथ्य के रूप में ही इस पर कुछ प्रकाश डालना चाह्य।

तो सप्रत्यय दृष्टिकोण से पूर्व विवेचनों के आधार पर अद्य हम यह कह सकते हैं कि निर्देशन शब्द के पूर्व किसी भी क्षेत्रवाचक (कार्यवाचक) विशेषण का प्रयोग करना माना निर्देशन के विस्तृत कार्य को उस विशिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित कर देना होगा। इस प्रकार की सीमाएँ बहुपक्षी मानव व्यक्तित्व की प्राकृतिक ही विपरीत हैं। निर्देशन कार्यकर्ताओं ने अपने कार्य अनुभव से इस तथ्य का वास्तविकरण किया। जीवन के 'यावसायिक क्षेत्र की समस्याओं में कार्य प्रारम्भ करने के कारण व्यावसायिक उपसर्ग द्वारा ही दाय कार्य को परिधि की 'यावसायिक ही सकती थी शैक्षिक क्षेत्र तक कार्य विस्तार ही जान पर शैक्षिक व्यावसायिक दोनों विशेषणों का

प्रयोग जान गया। तत्पश्चात् छात्रों की सामाजिक व्यक्तिगत समस्याओं की सचनता पर इस पत्र में भी निर्देशन की आवश्यकताओं का स्पष्ट किया।

यद्यपि व्यक्तिगत के उक्त सभी पत्रों की अन्तमम्बद्धिता के विषय में निर्देशन कायकर्ता स्पष्ट हो चले फिर भी इस अन्तमम्बद्धता को व्यक्त करने हेतु निर्देशन पत्रों में पूरे पार विरूपण शक्ति व्यावसायिक सामाजिक व्यक्तिगत प्रयुक्त करना अटपटा सा लगता था। यदि क सरल तथा स्वाभाविक भाषा में सभी पूर्व उपागमों को हटा देना तथा बचने निर्देशन पत्रों का प्रयोग करते हुए इसके सप्रत्यय में उक्त सभी पत्रों में काय करने की आवश्यकताओं की निमित्त मानना।

भाषाय प्रयोग तथा 'सांस्कृतिक' कायभेद दाना ही दृष्टिवोगों से बचानातर में निर्देशन का सप्रत्यय में इंगी प्रकार का विकास हुआ। किन्तु उस विरहित भाषा निक स्वरूप की माय्या करने के पूर्व एक और मन्त्रवर्णन प्रभाव निर्देशन के क्षेत्र पर पड़ा। जो कि इस प्रभाव ने न केवल निर्देशन के सप्रत्यय अपितु उसकी काय विधाओं को भी बर्ण माना। म प्रभावित किया इसीलिए निर्देशन के आधुनिक स्वरूप तथा काय उपागम का विवचन के पूर्व उगे भी इसके सप्रत्यय की विकासमान भाषा में समाहित करना समीचीन होगा।

(१) प्रथम महायुद्ध निर्देशन पर मनोविज्ञान का प्रभाव

(क) मनोवैज्ञानिक उपकरणों का उदभव—निर्देशन के प्राथमिक बीजांकुरों के अद्ययन में हम इस चुके हैं कि व्यवस्थित निर्देशन का जन्म औद्योगिक क्रांति के बदलते युग में नवजातों को जीवन समायोजन हेतु सहायता देने के उत्तम प्रयत्नों में हुआ था। यहाँ स्वयं राधा करने वाले 'वर्तमान' न तो शिक्षाविद् थे न मनोविज्ञानज्ञाता। वे तो उत्तम धार्मिक वृत्ति वाले परोपकारी नागरिक थे जाकि अपने साधारण ज्ञान तथा जीवन के अनुभवों के आधार पर ही इस सहायता का व्यवस्थित रूप में आयोजन करते थे। परन्तु स्वयं उनके द्वारा आयोजित निर्देशन को प्रेरित करने वाली सहायता अप्रति ही प्रसन्नोद्य थी। किन्तु इस सहायता उत्तम उपागम तथा परोपकारी वृत्ति को उत्तम पूर्वक स्वीकार करते हुए भी यह तथ्य स्पष्ट था कि न तो इन प्राथमिक कायकर्ताओं की निजी पृष्ठभूमि बनाने की थी न उनके काय उपागमों अथवा विधाओं में कोई अचूक वस्तुनिष्ठता। निजा अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर ही वे व्यक्तिनिष्ठ उपागम लिए हुए जो कुछ भी कर सकते थे उतना सहायतापूर्वक अवश्य करते थे।

प्रथम महायुद्ध ने निर्देशन के नवजात काय को एक मूर्खपूर्ण मोड़ दिया। इस महायुद्ध की अवधि में सैनिक कायकर्ताओं के अद्ययन निष्कृष्ट पत्रावृत्ति प्रति स्थापन आदि की विधिवत् सम्पन्न करने हेतु वैज्ञानिक उपकरणों का जन्म हुआ। ये उपकरण सना के काय हेतु प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यवस्थित रूप से निर्मित किए जाते थे। इस समय में जितनी भी शोध अथवा पूर्व परीक्षण सम्भव हो सकता था उसे इन उपकरणों के निर्माण में विधिवत् अपनाया जाता था। आशा का जाती

या कि निरे अनुभव की अपेक्षा बानानिक उपकरणों द्वारा किए परीक्षणों पर आधा रित प्रामुक्तिया अधिक सही हो सकेंगी ।

व्यक्तिया के सेना व्यवसायों में अथवा नियुक्ति हेतु किए गए बहुमूल्य शोध तथा बानानिक उपकरणों की आर निदेशन काय म रत तद्वानोंग औद्योगिक तथा शिक्षाविदा का भी ध्यान आकर्षित हुआ । उन्होंने अत्यंत उत्साहपूर्वक उन उपकरणों का प्रयोग उद्योग तथा शिक्षा दोनों में ही करना प्रारम्भ कर दिया । इस घटना को हम शिक्षा में मनोविज्ञान के मूलपान के रूप में देख सकते हैं ।

(स) निदेशन को मनोविज्ञान को देना—इस युग की नवानतम विचारधारा तथा कायपेन निदेशन का व्यावहारिक काय के लिए सना हेतु बनाए हुए उपकरण अत्यंत सहायक सिद्ध हुए । निदेशन कायकर्ता अधिकाधिक यह अनुभव करत जा रहे थे कि व्यक्तिया को अथपूरा निदेशन दे सकने हेतु ब्यक्तिक विभिन्नताओं का बानानिक ज्ञान एक अनिवार्य पूर्वशरयकता है । उदीयमान नवीन व्यवसायों तथा उनमें भी प्रस्तुत विविध विनिष्ठीकरण शाखा उपशाखा का जाल तो फिर भी लिखित साहित्य मनोपचारिक विचार विमर्श प्रत्यक्ष अनुभव अथवा सामान्य ज्ञान के आधार पर अधिकांश में प्राप्त किया जा सकता है । किन्तु सजटिल व्यक्तित्व के नाना अमूर्त लक्षणों का केवल अनुभव अनुमान के आधार पर निश्चय करना बन् अधिक बंध एवं विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता था । अत अधिन बानानिक आधार पर व्यक्तिया के सम्बन्ध में प्रामुक्तिकरण करने बाल नवीन मनोबानानिक उपकरणों का निदेशन कायकर्ताओं में अत्यंत ही उत्साहपूर्वक स्वागत किया । अब तक व्यक्तिया को जो सहायता केवल निजी अनुभव तथा सामान्य ज्ञान के आधार पर दी जाता थी उसके स्थान पर अब निदेशन कायकर्ताओं की बानानिक साधनों का अधिक विश्वासपूर्ण आधार प्राप्त हुआ । इस प्रकार कहा जा सकता है कि निदेशन सादान को मनो विज्ञान की सबसे बड़ी देन यह रही कि उसने निदेशन का एक बानानिक स्वरूप प्रदान किया । निजा अनुभव तथा सामान्य ज्ञान द्वारा दी गई व्यक्तिनिष्ठ सलाह का प्रतिस्थापन वस्तुनिष्ठ एक बानानिक उपकरणों के आधार पर व्यवस्थित रूप में प्रायो नित निदेशन से हुआ ।

(ग) इस देन का दूसरा पक्ष—मनोविज्ञान को निदेशन को उक्त देन एक अमिश्रित बरदान के रूप में नहीं आई । वस्तुतः निदेशन को बानानिक स्वरूप प्रदान करने के साथ साथ उसने निदेशन के सप्रत्यक्ष में एक अवादीय सामितता को प्रविष्ट किया । वह सीमितता थी—निदेशन कायकर्ता को मनोबानानिक परीक्षणों के फलपरूप में देना ।

मनोबानानिक उपकरणों के दक्षनीय स्वरूप तथा बानानिक उपयोगों के प्राक् पक्ष से मनोविज्ञान में अग्रप्रशिक्षित एवं अग्रप्रशिक्षित व्यक्ति भी नका मनोपचार प्रयोग करने हेतु अक्षर होने लगे । या महायुद्ध के नायक भी कभी कभी सगय की कभी स क नवीन मनोबानानिक उपकरणों का उपयोग उनकी बधता विश्वसनीयता

व पर्याप्त पू-परीक्षण व बिना ही प्रारम्भ ही जाया करता था। य उपकरण इनक प्राथमिक स्वरूपा म ही शिक्षा तथा निर्देशन व त्रेष म भी अपना त्रिये जात थे। पश्चिम म तो उक्त दोनों प्रवृत्तियां तुरन् ही राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षण मस्यामा की स्थापना करके निर्या प्रल की गई। य संस्थाए बनानिक उपकरणों का विधिवत् निर्माण करती था निर्मित उपकरणों के राष्ट्रीय मानक विकसित करती था तथा प्रयुक्त मनो बन्नानिक उपकरणों द्वारा प्राप्त दत्त सामग्री का विधिवत् विचन करन का दत्त सवाए प्रदान करती था।

किन्तु इन संस्थाओं व इस योगदान व वाकबूद भी मनोविज्ञान के निर्देशन काय पर पर संप्रत्य सम्बन्धी प्रभाव का समचित नियंत्रण नहीं हो सका। चूं कि मनोबन्नानिक परीक्षण का एक चकाचौधमय आयोजन शान्ता के सामान्य से प्रतीत हान वान नमा कायश्रमों को एक बन्नानिक स्वरूप प्रदान करना दृष्टिगोचर होता है इसलिये इसकी दृग्नीयता से प्रभावित होकर शालीय कायकर्ताओं न केवल परीक्षणों के निय ही परीक्षणों का उपयोग करना चाहा। स्पष्ट है कि इस परिस्थिति का दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हुआ—साधन साध्य म सम्भ्रांति। हम तैल चुके हैं कि निर्देशन का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य था यत्किं विभिन्नताओं एक वातावरण विशिष्टताओं के अन्तर्गत अध्ययन तथा समुचितता के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को उसके अनु कूलतम समाजा एव विकास हेतु धन तथा विश्वमनाय सहायता प्रदान करना। इस दृष्टिकोण के अन्तर्गत तो इन विभिन्नताओं के अवबोध अथवा विशिष्टताओं के अध्ययन हेतु प्रयुक्त किए जाने वान सभी उपकरण साधन मात्र हैं। अतः तोगवा व्यक्ति का सुखी समायोजन ही एक अन्तिम साध्य के रूप म दत्ता जाना चाहिये। नवीन साधनों व बन्नानिक स्वरूप से असन्तुष्टि रूप से प्रभावित होकर कायकर्ताओं ने इन्हें ही अन्तिम साध्य मान लिया। एक साधन मात्र को ही साध्य मान बठन से साध्य की प्राप्ति म जो अवरोधन हो सकता है उसके प्रति पश्चिम में निर्देशन कायकर्ताओं की मददना कुछ काल पश्चात् जाग्रत हो गई तथा वे नम शिक्षा म बुटि करने से मभल गए।

भारतवप का शिक्षा क्षेत्र तथा उदीयमान निर्देशन काय भी एक सीमा तक सुरक्षा सेवाओं के उच्चस्तरीय मनोबन्नानिक परीक्षणों व उच्च स्तरीय मनोबन्नानिक परीक्षणों से अकर्षित हुआ था। किन्तु सना के काय के लिय परीक्षण प्रायः गोपनीय हुआ करत थे। अत सामान्य जनता उनका प्रयोग नहीं कर सकती थी। भारतमें मनोबन्नानिक परीक्षणों व प्राथमिक प्रयोगों के सम्बन्ध में एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह रही कि न उपकरणों का इसी देश की जनता पर निर्माण करने क बजाय काय कर्ताओं न पश्चिमीय पृष्ठभूमि म विकसित तथा वहा की जनसंख्यापर मानकीकृत साधनों को यथातथ अंगीकार करके उनका भागनीय जनता पर अवाधुष उपयोग किया। अनुपयुक्त साधनों द्वारा माप जाने वान प्रमून वयत्तिक रक्षण का अनुमान विश्वसनीय नहीं हो सकता तथा इन भाषों व आधार पर की गई प्रामुक्त म भी वधता का अभाव हो सकता है। इस अौर हमारे कायकर्ताओं का ध्यान नहीं गया।

शन शन इस तथ्य की ओर सचेतनाएँ जागृत हुईं तथा परिणामीय उपकरणों का यथातथ्य अगाकार करन के स्थान पर उक्त अनुकूलन के प्रयत्न होने लगे । समय की गति के साथ भारतीय जनता को आधार मान कर स्वतंत्र रूप से इसी जन सख्या हेतु परीक्षण निर्माण करने का कार्य भी प्रारम्भ हुआ । इस प्रकार के निर्माण कार्य तथा अनुकूलन प्रयत्नों के विषय में उपयुक्त स्थान पर विशद चर्चा की जावेगी । यहाँ तो बान की विविध गतिविधियों का निर्देशन के परिपक्वता सप्रत्यय पर जो प्रभाव पड़ा उसी से हमारा प्रत्यक्ष वास्ता है ।

भारतवर्ष में इन परीक्षणों का उपयोग का सबसे अधिक घवाङ्कनीय प्रभाव पड़ा निर्देशन के सप्रत्यय पर । विशेष कर—मनोविज्ञान तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के क्षेत्र में पश्चिम से अपेक्षाकृत पिछड़े हुए होने के कारण भारतीय वायवर्ताओं ने अदायित प्रतिक्रिया स्वरूप इस वैज्ञानिक भासित होने वाले—नायवर्षों को एक असन्तुलित प्राधाय दिया । सर्वप्रथम तो निर्देशन के क्षेत्र में व योग कार्य कर रहे थे जिन्हें निर्देशन के दक्षता में दोषों का स्थान पर पश्चिमी देशों के मनोविज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था । उनके साथ भारत में मनोविज्ञान में प्रशिक्षित अथवा अप्रशिक्षित वायवर्ता भी निर्देशन कार्य की ओर उन्मुख थे । इनके सम्मिलित प्रारम्भिक उत्साह में कभी-कभी यह मूल मनोवैज्ञानिक तथ्य दृष्टि से परे हो जाता था कि अवध उपकरण व प्रयोग पर आधारित प्रासुक्ति करन की अपेक्षा अनुभव के आधार पर की गई कार्य कम हानिकारक होती है ।

निर्देशन कार्य का वैज्ञानिक बनाने हेतु कई बार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रकाशन तथा बणान ही पर्याप्त समझा जाता था तथा अधिक महत्वपूर्ण कार्य निष्पन्न की शक्ती अधिक महत्व नहीं मिला पाता था । स्पष्ट है कि परिणामस्वरूप निर्देशन क्षेत्र में माधन साथ का सम्भ्रांति हमारे देश में आरम्भ रही । दुर्भाग्यवश अभी भी यह सम्भ्रांति निर्देशन तथा मनोविज्ञान दोनों के ही क्षेत्र में से तिरोहित नहीं हो पाई है । अभी भी कई उत्तरदायी वक्तव्य मिलित व्यक्ति केवल निष्पादन परीक्षणों की समानता ही मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से करने की राहमत हस्त है । उनके विचार में जब तक वैज्ञानिकी-तकनीकी यंत्रों के सहज प्रायोगिक तदन मदक उत्पन्न नहीं होती तब तक किसी उपकरणों को मनोवैज्ञानिक परीक्षण मानना उचित नहीं । आश्वय की बात है कि कई महकानी अनुदान वक्तव्य से मनोवैज्ञानिक परीक्षणों हेतु अनुराजि वक्तव्य निष्पादन परीक्षण — जिन्हें उपकरण कहा जाता है—प्राप्त होती है । इस उपागम का अनुसार रोचना तथा शीमेरिक अपरसेप्शन टेस्ट का सहज उच्चस्तरीय सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण का सवय में नहीं आता । उनका जय हेतु पुस्तकालय शोधक से अनुदान प्राप्त होता है ।

वक्तव्य का तात्पर्य यह है कि भारत में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का समीकरण अभी भी अधिकांश में वैज्ञानिकी आभासित होने वाली तदन मदक से है तथा निर्देशन

काय का समीकरण मनावनानिक परीक्षण से ।

निर्देशन में विशेष रूप में दीक्षित व्यक्ति में स्थिति का सुधारण का प्रयत्न प्रवर्धन कर रहे हैं । किंतु सामान्य जनता के मानस में—तथा वर्ग अशा में शिक्षा जगत में भी निर्देशन का संप्रत्यय में सीमितता में ग्रस्त है । वर्ग धारणा प्रधिकारी अपने विद्यालयों में निर्देशन कायक्रम की स्थापना एक प्रभावपूर्ण मनोवैज्ञानिक परीक्षण आयोजन के रूप में ही कर ले पाए जाते हैं । उन्हें अभी में बात का सर्वान तथा मनान में है कि निर्देशन के नियम उपयुक्त कई साधना में मनावनानिक परीक्षण—यदि सम्बन्धी सूचनाएँ एकत्रित करने का बंधन एक उपकरण है । निर्देशन में इस साधन को ही भूमिका के विषय में ता यथा स्थान विवरण करेंगे । यहां पर तो निर्देशन के परिवर्तित संप्रत्यय में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रभाव का विवेचन मात्र प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(५) निर्देशन के संप्रत्यय पर नवीनतम प्रभाव

निर्देशन के परिवर्तित संप्रत्यय पर जो सबसे अधिक पूर्ण प्राथमिक प्रभाव पड़ा है वह है व्यक्ति के अध्ययन सम्बन्धी वर्तमान विचारधारा का । हम अध्यायी चिन्तन के अनुसार व्यक्ति के अवलोक हेतु एक अत्यन्त विस्तृत उपागम अपनाया जा चुका है । उसमें सर्वांगीण व्यक्तियों के सम्पूर्ण ज्ञान हेतु न तो बंधन एक शास्त्र पर्याप्त है न किसी भी शास्त्र द्वारा प्रयुक्त वर्ग स्थापना उपागम । परस्पर तब मानव के वर्गधायी व्यक्तियों के अध्ययन हेतु इस युग में नाना विधानों का अन्तर्गत उपागम अधिकारिक रूप में स्वीकृत होना जा रहा है । वर्तमान मानव-व्यवहार का विशेष रूप से प्रयत्न करने वाले मनाविज्ञान में भाग सर्वांगीण उपागम का उत्तरांतर मायना प्राप्त होती जा रही है ।

चूंकि हम युग में निर्देशन का शिक्षा-क्षेत्र का एक अन्तर्गत भाग स्वीकार किया जा रहा है हमलिये यह भी स्वाभाविक ही था कि उस पर प्राथमिक शिक्षा दर्शन का प्रभाव पड़े । केवल जीविकोपाजन के लिये शिक्षा के सन्तुलित ध्येय में विस्तृत होकर आज के जनताधिक शिक्षा-क्षेत्र के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सतत सर्वांगीण विकास है । तदनुसार शिक्षा के अर्थ निर्देशन का उद्देश्य भी व्यवसाय प्राप्ति में सहाय की सीमित परिधि से बहुपक्षी व्यक्ति को वर्गधायी सहायता के रूप में विस्तृत हुआ ।

इस स्थान पर अब निर्देशन के कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त वर्तमान शिक्षा-वर्तियों का विवेचन निर्देशन के संप्रत्यय विकास के अनुबन्धन में करने के पश्चात् हम प्राथमिक युग में निर्देशन के स्वीकृत स्वरूप की विचार-याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे ।

निर्देशन शिक्षा-वर्तियों का स्पष्टीकरण

हिमा भी नवान कार्यक्षेत्र का प्रारम्भ करने की प्राथमिक वर्तितान्या होती है सम्बन्धित शिक्षा-वर्तियों का निर्धारण । यह निर्धारण दो प्रकार से हो सकता है । या तो नूतन शिक्षा-वर्तियों का नए गिर से निर्माण हो सकता है अथवा सामान्य प्रचलित शिक्षा

म स ही प्रायः समानार्थी शब्द का चयन करके इन शब्दों को क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी भय दे दिया जाता है। मानव व्यवहार के विज्ञान में सामान्यतः द्वितीय उपागम को ही अपनाया जितने स्वभावात् अधिक पोरप्रिय होने की सम्भावनाएँ हैं। विकासमान मनोविज्ञान का एक विशिष्ट अनुसुपकन स्वरूप होने के कारण निर्देशन के क्षेत्र में भी इस सम्बन्ध में मनोविज्ञान के उपागम को ही अपनाया।

किन्तु इस उपागम को अपनाते समय क्षेत्र में एक कठिनाई रही। निर्देशन के क्षेत्रीय विकास की जो माया हमने पूर्वाशा में पड़ी उसमें निर्देशन के स्वरूप सम्बन्धी कई सम्भ्रान्तियों की कृती भी पत्नी मिली है। निर्देशन सम्बन्धी विकासमान शब्दार्थियों पदावलिओं का अध्ययन भी ऐसी ही कतिपय मध्यमोप सम्भ्रान्तियों की ओर खिंचा जाता है। इसीलिए निर्देशन के विकासोत्तम स्वरूप का विवेचन इन शब्दार्थियों के स्पष्टीकरण के बिना प्रबुद्ध ही रह जायगा। अतएव कतिपय सम्भ्रान्तित शब्दार्थियों के उद्भव विकास एवं गुणधर्म का संक्षिप्त विवरण निम्न अनुच्छेदों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) भाग दर्शन एवं निर्देशन

हम देख चुके हैं कि भारतवर्ष में व्यवस्थित निर्देशन का सप्रत्यय विकसित होने में परिवर्धन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। निर्देशन के लिए अग्रणी शब्द है भागदर्शन जिसकी भागदर्शन से समानता है। प्रायः नवीन स्थान पर राह दिखाने वाले को गाइड कहा जाता है तत्परवान् गाइड का गुणधर्म नवीन स्थान पर राह दिखाने वाले उम स्थान सम्बन्धी ज्ञान सूचना भी प्रदान करने वाले तक विस्तृत हुआ। फलस्वरूप गाइड शब्द का प्रथम अर्थ कतिपय दूर स्थान या व्यक्ति सम्बन्धी ज्ञान-सूचना प्रदान करना। शिवाय यद्यथा मध्या जीवन के सम्बन्ध में गाइड के समानार्थी भागदर्शन का प्राथमिक प्रयोग उसके लक्ष्यार्थ के अनुसार ही हुआ। जिस प्रकार एक गाइड स्थल स्थानों में जनजात लोगों को भाग दिखाने से उस स्थल सम्बन्धी सही सूचना उपलब्ध करता है उसी प्रकार मानव जीवन के कई अपरिचित क्षेत्रों में प्रविष्ट होने समय जो विशेषतः सम्बन्धित ज्ञान सूचनाएँ प्रदान कर सके वह गाइड कहला सकता था तथा उसके द्वारा ही कई विशिष्ट सहायता भाग दर्शन कृती भी। निर्देशन के लिए प्रयुक्त शब्द आदिग पदावलि का एक विशेषता की ओर वाचकों का ध्यान आकर्षित करना चाहिये। दर्शन का शब्दार्थ दिखाने से अधिक स्पष्ट दूर तक या अधिक निकट है। मैं समझती हूँ स्पष्ट देख सकना का गुणधर्म निर्देशन के विशिष्ट क्षेत्र में अधिक सम्बन्धित है जहाँ व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से निर्दिष्ट राह दिखाने के बजाय सम्बन्धित सूचनाओं के आधार पर उस स्थल अपनी राह का दर्शन कर सकने हेतु समय बनाया जाता है। वस्तुतः निर्देशन द्वारा दिया गया दर्शन केवल भाग का ही दर्शन नहीं-अपितु व्यक्ति द्वारा अपने स्वयं का भी सही भाग में दर्शन होता है। हिन्दी भाषा में कई व्यक्तियों द्वारा गाइड शब्द के लिए भागदर्शन शब्द का प्रयोग करने प्रारम्भिक क्षेत्र में देखने में आता है। किन्तु

चू कि भाग-दर्शन म भाग पर ही अधिक बल दिया सा प्रतीत होना है इसलिए इस शब्द का निर्देशन क क्षेत्र स 'वामाविक विनाम एक दृष्टि स तो ठाक नी हुआ । अभी भी अनौपचारिक क्षेत्रों म इतना सहायता क निष्ठा भाग-दर्शन शब्द का प्रयोग सामान्यतः प्रचलित है । किन्तु बर्तमानक निर्देशन क क्षेत्र म अब इसका विशेष प्रयोग नहीं पाया जाता ।

(२) निर्देशन एवं निर्देशन

उक्त दोनों शब्दों म एक निकट शाब्दिक साम्य होने पर भी दोनों के दार्शनिक निहितार्थों म बड़ा अंतर है । ना त म शिक्षा मंत्रालय द्वारा तकनीकी शलावली का निर्माण होने क पूर्व निर्देशन शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के Direction शब्द के समानाथ म होता था । तदनुसार डायरेक्टर को निर्देशक तथा डायरेक्टोरेट को निर्देशनालय कहा जाता था ।

शाब्दिक गुणाथ के अनुसार डायरेक्शन शब्द में एक आदेश एवं अधिकार की भावना निहित रहती है जिसकी कि गान्डेस शब्द के विकासमान दर्शन से उ केवल प्रत्यक्ष असमर्थ अर्थात् प्रत्यक्ष विशेषता है । इधर सामान्य कोलकाता में गान्डेस क लिए भाग-दर्शन निर्देशन परामश आदि कई शब्द चल पाये । अतएव तकनीकी शलावली आयोग ने डायरेक्शन क लिए निर्देशन तथा गान्डेस के लिए निर्देशन शब्द निश्चय करके इन दोनों समरूपी शब्दों के गुणाथों में स्पष्ट विभेद कर लिया । डायरेक्शन तथा गान्डेस इन दोनों ही अंग्रेजी के शब्दों म निहित विभिन्न अर्थ के अनुसार यह विभेदीकरण उपादेय ही रहा । निर्देशन के समान निर्देशन क प्रक्रम म कभी आना या आदेश नहीं दिया जाता वहाँ अनुमति सम्मति देन का भी प्रश्न उपस्थित नहीं होता । निर्देशन द्वारा कार्य करवाया जाता है निर्देशन द्वारा व्यक्ति स्वयं करता है । निर्देशन द्वारा करवाए हुए कार्य का उत्तरदायित्व सामान्यतः निष्ठाक पर होता है निर्देशन द्वारा किया गए कार्य म व्यक्ति का अपना स्वतन्त्र उत्तरदायित्व निहित रहता है । निर्देशन द्वारा करवाए हुए कार्य के परिणामों के लिए भी जहाँ निर्देशक उत्तरदायी होता है वहाँ निर्देशन के फलस्वरूप किए गए कार्य के परिणामों को व्यक्ति ही स्वयं स्वीकार करता है ।

(३) निर्देशन-परामश

अपना ही कर्तव्य उके हैं निर्देशन कार्य के लिए प्रयुक्त प्रार्थमिक शब्दावलिओं म परामश का प्रयोग भी पाया जाता है । परामश का शाब्दिक अर्थ है राय देना । निर्देशन के प्रक्रम म प्रत्यक्ष रूप से कोई निश्चय देन हेतु व्यक्ति को राय देना दी जाती । उस केवल परिस्थिति विशेष की विश्वसनाय सूचनाएँ तथा उसके स्वयं क विषय का बर्तमानक ज्ञान एक दूसरे से सम्बन्धित करके इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उस विषय के आधार पर व्यक्ति स्वयं अपने को राय दे सके अर्थात् उक्त सामग्री क दर्शन द्वारा स्वयं अपना उत्तरदायित्वपूर्ण निश्चय ले सके । हम देख चुके हैं कि व्यवस्थित निर्देशन क प्रारम्भिक काल म ता परिपक्व बर्तमान द्वारा नवयुवकों

को व्यवसाय चयन सम्बन्धी परामर्श ही दी जाता था। यह परामर्श उनके जीवन अनुभव पर ही आधारित रहती थी तथा स्वभावतः एक व्यक्तिनिष्ठ रूप लिए रहती थी। निर्देशन पर मनोविज्ञान के प्रभाव के पश्चात् इस परामर्श में न केवल एक बाह्यनीय वस्तुनिष्ठता प्रविष्ट होती गई अपितु यह प्रक्रम बहानिक आधार पर स्वयं व्यक्ति द्वारा लिए गए उत्तरदायित्वपूर्ण निश्चय में परिवर्तित होती गई।

(४) निर्देशन एवं अनुदेश

निर्देशन के सप्रत्यय का व्यावसायिक सहायता की परिधि से जब शिक्षा के क्षेत्र तक विस्तार हुआ तब 'व्यावसायिक शिक्षण' निर्देशन की अन्तसम्पर्क घटा अधि-बाधक रूप से स्वीकृत ज्ञान तथा एक सम्भावित सम्भ्रांति कतिपय भावयुक्तियों के विचारों में दृष्टिगोचर होने लगी। शिक्षा का उद्देश्य उदासीन रूप से व्यक्ति के सर्वांगीण विकास तथा समन्वित समायोजना के रूप में स्वीकारा जा रहा था। शिक्षा के क्षेत्र से अधिकाधिक सम्बंधित होता हुआ निर्देशन का विकासमान स्वरूप भी इसी अन्तिम लक्ष्य की ओर अग्रसर होता जा रहा था। अतएव एक स्वभाविक शक्ति निर्देशन की आवश्यकता का ही सम्बन्ध में कतिपय विचारणा के मत में उत्पन्न होने लगी। प्रश्न उठ कि दोनों के ध्येय में क्या अंतर है? यदि दोनों के प्रयत्न में ध्येय एक ही हैं— तो निर्देशन का कार्यक्रम क्या एक अतिरिक्त योजना नहीं है?

सोटे रूप से उक्त सन्दर्भ में शिक्षा एवं निर्देशन का अयोग्याभिन सम्बन्ध तो पूर्व अध्याय के अन्तिम अंश में स्पष्ट किया जा चुका है। यहाँ पर विशिष्ट रूप में शास्त्राय अनुदेश के सन्दर्भ में निर्देशन का अर्थ तथा उद्देश्य स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जायगा।

यह सत्य है कि शारीरिक अनुदेश सेवाओं द्वारा भी यक्ति का निर्देशन ही दिया जाता है। किन्तु अनुदेश का निर्देशन सर्वप्रथम तो समूह केन्द्रित होता है। दूसरे व्यक्ति विकास का स्पष्ट आदेश स्वीकार करते हुए भी व्यावहारिक रूप में तो वह विषय-केन्द्रित ही रहता है। अनुदेश द्वारा दिए गए निर्देशन का एक निर्धारित समय सीमा में पारण हो जाना अपेक्षित है जब कि निर्देशन को समय के बचन में नहीं बाधा जा सकता। एकक व्यक्ति का विशिष्ट आपस्यकृताभा के सन्दर्भ में 'यक्ति-केन्द्रित निर्देशन' का कार्य अपनी गति से चलता है। जो सामान्य शिक्षण व्यावसायिक सूचनाएँ प्रसारित करने हेतु निर्देशन सहाय्य की योग्यता भी समूह परिस्थिति में होती है किन्तु अन्ततः तथा निर्देशन का कार्य व्यक्ति को ही लेकर अग्रसर हो सकता है। अनुदेश-पश्चात् परीक्षा के स्थान पर निर्देशन कार्य का मूल्यांकन सतत अनुकूलन द्वारा किया जाता है।

यस सन्दर्भ में एक बात ध्यान देने योग्य है। निर्देशन कार्य के भी विभिन्न कार्य स्तर होना है। अत्यन्त विस्तृत दृष्टिकोण से तो प्रत्येक अनुदेशक एक सीमा तक निर्देशन कार्यकर्ता कहा जा सकता है क्योंकि 'यक्ति के विकास के माध्यम वह उन जीवन-समायोजना का लिए तैयार करता है। किन्तु क्या के सभी विद्यार्थियों को इस साधारण उद्देश्य से लिए गए अनुदेश के पश्चात् जब विशिष्ट विद्यार्थियों को यक्ति

गत कठिनायों का ध्यान होता है तो प्रत्येक केवल विषय-निरंतर मूल ही सामान्यतः इन कठिनायों में स्थायित्व प्रदान कर सकता है। वर्षों बाद विषय वस्तु सम्बन्धी कठिनायों का सम्बन्ध भी कक्षा से बाहर की परिस्थितियों तथा विद्यार्थी के कठिण मनोवैज्ञानिक घटकों से निहित हो सकता है। इस प्रकार की कठिनायों का निदान निवारण तथा उपचार एक माध्याय अनुष्ठान के द्वारा सम्भव नहीं। अपने प्रगल्भ वाच्य भाव तथा वाच्य सीमा—मर्यादा के दृष्टिकोण से इन प्रकार का विशेषता वाच्य सभी सामान्य वाच्य से परे है। अतः शिक्षक की विभिन्न फायदे भविकाशा में उसकी अनुष्ठान का ही सूचिका 'नवी धर्म' महत्त्वपूर्ण है कि उसके परे उपान्त निष्कृत अधिकांश वाच्य करना सम्भव नहीं।

हो या ध्यान रहे कि निर्देशन तथा अनुष्ठान के केवल अन्तरण रूप से परस्पर सम्बन्धित है किन्तु इन दोनों के अन्तर्गत ही गई विद्यार्थी की समष्टि एक दूसरे की पूरक होती है। विद्यार्थी का निर्देशन देने हेतु अल्प बुद्धि वसतिवत् सूचना सामग्री शिक्षक द्वारा ही उपलब्ध हो सकती है। और विद्यार्थियों को पर्यावरण में सूचनाएं प्रसारित करने में भी उपयोजक का अनुष्ठान का ही महत्त्वता तभी पायी है।

अतः परमार्थ में कहा जा सकता है कि अनुष्ठान तथा निर्देशन एक दूसरे के पूरक है किन्तु पृथक् नहीं।

(१) निर्देशन तथा उपबोधन

निर्देशन और उपबोधन दोनों ही मूलतः धर्म की स्वीकृत तकनीकी शब्दावलि हैं। ये दोनों ही एक ही परस्पर सम्बद्ध प्रक्रिया के दो अंग हैं किन्तु समानार्थी नहीं हैं। फिर भी शिक्षा-क्षेत्र में वर्षों बाद इन दोनों का अन्तर्विनिमित्त उपयोग पाया जाता है। इन क्षेत्रीय शब्दावलि के स्वीकरण से हमने इन दोनों को भी समाहित करना समीचीन समझा।

अतः निर्देशन एवं विस्तृत वाच्यम में शिक्षक एक वाच्य ही विशिष्ट धर्म उपबोधन कहता है। मध्य निर्देशन वाच्यम को विविध व्यावहारिक सेवाओं में (जिनका अन्तर्गत चतुर्विध सम्बन्ध में किया जायगा) उपबोधन एक केन्द्रित सेवा है। व्यक्ति तथा उसके पर्यावरण में सम्बन्धित विविध भाँति की सुचनाओं का जब समझ कर शिक्षा जाता है तब उनका आधार पर 'यति' का उत्तराधिकारपूर्ण निषेध देने में सम्मत्ता देने की बात को उपबोधन कहा जाता है। वास्तव में इस बात की प्रकृति वाच्य ही तत्त्वों की है। वेदों बाणी के अन्तर्गत उपबोधन में एक व्यक्ति को अपनी वाच्य समझाओं के विभिन्न पर्याय में प्रकृतता प्राप्त करने हेतु उस परिपक्वता की राह में जाना उपबोधन की वर्णान्वय कला द्वारा ही सम्भव है। उपबोधन का शार्त्तिक धर्म ही है विशेष प्रकार से प्राप्त देना। यह दोष 'यति' को अपने पर्यावरण का दृष्टिकोण में अपना वास्तविक चित्र दाख करने की सामान्य प्रणति करता है। अतः परमार्थ में यह मूल है कि जहाँ निर्देशन में मायक निर्देशन है वहाँ उपबोधन में मायक महत्त्वता है। जहाँ निर्देशन की उपबोधन पूर्व-सेवाएँ यति तथा उसके पर्याय

वरण सम्बन्धी नाना प्रकार की सूचनाओं के एकत्रित करने से सम्बन्धित है तथा उपबोधन में एकत्रित सामग्री के निबन्धन का तकनीकी वाप सम्पन्न होता है। काय कलाओं की दृष्टि से जहाँ निर्देशन के सामान्य काय में अत्यन्त शारीरिक सामाजिक तथा परेन अभिकरणों का सक्रिय सहयोग प्रेषित है वहाँ उपबोधन का सूक्ष्म वैज्ञानिक काय एवं विशेष रूप में प्रशिक्षित व्यक्ति ही कर सकता है। समूचे निर्देशन काय का वैज्ञानिक उपबोधन है किन्तु पुन उपबोधन का प्रबुद्ध प्रकाश समूचे निर्देशन कायजन की भी धारणागत करता रहता है। प्रशिक्षित उपबोधक नाना स्तरों पर निर्देशन काय करन वाले अभिकरणों को एक प्रबुद्ध नेतृत्व प्रदान करता है।

निर्देशन का वैज्ञानिक स्वरूप

निर्देशन के परिष्कृत सप्रयय की विकासमान गाथा तथा इस क्षेत्र से सम्बन्धित शास्त्रविद्या के स्पष्टीकरण में निर्देशन के वैज्ञानिक स्वरूप का विवेचन स्थान स्थान पर कई बार आ चुका है। किन्तु कहीं कहीं पर पुनर्गठित की धारणा होने पर भी अत्यन्त के इस अतिम अंश में निर्देशन के आधुनिक वैज्ञानिक स्वरूप का एक समाहारी चित्र कई भागों में उपयोगी रहेगा। परिष्कृत सप्रययों के साथ हमन इस क्षेत्र के स्वरूप सम्बन्धित सम्प्रान्तियों एवं सीमांतानों का सकारण विश्लेषण किया। शास्त्रविद्या के विवेचन में भी किसी भी वैज्ञानिक क्षेत्र में अवाद्यनीय अन्तर्विनिमित्त शब्दावली प्रयोग का स्पष्टीकरण किया। यत यदि यह कहा जाय कि अभी तक के विवेचनों में सामान्यतः निर्देशन क्या नहीं है की ही धारणाएँ अधिक स्पष्ट हुई हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अब निर्देशन के वैज्ञानिक स्वरूप सम्बन्धी इन कारणों की निदाश हो जान के परचात ही इस नूतन रूप का आधुनिक स्वरूप अधिक स्पष्ट रूप से हमारे मानस में प्रकृतित हो सकता है। इस चित्र का रेखाओं को अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से हम कतिपय महत्त्वपूर्ण विबुधों की पृष्ठभूमि में सक्ती व्याख्या करने का प्रयत्न करेंगे।

(१) प्रश्न का विस्तार

अपने आधुनिक स्वरूप के अनुसार निर्देशन एक अत्यन्त ही विस्तृत प्रश्न है जिसका काय व्यक्तिबोधन के किसी एक या दो पक्षा तक ही या उसकी आयु के किसी विशिष्ट स्तर तक ही सीमित नहीं है। हमने अपने पूर्व अध्यायों के विवेचन में ही देखा किया था कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में समस्याएँ ही सक्ती हैं और ये समस्याएँ होना मानव जीवन का एक सहज वास्तविकता है। अतएव प्रत्येक व्यक्ति को अपने विकास के विविध स्तरों पर उस समय विशेष की परिस्थितियों के अनुसार निर्देशन की आवश्यकता होती है। साथ ही उनमें अन्तसम्बन्धी बहुआयामी यत्नित्व में ये समस्याएँ उसके जीवन के विविध पक्षों को असाधारण रूप से प्रेरण करता है। निर्देशन के विस्तृत प्रश्न द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को ही कई वैज्ञानिक सहायता उसे इन समस्याओं का सामना करने में अधिक समय देता है। समेष में वह सक्ती है कि

निर्दोषन एकज "पतिन को उसक समी दय-सरो पर दी जाने वाली व" बहुप्रायामो क्षमता है जिसमे बहु क्षमने सामाजिक स्वरूप तथा समूचे परावरण का सही धवबोध प्राप्त कर सक तथा हम प्रवृत्ता क आधार पर अनुकूलतम समाजोचना को प्राप्त हो सक ।

प्रथम ध्यतिन को दा जाने वाली यह क्षमता व्यक्तित्व त्वि व साध साध "व्यक्तियों क सही समसम्बन्ध को भा प्रक होनी है ।

(२) मानव का सन्तुलित विकास

स्वभाव से ही मानव काव अपनी शक्तियों का अनुकूलतम उपयोग नही करते बरन् बार ता बहु क्षमता क्षमताओं क पूरुषधेण क्रियन भी नही रहता । हम समझते हैं कि "व्यक्तिया क सम्बन्ध मे सही र्ण" बहिरण के (Gray) को निम्न परिभाषा मानवीय क्षमताओं पर भी बरन् मानों मे लागू हो सकती है —

Full many a gem
of purest ray serene
The dark unathomed
caves of ocean bear
Full many a flower
is born to blush unseen
And waste its sweetness
to the desert air

व्यक्तित्व निर्दोषन अपने सामाजिक साधनों द्वारा यह प्रयत्न करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का सही धवबोध हो सक जिसमे बहु अपनी क्षमता तथा क्षमताओं का साधकाधिक उपयोग कर सके ।

"पतिन के सन्तुलित विकास हेतु उनके विष् क्षमता शक्तिया तथा क्षमताओं के साध-साध धरणा दवतताओं तथा सीमितताओं का भी सही धवबोध आवश्यक है । अपनी सामान्यताओं क क्षमता मे बरन् बार व्यक्ति व्यक्तियव अनुबन्धन उपरमा पर हृदि धटवा कर अपनी क्षमताओं को परिधि मे धान वाले लक्ष्यों को भी धुला बढता है । सग परिनिर्माण मे दोना धोर स केवम निराशा ही होनी । व" क्षमतावक्षक कुण्डल व क्षमता का शिफार धन जाता " जो कर सकता है बहु नही कर पाता तथा जो नही कर सकता उसको निराशा मे धुला होना है तथा दूसरों तक भी अपनी द न ही क्षमतिक बढता है । व्यक्ति को अपनी क्षमताओं तथा सामान्यताओं को दोनो के क्षम मे अपनी सामाजिक तस्वीर निरता कर ही निर्दोषन क उत्तरदायित्व की दृष्टिभी नर्ण हो जाती । एक गद क्षमता होकर वट व्यक्ति को उसकी क्षमताओं के अनुकूल धव सरो को सूचना भी प्रगत करता है । तथा उन क्षमताओं मे अपने नियोजन मे भी महामता प्रदान करता है । स्पष्ट है कि "व" प्रकार एक व्यक्ति को उसकी क्षमताओं के अनुकूलतम उपयोग हेतु वी हर्द एक क्षमता द्वारा क्षमताओं का समूह

समाज का उन्नयन होगा। प्रत्येक व्यक्ति व्यक्ति रूप में तुष्ट होकर समाज को अपना अष्टम योगदान दे सकेगा।

(२) सहायता — न कि मनाह

निर्देशन के वनानिक स्वरूप के समस्त विवचना में पावरो में हमारे सहायता शक्त के निरन्तर प्रयोग पर ध्यान दिया ही होगा। यदि यह कहा जाए कि सहायता सम्पूर्ण निर्देशन क्षेत्र का मौनिक कुलीन है तो प्रतिशयोक्ति नही होगा। निर्देशन से सम्बन्धित शक्तवर्तिया के स्पष्टीकरण में ही हमने सलाह न देने का विद्वु पर पर्याप्त बत किया था। यह स्पष्ट है कि सलाह देने का प्रक्रम अपने धार्मिक सरल तथा उतु है। किसी समस्या में दुयी व्यक्ति के सम्मुख सम्पूर्ण सम्बन्धित सूचना सामग्री प्रस्तुत करना तथा उसे उस सामग्री के अवबोध के आधार पर निर्णय लेने की ओर प्रवृत्त करना न केवल उपवोचक के लिए एक समय लेने वाला प्रक्रम है अपितु उपवोचक की धर्म की मच्चा पगी ता है। कभी तो व्यक्ति स्वयं चाहता है कि काँफ़े मुझे बना देना करना है। हम प्रकार का बता देने से वह न केवल अपनी समस्या में त्वरित मुक्ति चाहता है अपितु अचेतन रूप में निश्चय का उत्तर दायित्व में भी मुक्त होना चाहता है। अतः प्रवीण सहायता प्राप्त करके जब व्यक्ति अपनी समस्या स्वयं सुलझाता है तो न केवल उसे ध्यानपूर्ति का सतोष प्राप्त अनुभव होता है अपितु अपने सम्बन्धामक परिस्थितिया में उसे पुनः उपवोचक का पास नही होना पता। मनोवैज्ञानिक शक्तवर्ती में हम कह सकते हैं कि वह परिपक्वता की ओर प्रवृत्त होता है क्योंकि निर्देशन की सहायता द्वारा अपनी समस्याओं का स्वयं-उत्तरपूर्वक सामना करने में अधिक समर्थ होता है।

उपसंहारात्मक कथन

प्रस्तुत अध्याय में हमने निर्देशन का विज्ञानात्मक स्वरूप का विज्ञानात्मक रूप दिया। उसके विकासात्मक स्वरूप का माता में उसके परिवर्तित मन्त्रियों का गकारण विवेचन किया तथा निर्देशन के क्षेत्र में प्रचलित गलतवर्तिया का भी विवेचन किया।

हम पृष्ठभूमि में निर्देशन के आधुनिक वनानिक स्वरूप का एक सुस्पष्ट चित्र हम पाने सकें।

अतः चित्र का अनुवर्तन में अगले अध्याय में निर्देशन के मूल आधारों का विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा।

निर्देशन के मूल आधार

(विषय प्रवेश दार्शनिक आधार जीवन मूल्य तथा मूल्य की धारणा स्वयं का दायन पक्ति व का प्रारंभ सामाजिक पारम्परिक आधार वर्तक समाज का लक्ष्यमार्ग मानवोप उर्वा का सरलण माध्याय रूप स भारतीय परि स्थितयो म सामाजिक परिपन्नमोनता द्योपारित वर्तित नारिया की रिकवित्य भूमिकाए ससृष्टिक मूल्य वर्तित आधार तानदावि नार तथा विनिर्णीकणम कि रा की उा म्प नीता म्पया रा गुजल एक म्पछीकरण म्पेवगानिक आधार व्यक्ति का समुज्ज एव विराग एव सातकीकरण धर्मिक निर्भनताए पनित की प्रवृति म्पसहारा म्प कथन)

सम्पूर्ण पक्ति के लिए म्पने समुपे पर्याय ए म बहुधावामी समावोचन का समाहारी ध्यय उदर निगलन का तुलन दोष मानव जगत् म अदनाण दुमय म्प हने तान म्प वाय म्प विस्कारपुवक दला । अतएव यदि म्प क्प एव कि निगन व म्पुव हावपेव मानव जीवन है तो धनियमोनि नी हाण । मानव जावव क परिगि क विस्कार की कोई मीमा नी । विशेषक प्राणिक म्प म हा मानव जीवन क विविध यथा पर प्रकाश जालन हण तान म्पनाण मे निर तुलन विपय नक्षत्र परिवर्धित हाने जा र्क हैं । स्वाभाविक है कि निगन का न समी स रिती म्प निमी म्प म्प सम्बन्ध है । एक व्यति की समक क तम वापकीकरण तथा म्पनूतम समापीजन ह्नु समुचिन स यला दे सक्ने हेतु नि जल वापकतामो की विविध विपय मेत्री म्प प्राप्त म्पुव द्वारा म्पण वाय म्पामो का ताता वाता वतना क्पण है । हम म्पने एव विवक्तो म्प म्प भी व्प च्प है कि व्प कासो के सवाधारी सिद्धा ता का प्रतावा म्प म्पुवकीकरण करी म्पु ही माली नि एन का म्पि छेव म्पने म्पवीन म्पवर्धन म्प म्प म्प नव जगत् म्प विम्पुव म्पया । वक्व निगन क व्पानिक विहास म्प सम्बर्धित व्प म्पुवका सिद्धा तो का म्पुन विधित मानवीय म्पामो म्प र्क है म्पुव म्पामो म्प ह्प म्पुव क विविध प्रवृत्त म्प कासो वर विवतन क्पने का प्रयाम करे ।

दार्शनिक आधार

(१) जीवन मूल्य तथा मूल्य की धारणा

यदि मानव मानव मूल्य जीवन म्प नवकता र्क है । म्प जीवन म्प

मानव न प्रश्न स्वयं तथा प्रश्न रूप ही जीवन व सम्बन्ध में विविध प्रश्न उपस्थित हैं और इन प्रश्नों का समाधान करके तब विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों का निर्माण किया जा सकता है। प्रश्न शाश्वत भाव में स्थापित जाये तो केवल नमो मन्त्र का स्थान पुरातनतम रहा है। वस्तुतः मानव के स्वयं तथा उसके जीवन सम्बन्धी विभिन्न क्षणों की उत्पत्ति तथा पूर्ति में ही दर्शन व स्वयं का उद्गम तथा विकास हुआ है। स्पष्ट है कि दर्शन के माध्यम से प्रश्न उत्पत्ति व समाधान पर ही व्यक्ति की जीवन आस्था का निर्माण होता है। उसकी मूल मान्यता का विकास होता है उसकी आशाओं की विधाओं में प्रवेश के लिए। "साक्षात्कार" व "अनुभव" ही दर्शन के मूल हैं। कि मानव के मूल के मूल में उनकी अपनी आस्था अभिजात्य रूप में है और उसी आस्थाओं आशाओं का निर्माण करने में उसके जीवन मूल्यों की निर्माण व भूमिका होती है। यदि वह न जाये तो प्रतिशोधक नहीं होगा कि मानवीय मूल्यों का कल्पना के मूल में ही उनके जीवन मूल्यों निर्माण रहता है।

सुख को कल्पना मूल्य की अनुभूति का भी अनुभव करती है और मनो-व्यक्तिगत आस्थाओं में सुख का अनुभूति का सम्बन्ध का भाग से पुनरावृत्त सकता है। अनन्त पुनः कहा जा सकता है कि व्यक्ति व समाज के मूल में ही उनके जीवन मूल्यों निर्माण रहते हैं। वस्तुतः समाज की विधि का मानविक स्वयं ही व्यक्ति अपनी आशाओं आस्थाओं व अनुभव निर्धारित करता है तथा इन आशाओं आस्थाओं का निर्माण भी उनके मूल्यों द्वारा ही होता है।

उक्त सविन्य विवेचन का मूल प्रतीक जानना है कि व्यक्ति के मूल स्थापना समाज के मूल में उसके जीवन मूल्यों निर्माण होते हैं। अतः इन मूल्यों का निर्माण तथा विकास से व्यक्ति मूल्यों के जीवन में और को-तथ्य नहीं।

प्रश्न उत्पत्ति है कि निर्देशन का क्षेत्र का इन मूल्यों से क्या सम्बन्ध हो सकता है? प्रथम तथा द्वितीय अध्याय में प्रस्तुत निर्देशन के प्राथमिक परिचय में उस प्रश्न के बुद्ध प्रारम्भिक इतिहास मिल सकते हैं। किन्तु निर्देशन के प्रथम मुद्दापार व विशिष्ट विवेचन में प्रश्न का उत्तर जानने के सम्बन्ध में निम्न प्रकार से गोटा जा सकता है। व्यक्तिगत समाज का प्रथम प्रश्न तब ही निर्देशन का क्षेत्र का एक मूल उपायम होता है—यक्ति की विशिष्ट मूल्यों-मान्यता का निर्धारण करना और उस निर्धारण में उसे प्रश्न के आदिम भाग्य में ही अपने मुद्दापार को जाने पाने। प्रश्न के मूल प्रश्न ही क्या होता चाहिए? से संबंधित हीन है। और मानव की आस्था—प्रश्न ही क्या होता चाहिए के उत्तर में ही सम्बन्धित होती है। मनुष्य अपने जीवन के स्वयं अपनी आस्थाओं व परिदृश्य में निर्धारित करना है स्वयं प्राप्ति का योजना का निर्देशन भी अपनी आस्थाओं की वृत्तभूमि में स्थापित करता है। सन्धि में हम कह सकते हैं कि व्यक्ति अपनी आशाओं व अनुभव अपने जीवन-स्थापना करता है। कि उसकी मूल्यों व कल्पना हीन तथा परमाणु दोनों में ही अपनी आस्थाओं व अनुभव होती है अतः जिन मूल्यों में आशाओं की

यह कामना करता है व नी उसकी वास्तविकता के अनुरूप निर्दिष्ट होती है तथा उसे ही प्राप्त करे हेतु वह अपनी जीवन ऊर्जा लगा देता है। यह त्रिभु का अधिक विस्तृत विवेचन अध्याय के अगले अंश में किया जाएगा। यहाँ तो यति व जीवन मूल्या के रूप में निर्देशन के मूल दार्शनिक आधारों का प्रतिपादन मात्र किया जा रहा है।

(२) स्वयं का दर्शन

पिछले अध्याय में हम देख चुके हैं कि निर्देशन का एक मुख्य उद्देश्य यही है व्यक्ति को उसकी वास्तविक तस्वीर से परिचित कराना। अपने स्वयं के स्वप्न का वस्तुनिष्ठ दर्शन कर सकना तथा इस दर्शन के माध्यम से अपनी जीवन यात्राएँ आगे बढ़ाने की क्षमता प्राप्त कर लेना। यहाँ कदाचित् दार्शनिक दर्शन का सर्वोपरि उद्देश्य होता है। अपने निज के इस मूर्ती रूप में केवल यति की क्षमताएँ ही नहीं उभरती रहती हैं। वे वास्तववादी चिन्तन में तो उनकी क्षमताओं का आलाक उभरती सीमितताओं की रक्षाओं में घुसा भिना रहता है। या यों कहें कि उसके यतिव का सम्पूर्ण यही उसकी शक्तियों—स्वतन्त्रताओं की रूप राने का भयवशता रचना है। अपने परिवारों से अलग अनुसूलन प्राप्त करने हेतु तथा अपनी शक्तियों—क्षमताओं का अधिकतम लाभ उठा सकने हेतु यति के लिए अपने वास्तविक स्वरूप से परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। तभी वह वैयक्तिक तर्कों के आन्द के साथ समाज से भी अपने अष्टतम योगदान से लाभान्वित कर सकता है। एक ही यति को इस सन्तुष्टि की ओर ले जाते हुए अतिसौम्य या मधुम समाज का उदयन रचना निर्देशन के मूल उत्तरदायि क्ष में भी एक कर्तव्य माना जा सकता है।

स्पष्ट है कि मानव जीवन के आदि शास्त्र दर्शन में निर्देशन का मूल आधार निहित है। Know thyself अपने आपको जानो यह इस आदि शास्त्र की चिरंतन पुकार रही है। हिंदी में तो इस विषय क्षेत्र का नामकरण ही इसके स्वरूप को स्पष्ट करता है। दर्शन का अन्तिम ध्येय है स्वयं पर तथा सत्य का दर्शन। यह सत्य है कि यह दर्शन तार्किक स्तर का होता है। किन्तु इसके साथ ही यह भासत्य है कि तार्किक स्तर तक पहुँच सकने हेतु व्यक्ति का कतिपय दार्शनिक स्तर को भीड़ियों को पार करना अनिवार्य होता है। आधुनिक दार्शनिक विचारों की अपेक्षा के नियम स्ववास्तविकरण की मनोवैज्ञानिक विधि में से यति का गहरा अर्थ है। और यि जन का स्व वास्तविकरण से साक्षात् सम्पर्क है।

फिर जहाँकि पहले भाग में चुनी हुई दर्शन का सहायक शक्तियों को एक प्रकारात्मक रूप में निर्देशन के अर्थ में शिक्षण की एक प्रमुख भूमिका रानी है। यह दर्शन का निर्देशन के विवेचन में पाएँ और नी अधिक स्पष्टता से आत्मसात् कर सकेंगे।

(३) यति व का आन्द

गणनात्मक विधा का तो सम्पूर्ण भवन ही यति व के आन्द ही मुक्तता

पर निर्मित हुआ है। एक व्यक्ति के अन्तर्गत व्यक्ति के प्रति समुचित सम्मान उसके गौरव तथा मूल्य का उचित आशयन उसके विशिष्ट बुद्धि-व्यवहार के अनुकूल अवसरों का आयोजन यद्यपि अत्यन्त ही शिष्टाचार की सामायन स्वीकृत सक्तियाँ हैं। इन सक्तियों को यदि वास्तविकता का आलोक देना है तो उनकी वास्तविकता का शिष्टाचार म करनी हाया इनका उपलब्धि हेतु प्रवर्थात्मक योजनाएँ बनानी होगी।

वास्तविकता तो यह है कि यदि व्यक्ति के स्वरूप का अवलोकन ही नहीं तो उसका आदर किस प्रकार किया जा सकता है? उसके मूल्यों के सम्बन्ध में अभिप्राय ही नहीं तो उसका आशयन किन आधारा पर किया जा सकता है? और यदि उसके बुद्धि-व्यवहार की विशिष्टता ज्ञात ही नहीं तो उसके अनुकूल अवसरों का आयोजन किस भाँति हो सकता है? इन वास्तविक प्रश्नों का पर्याप्त उत्तर देना हेतु निर्देशन दशक के मौलिक क्षेत्र में अपने मन्तव्य शोधता है। एक व्यक्ति के अन्तर्गत व्यक्ति के सही सम्बन्ध का दर्शन उसे कराता हुआ तथा उसके गौरव तथा मूल्य का उचित आशयन करते हुए ही निर्देशन उसके विशिष्ट बुद्धि-व्यवहार के अनुकूल अवसरों से उभर परिचित कराता है तथा उस उभर अवसरों का श्रेष्ठतम उपयोग कर सकने की राह भी दर्शाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के मूल्यों के आदर का वास्तविक पुनर्जागरण का यदि निर्देशन की शिष्टाचार में भाग्य तर नही हाया तो वह शोध करने की भाँति केवल धनी वाजती ही रह जायगी। अतः निर्देशन के न्यून क्षेत्र के सम्बन्ध में वास्तविकता ही व्यक्ति है और यह वास्तविकता निर्धारित करने में उसका वास्तविक वाय आधार स्पष्टरूप में निर्धारित है।

विशेषकर आत्मशास्त्री भारतीय शास्त्र में तो प्रत्येक व्यक्ति को आत्म के रूप में उभर चरम परमात्म का एक उच्चतम अवस्था माना गया है। इस मायामय में यह आस्था निहित है कि चरम चोरी के प्रति प्रयत्न म भी आत्मिक चोरी के समस्त नक्षत्र सम्बन्धित रहते हैं। भारतीय दशक के अनुसार विकार का अर्थ ही विनयन है यह विलयन वह वास्तविकता का अन्तर्गत सागर में होना है। लक्ष्य प्रकाश कणिका का अन्तर्गत चरम में होता है। अतएव यह विनयन एक प्रकार का आत्म का विस्तार ही है। किन्तु अस्त विनयन विस्तार का प्राथमिक अनुभव है यन्त्र की मौलिक शक्तियों में आस्था तथा आत्मिक प्रतिबन्ध व्यक्ति द्वारा अपनी अन्तर्गत क्षमता की पहिचान। तभी भारतीय दशक में प्रथम विनयन आत्म दशक आत्म सिद्धि आत्म शिष्टाचार विलया शिष्टाचार इय आत्म के स्वरूप पर मौलिक बल स्थित जाता है। हमारे विचार में निर्देशन के वास्तविक आधार भारतीय दशक में ही और भाग्य ही से अर्थात् यत्न है। अतः दशक में व्यक्ति के गौरव तथा मूल्य का आदर केवल सामाजिक आर्थिक अथवा मनोवैज्ञानिक स्तर तक ही सीमित नहीं है। अन्तर्गत का पार करके वह मानव जीवन की उत्तमर सामाजिक को स्पष्ट कराता है। एक व्यक्ति के उभरने में

उसकी भौतिक दृष्टियों का समन्वय करने हुए भी उभर। दृष्टि को स व उभर
 छात्रिकाँजि त्वा श्याध्यामिक मिट्टिय) की ओर नि शिन्व करता रहता है।

अतएव अपने सो रूप म तो निष्कल के गानिदर प्राधार भारतीय दान
 तथा संस्कृति म मौनिक रूप म समावि र रत है।

सामाजिक सांस्कृतिक आधार

(१) यत्नि समाज का उद्युत्तम द्वाइ

निष्कल के गानिदर प्राधार के अ तएव विरचित एक व यत्नि र व र्णन म
 गौरव को जय सामाजिक र्णितकोस म दया जाता है सो प्रकार ति का मू य र्णिया
 भी समाज की एत उद्युत्तम र्णित के रूप म स्पष्ट हो उता है। यत्नि का व
 गुण र्णित गमू के ी समाज की र्णित दी जा मता है। श्री चू र्णित समाज के
 संस्कृत के मूल म अ तएव वा यत्नि ी निद्यमान र्णित है यत्नि य र्णितो भी
 समाज का गुणात्मक स्तर उभ निर्मित करे शर यत्नि का व विधि ट युद्धि वरव
 द्वारा ी निर्णीत म मता है। सामा यक गानिदर इतिहासरा म तथा समाज
 यत्नि का म साया ग म मति प्रतीत गो कि र्णितो समाज या संस्कृति के
 विकास का एक वय मादर र्णित समाज के यत्नि का र्णित प्राप्त्त प्रा र म प्र म शोष
 जा मता है। स्वाभाविक ी र्णित म प्र यर गानि का विकास के अन्त
 प्रा र करने म सम्पूर्ण अण को र्णित ी गो का यो कहे कि समुचित उ नयन म
 मतेगा।

म लेव चुक है कि समूचा निष्कल काय हा एक व यत्नि के अ नय यत्नि व
 पर वे र्णित वा है। प्र देव यत्नि को मारी र्णित भ्रमतानुत्त वार्थो के अन्त
 प्राप्त्त करके ी र्णित मत्र र्णित भी समाज संशु र्णित रूप से उ नति कर सका है।
 अपना विशेष र्णित का मी र्णित चान तथा समुचित उ नयन द्वारा ी र्णित र्णित
 समाज का अपने अन्त यो ग म प्र ण कर सकता है—और य यो ग म ी र्णित र्णित
 रूप म र्णितो भी समाज का गुणा मक उ नयन करत म स णिक नर है। अन्तिय यत्नि
 यत्नि काय जाव कि प्र र्णित यत्नि के मौनिक प्राधार म हा निष्कल का प्राथमिक
 सामाजिक आधार र्णित र वा है ता को र्णित निद्ययत्नि र्णित म र्णित।

(२) मानवीय ऊचा का मरक्षण

(क) सामाजिक रूप म

निष्कल काय का अ य संस्कृत गामाजिक प्राधार पाया जाता है मानवीय
 र्णित संर र्णित मिट्टान म। म नवीय र्णित र्णित उ नित नि ण समुचित स र्णित
 र्णित यत्नि र्णित तथा उ नित उ नयन को हम नि शर के स्वरूप की यो यो क
 रूप म र्णित चुक है। नि ण क उ नित मौनिक तर्क र्णितो भी यत्नि काय र्णित
 वागी सामाजिक र्णित का भी म्वाधार णित है। र्णितो भी समाज के उ नयन म
 उनकी प्रगाशा मानव र्णित का अ नुत्तम उ नयन अन्तर रूप से र्णित र्णित

है। अचिन्तन संरक्षण तथा व्यक्तित्व उपयोग में अनावश्यक व्यय का अवरोधन भी गौण रूप से निर्दिष्ट रहता है।

पूरा प्रश्न उठता है कि 'यस का उपनिर्देश किस प्रकार हो?' इस नीतिगत सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति क्या हो? निर्देशन तथा समाज की आवश्यकताओं उद्देश्य का विवेकपूर्ण परीक्षण करने पर उन प्रश्नों के उत्तर निर्देशन कार्यक्रम तथा समाज व्यवस्था की कतिपय मूलभूत समालोचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं। दोना का ही अर्थ है परिवर्तन सामान्य या सामान्य संरक्षण समुच्चय तथा उपयोग।

मानवीय परिवर्तन—असमर्थता का समुचित उपयोग हो सके हेतु एक और सम्बन्धित आवश्यकता है परिवर्तनीय सामान्य सुविधाओं का निदान परीक्षण तथा मानवीय संसाधनों के साथ उनका सम्बन्ध स्थापना। सामाजिक सुरक्षा तथा समुचित ही यह एक महत्वपूर्ण पूर्वोक्त प्रश्न है कि किसी भी समाज के भौतिक आर्थिक प्राकृतिक साधनों का समर्थन सरासरी तथा अनुकूलतम उपयोग हो। अन्तर्गत मानवीय क्षमता का सर्वोत्तम विकास तथा अनुकूलतम उपयोग की परिवर्तनीय साधन सुविधाओं का परिश्रेण में सम्भव हो सकता है। अतएव किसी भी उन्नति प्रविष्टापी समाज के निम्न प्रकार की धार्मिक व्यवस्था की आवश्यकता है जिसके द्वारा उनके परिवर्तन तथा उनके परिवर्तन की समस्त क्षमता सुविधाओं का अचिन्तन निदान होकर उनका सुसम्बन्धित उपयोग हो सके। निर्देशन की नूतन धार्मिक व्यवस्था द्वारा ही इस उन्नति अनुकूल आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है। पूरे निर्देशन का अन्तः प्रत्येक परिवर्तन के अन्तर्गत ही सम्भव है अतएव यह न केवल अन्तर्गत अन्तः ही अन्तर्गत उन्नति पर ध्यान देता है अपितु उसकी विविधता का अनुकूल व्यवस्था की व्यवस्थित आलोचना तथा उपनिर्देशन को भी वास्तविक महत्ता प्रदान करता है। इस प्रकार सामान्य सामाजिक व्यवस्था तथा उन्नत का महत्त्वपूर्ण अर्थ है प्रत्येक परिवर्तन व्यवस्था की वास्तविक योजनाओं का नाम से वास्तविकरण हो सकता है। अतएव कहा जा सकता है कि मानवीय एवं परिवर्तनीय क्षमता का सर्वोत्तम उपयोग में निर्देशन का ही अर्थ है महत्वपूर्ण सामाजिक आधार निर्दिष्ट करना है।

(ख) भारतीय परिस्थितियों में

यह महत्वपूर्ण तथ्य का ही भारतीय परिस्थितियों का विशिष्ट पृष्ठभूमि में पर्याप्त अर्थ ही इसकी महत्ता का अनुभव हो उठता है। किसी भी देश की सामान्यतम सम्पत्ति उसके अन्तर्गत मानवीय साधनों में निर्दिष्ट होती है। अतः यह एक कठुन सत्य है कि इस अन्तर्गत साधन जनक या समुच्चय ही सम्पत्ति होने पर भी भारत की गणना आज सत्कार के लिये तथा अन्तर्व्यक्तिगत विकास की जा रही है। कारण स्पष्ट है। परिमाणानुसार अर्थात् जनसंख्या में सत्कार का एक अग्रगामी दशक ही पर भी भारत में तो इस वृद्ध सम्पत्ति का आवश्यक सरासरी है न समुचित उपयोग। अतः ही यहाँ भी यह है कि समुच्चय हमारी काद ही सम्पत्ति की

नी है ।

जनसम्पत्ति को उस सृजक शक्ति के साथ साथ सम्पूर्ण परिवर्तनीय साधनों के प्रति भी हमारा दृष्टि में लाना बहुत बौद्धिक सज्जान रहा है न उनके अनुकूलतम उपयोग के व्यवस्थित आयोजन । य मूल्य है कि प्राधुनिक वाता में उक्त बन्धियों की ओर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित होता जा रहा है तथा उनकी पूर्ति की ओर सक्रिय कदम भी उठाये जा रहे हैं । किंतु तात्पर्य सम्पत्ति के विस्तार के परिप्रेक्ष्य में ये प्रयास अपर्याप्त हैं । साथ ही प्राधुनिक समाज की तुलना में नये बौद्धिकता की भी कमी है जाकि रक्षायुक्त पर व्यवस्थित निश्चय योजनाओं द्वारा पूरा हो सकती है ।

संभव है कि अनेक देशों में भारतवर्ष में कई क्षेत्रों में प्रगति हुई है । विविध स्तरों पर विशालको विद्यालयों तथा प्रगतिशील अध्ययनको की सम्पत्ति में वृद्धि हुई है । उद्योग के क्षेत्र में नाना भाँति के नवीन उद्योगों का विकास तथा विशिष्टीकरण हुआ है । कृषि में जहाँ प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि हुई है वहाँ पर प्रति व्यक्ति आय भी वृद्धमान हुई है । किंतु इन परिमाणों में प्रगति के साथ साथ जहाँ पर कतिपय सम्बंधित राष्ट्रीय आयामों में शीघ्र घटने का एक वृद्ध पर भी उनमें एक अवांछनीय उन्नति ही दिखाई देती है । उदाहरणस्वरूप शिक्षित शक्तियों की संख्या वृद्धि के साथ साथ उनमें बेरोजगारी का प्रचुर रोगाणु के प्राक्के परिवर्धित होते जा रहे हैं । यह एक विचित्र प्रभाव है कि जहाँ तकनीकी या इंजीनियरिंग में प्रगतिशील शक्तियों का संख्या बढ़ रही है वहाँ पर इन क्षमता के बड़े अनेक शिक्षित उद्योगों में उपयुक्त कार्यकर्ताओं का कमी भी अधिकाधिक अनुभूत होती जा रही है । मानवोप ऊर्जा के सरक्षण तथा सक्षुपयोग का अर्थ मूल्य विनिश्चित ही शोचनीय है । इसका निवारण व्यवस्थित निर्देशन का काम करनी पड़ेगी । और इन कार्यक्रमों का आयोजन भी राष्ट्रीय स्तरों पर होना चाहिए जहाँ देश के शैक्षिक तथा औद्योगिक विकास का यांत्रिकीय एक स्तर की श्रेष्ठता में न बने पावे । मानवोप ऊर्जा के सरक्षण के लिए निर्देशन के ऐम कायक्रमों की श्रेष्ठता आवश्यकता है । प्राधुनिक भारत के पंचिक जागतिकीय क्षेत्र में शक्ति के उच्च समस्त शक्ति का प्रयोग और भी गहन हो उठना है जब हम इस क्षेत्र में प्रचलित एक और अवांछनीय स्थिति को ध्यान में लेते हैं । सामाजिक उत्पत्ति का अर्थ बेरोजगारी तथा निरक्षरता का प्रचुर व्यवधान ही हमारा देश की वास्तविक प्रगति को अवरोध करता सा प्रतीत होता है । किंतु हमारे विचार में इस स्पष्ट कमी से अधिक सम्भार तथा हानिकारक गिरावट ही अर्थव्ययोजन की । कई मतों में कहा जा सकता है कि अर्थव्ययोजन से बेरोजगारी शक्तिमाय है तथा अर्थव्ययोजन प्रालंबन से अर्थव्ययोजन रहना बूझकर है । इस कथन का मनोवैज्ञानिक महत्त्व तो उपयुक्त स्थल पर स्पष्ट किया जायगा किंतु यहाँ पर निश्चय के सामाजिक आधारों के परिप्रेक्ष्य में तो यही कहा जा सकता है कि अर्थव्ययोजन में प्रचलित अर्थव्ययोजन उर्जा समाज की विलम्बकारिणी

शक्ति का ही काय कर सकती है। ऊर्जा का सही मान में दृष्टतम उपयोग कर सकने के लिए -पुस्तक स्वयं की ओर ही निर्देशित करने की आवश्यकता है।

() सामाजिक परिवर्तनशीलता

अभी तक तो हमने समाज की लघुतम स्तर के रूप में व्यक्ति को समाज की प्रतिम उत्पत्ति के आधारभूत अङ्ग के रूप में देखा। इसी बिन्दु का दूसरा पक्ष है व्यक्ति की प्रतिम उत्पत्ति के विचारक प्रकार के रूप में सामाजिक स्थिति की निर्णायक भूमिका।

यह एक स्थायी सत्य है कि सतत सामाजिक गतिशीलता के परिप्रेक्ष्य में ही व्यक्ति के जन्म निवास तथा समूह के प्रक्रम स्पष्ट होते हैं। स्पष्ट है कि इस सहज गतिशीलता का प्रत्यक्ष प्रभाव मानव जीवन के कई पक्षों पर पड़े। साथ ही यह भी अचूक है कि इस सतत गतिशीलता के मध्य में भी संतुलित समन्वित बने रहने के लिए समाज की सहज परमात्मकता तथा सतत परिवर्तनशीलता से अनुकूलतम परिचय बनाये रखने की निरंतर आवश्यकता रहती है। इस आवश्यकता का पूर्ण निर्देशन के प्रबुद्ध वाक्यमा द्वारा ही हास्यी है।

वर्तमान स्थिति यह है कि जहाँ अनिश्चित जीवनमापन के सामाजिक उपकरणों तथा विविधता में एक स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है वहाँ पर मस्तिष्कीय बित्तन की अपेक्षा न मानवीय प्रक्रियाओं पर भी कई अर्थ दृश्य-सामग्रियों का अनिश्चित प्रभाव पड़ता जा रहा है तथा उन्हें नवीन दिशाओं की ओर उन्मुख कर रहा है। सूचना प्रसारण के विविध अभिकरणों में अभूतपूर्व वृद्धि होने के कारण आज का औद्योगिक संस्कृतिक अर्थ प्रवृत्ति संवसुद्धि की अपेक्षा बहुत अधिक प्रबुद्ध है। किन्तु सूचना सामग्री के इस उमकते प्रवाह में बिना उचित संहारे के उसके वह जाने की आशंका है। यह सारा उस निर्देशन द्वारा ही प्राप्त हास्यी है। हम प्रथम में यहाँ में इस दृश्य में प्रारम्भिक परिचय प्राप्त कर चुके हैं। यह एक सामाजिक मान को बात है कि परिवारण में धारण के तथ्य ही बहुत कम हो तो व्यक्ति को उन पर अधिकार प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होगी। किन्तु यदि परिवारणीय सूचना सामग्री बहुत अधिक हो तो केवल आकार प्रकार की समस्या से कुछ धारण बढ़कर उसमें विविधता का तक्षण भी सहज रूप से समाहित हो जाता है। विविधता के अनुवर्तन में विराधिता का होना भी वर्तमान प्रवाहात्मिक नहीं। और ऐसी स्थिति में धारण का प्रश्न उभरित हो जाता है जोकि शुद्धरूपसे निर्देशन का उत्तर शक्तिव है।

(४) औद्योगिक नाति

एक दृष्टिकोण के सामाजिक परिवर्तन में जिस घटना ने मानव जीवन को सबसे अधिक प्रभावित किया वह है बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की तकनीक प्रगति। निर्देशन के विनाशकारी स्वरूप के अनुवर्तन में हम इसके विषय में

कुछ पक्ष चुने हैं। यहाँ पर हम निर्मलन के एक नए रूप सामाजिक आर्थिक आधार के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यदि यह बना जावे कि एक प्रकार से सामाजिक परिवर्तनशीलता भी कर्म पत्रों में औद्योगिक आर्थिक परिणामस्वरूप हुई उसे अनुचित नहीं होगा।

हम आर्थिक ने सबसे पहले सामाजिक क्षेत्र में एक नवीन हस्तचक्र प्रविष्ट कर दी। नवीन उद्योगों तथा उच्च सम्पन्न करने के नूतन बहानिष्ठ तरीकों से बाजार सुदृढ़ बंधक सभी के लिए बड़ी सामाजिक उत्तरदायित्व प्रस्तुत करे। नवनिर्देशी आर्थिकता में जो पूर्ण के लिए मध्य आर्थिक का प्रश्न उत्पन्न कर बनता गया। न केवल उद्योगों को समर्थन करने के तरीकों में बहानिष्ठ उत्पत्ति न एक प्रगतिशील परिवर्तन प्रविष्ट किया प्रविष्ट करनी युग ने कर्म नवीन परभावों को अपेक्षित-औद्योगिक सत्कार का स्वभाव ही बनाया गया। एसी स्थिति में किसी परिचित उद्योग को समर्थन प्राप्त करने का प्रश्न ही उद्योगों में न केवल तथा जीवन के परभाव उद्योगों प्राप्ति प्रिया में प्रगतिशील प्रश्न करने का समस्याओं से उत्पन्न बनता गया। जगत् कि हम पूरा प्रवृत्तता में देख चुके हैं वह परिस्थिति पश्चिमीय देशों में पहले प्रारंभ कीर प्रसिद्धि तथा पर-परिस्थिति निर्माण सवालों का जन्म भी हमारे साथ ही पूरा हुआ। किंतु समय की गति के साथ साथ औद्योगिकता से उत्पन्न-तथा विनाशोन्मुख भारत में भी यह परिवर्तित स्थिति निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार बननी आ रही है। अन्ततः यह कहा जावे कि अर्थिक उत्पत्तिशील नहीं होगी कि बहानिष्ठ औद्योगिक आर्थिक के परभावका परिणाम की सुपन्न में आर्थिक निर्माण कायको की कोश न तो हमारी राष्ट्रीय स्तर पर बर्बाद सवेचना लागू हुआ है न को अर्थव्यवस्था काय में ही पाया है। हमारे विचार में कर्म प्रगतिशील योजनाओं के आकार भी हमारे अर्थव्यवस्था विकसित का यह एक प्रमुख कारण है। मानवीय ऊर्जा के संग्रह तथा उपयोग का अंतर्गत हम में तथ्य के प्रश्न उत्पन्न हो रहे हैं।

(५) नारियों की परिवर्तित भूमिकाएँ

आधुनिक समाज के जीवन प्रतिरूप का एक सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है नारियों की विकासशीलता का स्वरूप। युग युग में समाज का विकास पर साक्षरता का विकास ही प्रमुख था किन्तु नारी का मुख्यतः स्थान उसके घर की चारदीवारी में मध्य ही रहता है। यहाँ कि साक्षर परिवर्तित समाज में भी उत्पन्न हो प्रचुरता से प्रकटित था जितना कि वह पूर्वोक्त विचार में समाज से प्रकट रहा है।

जब जन्म इन विचारों में परिवर्तित मान्यताएँ तथा दर्शकों का आन्दोलन घर के अन्दर ही से विकसित होकर जीवन सामने आया। जीवन की आरंभ में उद्योग होने लगा। न परिवर्तित का एक सामान्य कारण था औद्योगिक सत्कार में मानव जीवन की सत्ता बलवान आर्थिकताएँ की जीवन की पूर्णतः परिवर्तित के एक ही पक्ष का ही विकास नष्टि था। न केवल ही और न ही उत्पन्न तथा जीवनपावन के रूप में उत्पन्न के साथ समाज ही अपेक्षित न हुआ गया। यहाँ उत्पन्न हुआ

आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक धन की प्राप्ति का भी बड़ा आवश्यकता पूर्ति के साधनों की खोजी हुई कीमत न समस्या को और भी जटिल बना दिया। एसी परिस्थिति में स्त्री को संकुचित स्थान-सीमाएं बहूत्र रूप से विस्तृत होनी पड़ी। इस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में प्रगतिमान गणतंत्रों ने जति धन तथा निधि की निरपेक्षता में प्रत्येक शक्ति की परिभाषा को प्रतिष्ठित किया। इस सहायक धौरव में उपरोक्त धार्मिक कारणों से उद्भूत नारी की तबाल भूमिका को और भी संकुचित प्रदान की। अत्यंत आत्मविश्वास पूर्वक वह सही मान में जीवन के वर्तमान क्षेत्रों में पुष्प की सञ्चारिणी बन कर अग्रसर होनी लगी।

विचार कर भारतवर्ष में नारी को पुष्प की उस समवृद्धता को पश्चात् प्ररणा मिली दूसार स्वतंत्रता सप्राप्त के प्राप्तिमान में। उस समय उसमें पुरष के बंधे से नया मिला कर देश के नियमों का कुत्राणया में न शक्ति विस्तार गया अतः पुष्प को इन परिधानों के लिए साहस तथा प्ररणा प्रदान की। उस समय से भारत वर्ष की नारी भी पुरुष की अनुगामिनी मात्र न रह कर उसकी सहयोगिनी बनी तथा जीवन के विविध क्षेत्रों में उमका कायमार करने करनी लगी।

किन्तु उस परिवर्तित परिस्थिति का एक प्रतिवाद्य परिणाम व्यावसायिक औद्योगिक क्षेत्रों में स्पष्टरूपण दृष्टिकोणर हाने लगा। हम ऐसे चुके हैं कि कई कारणों के फलस्वरूप बेरोजगारी अतः रोजगार तथा आनिपादन की समस्याएं सामुहिक आर्थिक सामाजिक व्यवस्था में समस्या स्वरूप बनती जा रही थी। अभी तक इस वर्तमान समस्या से पुरुष का ही सम्बन्धित था। किन्तु अब महिलाओं को भी समाज के क्षेत्र में उतर कर परिस्थिति का और भी जटिल बना दिया। उनके शैक्षिक व्यावसायिक प्रशिक्षण के प्रश्न निश्चय कायकर्मों की आवश्यकता को और भी प्रबल करने लगे।

किन्तु महिलाओं के व्यवसाय प्रवेश से उद्योग विज्ञान में एक भौतिक तथ्य का उद्घाटन भी हुआ। उनकी शक्ति तथा अभिमानाया के सम्बन्ध में कल्पित व्यवसायों के विफलता न यह इंगित किया कि कुछ विशिष्ट व्यवसाय क्रियाएं व पुरुषों की अग्रणी अधिक कुशलता पूर्वक सम्पन्न कर सकती हैं। दूसरी प्रकार विकासमान औद्योगिक न पुरुष-वस्त्रात्वं के विधास्व को चुनौती देन लगे दोनों लिंगों में इन समस्याओं की बचन सामाजिक अधिकारिता पर हा बन गया। तात्पर्य यह कि शैक्षिक-व्यावसायिक निर्देशन का आवश्यकता केवल पुष्प धन के ही लिए न समझी जाकर दोनों ही वर्गों के नियम समान रूप से स्वीकृत होनी पड़ी। उस परिवर्तित परिस्थिति ने स्वभावतः निर्देशन के सामाजिक माध्यमों को प्रतिष्ठित बन प्रदान किया।

(६) सम्भृति के मूल्य

हम अन्वेषण के परिणाम में हा कह चुके हैं कि मानव की मूल्य मापनी का निर्माण तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन निर्देशन का एक मुख्य उद्देश्य है। और वह कि किसी भी समाज की मूल्य मापनी उस समाज की सम्भृति में

में विकसित होती है। इसीसे हमें यह स्पष्ट है कि निर्देशन नाम के विविध आधारों में से उनके सांस्कृतिक आधार एक ही मूल मूल्य रखते हैं। अस्तु निर्देशन के अंतिम अर्थ मूल समाज यादि के स्वल्प ही कल्पना संस्कृति विषय के मानकों के अनुसार निर्मित होती है। इसीसे किसी भी निर्देशन कार्यक्रम की योजना की संस्कृति के मूलों पर आधारित करना पड़ता है।

यदि पर संस्कृतिक मूल्य बहने के कारण का कुछ अधिक स्पष्टीकरण वाचको के लिये आवश्यक होगा। संस्कृति के मूल्य का हर हमें इन मानकों की जीवा के रूप में कुछ अधिक विभिन्न रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। एक दृष्टि से समस्त मानव जाति के कुछ सामान्य जीवन मूल्य ही सकते हैं। समाजशास्त्र ने इन मूल्यों का भी एक सौगन्धित सारचना के रूप में विवेकन किया है। सामान्य अनुसंधान आवश्यकताओं सम्बन्धी मूल्यों के प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ करके उनमें स्व-वास्तविकता की आवश्यकताओं सम्बन्धी मूल्यों को इस मानकों के उच्चतम बिन्दु पर रखा है। वे बिन्दु के रूप में निर्देशन के मनोवैज्ञानिक आधारों के अन्तर्गत अधिक विस्तार से कहा जायगा। यहाँ पर तो मानव जीवन के सामान्य मूल्यों की तुलना में सांस्कृतिक मूल्यों के विविध रूप की ओर वाचको का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है।

संक्षेप में संक्षेप की विभिन्न मूल्यों में प्रस्तुत किया जा सकता है। मानव जीवन की विविध-स्वरूप आवश्यकताएँ ही प्राप्त समान होना ही बिन्दु इन मानकों के आधारों की शक्ति जिन कारणों से जिन प्रकार की जाती है यह संस्कृति विषय द्वारा निर्धारित होता है। आवश्यकताएँ अनुसंधान सम्बन्धी मूल्यों मानवीय आवश्यकताओं से ही वर्तमान उदाहरण लेकर हमें तब ही अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। भूख परिवारहीन प्रभावों से रहना तथा प्रजनन कुदृष्टि अनुसंधान आदि आवश्यकताएँ हैं जो कि मानव ही क्या-समस्त प्राणि-जगत् में समान रूप से पाई जाती हैं। किन्तु किन पदार्थों का विशिष्ट रूप में किन्तु प्रकार प्रकार मूल्यों का समान किया जाता है यह संस्कृति प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। बात अन्त सामान्य ही जगत् पर भी अनुभव के समान को यह किस प्रकार प्रभावित कर सकती है यह कतिपय वास्तविक उदाहरणों के विवेचन द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। प्राचिनक प्रकृति मानवशास्त्रिक पुष्प में स्थान तथा समय की दूरियाँ अन्तरी सञ्चित हो गई हैं कि विशिष्ट शिक्षा तथा अनुभव शौर्य हेतु पक्षियों का अध्ययन देशों के साथ विविध प्रकार के समान का एक आधार का नाम जाना जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में विकसित देशों के लिए इन देशों का एक सामान्य अनुभव रहा है। सांस्कृतिक आधारों। जीवन की अन्तरी आवश्यकताओं की पूर्ति भी जिन पदार्थों से जिन प्रकार की जाती है उनमें परिवर्तन-रचना मानव के लिए अनुसंधान का कारण हो सकता है। कई बार विशिष्ट पक्षियों के प्रारम्भ से ही सामान्य जीवन के प्रति अन्तरी गहन विवेचन का नाम जाना है कि जिन जीवन का अन्तरी अनुभव का नाम

जोचित प्राणियों के हस्त-दुकारों की जीमत्त कल्पनाएँ उत्पन्न कर देता है। यहाँ तक कि हम भोजन को खाने वाक के प्रति भी उसके मन में एक अचेतन प्रणा उत्पन्न हो सकती है। यहाँ निर्देशन से सम्बन्धित जो लक्ष्य महत्त्वपूर्ण है वह यह है कि दलित जीवन के सामाज्य प्रतिरूप भी संस्कृति विशेष के मानवों की कुछ समान बातों के आधार पर निर्मित होने हैं तथा उस संस्कृति में पले-पल्लि के लिए उनमें विचलन दुःखदायी मिट्टी होता है। इसी प्रकार पर्यावरणीय प्रभावों से बचने का मौनिक प्रयत्न लिए हुए भी वंशभूषण का स्वरूप संस्कृति विशेष के रहने रहने के तरीकों द्वारा निर्धारित होता है। प्रकृतन सम्बन्धी और आवश्यकताएँ प्राणीमानव में मूलरूप से विद्यमान होने पर भी उनका सन्तुष्टि का माया तथा उपायम संस्कृति विशेष की अनुनात्मकता तथा सत्तावादित्वाकार नियंत्रित होता है। केवल इतना ही नहीं विवाह पूर्व तथा विवाहोपरान्त स्त्री पुरुष सम्बन्ध का स्वरूप भी प्रत्येक संस्कृति में अपने अपने मानकों के अनुसार एक अलग स्वरूप प्रकट रहता है जो कि दूसरी संस्कृति में पले-पल्लि के लिए कुछ अटपटा सा सिद्ध हो।

यह तो सामाज्य अनुकरण सम्बन्धी शारीरिक भौतिक श्राव्यकताओं की बात हुई जो कि संस्कृति—विशेष के मानकों के अनुसार परिपूर्ण की जाती है। समाज विशेष के प्रगति स्तर के अनुसार इन आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रथम व्यवस्था का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रथम एकक व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता तथा प्रथम व्यावसायिक विनयी है—प्रथम कितनी होनी चाहिये—यह भी समाज विशेष के प्राथमिक मानक पर निर्भर करता है। इसी अधिक मानक के आधार पर व्यक्ति की व्यक्तिगत तुष्टि का स्वरूप निर्धारित होता है। अमरीका तथा भारत में परीवृत्त तथा प्रमीर की परिभाषा ही किसी निश्चित धनराशि के निरपेक्ष रूप पर निर्मित न होकर समाज के औसत प्राथमिक स्तर द्वारा अनुवर्धित होती है। स्पष्ट है कि एकक व्यक्ति की व्यक्तिगत तुष्टि का मापन यहाँ औसत स्तर होगा—न कि उसकी पुनःतम आवश्यकताओं की वास्तविक पूर्ति के लिए वांछनीय धनराशि।

प्राथमिक सामाजिक स्तर से भी कुछ और उच्च स्तरीय मनोवैज्ञानिक मूल्यांशों के सम्बन्ध में ये ही आवश्यकताएँ स्व-वास्तविककरण के सन्दर्भ में गहनतर स्वरूप धारण कर लेती हैं जिसका विवरण प्रथम मंश में प्रस्तुत किया जावगा। किन्तु प्राथमिक क्षेत्र में भी व्यक्तिगत तुष्टि के साथ सामाजिक प्रतिद्वन्द्विता का जो नाजुब प्रश्न घुला मिता रहता है वह संस्कृति विशेष के मूल्यांशों द्वारा एक बड़ी सीमा तक प्रभावित होता है। कुछ संस्कृतियाँ ऐसी हैं जिनमें समाज में व्यक्ति का स्थान उसकी अधिक स्वयं द्वारा निर्धारित किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में स्वाभाविक ही है कि व्यक्ति सन्तोषप्रद सामाजिक समजन की उपलब्धि हेतु अपनी अधिकार उजा प्रथम प्राप्ति का प्रयास में लगा दे। इसके विपरीत जिन संस्कृतियों में भौतिक के स्थान पर प्राथमिक भौतिक तथा भावनात्मक मूल्यांशों का अधिक आधार है वहाँ पर स्वाभाविक व्यक्ति का

नातर उपायों के बिना दोनों ही आधारों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन होने पर भी वास्तविक परिणाम नहीं प्राप्त हो सकता। वस्तुतः ये दोनों ही अथवा इसलिये किए जाते हैं कि दोनों ही पक्षों के मनोवैज्ञानिक घटकों के ज्ञान व आधार पर प्रत्येक व्यक्ति के लिये उसकी मनोवैज्ञानिक क्षमताओं का अनुसृत्य शिक्षण तथा प्रशिक्षण का आयोजन किया जा सके। यह इसलिए आवश्यक है कि इन प्रकार के आयोजन द्वारा उसके इष्ट तम व्यक्तिक विकास तथा उसके द्वारा अनुसृत्य तम सामाजिक योगदान की प्राप्ति की जा सकती है।

निर्देशन के अर्थ का ज्ञान यह स्पष्ट डालता है कि उक्त प्रकार के अध्ययन आयोजन उसके उत्तरदायित्वों में एक प्रमुख स्थान रखते हैं।

(२) शिक्षा की उद्देश्यहीनता

उक्त विवेचन के परिप्रेक्ष्य में हमारा उद्देश्य है कि उक्त उद्देश्यहीनता की सामाजिक चर्चा का परीक्षण करना बर्दाश्त। इस स्थान पर अत्यंत सिद्ध होगा। हमारा उद्देश्य शिक्षा के विविध स्तरों तथा अंगों में परिणामात्मक विकास—पीर के। उही गुणात्मक भी—होना है। शिक्षण तथा प्रशिक्षण दोनों ही समाज में अत्यंत विकसित तथा विनामय शिक्षा के प्रति एक अनास्था तथा अज्ञान की भावना प्रकटित है। कारण स्पष्ट है जो कि अपने ही लोभ तथा द्वेषों को विश्वविद्यालयों के सम्मुख फाड़कर हमें छोड़ने लगे। नौकरों आदि नाराजगण वाले विद्यालयों के आक्रोश में शोका जा सकता है। केवल शिक्षा के निरपेक्ष आयोजन मात्र से शिक्षा अपने उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकती। उसकी आयोजना सामाजिक प्रौद्योगिक स्थिति तथा आवश्यकताओं के सम्बन्ध में की जानी चाहिए।

जसा कि हम पूर्व विवेचनों में भी दख चुके हैं इस क्षेत्र में अत्यंत योजनाओं से न केवल शिक्षा की उद्देश्यहीनता परिलक्षित होती है अपितु औद्योगिक क्षेत्र की उन्नति में भी अवरोध उत्पन्न होता है। यदि यह कहा जाय तो अज्ञानयोक्ति नहीं होगी कि शिक्षा तथा उद्योग के क्षेत्रों की इन निरपेक्ष प्रगतियों से दोनों में केवल निरपेक्ष देयता की ही अभिवृद्धि हुनी जा रहा है। एक विकसित देश में धन शक्ति समय तथा माणव सभी का यह एक निम्न रूप में धीमा हुनक प्राय है जिसका कि वैज्ञानिक निर्देशन कामकर्म द्वारा अवरुधन किया जा सकता है।

सांख्यिक शिक्षा व स्वातंत्र्योत्तर प्रथम वृहद् सर्वेक्षण के प्रतिबन्धन में ही माध्यमिक शिक्षा आयोजन के अन्तर्गत शिक्षण योजना तथा शास्त्राध्ययन निर्देशन का अन्तर्गत दोनों की समान रूप से सिफारिश की थी। किन्तु हास्यास्पद वास्तविकता यह रही कि न तो माध्यमिक शिक्षा संस्थाएँ ही सही मान में बहुउद्देश्यीय हो सकीं न उसकी सफलता के लिए आवश्यक निर्देशन कार्यक्रमों की ही योजना हो सकी। परिणाम यही हुआ कि शिक्षण संस्थाओं तथा शिक्षित व्यक्तियों की संस्था में वृद्धि होने पर भी उद्देश्यहीन निम्न शिक्षण व्यवस्था तथा आयोजन द्वारा अत्यंत व्यर्थता की ही उत्पत्ति एवं वृद्धि हुनी। निर्देशन व समुचित कामकर्म द्वारा ही अन्तर्गत शोचनीय स्थिति में

समाज जाया का सफलता है। प्रावण्यकता का मान की है कि शिक्षक कायक्रमों की आयोजन-समितिवाय प्रसिद्धिनिर्देशन-वायकताओं कोभी रखान किया जाना चाय। केवल नियम-विशेषनों जारा ही बनाए गए शैक्षिक पाठ्यक्रमवाय विषय-विशय की विनासमान सूक्ष्मताओं का अनेही समावेश हो जाने सिन्तु विभिन्न वय रयि बुद्धि एव दायता के व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान म रख कर पाठ्यक्रम सदावा पाठ्यक्रमों का विनाग कर सपना बिना व्यक्ति विज्ञान से र्वा विना विशेषण के सम्भव नह। नीलिय पाठ्यक्रमों निर्माण मे इम प्रकार के विशेषण को सम्मिलित करने का नूनन-आभावित प्रस्ताव यग रला जा रहा है।

दम्तुत तो ा केवल शैक्षिक कायक्रमों के आयोजन सपित उनके पारण तथा मूपाय म भी नन विशेषणों की म यता वाञ्छनीय है। तमो न तथा की शीर सजम आन व प्रवृत्तिले दशा म निर्देशन कायक्रमों को समूच शैक्षिक कायक्रमों के एक प्रविद्धित शय व रूप म आयोजित किया जाता है। इम प्रकार की आयोजना वा ता एय वही होता है कि उद्देश्य निर्धारण व प्राथमिक चरण म सकर मूवर्धन को समागरी प्रशिया तक शैक्षिक प्रथम का राट निर्देशन के प्रकाश स आयोजित हो सके। इम नूनन शैक्षिक विनाग का प्रकाश शैक्षिक यण व विषय शयरोको को न केवल र्शा सके सपितु नह दूर करन की विषाठ सयवा शक्तिप्रदण करन की गाठ लि शित कर सके। हमारे विचार म भारत म शिमा की दृष्टीरत वतमान सद्द शय हीनता निरपकता शिमा हीनता र्शा को सपकट करन वा सही यनानिक ठगाव हो सस्ता है शीर शैक्षिक शैक्षिक कायकताओं के नाठ—यहा पर निर्देशन को शिद्य के कायक्रमों म सगाती मय स पुन दिन टूट शय म प्रातुत किया जा रहा है। यदि सौ माने य शिमा का शय मानव स्यनार मे वाञ्छनीय परिवर्तन वा सस्ता है तो हमारे विचार म परिवर्तन की यान्दूर्धन वाञ्छनीयता निर्धारित एव निश्चित करने म शिक्षा को निर्देशन की ही स यता ननो होगी। ठनी शिक्षा सपन वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति करेगा तथा उद्देश्यपूवना की बनमान र्शासि म र्शासि प्रा व कर सकेगी।

(३) मूल्यों का उजन एव स्वपीकरण

धव्याय के प्रारम्भ म हम व सके हैं कि उजन मे प्राप्त उत्तरी के प्राधार पर ही मनुकृति विषय के यचितयों की मूय सपनी का निर्माण होता है। प्रव समाज म स यत स्वीकृत इम मूल्य मानवी का समाज व भावी सम्सा तक प्रकाशमक रूप म प्रथम का वावन्धिक उत्तर विव वपता है शिमा के दर्शन कायक्रम पर। वतमान विवासमान जान के अनुसार यह माना सपिकाधिक स्वीकृत हानी जा रहा है कि शैक्षिक कायक्रमों वा उद्देश्य केव न पुव निर्धारित पाठ्यक्रमों मे निहित मान मूवना-नीमय वा प्रेषण मान न होकर यचित के सवालीय विकास सम्बाधा सप सवात्मक सवपासव यत्तों—यदा शक्तिवृत्ति मूय सचित र्शा का मूवना-नीमय करन भी होता है। सिन्तु नम सदात्मिक स्वीकृति का प्रपक्ष दाव र्शीकरण करन गु

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जो प्रकार्यात्मक प्रयोजना नहीं पाई जाती है। शिक्षकों की प्रमुख भूमिका अनुदेशक के रूप में—पूरा ही सफलता में ही स्वयं उनके समझन सम्बन्धी प्रश्न अपनी निजी जटिलताओं से तृप्त शिक्षा शास्त्रियों के सम्मुख शिक्षक प्रस्तोच सम्बन्धी विविध समस्याएँ उपस्थित करत जा रहे हैं। पत्रस्वरूप शिक्षार्थी के भावात्मक संवेगात्मक पक्ष का विकास न केवल उपस्थित रहता है अपितु शिक्षकों की मनोवृत्तियों द्वारा विपरीत रूप से प्रभावित होता है।

स प्रमुख प्रभाव के परिचित शाखा समाज तथा घर में कई ऐसे विघटनकारी तत्व होने हैं जिनका शिक्षार्थी के जीवन मूल्यों पर अनुचित प्रभाव पड़ सकता है। निर्देशन के अर्थ में सामान्य रूप से अभिव्यक्त शिक्षक इन प्रभावों के प्रति सचेत रह सकता है किन्तु हमारे देश का शिक्षक—शिक्षा प्रायोजना में अभी निर्देशन का सामान्य रूप से सम्भावना नहीं हो पाया है। पत्रस्वरूप मौखिक भारतीय शिक्षक निर्देशन के मूल तत्वों से भी प्रायः अनभिज्ञ ही रहता है। किन्तु यदि उसे साधा रूप से उस क्षेत्र में अभिव्यक्तित्व का भी दिया जाता तो भी यह स्पष्ट है कि उसका प्राथमिक उत्तरदायित्व अपनी अनुदेशक की भूमिका में कि मात्र के अतिरिक्त युग में जटिलतर होती जा रही है—सफल रूप से निभाया जाता है। विषय वस्तु विस्तार के साथ ही शक्ति विधायी का विनाश भी वर्तमान युग में अतना विवृत होता जा रहा है कि अपने व्यवसाय का अनन्दिन कार्य भी आज के शिक्षक के लिये पर्याप्त चुनौतियाँ प्रस्तुत करता जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में उससे अनुदेशकीय क्षमता में अप्रत्यक्षरूप से सम्बन्धित भूमिकाओं को भी सगुणित रूप से निभा करने का अपेक्षा करना केवल अल्पकालीन प्रति प्रायसगत नया होगा।

यह सत्य है कि एक सामान्य सीमा तक शिक्षाधियों में स्वीकृत मूल्यों का विकास का अर्थ प्रथम साक्षरता निजी अध्यापन विधायी तथा अपने व्यक्तिगत सम्बन्धी तारा कर सकता है। किन्तु इससे आगे बढ़कर हम क्षेत्र में सम्भावित कुछ असामान्य परिस्थितियों की ओर संवेदनशील रहने हुए भी वह उनके साथ कार्य करने में अल्प सक्रिय योगदान नहीं दे सकता। वर्तमान युग में अनिपय विरोधाभासी मूल्यों का महत्प्रतिपक्ष उक्त प्रकार की सामान्य परिस्थितियों के एक बल सङ्ग्रहण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। आज हम भारतवर्ष के किशोर समाज की तुलना चीन के पर प्रस्थित एक युवक के साथ कर सकते हैं जो कि अपने जातीय भाव के सम्बन्ध में शक्तिशाली है। मूल्यपूर्ण शीघ्र पति स सम्बन्धित इस देश में अमूल्य मानवियों का अस्तित्व एक साथ हृष्टिगोचर होता है। किशोर तो क्या हमारे व्यक्तियों के मन में भी अनेक अथवा अनेकानेक रूप से स्वीकृति सम्बन्धी विधातक उत्पन्न करते हुए कुछ प्रश्न हैं। ज्ञान अथवा पुरातन ? धर्म अथवा परिधर्म ? नीतिक अथवा आध्यात्मिक ? विज्ञान अथवा विश्वास ? इति अथवा लोकोप ? भारत का फिर पुरातन संस्कृति में इस प्रकार की अनेक विधाएँ जिनासाएँ जाना बहुत अस्वभाविक

नडा है। किंतु मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह एक द्रव्य अक्षय-मय पर बनायमान रूप से अवस्थित धारण के विचार के विदे जब इन विचारधाराओं की सफलता अपने बदलने से या निश्चित होए जा त मूर्ति हो पाती ही उसकी शिक्षा जय पीछा दुबुरी ही उठती है। स योग जय विचयन का प्रभाव उलक गता जाय क बर्न यथा पर यह धारणा है। ततो परिस्थिति से सावधानता ही लगी प्रतिपाद है कि विवेक रूप से प्रतिष्ठित निर्देशन कायनकारिता द्वारा देव क न्न भावी नागरिकों के मन की मयार्थों का अनामिक रूप से विनाशण किया जा सके उन्हे उनके जीवन में कौशल्य भावों के सम्पन्न से नि कने विज्ञा जा सके तथा उनके मानस में स्वीकृत मूल भावों का विकास किया जा सके। स्पष्ट है कि इस प्रकार के सवनीय उत्तराधिकारों की पूर्ति हेतु शास्त्रों में निर्देशन वास्तव्य की निविद्या सम्बन्धन है और इही भावधारणधाराओं में निर्देशन क शक्ति साधारण मूलभूत रूप से कार्ये जा सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक साधारण

मनोविज्ञान मानव परार का ही विधान है। मनस्य मानव व्यवहार का ही प्रमथारण सम्बन्धित निर्देशन काय के सम्बन्धन साधारण मनोविधान के मेल से ही सम्भव है। मनस से कुछ प्रमुख साधारण का विवेचन निम्न अनुच्छेदों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) यक्ति का सम्बन्धन एवं विज्ञान

एक य प्रत्येक विद्वान् ही शरीर से ही सम्बन्ध मानव जीवन को ही सम्बन्धन एवं विज्ञान के मेल निरंतर प्रयत्न के अन्त में देखा जा सकता है। अतः मन ही ज्ञान का सम्बन्धन धारण को भी इही ही सीधों के अन्तगत समाविष्ट किया जा सकता है। अतः पूर्व विचयनों में हम यह भी देख चुके हैं कि निर्देशन का मूलतः क्षेत्र जीवन एवं शिक्षा को एक सम्बन्धित तन्त्र-व्यवस्था का एक सफल प्रयत्न का स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से ही अवधारित हुआ है। सम्बन्धन एवं विज्ञान का वैज्ञानिक प्रयत्न में परिष्कार प्राप्त किए बिना ही तो अधिकांश की सुनी सम्बन्धन का उत्तरार्थ नरार्थ का मननी है। यही हमका समुचित विज्ञान की ओर सहायता दी जा सकती है। निर्देशन के परिप्रेक्ष्य में इन दोनों प्रयत्नों के निम्न विवेचन में एक बार और की अधिकांश स्पष्ट हो जायगा।

सम्बन्धन के वैज्ञानिक प्रयत्न में मन से अधिकांश धारणों का ही मूलभूतमन्त्रित होता है। अतः सम्बन्धन का ही मूलभूतमन्त्रित धारण क्षेत्र की उस अधिकांश का सूचक है जिसमें किसी परिस्थिति में एक य एक का अधिकांश धारणों का मूलभूत तन्त्र के साथ साथ उत्तम से प्रकार की अधिकांश मन्त्रित ही कि उनमें सवनीय या अधिकांश उत्तम मन सके। यह स्थितियों का सम्बन्धन ही पूर्वविकसित होती है साधारण का साधारण प्रकार तथा उत्तम अधिकांश मन्त्रित समुचित साधारण तथा उनके अन्त प्रयोग का साधन का साधारण। इसी उद्देश्य को मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में लागू करने सम्भव

मूल पूर्वविक्रयकृताएँ तो वही रहेंगी जो कि यांत्रिक क्षेत्र में होती हैं—अर्थात् परिस्थिति के मत्वावधानिक आधारों की प्रकृति एवं प्रकृतियों के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान तथा उनके साथ कार्य कर सकने की वनानिक कुशलता। स्पष्ट है कि मानवीय धटकों की प्रकृति का ज्ञान उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों का सम्बोध—तथा उनके साथ कार्य कर सकने का कौशल—मनोविज्ञान के क्षेत्र से ही प्राप्त हो सकता है। अतएव स्पष्ट है कि व्यक्ति के बहुप्रयामी समज्जन का महत्त्वपूर्ण उद्घष्य लिये हुए निर्देशन की अपनी वापत्तिशाएँ मनोविज्ञान से ही प्राप्त करनी पड़े।

यांत्रिक क्षेत्र सम्बन्धी उक्त उदाहरणों से यह भाति उत्पन्न नहीं होनी चाहिये कि यांत्रिक तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में समज्जन की प्रकृति तथा स्वरूप में क्यातय साम्य है। इस भाति के प्रबरोधन के लिये दसरी स्थल पर मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में समज्जन की अपनी कुछ विशिष्टताएँ भी बताना आवश्यक होगा। सर्वप्रथम तो यह ध्यान रहे कि मनोवैज्ञानिक समज्जन एक जीवित परिस्थिति में सम्पन्न होता है जब कि यांत्रिक समज्जन की प्रक्रिया निर्जीव स्थूल पदार्थों अथवा स्थाय पदार्थों में होती है। शितीय-धोर यांत्रिक समज्जपूर्ण स्मरणोप तथ्य इन सम्बन्ध में यह है कि मनोवैज्ञानिक समज्जन प्रक्रम में सम्प्रथित सभी पद गत्यात्मक होते हैं। उनमें भौतिक जगत् की यांत्रिक स्थिरता नहीं होती। इन पदों के उदाहरणस्वरूप हम या तो गति तथा उसके परिवर्तण की सम्भावित प्रसंगतियों को दे सकते हैं अथवा उसी के अन्दर में स्थित एकरात्रो अंगनों के अङ्गों के मध्य सघर्ष की दृश्य सज्जन हैं। सामान्यतः किसी भी प्रकार की असंगतता सघर्ष अथवा टूट-तनाव उपस्थित करता है तनाव का अनिकाय परिणाम है पीडा जो कि गति के कुसमज्जन का कारण बनती है। इस तनाव तथा तनावजय पीडा को दूर करने के लिये आवश्यक हो जाता है कि परिस्थिति में वर्तमान विविध धटकों की प्रकृति से परिचय प्राप्त किया जावे। परिचय न पश्चात् या उसके साथ साथ ही अनिकाय हा जाता है कि उनकी गति विधियों का मज्ञान। समज्जन की प्रकृति तथा उसकी गतिकीयों का वनानिक ज्ञान ही हमें व्यक्ति को समज्जन की सुखद स्थिति की ओर ले जा सज्जन में सलम कर सकता है। यह वनानिक सम्बोध मनोविज्ञान के क्षेत्र से ही प्राप्त किया जा सकता है। चू कि निर्देशन का एक प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति को उसके सर्वांगीण समज्जन में सहायता प्रदान करना है अतएव उसे मनोविज्ञान की वनानिक नींव पर ही अपनी प्राथमिक कृष्य शिताएँ स्थापित करनी हामी।

शिक्षा का द्वितीय समाहारी ध्येय— विनास का सप्रत्यय समज्जन न त जबत सम्प्रथित होता है अपितु उससे प्रभावित भी होता रहता है। असंगत पक्षा के सहस्रस्तित्व से सम्पूर्ण परिस्थिति का विकास अवरोध होने की आशका रहती है यह एक सामान्य प्राकृतिक तथ्य है। प्राकृतिक प्राणी मानव के जीवन में भी यह तथ्य समान रूप से चरितम् होता है। इसलिये प्रथम महत्त्वपूर्ण तत्व हम सम्बन्ध में यही है कि सुगमजित व्यक्ति का विनास अवरोध अथवा विकृत हो जाने की आशका रहती

है—और ऐसी परिस्थिति से यदि कोई सज्जन बनने में मनोविकास का ही साधन बना सकता है ।

दूसर— शिक्षा के परिष्कृत म. विकास के सप्रयत्न का परीक्षण निर्देशन से सम्बन्धित एक बड़े विचारणीय तथ्य प्रस्तुत करता है । सामान्यतः यक्ति का विकास किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली का उदय से मापारण्य स्वीकृत प्लेन माना जाता रहा है । वो एक दृष्टि में विकास समस्त जीवित प्राणियों का एक मूल लक्षण माना जाता है जो कि उच्च निर्जीव वस्तुओं की उन्मा से विभाजित करता है । अतएव प्रत्येक जड़ वस्तु है इस स्वयम्भू प्रयत्न में शिक्षा जल तिरछी का न प्रभाव को क्या सम्भवतया ? शिक्षा की प्रयत्न के उदय में निर्देशन की मनोवैज्ञानिक साक्ष्यप्रणाली का प्राथमिक उत्तर प्राप्त हुआ है । विकास की सहज उपस्थिति ही उसकी शिक्षा की वांछनीयता की सम्पूर्ण समझा उत्पन्न कर देती है । वांछनीयता एक निरपेक्ष सप्रयत्न की है । जहाँ व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र में इस वांछनीयता का स्वल्प विभा तया सफल के स्वीकृत मानकों द्वारा निर्धारित होता है वहाँ मनोवैज्ञानिक अन्वेषण से वांछनीयता की प्रकृति तथा गतिविधि मानव के व्यक्तिगत लक्षणों के स्वल्प व उरकी साक्ष्यप्रणाली द्वारा अनुसंधान होती है । अति विकास के निर्धारक प्रभावों तथा सारोपक उत्पत्ति का समुचित सम्बन्ध तो मनोविकास के क्षेत्र से ही प्राप्त हो सकता है । यह सम्बन्ध के प्रभाव में निश्चय वाचकता के लिए न तो यति विकास का समुचित विभाजना में अति करने का क्षमता प्राप्त हो सकती है न उसे साक्ष्यप्रणालीद्वारा निर्धारित करने की योग्यता उपलब्ध हो सकता है । अतएव जीवन तथा शिक्षा के परिष्कृत रूपों में ही विकास की ओर मानव को ले जानने में निर्देशन का मनोवैज्ञानिक साधन निहित रहता है ।

(२) स्व वास्तवीकरण

यदि हम स्वल्प पर व्यक्ति-विकास की प्रतिष्ठित सांख्यिक स्थिति के रूप में स्व वास्तवीकरण का निर्देशन में सम्बन्ध परीक्षण समीचान होया । स्व वास्तवीकरण का तात्पर्य है—अपनी आत्माओं समताओं अनुसंधानों के अनुसंधान प्रयत्न रूप से सफल एवं प्रभावपूर्ण विभाज कर सफलता से तोषप्रद स्थिति की अनुसंधान कर सकता । मानसिक अति विकास एवं सफलता की यह सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक परिस्थिति धारणी या सकती है जिसकी तुलना हम वास्तविक क्षेत्र के स्वयम्भू प्रयत्न से कर सकते हैं । वस्तुतः विकास एवं सफलता दोनों ही वे सर्वोच्च स्थिति कहें जा सकते हैं । इस स्व वास्तवीकरण की प्राथमिक सीढ़ी का स्थापन एवं केन्द्रीय प्रणाली की प्राप्ति होगी है यदि कोई न धारणा न ही है । वस्तुतः इन स्व धारणा का निर्माण ही मानव जोधा को सर्वोच्च स्थिति प्रदान करता है । अतएव स्व धारणा एवं प्रयत्न ही हीमा एक अनुसंधान करना है । अतएव स्व धारणा स्व धारणा एवं प्रयत्न के लिए अनुसंधान परीक्षाओं का साथ उठा सकता या सम्भव हो जाता है । अतएव स्व धारणा की ओर न सम्बन्ध में सामान्यतः न प्रचार की शर्त है ।

सकती है। या तो यत्ति धपना धकमरधन करता है—अथवा अनिमल्यन। यह भी हा मजता है कि यत्तित्थ क कुछ प तो मे यह धपने आपको हीनता की दृष्टि से देलता रहता है तथा अ य पक्षो म एक धमगत उत्त्वप भावना बनाए रहता है। दधन प्रकाश्या त्पवना के दृष्टिकोरा से उक्त लोको ही परिस्थितिया यत्ति के त्रिण दानिकारक हाती है। धपने जीवन के विविध पक्षीय उत्तरदायित्वो को सफल ँप स निभा सकन के त्रिण यह धायन्त धाव यक है कि यत्ति को धपनी क्षमनाओ तथा सीमिततायों—गेनो का ही नही सजान हो। यह धावयस्तता केवत धपने स्वय क साथ समजित होन क लिये ही नही है। वस्तुत धपन धर्यावरण के कइ धय यत्तिय के साथ सध्ध ध स्यापना एध उनके साथ सुचारु रूप से नाय कर सकन हेतु भा व्यक्त क त्रिण अनि वाय हो जाता है कि उसे धपने विषय का सी सम्बोध हो। जना पर स्वय सम्बोधी अतिमूयन करन धाया व्यक्त धपने धाप म भग्नाशाओ का धनुभय करत हुए धय व्यक्तिया क लिए भी हसा का नाय बनता है नहा पर धपनी क्षमताधा स धपरिचित यत्ति धवमरो के लाभ स वचित रहता हुआ धसफलताओ निराशाओ तथा हीन भावनाओ से सनत पीडित होना रहता है। न्ग धयकर मनोवनातिक मन स्थिति के धस्तित्थ मे मुनिधोजित जिधा भी व्यक्त के त्रिण धनुपात्क ही सिद्ध होती है।

निर्देशन का प्राथमिक उत्तरदायित्व होता है यत्ति को उसकी सही तम्धीर दय सकन तथा उम स्वस्य रूप मे स्वीकार कर सकन मे सक्षम बनाना। इस स्वस्य स्वीकृति की स्थिति मे ही यह अनाधत्तन नागाशाओ की धग्नि मे धपनी मू पधान धग्निधा को भी भस्म करन का धपे ता उनके धनुकूल सफल काय कर सनन के लिए उन्ने वचित सचित करता रह सकता है। न्म सधय सफलता के परिमाणस्वरूप धग्नि धन धपनी सुप्त क्षमताधा का भी सतत विकास करता हुआ धग्नि का राह पर धान्त्तुवक धग्नितर हो सकता है। न्ही भाग की धग्निम परिस्थिति पर उम स्व वास्तवीकरण की स नोपध्ध धनुधुति हा सकती है। न्म धरगो क बीव सतत रूप स व्यक्ति का निर्देशन कर सकन के त्रिण उसके विविध व्यक्तित्व धग्निओ का प्राथमिक परिषय उनकी निहित सम्भावनाए उक्त प्रभावक धापन-तथ्य—धादि तथ्यो की जान वारी धनिवाय है—और यह जानकारी मनोविज्ञान के क्षेत्र से ही प्राप्त हो सकती है। वस्तुत मनोविज्ञान का नूतन क्षेत्र ही यत्ति समजन की ये नवीन राह दर्शाता है। धिन्नु धन राहा पर चन सकने के लिए निर्देशन का पकापरिमक धापाम विकसित होना जा रहा है और इस विकास मे न्म निर्देशन रूप मे मनोविज्ञान का धौनिक आधार शोधना पडता है।

() वयत्तिक विभिन्नतम्

निर्देशन नाय का प्रमुख कर्त विन्तु होता है यत्ति—और धामुनिक मनो विज्ञान ने इस यत्ति की प्रकृति के सम्बध मे जो सबसे म स्वपूर्ण तथ्य धग्निुत किया है वह है वयत्तिक विभिन्नताधा का। मानव-व्यवहार के इस नूतन विज्ञान ने प्रतिस्थापित किया है कि एकक यत्ति धपन धाप मे सम्पूर्ण एव विभिन्न इका-

है। प्रत्यक्ष व्यक्तिता के बिना वृत्त, समूह में भी कोई चीज़ के एक से नहीं होते किन्तु उस आधार पर स्वयं की एक नित्य महत्त्व वास्तविकता के रूप में देखते हुए हमारी प्रकृति से एक छायाय स्वीकृति प्राप्त करने की हो जाती है। इस प्रकार वास्तविकता पर बुद्ध धर्म विचार करने पर मातृम हाथा है कि किसी व्यक्ति की ओर सबसे प्रथम ध्यान धारित करने वाले उनमें से प्रथम होने पर व्यक्तिता के विविध गौरीयक स्वरूपों—यथा नन्दार्थ मोटाई तथा वा रूप तथा रंग पठ वा स्वर आदि में भी स्वयं विभिन्नता दृष्टिपूर्वक होती है। वही वृत्त व्यक्ति के द्वारा स्वयं पर ध्यान जिनका कि प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण विषय हो सकता है। मनोविज्ञान का विज्ञान इन विभिन्नताओं के वैज्ञानिक मूल में सम्बन्ध में हमें प्रबुद्ध करता हुआ स्वयं करता है कि जिस प्रकार गौरीयक रूप से जोई भी जो व्यक्ति एक ही नहीं होते उसी प्रकार व्यक्तिता के विभिन्न मनोवैज्ञानिक आयामों में भी विविध विभिन्नताएं पाई जाती हैं। अर्थात् व्यक्तियों का मानसिक व्यवहारों में बिना ही करना है वही विविध संवेगात्मक लक्षणों का मिश्र मिश्र स्वयं विभिन्न व्यक्तिता में परिचक्षण होने के। शिक्षण की बात में केवल विभिन्न बोधस्वरूपों के छात्रों के साथ कार्य करने की सम्भवा प्राप्त की ही सम्भवा नहीं करता होता है। अतिसमय में प्रथम में सम्बन्धित कार्य कई एक भी होते हैं जो कि उनके सम्बन्धित कार्य को प्रभावित करने रहते हैं। जो एक छात्र बुद्धि में समान मूल्य सङ्गति रहकर सम्पादन के विविध प्रयोगों के सम्बन्ध में अपनी संशुद्धी सुझाने की ओर रुझान में समुचित सयोग प्राप्त नहीं कर पाता तथा पर जोई अन्य बाल्यमयी विचारों से अपने लिए तर अवधारणाओं द्वारा बनाया सामान्य अनुशासन भी विधित कर सकता है। किसी छात्र के लिए शिक्षण में सम्पादन स्तर एक गति की सामान्यता संगत अवकाश का कारण हो सकती है जबकि जो दूसरे विद्यार्थी के उदाहरण प्राप्त मानसिक कार्य करने को सीमित रहने में भी स्वयं नहीं मिलता पाता। अतिसमय की एक सामान्यतामयित टिप्पणी जहाँ किसी संवेदनो छात्र के तथा सम्बन्धित। वस्तुतः ही वही सम्पादन की गति परकारों की अपने भी किसी सम्बन्धित विद्यार्थी के जाने पर नूतन नहीं रहा करती। वही तब तो हुई कि व्यक्ति के बीच विभिन्नताओं की बात। किन्तु इन बातों में विभिन्नता में भी सम्बन्धित तब कि एक पर प्राथमिक मनोवैज्ञानिक प्रयोग सम्भव है—वही है सम्बन्धित विभिन्नताओं का। एक व्यक्ति दूसरे में तो भिन्न होता ही है किन्तु एक व्यक्ति के अन्दर में भी मान्य प्रकार की विविधताओं की भिन्नताओं का सम्बन्धित प्राप्त जाता है। व्यक्ति का सामान्य विकास प्रक्रम में से इस तब का स्वयं प्रत्यक्ष तदुत्पत्ति का सम्बन्धित है। एक एक स्तर पर ही है कि किसी व्यक्ति के विकास प्रक्रम में उसका विविध आयु के साथ सम्बन्धित ही वह सम्बन्धित नहीं। गौरीयक आयु तथा मानसिक आयु के प्रवर्तित अन्तर के आधार पर ही तो उचित ही परिचक्षण करने का प्राथमिक सम्बन्धित है। विविध विज्ञान स्तर के लिए सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक कोई सम्बन्धित

सीमायें निर्धारित नहीं करता है क्योंकि विभिन्न व्यक्तियों में परिपक्वता की गति प्रकृति तथा सह प्रभाविता में भिन्न पाया जाता है। किंतु इस स्वीकृत प्रकृति में ही शरीर की अधिक सक्रियता प्राप्त होती है एक ही शक्ति में उपलब्ध उनकी विभिन्न प्रकार की आयुष्मा में भिन्न से। आज का प्रगतिशील मनोविज्ञान प्रायु के क्वचन शारीरिक तथा मानसिक विषयों में अग्रसर होकर मानव की शक्ति आयु—यथा सवगात्मक व्यावसायिक शक्ति आदि के सम्बन्ध में प्रकाश डालता है। यथार्थ विकास के लिए उत्तरदायी शिक्षक को इन सभी प्रकार की मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं के परिप्रेष्य में ही अपने कार्य करने पड़ते हैं। विभिन्नव्यक्तियों तथा विधिवत् तरीके व्यवस्थित विभिन्नताओं के बीच में एक कड़ा प्रभाव की जाने नाना रूपों व्यवसायी उत्तरदायित्व निम्नान पड़ते हैं। और इसीलिए यह आवश्यक ही नहीं प्रतिपाद्य हो जाता है कि न केवल शिक्षक वर्गवर्ग काम पर आधारित निर्देशन के प्रकार्यात्मक विज्ञान में अभिविद्यमान ही अपितु शास्त्र में विभिन्न रूप में प्रशिक्षित निर्देशन विज्ञानों की तकनीकी सेवाओं का प्रावधान हो। वस्तुतः जब किनक विभिन्नताओं से अस्तित्व का तथ्य ही निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकताओं का प्रमुख आधार कहा जाय तो अनिश्चयता नहीं होगी। यदि सभी दक्षिण में उत्पन्न न पानों के समान एकत्र होने तथा उनके विकास अग्रिम एवं समजन के प्रक्रम में समरूपता होनी तो कल्पित उनके लिए भी सत्कारमक निर्देशन सवाधा का आवश्यकता न पड़ती किसी पूर्व निर्धारित शिक्षण ढांचे में वे एक एक रूप व धाकार प्रकार तथा भाषा प्राय वाली मातुल की निकियाओं के सहस्य रूप जाते।

(४) यत्नत्व की प्रकृति —

यथार्थ विभिन्नता का उपरोक्त विवेचन हमारा ध्यान निर्देशन के प्रतिम किंतु सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार की ओर आकर्षित करता है और वह है यत्नत्व की प्रकृति।

सामान्यतः मनोवैज्ञानिकों में यह विचार अविनाशिक सहमति प्राप्त करता जा रहा है कि यत्नत्व का प्रकृति का बखान किमा एक परिभाषा का सङ्कुचित शागा में प्रबरोधित नहीं किया जा सकता। इस विचार के आधार में ही यत्नत्व के स्वरूप की सक्रियता। यत्नत्व के कई अयोग्यजित मानसमन्वित तथा अतमगठित प्रायामों पर आधुनिक मनोविज्ञान स प्रकार उत्तरात्तर प्रकाश डालता जा रहा है कि यत्नत्व के कई लक्ष्ये बखानों का समाहार केवल यह कह कर करना पड़ता है कि यत्नत्व बड़ी है जो कि शक्ति है।

स प्रकार का सक्रिय प्रकृति क मनोवैज्ञानिक निर्माति के साथ कार्य करने का मूर्त् उत्तरदायित्व वहन करने वाले निर्देशन कार्यकर्ता के लिये प्राथमिक पूर्वावश्यकता होगी यत्नत्व के स्वरूप स वैज्ञानिक परिचय उसकी गतिकीया सम्बन्धी समुचित सम्बोध तथा उनका सम जन विषयी यत्नत्वित जान। स्पष्ट है कि ये सभी वैज्ञानिक उपनिषदा मनोविज्ञान के क्षेत्र से ही प्राप्त हो सकती है। वस्तुतः मनोवि

करने में ही जब उक्त प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तब विघलित-प्रवृत्तियों के लिए क्या कहा जाय यह चिन्तन का विषय हो सकता है। यों ही निर्देशन के क्षेत्र की यह एक सामान्य मायता है कि शिक्षक तथा शाला उपबोधक की साधारण कार्य-सीमा का प्रसार शीघ्र ही जान तक ही रहता है। शीघ्रतः जनसंख्या अर्थात् ६८-७६ प्रतिशत छात्रों के बीच यों सहज व्यक्तिगत चिन्तन पाया जाता है। उन्हीं के परिग्रहण में उन्हीं अपनी कार्य-योग्यता का आयोजन पारंगत करना अपेक्षित होता है। मानक से बहुत अधिक माना में विचित्रित व्यक्तियों का वह समुचित निदान कर के उन्हें उपयुक्त विद्यापना के पास निर्दिष्ट कर सकें ऐसी धारा उत्पन्न की जा सकती है।

किन्तु सबप्रथम तो इस विद्यालय के शैक्षिक तथा उपयुक्त विशेषज्ञों के चुनाव की चुनौतियों में ही मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर उचित अधिकार की आवश्यकताएँ निर्दिष्ट रहती हैं। इन नियम-निर्देशकों उपबोधकों के लिए प्राथमिक कार्य भी प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम बिना मनोवैज्ञानिक आधार नियम नहीं बन सकता। कई मनोवैज्ञानिक सप्रत्ययों के सम्बन्ध में पारम्परिक स्पष्टता ही इसी क्षेत्र से उत्पन्न ही सकती है। बिना इन आधारभूत स्पष्टता के निर्देशन की प्रवर्धित आयोजनाओं के दुर्लभ हो जाने का आशंका ही सचती है।

अब ही शीघ्रतः जनसंख्या के बीच प्राप्त सहज चिन्तन की बात। शीघ्रतः यह मार्मिक कार्य विदुषी है जहाँ पर व्यक्ति के साथ कार्य करने वाला में प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित का भेद परखा जा सकता है। प्रवृत्तियों मनोविज्ञान में दीक्षित विद्वान् उपबोधक के लिये शीघ्रतः जनसंख्या की परास में पढ़ने वाला व्यक्ति भी वह सम्पूर्ण दृष्टि है जो कि उसकी समीपतम दृष्टि में भी कार्य मानने में भिन्न है। किन्तु व्यक्तित्व मनोविज्ञान में व्यक्तिगत विभिन्नता के इस सूक्ष्म भाग के साथ ही वह समस्त जनसंख्या की कतिपय आधारभूत समान आवश्यकताओं के प्रति भी पूर्णरूपेण संवेदनशील रहता है।

उक्त विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रवृत्तियों के स्वरूप भाग में निर्देशन कार्य का एक प्रत्यक्ष समाहारी मनोवैज्ञानिक आधार निर्दिष्ट रहता है।

उपसंहारात्मक कथन

निर्देशन के नूतन क्षेत्र में विषय प्रवेश तथा उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विद्वान्-लोकोक्त के तत्संगत अनुवर्तन में प्रस्तुत यह अध्याय निर्देशन कार्य के मूलभूत आयामों का एक समाहारी चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस अध्याय में निर्देशन के दार्शनिक सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक आयामों का भिन्न-भिन्न शीघ्रतः के अंतर्गत विशद विवेचन करने का प्रयास किया गया है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि ये विभिन्न आधार एक-दूसरे की धूमिलता में देखे-परसे जा सकते हैं न ही यह मायता होना चाहिये कि इनमें से किसी का निर्देशन कार्य में निरपेक्ष महत्त्व है।

य ततोपचा निर्देशन वाप्य का मूल आधार है—मानव या और विभिन्न ज ।
 म—शक्ति । यत्न के शक्ति व की बहुपक्षीयता क कारण मानव से सम्बन्धित मात्र
 कीर्ति भी क्षेत्र विषय क्षेत्र न) होना दिक्के निर्देशन एकाकी रूप से अपने चावगादिह
 उत्तरदायी को को विभा सव । विविध विषय क्षेत्रों की सीमाओं में निर्देशन क आधारों
 का निर्दिष्ट होना एक तथ्य की पुष्टि करता है । इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में निर्देशन
 का इन विविध विषयों से सहायिक सम्बन्ध स्थापन भी सम्पन्न हुआ ।

इस सम्बन्ध में द्वितीय महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पुस्तक के इस स्थान पर
 निर्देशन के सहायिक विवेचन का भी एक प्रकार से समाप्ति हुआ है । पुस्तक के
 आगे का अधिकांश निर्देशन की प्रवर्धनक योजनाओं तथा व्यावहारिक कार्य
 भूमिकाओं से सम्बन्धित होगा ।

निदेशन सेवाओं का परिचय

(विषय प्रवेश मूलभूत अभिग्रहण वर्तमान विद्यार्थी की व्यक्तिगत अपेक्षाएँ स्वयं निश्चय कर सकने की क्षमता सम्प्राप्ति तथा सहिष्णुता आत्मनिष्ठा सामरिक उत्तरदायित्व विद्यार्थी परिवारपरत प्रकाशमय सेवाएँ निर्देशन सेवाएँ प्राप्त मन्द कल्पित मूलभूत विदुः श्रवणोच्च या या मय प्राप्त रूप एकन सेवा का विज्ञान वृत्तन धार्मिक सूचना सेवा प्रज्ञात मगनता उपयोगिता विकासामय प्राप्तवना विषयमनीयता प्रकार अभिनिर्देशन मन्त शरीर एवं स्वास्थ्यमय्यरी दन गतिज उपलभियया मनोवचानिक दत्त जावन सम्प्राप्ति आकाशमय सूचनास्थान एवं सक्कन विधि प्राप्त्य धर्मावरणीय सूचना सेवा प्रकृति अज्ञान अतमिनत एवं परिपुष्ट विविधता प्रकार गक्षिक पाठ्यक्रम एवं पाठ्य चक्राण यावमायिक धवमर-व्या-मायिक प्रतिभम सामाजिक धार्मिक ध्यान सूचना पुस्तका म्दान एवं सक्कन विधि प्राप्त्य उपयोगन सेवा प्रकृति-व्यक्ति एकान्त ववहता मोक्षनीयता वैकीय सेवा प्रकार गक्षिक पाठ्यक्रम गक्षिक कुशलताएँ व्यक्ति सामाजिक समस्याएँ परेदु कल्पिताया धार्मिक प्रश्न प्राप्त्य एवं आवश्यक तब नियोजन सेवा कृति समाहारी एवं सेवाया का परिणाम महयोगी विकासामिक प्रकार गक्षिक नायनम गक्षिक कल्पिताया गक्षिक विश्ववृत्त प्रशिक्षण पाठ्यतर क्रियाण यावमाय प्रवेश सामाजिक का तयारा प्रादव तथा आवश्यक तत्व वालताय उपागम कर्त्रीय मन्तव्या एवं पुनतम आर्थिक भावदान अशकानीन नाय-व्यवस्था अनुवर्ती सेवाएँ प्रकृति सातय सहयोगी समाहारा विश्वमनाय एवं वध प्रकार यक्ति का अनुवर्तन निष्पन्न सेवाओं का अनुवर्तन प्राप्त्य एवं आवश्यक तत्व ताता दर्शन नेतृत्व सहयोग एवं व्यवस्था कर्त्रीय महायता निर्देशन सेवाया की भारत म सम्भावनाएँ प्रशासनाय अभिविधाभ गतिनीय प्रशिक्षण यथ व्यवस्था पुनतम स्वरूप उपसंता सामन रथन ।)

इस पुस्तक के प्रारम्भ से ही जिस तथ्य पर धारणाएँ धन गिया जा रहा है वह है निर्देशन क नूतन क्षेत्र की व्यपदिष्ट प्रकाशामयता । निर्देशन की प्राथमिक परिष्कम तथा विकासामयक स्वरूप प्रस्तुत करके समय ही हम कह चुके हैं कि वर्तमान विश्वमनाय विषय-सेवा की सद्भावितक मायनाया को एक यावचारिक रूप प्राप्त करन हेतु ही निर्देशन का नवीन विज्ञान आधुनिक युग म प्रवर्गाण हुमा है । प्रस्तुत

प्रध्याय तथा "सत्ते अनुभवों प्रध्यायों में परिवर्तन निर्देशन के प्रत्यावर्तन तथा तत् विवचन किया जाएगा। "सत् प्रदाय म ति तन सेवाया म सम्बन्धित मम रामायो "स्तुत की जायगी।

मूलभूत अभिग्रहण

जिन्नी भी शेष म व्यावहारिक काम करन व कल्पित म् अभिग्रहण होते हैं। या तो एक अथवा बहुदृष्टिकोण से प्रथम तीन अध्यायों के सम्पूर्ण विषयों की ही निर्देशन वाय व सहायिक अभिग्रहणों के रूप में देना जा सकता है। किन्तु अध्याय के "सत् सत्त का उद्देश्य बुद्धि शक्ति विभिन्न है। मान्य की कल्पित नेगी छात्राया के परिग्रह म विद्यार्थी विषय जाना वायवता तथा समान व मान जो "सत्ती विभिन्न आशाएँ अपने आप सामान्य होना हैं। उनके सम्बन्ध म अपनी मूल सापताम प्रस्तुत करत हए निर्देशन सेवार्थों के स्वल्प सम्बन्ध बुद्धि आधारभूत अनुभवमों का विवेचन प्नी किया जाएगा। प्रथम अनुभवम का प्रस्तुतीकरण निर्देशन सेवार्थों से सम्बन्धित करत किया जाएगा। यथोक्त है कि "सत्तकमवत पृच्छापूर्ति म ति तन सेवार्थों का परिचय मायकों के लिए "सत्तित्त दधपुण्ड्र सिद्ध हो सरेगा।

(१) यत्तमात्त विद्यार्थी की ययवित्तक प्रपेभ्याए

रागतत्र व स्वीकृत शिक्षा दर्शन के धारदार आच के विद्यार्थी से समान बुद्धि वयत्तिक गुणों की प्रवेक्षा करता है। वस्तुत एक सफन वयान त्र म प्रमत्वपुण एव सन्तोषप्रप्त जीवनयापन कर सकने हेतु "यत्ति "सत्त प्रकार के गुण होना आवश्यक गता है। इनके बुद्धि प्रवत माय गुणों की ओर सति त रूप म वाठनी वत ध्यान आर्त्तपि निधा वा ग्हा है।

(२) स्वयं निश्चय कर सकने की क्षमता

रागतत्र का प्रथम उद्यम है वयत्तिक आधिपत्य का समुचित आदर। "सत्त आधिकारों म से श्री की आधिकार "यत्ति व लिए सबसे अधिक सन्देह रखता है वृत्त है अपने विविधपक्षीय ज्ञान सम्बन्धी विभिन्न विषय स्वयं तने की स्वतन्त्रता। दूसरों द्वारा व्यक्त कर चाये गए निश्चय का त ही "यत्ति के लिए कोर्ष म्प्य रहता है न उसकी उद्यम आभारजन आस्था हो वा पाती है। जब इस आशयक आस्था की प्ररणा "ी व्यक्ति व वास न्नी लेना ता स्वाभाविक है कि "सत्त निश्चयों को श्रियावित्त करतें हेतु उद्यम किसी प्रकार का उरसा भा न्नी रग्गा।

उक्त सामान्य सत्य की स्वीकृति जो सम्बन्धित प्रश्न प्रस्तुत करनी है- बहु है- व स्वतंत्र निश्चय "ी सकने की पूर्वोक्तव्यवस्थाएँ क्या होनी चाहिये? यथदा के रोनसी पुन-परिस्थितियाँ हैं याकि "यत्ति की स्वतन्त्र निश्चय व सकने म सत्त एक हानी है? सूत्रत "सत्त पूर्वोक्तव्यवस्थाओं वा पूर्व परिस्थितियों को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है-व्यक्ति के सन्देह म तथा उसके आधिपत्य से सम्बन्धित रूपसे। सप्रथम तो "यत्ति के निश्चय से सम्बन्धित इन दोनों ह्य प सो के विषय म उक्त

सम्पूर्ण जानकारी होना चाहिए। समाप्त समर्पित विश्वसनीय तथा यथ सूचनाया क प्रभाव में कोई भी निश्चय कुछ प्रय नहीं रखता बस्तुतः निश्चय की स्थिति तक पहुँच सनन की पक्ति की मनोदशा हा नहीं बन पाता। सूचनायो की उपरि व क पश्चात् त्रितीय आवश्यक्ता उपरि होती है—यस सूचना-सामग्री के समुचित प्रवोध का। आता क प्रयतिमान युग में कई तथ्या की प्रजाति हा इतना तकनीकी हाती है कि उनका वास्तविक प्रय प्रयवा न गित समझना बिना उस तनना म निपुण विश पन की सहायता क कठिन हो जाता है। उदाहरणार्थ उदर-शोण से दु सी विशा व्यक्ति क वरियम टेस्ट का परिणाम उसन भायी आहार सम्बधी अत्यत महत्त्वपूर्ण सूचनाए प्रदान करता है। निरु उस सूचना का वाचन निवचन वह बिना चिबित्ता विज्ञेपन की सहायता के नहीं कर सकता। आगिक क्षेत्र क एस मून उदाहरण क समान मनोवचानिन-सवेगात्मन क्षेत्र म क परिस्थितिया होती हैं जिनका प्रययोग मानव क विषु उनके निश्चयो की पूर्वावश्यकता क रूप गहाता है। इनम स कुछ ती का प्रयत गान की स्तर एव सोमा क अनुरूप स्वय समझ सकता है। निरु कुछ क समझन का प्रयत ता दूर रहा उनका सनन कला भा बिना विशपयो का सहायता क सम्भव नहा हा पाता। यदि जगत का एक सामान्य उदाहरण तत तथ्य को स्पष्ट कर दगा। आठवी कक्षा म बिना गणित तथा भाषावाय विषया म जयना समान उपनयि प्राप्त कर एव प्रतिभाशात्री छात्र को यह निश्चय देना ह कि यह नयी भाषा म कौनसा विषय विशपता क्षेत्र चयन करे। इस महत्त्वपूर्ण निश्चय क अरर उसके समस्त भावा जावन का विशा निर्भर करती ह। प्रस्तुत उाटरण म सर्वप्रथम तो उपनय सूचना की अपर्याप्तता उसक निश्चय का सम्भव नहा कर पा रहा है। बस्तुतः जाना हा विषय-क्षेत्रा की समान उपरि व उसके लिए निश्चय न सकन की मुख्यमय स्थिति प्रस्तुत करन क स्थान पर शिक्षा का बुद्ध ही उत्पन्न कर रही है। सूचनायो की सम्पूणता क निग छान की अमिक्षमताया तथा क्विया के सम्बन्ध म अविश क सामग्री की आवश्यक्ता है—और इन सामग्रिया का मनावचानिक उपकरणो द्वारा विविचन सनन बिना इस क्षेत्र क विज्ञपन का सहायता क सम्भव नहा है। निरु सनन हो चुकन पर भी ये मनोवचानिक सूचनाए अपन आप म व्यक्ति क विग कोई प्रय नरी रख पाएगी। आवश्यक यह होगा कि पुन एस क्षेत्र का विज्ञपन ही इन सूचनाया की व्याख्या व्यक्ति क बोध स्तर क अनुरूप करें। तभी वह अपन निश्चय म एका समुचित उपयोग करके उस निश्चय का वास्तविक रूप म गामग्रत तथा अपूर्ण बना सकता। ता स्पष्ट है कि निश्चय न सकन की प्राथमिक पूर्वावश्यकताया पर्याप्त सूचना-सामग्री का उपनयि तथा उसका समुचित प्रवोध की पूर्ति हेतु विशपना का सहायता पुनानुमानित है और यह सहायता जसाकि आयाय म आग विन्ता-पुनन कताया जाग्या निर्देशन विज्ञपन की वाचनिक सेवाया द्वारा हा प्राप्त हा सकती है जिनके प्रशिक्षण का एक प्रमुख अंग मनोविज्ञान से सम्बन्धित होता है।

यही तक तो हमन क्वन व्यक्ति स सम्यक् त सूचनाया क ही उदाहरण

प्रसारित हो सकता है और निर्देशन का स्वरूप तथा प्रकार व प्रकार को उभर पान-गणनागण्य म अवलोकन हुआ है।

(ख) सहयोगिता तथा सहिष्णुता— व्यक्तित्व परिभाषा का सादर स्वीकृति व समकक्ष अथवा समानर ही गणतन्त्र का निश्चय लक्षण है। अतम चरण तथा मूल्या म साभ्यता। यदि अत्यन्त व्यक्ति को अपने विचार निश्चय तथा वाय की स्वतन्त्रता दना स्वीकार किया जाता है तो व्यक्तिगत विभिन्नता व मनोवैयक्तिक मंच के सम्बन्ध म यह पूर्वानुमानित होता है कि गणतन्त्रिक समाज-व्यवस्था म कर्त्त प्रकृत क विचारों निश्चय वायों का महधमन्तित्व रहेगा। प्रावहारिक म् अस्तित्व का सफलता के लिए पुन प्रतिबाय हो जाना है कि यह समाज के व्यक्तियों का एक दूसरे के विचारों का अहंकार व प्रति आदर हो। अपने स्वयं की विचार धारा से कुछ अन्विष्ट होने पर भी उनम एक दूसरे के मतों को सम्मान द सरने की क्षमता होनी अपरित है।

यहा पर एक मौखिक लक्ष्य का स्पष्टीकरण आवश्यक हुआ जाता है। एक व्यक्ति का स्वतन्त्र विचारधारा हान स हमारा महत्त्व नहीं कि वन विविध धाराओं की गतिविधि म कवन विरायिता हा प्रवाहित हो सकता है। समान मायताया स आवद्ध किसी भी समाज — कतिपय सबस्वीकृत आधारभूत मूल्य तो अवश्य होने ह। यदि य न हा तां उस जनसमूह का समाज तथा स सम्बन्धित मा नता विभाया सकता। गणतन्त्र म व्यक्ति के विचार स्वातन्त्र्य का अर्थ यही है कि मूर सामाजिक मा यताओं की वध पृष्ठभूमि म उसकी व्यक्तिगत क्षमताया का अनुकूलतम सपुष्टि प्राप्त हा सक। वस्तुतः एक आदर्श गणतन्त्र म सामाजिक उन्नति तथा वयक्तिक विकास एक-दूसरे क परिपूरक एव पोषक ही होते हैं। तो यह वह सुलभ स्थिति होगा जहा गण-यमुना की पृथक्मासात जनधारणा क गम म एक हा सर स्वता की सुपमा प्रदाहित हाता रहेता है। इसलिए सामायत गणतन्त्र म व्यक्ति के हितों में अघप नहीं होना चाटिय।

यदि व्यक्ति-व्यक्ति के हित म अघप का नहीं होता एक शस्त्रात्मिक मायता ह ता उस मायता का त्वसम्त उपप्रमथ है सहिष्णुता तथा अतस चरण विरोधी अथवा विरोधप्रमथ। अथवा में अघप का अवरोधन करन का महत्त्व अत्यन्त उपाय है इन प्रायाया में पारस्परिक परिचय और अतस परिचय की व्यावहारिक राह है अन्तमचरण यह अन्तसचरण विचारों तथा मायताया मूल्या का होना चाहिए। अन्तस चरण का उत्तम प्राकृतिक प्रक्रिया में व्यक्ति की सहिष्णुता उसका एक अनिवाय पूर्वानुमानित गुण बन जाती है। यदि दूसरे के विचारों तथा मूल्या व प्रति सबचना तथा सहिष्णुता हा नहीं होगी तो अतस चरण का प्रथम हा उत्पन्न नहीं होगा। वहन का आवश्यकता नहीं कि प्राथमिक परिचय इस पूर्वोपेक्षित सहिष्णुता क भी मूल में अवस्थित रहेता है।

धारणापरिचरिता परिसर सद्भिर्युता तथा अन्ततः चरण का सम्मिश्रित मुद्र पर छाया प्रकट होता है सद्योपिशा के रूप में चाकि न केवल किता भी गणनात्र वा एक सत्र सत्रण है अपितु जो गणनात्र समाज में एक विधियत् स्वस्थ धारण करती है । अन्तःशक्ति का समाज में बाधा बला द्वारा प्रति के माध्यम से धारणात्र विभी वन व पूर्वों में मानिक शान्त्व व विचारात्र शान्ताधिक सद्योपिशा में सत्र-स्वे-ग-कृत तथा प्रकृत प्रणाल्यत्र एक सूत्रमया वाचसपति है जिसकी विराता मुनी सम्मता सामाजिक बाधों की सम्मिश्रित प्रकटा के साथ भी जीवनगायी विविध के विभिन्न चरित्राती रहती है सुत्रकारण प्रणयता की प्रकटित करती रहती है । अत्र शक्ति में उक्त शान्तीय सुगुण का विराम का प्रकार की सद्यःकृत सूत्रनाया व साधार पर है सम्भव हो सकता है और उस समय साधार का मुख्यविकास निर्मात्र निर्माण का चलावा देवाया व माध्यम में सत्रणोण उत्तति विनाश व पाश धुर निवे रूप में हो जाता है ।

(ग) धारणात्रिभरता—गणनात्र के प्राग्नित्र मत्र व्यक्तित्व गार के शक्तशीवृष्ण का मृदभूत आविष्टता फल है समाज व प्रत्यक्ष व्यक्तित्व म धारणा निर्भरता का अधिबन्ध । गणनात्र मत्र यक्ति न केवल समाज के साथ मत्रण के विना अन्तःस्वत्प हान व बाध जो उनके समाज में रह कराने को अपन तक प्रसारित होन से अवरोधित करता है अपितु अपन बाध पर अत्र न रह समय बाध अपितु भी मूल धारणात्र मत्रण के अनुष्ण हा अपन धारणात्र-गणनात्रक सकार म भी स्वयं का जो शक्तिता लिय हा उक्त दुबल शक्ति का साक्षात्कार करते म एक सत्तन सञ्चोव का अनुष्णक करता रहता है । इसे व्यक्तित्व द्वारा धारणा व्यक्तित्व व प्रति धारणात्र समाज भी सही मान मे सम्मान भावना न होकर अन्तः अन्तः स्वयं की हीना बन्ध का प्रत्यक्ष प्रणाल्यत्र न करन की एक अज्ञात विनायात्र हानी है । स्वयं ही सहारे व सद्य एक सूत्र अज्ञान वरकर मत्र वार बहु भाग अपन गणनात्र म अन्तःकृत शक्ति तथा अन्तःकृत सपत्तियों को अनुष्णिकृत कर सकता है ।

वा ता पत्रावलिम्बिता के समक प्रत्यक्ष स्वल्प का दशन ता अधिबन्ध क्षेत्र म हो होता है और उक्तवे समक रूप में उत्तरित पु मनाहृत धारणा अन्तःकृत व विधिनपूर्वक रूप अन्तःकृत भी समाजगी निवधारित म सत्त्व हो दशन का मिल पाते हैं विभवा अस्मत् अमृतन हमार समाज्यत् गणनात्र का एक मूल लक्ष्य है । किन्तु म्र धारणात्र अधिबन्ध प्रकटा म मत्र पुनी अधिबन्ध भवकर होती है वह म त्र हीनता जो कि अधिबन्ध व अन्तःकृत सपत्तियोंक मानसिक क्षेत्रों म एक विपक्ष कीट की भाँति निर्गत कुतरता रहती है । उस निराकार कीटाणु के कुष्ण म मण्डल स्वयं प्रतिबन्ध हा धारणात्रा ह न ही वर अधिबन्ध-कृति प्रकृतिमा की को धारणात्र मुपेक्षित अन्तःकृत कर उक्तक द्वारा अन्तःकृत जीवधारिया की अन्तःकृत और अधिबन्ध कर पाता है । मानसिक सपत्तिया म्र क्षेत्रों म अधिबन्धपरिचरिता का म्र अन्तःकृत व्यक्तित्व

का उसका आर्थिक सामाजिक सम्पूर्णता के प्राप्ति प्रयत्न में भी निरंतर अवरोध उत्पन्न करता रहता है।

सबप्रथम शिक्षक भेद में एम छात्र का अपन प्रयत्न के प्रति प्रायः एक अर्ध-शकास भावना रहता है। कक्षा के अन्य छात्रों में तदुचित प्राप्ति किए बिना वह अपन सामान्य कक्षा-कार्य पर भी विश्वास नहीं कर पाता। बारम्बार दूसरा से पूछने से सबप्रथम को वह साविधा का समाप्ति-स्नेह प्रीति जाता है। तत्परचात् पिछले द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में भी उस एक सतत सचेत पान्ति करता रहता है कि कक्षा उमका उत्तर श्रुतिपूर्ण न हो। ऐसा प्रकृत बात व्यक्ति का एक सतत सन्निभता तथा स्थिति उस दूसरा पर स्वतन्त्र के लिए निभर रहने के लिए बाध्य करती है। धन धन पर परावलम्बन उत्तरी पिनाय प्रवृत्ति बनाकर उत्तक व्यक्तित्व तथा पावन के अर्थ तथा में भी प्रविष्ट तथा प्रस्तारित होना रहता है।

प्रश्न उठ सकता है—इस समस्या का निर्देशन सेवा में क्या सम्बन्ध? किन्तु वस्तुतः इस समस्या का तो निर्देशन में सूत्रभूत सम्बन्ध है। निर्देशन का एक मुख्य उद्देश्य होना है व्यक्ति का अपन आपकी समस्याएँ सुलभता से करने में स्वतन्त्र बनाना। इस स्वातन्त्र्य के लिए व्यक्ति का आत्मनिर्भरता तथा पूर्वानुमानित है। वस्तुतः वयं शिक्षक-मानसिक भेद में यह स्व विश्वास स्वातन्त्र्य एवं अधिकार प्राप्त कर चुकने में सहायता देने के पश्चात् भी निर्देशन की भूमिका का अन्त नहीं होना। व्यक्ति के आगे बढ़कर आर्थिक-सामाजिक समार में भी व्यक्ति का आत्मनिर्भरता सुनिश्चित कर सकने हेतु निर्देशन कायकलापा का उत्तरदायित्व ले जाता है—उपरोक्त व्यावसायिक निर्देशन-सेवाओं का आयोजन। इन सेवाओं के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति का अपनी क्षमतासुकर व्यावसायिक अवसरों का सूचनाएँ तथा इन व्यवसायों से प्रथम एक सफलता प्राप्त करके निर्देशन प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार गणनाओं की एक ओर मौनिक आवश्यकता आर्थिक समता की भी पूर्ति व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों स्तरों पर हो सकता है।

(घ) नागरिक उत्तरदायित्व—एक नृपतिनेत्रण से तो उत्कृष्ट-विवचिन सभी गुण स्वयं विश्वसनीय की क्षमता सहायता सहयोगिता आत्मनिर्भरता तथा आर्थिक समता व्यक्ति के नागरिक उत्तरदायित्व का व्याख्या के रूप में देख जा सकता है। किन्तु हमें कि नागरिक उत्तरदायित्व की गणनात्मिक समाज एवं पिनाय प्रयत्नता के एक प्रमुख अभिहित व्यवहार-गुण के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि हमने हमका स्वतन्त्र विवचन प्रस्तुत करते हुए निर्देशन सेवाओं से हमका सम्बन्ध स्थापन करना समुचित समझा।

नागरिक उत्तरदायित्व के का यदि वर्णान्तरिक विवरण किया जाय तो विश्वसनीय के पट्टे उसका विशिष्ट का समझ लेना अधिक समझ होगा। उत्तरदायित्व का यदि उस सिद्धांत का एक पट्टे कहा जाय तबका कि हमने पण अधिकार के रूप में न्यून्याय्य हो तथा सहायता में उत्तरदायित्व तथा अधिकार के स्वरूपों का

निर्धारित योजनाओं तथा अनुशासन पर्यावरण में निर्मित आयोजनाओं का न बवल स्वरूप भिन्न होता है अतः उनका आवश्यकता की विधाओं में भी पर्याप्त भेद प्रविष्ट हो जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि गणतंत्रिय शिक्षा प्रणाली एक समान योजना के अंतर्गत विद्यार्थी से दिन शिक्षण की अपेक्षा होती है उसके लिए एक अनुशासन पर्यावरण का प्राप्ति हानी चाहिए जिसमें उसे दो र्ण सहायता जिज्ञासों प्रश्न के माध्यम निदेशों द्वारा अनुचित न हो।

एक प्रकार के उन्मुक्त पर्यावरण में समुचित सूचनाओं के संचयन में स्वतंत्र शिक्षण के चुकने पर प्रश्न उत्पन्न है कि शिक्षण को पर्याप्त करने का। आज के युग की वृद्धमान सज्जितता के परिदृश्य में यदि यह कहा जाए कि सरनी निर्धारित योजनाओं के वास्तविकरण में भी विद्यार्थी को र्ण अनपेक्षित पंचीनीयों का सामना करना पड़ता है तो अतिमायाक्ति नहीं होगी। नवीन माग पर विश्वासपूर्वक अपने प्राथमिक चरण जमा करने में सहायता देने करना उनका अधिकार है। एक बार उस माग से बुद्ध परिचय प्राप्त कर चुकने पर फिर उस पर सफलतापूर्वक प्रश्न होने की अपेक्षा हम उसमें आवश्यक रूप में कर सकते हैं। किन्तु अपने निर्धारित माग पर चलने चलते चलने अपेक्षित विकास तथा पर्यावरणीय परिवर्तन के साथ साथ यह प्रश्न उचित व सम्पूर्ण उपस्थित हो सकते हैं। सबसे स्वाभाविक प्रश्न जो उसके मन में उत्पन्न प्रत्येक क्रिया के पश्चात् उत्पन्न हो सकते हैं वह— मन कितना प्रोत्साहित किया? — क्या मने जा किया वह करना था? क्या मन जो चुना उसमें अधिक उपयुक्त विकल्प भी भरे लिए कोई था? आदि। किसी भी सज्जित उत्तरणों तथा विकसित गणतंत्रिय नामांक के मन में इस प्रकार की जिज्ञासाओं की जागृति यदि एक सरासरी वास्तविकता है तो इस प्रकार का उत्तरण के मध्य अपना निश्चय या निर्णय शक्ति प्राप्त करने में अज्ञान सहायता पाया भी उसका गणतंत्रिय अधिकार है। आवश्यकता है कि न बवल वह स्वयं अपनी क्रियाओं का अपने लिए एक र्णनी योजनाओं के संचयन में सतत मूल्यांकन करता रहे अपितु शिक्षण अनुष्ठान द्वारा उसे अपने निजी मूल्यांकन की विषय नीयता-वर्धना के सम्बन्ध में आशय प्राप्त होता रहे।

(३) प्रभावशाली सेवाएँ — उक्त अनुष्ठान में चर्चित आज के विद्यार्थी से हमारी अपेक्षाएँ तथा दिन अपेक्षाओं के संचयन में उनके अधिकार—एक मूलभूत आवश्यकता की धीरे धीरे हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं—धीरे वह आवश्यकता है— प्रभावशाली स्तर पर विद्यार्थी तक वाय की। यदि कथित अपेक्षाओं में हमारी अपेक्षा है—धीरे यदि विवचित अधिकारों में हमारा विश्वास है तो इस प्रकार विश्वास का सहज अनुवर्ती सत्य यह होगा चाहिए कि इन अपेक्षाओं अधिकारों का स्वरूप देने हेतु हम एक वास्तविक कार्यक्रम की ही योजना बनानी होगी। धीरे वह वास्तविक कार्यक्रम निर्मित सेवाओं के सुव्यवस्थित रूप में ही आयोजित हो सकता है। इसे सचता है कि विभिन्न प्रकार की धर्मशास्त्रों को समभावित कर सकते तथा विभिन्न अधिकारों की

परिपूर्ण वर सनन क निण एक स प्रथिन प्रकार की गवाधा वा घोषाशन करना पड़ । किन्तु इसका एक तात्पर्य नहीं कि वे सेवाएँ एक दूसरे से किसी प्रकार की प्रतस्पर्धात्मक होती हैं । वस्तुतः अन्तर्गत वर वा विन्तर्गत हर प्रकार के वायव्यम की एक ही सनन वृष्टिभूमि प्रस्तुत करते हुए उसकी प्रत्यात्मक घोषाशनता पर उल्लेख किया है । निर्देशन बनाने में यदि हमारा विश्वास है तो उस निर्देशन का व्यावहारिकरण निर्देशन वायव्यम के रूप में जाना चाहिए ।

इस प्रकार के निर्देशन वायव्यम के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की प्रत्यात्मक सेवाएँ दक्षिण की दी जा सकती हैं । अन्तर्गत विवेचन अध्याय के निर्देशन अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

निर्देशन सेवाएँ आदर्श स्वरूप

निर्देशन के अन्तर्गत हमारी योजना की शैली ही यह है कि निर्देशन की व्यावहारिक प्रवृत्ति एक वायव्यम की उद्देश्यता के अनुरूप ही उसकी सम्पन्नता वास्तविक विवेचना की सफल सम्पन्नता हेतु एक ऐसा प्रत्यात्मक योजना बनाने जावे जिसमें विभिन्न विवेचना के स्वरूप स्वरूप वायव्यम की भूमिका खोजनाएँ तथा प्रवृत्तियों विभिन्न वायव्यम के वास्तविक सम्पन्नता की वास्तविक विवेचना की एक निश्चित योजना के अन्तर्गत ही जाना जावे । अन्तर्गत के प्रस्तुत अन्तर्गत कतिपय प्रत्यात्मक सेवाएँ के रूप में विभिन्न निर्देशन विवेचना के स्वरूप का स्वीकारण किया जावेगा । वायव्यम की भूमिका वास्तविक सम्पन्नता आदि के विषय में अन्तर्गत अध्याय में विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा ।

अन्तर्गत के प्रस्तुत अन्तर्गत के पूर्व निम्न विवेचना का ध्यान में रखना समीचीन होगा —

(१) कतिपय मूत्रभूत विवेचना

— प्रस्तुत सेवा की प्रस्तुत अन्तर्गत के परिवर्तन निर्देशन के स्वीकारण उद्देश्य के अन्तर्गत में किया जाएगा ।

— प्रस्तुत सेवाएँ के अन्तर्गत अन्तर्गत वाएँ वायव्यम तथा विवेचन विवेचन के अन्तर्गत में प्रस्तुत किया जा रहे हैं ।

— वास्तविक मूत्र अन्तर्गत में भी बनाया है— केवल सहायक स्वीकारण हेतु ही अन्तर्गत सेवा का विवेचन स्वरूप रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है । वास्तविक व्यवहार में यह एक दूसरे की श्रवणता में अन्तर्गत सम्पन्नता है ।

(२) अन्तर्गत वायव्यम के आदर्श रूप —

उक्त मूत्रभूत विवेचना के आधार पर निर्देशन वायव्यम एवं सेवाएँ की एक व्यापक व्याख्या निर्देशन के स्वीकारण अन्तर्गत के अन्तर्गत में प्रस्तुत की जा सकती है —

निर्देशन का वास्तविक वायव्यम कतिपय अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत सेवाएँ का एक सहायक प्रवृत्ति है । अन्तर्गत वायव्यम का वास्तविक अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत सेवाएँ का एक सहायक प्रवृत्ति है ।

प्रश्न किया जाता है कि एक व्यक्ति को उसके स्वयं तथा उसके परिवारण की वध विषयसनीय सूचनाओं के सन्दर्भ में उत्तरदायित्वपूर्ण निश्चय स्वतन्त्रतापूर्वक ले सकने में समुचित सहायता मिल सके। तत्पश्चात् इन निश्चयों के अनुष्पण काय अवतरा की शक्ति एवं सम्पन्नता की राह पर कदम उठा सकने में आवश्यक निर्देशन प्राप्त हो सक। और अतः अनेक उद्देश्या कार्यों काय विद्याया आदि के सतः अनुवतन एवं वस्तुनिष्ठ मूयाकन में तकनीकी सहयोग की उपनिर हो सक।

निर्देशन कार्यक्रम की उक्त कथित सम्भाव्य अपेक्षाओं की यदि और भी अधिक व्याख्या की जाए ता कतिपय प्रकाशमक कृत्यों का स्वरूप स्पष्टरूपेण उभरता नृत्तियोजर होता है। अतः कहा जा सकता है कि वरिष्ठ अपेक्षाया व अधिपेन व्ययों का वगन निम्न प्रकार से हो सकता है —

आवश्यक है कि—

—प्रत्येक व्यक्ति क सम्बन्ध में वध तथा विश्वसनीय सूचनाया का विविध सजजन किया जाव।

—एकक व्यक्ति क समूच परिवारण व विषय में वास्तविक तथ्या का सग्रह किया जावे।

—प्रत्येक व्यक्ति को उक्त सूचनाया क सन्दर्भ में उत्तरदायित्वपूर्ण निश्चय ले सकने में वगातिक सहायता मिल सकने की याचना वताई जाव।

—इन निश्चयों को नियमित करन व सम्बन्धित प्रारम्भिक सहायता का समुचित प्रबन्ध किया जाव।

—अपने निश्चयों एवं कार्यों का मूल्याकन कर सकने व प्रति सजजता उपन की जावे तथा उस वस्तुनिष्ठतापूर्वक कर सकने में वगातिक सहायता की प्रायोभना की जाव।

उक्त व्यावहारिक गाम्याया व आचार पर पाच आवश्यक गवाया का स्वरूप स्पष्ट होता है। प्रत्येक सेवा क अतन्त कायविद्याओं व अनुष्पण हम जनका नाम करण निम्न प्रकार से कर सकत है।

—व्यक्ति सूचना सेवा

—परिवारणीय सूचना-सेवा

—उपवाधन सेवा

—निकोजन सेव

—अनुवतन सेवा

एत नामकरण व अनुवतन में प्रत्येक सेवा का विशद वणन उत्तक स्वरूप उद्देश्य वार्गिक कायविद्याए ष्ट्रिक सन्दर्भ में करता समीधान होगा। इन प्रकार व विशदपस्थात्मक वणन का विशिष्ट उद्देश्य यही है कि शाखाया में निर्देशन व प्रकाशमक आयोभना को न्न व्यावहारिक सकना द्वारा समुचित काय प्ररणए प्राप्त हो सक। हमारी शिक्षा प्रणाली में आदेश की कद वाछनीय बातें प्राय

हमारा दृष्टि से सूचनाओं की आवश्यकता निम्न प्रकार क कुछ माप
दणों द्वारा निर्णीत की जा सकती है—

संगतता—सबप्रथम तो यह दखन की आवश्यकता है कि जो सूचना संचालित
की जा रही है यह निर्देशन कार्य से सम्बन्धित है या नहीं। मा अत्यन्त ही विस्तृत
दृष्टि कोण से तो 'यक्ति सम्बन्धी प्रत्येक सूचना महत्त्वपूर्ण है तथा निर्देशन कार्य से
उसका किसी न किसी प्रकार सम्बन्ध भी होता है। किन्तु सहा संगतता का मुख्य
निर्धारण हम 'यावहारिकता की कसौटी पर करना चाहिये। प्रत्यक्ष एवं निकट रूप
से जो सूचनाएँ निर्देशन के विशिष्ट कार्य से सम्बन्धित हों उन्हें ही एकत्रित करने
से निर्देशन कार्य 'समावश्यक' उत्तमनो में अवरोध न होकर 'दक्षतापूर्वक' चलाया जा
सकता है। इस प्रकार का सूचनाओं क कुछ प्रत्यक्ष उदाहरण अगले अंश में दे
लिये जायेंगे।

उपयोगिता—निर्देशन कार्य क लिये आवश्यक सूचनाओं का द्वितीय माप
दण है—उनकी 'यावहारिक' उपयोगिता। किसी 'यक्ति' के प्रतिपन्न तानों 'स्पन्दनों' की
सूचना उसका 'शारीरिक' स्थिति का अत्यन्त संगत सूचना होना हुए भी निर्देशन कार्य
क लिये उसका कोई प्रत्यक्ष उपयोगिता नहीं है। अतएव ऐसा सूचनाओं का संग्रह
करना का निर्देशन कामकाज का काम आवश्यकता नहीं। निर्देशन उपयोगिता क कुछ
कार्यकारी मापदण निर्देशन के विशिष्ट निर्धारित उद्देश्यों क सम्बन्ध में निश्चित कर
लिये जा सकते हैं। सामान्यतः ये मापदण 'यक्ति' क समाज क विकास से सम्बन्धित
आयामों से जुने जा सकते हैं।

विकासत्मक—निर्देशन कार्य का प्रथम स्तरछाय विन्दु यह है कि यह कार्य
विश्वसमान गत्यात्मक 'जावितम्परित' 'यक्तियों' के माय किया जाता है। इस तथ्य
का 'यावसंगत' 'उपसिद्धान्त' यह होता है कि इस 'यक्ति' क सम्बन्ध का संचालित
सूचनाओं क स्वरूप में भी 'विकासत्मकता' है। किसी भा 'यक्ति' क सम्बन्ध में एक
ही समय पर 'एकत्रित' का 'हृद्' सूचना उसका 'विश्व' भा 'पक्ष' अथवा 'पक्ष' का 'तत्त्वानीन'
स्थिति पर है। कुछ 'प्रकाश' फेंक सकती है। वह उनका 'विकासमान' 'यत्तित्व' को
वाछनीय रूप से 'प्रालोकित' करने में असमर्थ है। सिद्ध होगी।

यावकता—'यत्तित्व' क 'विकासमान' स्वरूप क साथ ही उसका 'समाज' को
'पहनता' उसकी 'प्रकृति' को यह 'सजटिलता' प्रदान करता है जोकि निर्देशन कामकाज
क 'यत्त-यो-मुनी' 'उत्तरदायित्व' को 'यावतिय' 'धुनीता' होता है। 'विश्व' भा 'यक्ति'
का 'यत्तित्व' ऐसे 'मन्तसम्बन्ध' 'पक्ष' का 'गुणगठित' प्रतिरूप होता है कि इन 'विविध'
'पक्षों' में से किसी एक या 'कि-ही' एक का 'आयामों' सम्बन्ध सूचनाएँ 'यत्तित्व' क
सम्पूर्ण 'चित्र' क 'अवबोध' क 'विना' 'अवशू' 'य' रह जाता है। कदावत है कि 'सूचना'
का 'कर्त' नहीं होना 'अपयान्य' 'सूचना' 'हान' से अधिक 'क्ष' 'य' है। तदनुसार 'व्यावहारिक'
'रीक्षण' का भी एक 'अत्यन्त' महत्त्वपूर्ण 'सिद्धान्त' है— 'अपर्याप्त' 'सूचनाओं' के
'अभाव' पर 'कोई' 'लिप्कप' न 'निश्चयित्वे'। 'हमारे' 'पुरातन' 'नाति' 'अर्थ' में भी 'य'

स्थापित रख्य है कि मूल। अतः तथा विपणन-लेखी ही किसी न किसी सीमा तक आनापक है वहीं पर आत नव सुविधापम् 'यक्ति वा वस्त्रा भी रखन मी कर सकना । न के न आपस में कि यदि 'रक्ति के बहु प्राथमी विवासयोग यक्ति' क साथ साथ करना है तो उनमें सम्बन्ध भी सूचनाया म व्यापकता लेना धरि बाप है ।

विश्वसनीयता— विश्वसनीयता विज्ञान सूचनाया क वन पर बस करना समा ही है जसा कि दुःख नीच पर भवन निर्वाण करना । अन्तु अधिस्वसनीय सूचनाया क आचार पर यक्ति को सहायता देने की आसोःनमाय बनाने में उसे लाभ से अधिक हाथि ही पहुँचान की आसका र्था है । इसलिये आवश्यक ही नो अनिवार्य है कि वर्तमान सूचना अनुसूची म 'कोई' भा सूचना समाहित करने क पूर्व उसका विश्वसनीयता क सम्बन्ध म पूर्णतया धारणस्तता प्राप्त करनी जाये ।

(अ) प्रकार—निम्न स्तर के निम्न आवश्यक सूचनाया 'ी प्रवृत्ति के साथ अनुसूचन म ही 'न सूचनाओं के आन्तय प्रकार पर भी विचार कर देना आवश्यक रहेगा । संकेत म निर्धारित सूचनाओं के प्रकार एक तथीन जीवन क रूप म प्रस्तुत किए जा रहे हैं । बा प्रत्यक्ष कारकता अपनी आवश्यकता व्यक्ति की प्रवृत्ति तथा समस्या क स्वभा के अनुसार सङ्घ की स्तन बायी सूचनाओं के प्रकार निर्धारित कर सकता है ।

अभिव्यक्ति का रस—सहायित्व शक्तिवाय म वर्तमान सूचना सेवा का मूल आधार ही अव्यक्ति बनाना ही है । अनुसूचक 'म सेवा द्वारा पारमिक सूचना साधना बहु छोटी भाषिक बोधि एक क्षान को एक क्षण 'यक्ति क रूप में वर्णित कर सक । वर्तमान सूचना उद्योग क सङ्घर्ष में शरीर कायिने उसे साथ शक्तिय न विभ्रित करते हुए । विविध रूपा से यह सूचना उसने नाम दय भाषि मस तथ्या म सङ्घर्षित हायी जाकि उसे एक अनन्त प्रदान करने हैं जिनके द्वारा एक छोटे समय के समूह म से परिचाल कर सन कर सकते हैं ।

सूचनाओं के सभी प्रकार के अनुसूचक रूप यक्ति की पौष्टिक सुसुधुनि सम्बन्धी तथ्यों को भी समाहित कर सकते हैं । इसका सुदृश्य क संस्था की समा उन्नत सामाजिक प्रवृत्ति काल नैतिक यो बना-यानि एके तथ्य हैं बोधि यक्ति के विकास समन्वय में सम्बन्धित होने के कारण विशेषतः साथ म सहानुभूति होते हैं ।

शरीर एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी रस—बा तो शरीर के आकार प्रकार सम्बन्धी कई तथ्यों का भी निर्धारण 'न के ही अनुसूचन मया कर लिया जा सकता है । यथा पर ' स्वास्थ्य क साथ रखने का साध्य मही है कि व्यावहारिक विचारन साथ का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शरीर क आकार प्रकार रूप रस भाषि म अधिच उसकी नियोगिता सम्बन्धना तथा विकास परिपक्वता म होना है । तो 'स साथ क अनुसूचक सूचनाय क सामाज्य स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचनाएं एकत्र करना चाहिये । इनमें भी शिक्षा में सम्बन्धित यशों की अधिक साथ स्थिति क विषय में

निर्देशन कार्यकर्ता का विशय दबि होगी । इसलिये नव तथा नग सम्बन्धी कार्य भी गत प्रयत्न वलमान सामितदाया व सम्बन्ध म बहु अवगन हो जाना चाहेगा जिससे छात्र की शक्ति उपलब्धिया पर उसके सम्भावित प्रभाव को वह सही प्रकार से शक्ति सके ।

इन प्राथमिक सूचनाओं के अनन्तर यथा पर व्यक्ति के सम्पूर्ण स्वास्थ्य की सामान्य स्थिति के सम्बन्ध म तथ्य सङ्गृहण किया जा सकत है । कर्ण वार बाल्यकाल का कतिपय व्याधिया—यथा चेचक पीनियो आदि व्यक्ति के कतिपय शारीरिक मानसिक शक्तो को मदेव क लिय दुबल करत हुए उसके शक्ति मानसिक-सवगात्मक पक्षा को एक निरन्तर हीनता प्रदान कर देती हैं । गत्र के शक्ति पित्रोपम तथा सवगात्मक हीनता के कई कारण इस प्रकार की दुभटनाओं म अवगुहित करते हैं । समस्त शरीर तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचनाओं के अनन्तर व्यक्ति के जीवन म इस प्रकार के तथ्यो व सम्बन्ध म जानकारी प्राप्त कर लनी चाहिये ।

शक्ति उपलब्धिया—एक शक्ति विन्तुन दृष्टिकोण से तो यह कहा जा सकता है कि छात्र निर्देशन के समूच कार्यक्रम का अनन्त उद्देश्य ही है उसकी शक्ति उपलब्धिया । किन्तु व्यक्ति के विकासमान तथा बहुधायायी स्वरूप के सम्बन्ध म यह भी समरणीय तथ्य है कि न तो उसका वर्तमान शक्ति उपलब्धिया उसकी विगत उपलब्धियो से असम्बद्ध कोई स्वतन्त्र स्थिति है न ही व्यक्ति के अन्य जीवन पक्षो से असम्बद्ध कोई एकाकी परिणाम । समस्त उसकी समस्त शक्ति म उपलब्धिया का विशय भी एक विनाशकारक रूप से होना चाहिये । यह तो हुई सामान्य छात्र की साधारण उपलब्धिया की बात । किन्तु इनके अतिरिक्त छात्रों की विशेष उपलब्धिया भी होती हैं । किसी छात्र का कर्ण म प्रथम जाना कभी पत्र प्राप्त करना समादर सक्षी म उसका नाम जाना आदि उसकी शक्ति शक्ति की एकी बहुवपुष्य घटनाएँ हैं जो कि उसकी विकासमान शक्ति उपलब्धिया की नानात्पण प्रभावित करती हैं । अतएव इनके सम्बन्ध म उपलब्धिया सूचनाएँ एकत्र करना निर्देशन कार्य के लिय समत सिद्ध होगा ।

यह तो हुई शुरुत्पण शक्ति उपलब्धिया की बात । किन्तु हमारे शारीरिक शक्ति विन्तुन के अनुसार विद्यार्थी की शाला उपलब्धिया तक पाठ्यक्रम से ही सम्बन्धित नही हाता । भाव की शिक्षा योजना म पाठ्य क्रम या पाठ्य सह्यामी प्रवृत्तियो का चेतना ही मन्त्र है जितना कि पाठ्य क्रियाओं को । अतएव यह प्रगत है हीसा कि छात्र के पाठ्यसह्यामी पुरस्कार-पारितोषिको-समादरा आदि का भी उमी प्रकार व्यवस्थित एवम् विकासमान नसा हो जिस प्रकार कि उच्च पाठ्यक्रम सम्बन्धी उपलब्धिया का । व्यक्तित्व की बहुधायायी प्रवृत्ति तथा नसा प्रवृत्ति के विनाश-सम्बद्ध के स्वीकृत शक्ति व्यय व परिश्रम म पाठ्य-सह्यामी प्रवृत्तिया शक्तियो विन्तुनो सम्बन्धी सूचनाओं को भी व्यवस्थित अनुसूची म समाहित करना अनिवार्य होगा ।

मनोवैज्ञानिक दत्त जी एच से भी "प्रति-प्राज्ञ" से सम्बन्धित सभी सूचनाओं को मनोवैज्ञानिक दत्त जी के नाम से सम्बोधित किया जा सकता है। किन्तु यहाँ पर इस शोधक का विशिष्ट गुणाय उक्त सूचना सामग्री में है जो कि सामान्य वस्तुनिष्ठ सूचकानिष्ठ यौक्तिकों के प्रयोग से वर्णित की जाती है। कई मनोवैज्ञानिक रायना तथा "व्यक्तिपरक" उपायों के माध्यम से संचित सूचना सामग्री को मनोवैज्ञानिक दत्त जी ने बंधन सहित संचित किया है। अतः शाब्दिक सरलापन भी हो जाता है। सामान्यतः यह सूचना "प्रति-प्राज्ञ" के वैज्ञानिक मानसिक स्तर जैसी विशिष्ट शक्ति क्षमताओं जैसी प्रत्येक व्यक्ति के लिए उनकी संचित शक्ति को सम्बन्धित करती है।

यहाँ पर उक्त देने की बात है कि हम प्रत्येक की समा सामग्री केवल मान्य शक्ति मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से ही वर्णित कर सकते हैं। अतः शाब्दिक दत्त जी को प्रत्येक शाब्दिक निदर्शन का नाम है जो कि प्रत्येक शक्ति को वैज्ञानिक निर्माण प्रयोग निदर्शन एवं उपस्थापित स्वयं संचित सूचना पर सकता है। इनके द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक शक्ति को दत्त जी के द्वारा ही वर्णित किया जा सकता है। निष्ठा का "प्रति-प्राज्ञ" से दत्त जी के द्वारा ही वर्णित किया जा सकता है। निष्ठा का "प्रति-प्राज्ञ" से दत्त जी के द्वारा ही वर्णित किया जा सकता है। निष्ठा का "प्रति-प्राज्ञ" से दत्त जी के द्वारा ही वर्णित किया जा सकता है।

जीवन सम्बन्धी आकांक्षाएँ प्रत्येक अनुसंधान का एक भाग निष्ठा की दृष्टि में प्रत्येक ही सम्बन्धित है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है।

आकांक्षा सम्बन्धी सूचनाओं के द्वारा प्रत्येक निदर्शन का एक भाग प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है।

प्रति-प्राज्ञ की आकांक्षाएँ स्वयं प्रत्येक सूचनाएँ एक ही दृष्टिकोण से निर्देशित कारणात्मक निष्ठा प्रयोगों में निष्ठा हो सकती हैं। अब निष्ठा के नाम प्रत्येक की प्रत्येक शक्ति को वैज्ञानिक स्तर तथा विविधताओं प्रत्येक शक्ति को सम्बन्धी प्रत्येक सामग्री वर्णित करती है जो कि "प्रति-प्राज्ञ" की आकांक्षाओं का प्रत्येक शक्ति को सम्बन्धी प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है। अतः हमें "प्रति-प्राज्ञ" की प्रत्येक शक्ति को नाम से ही वर्णित करना पड़ेगा जो कि प्रत्येक शक्ति को वर्णित करती है।

तथा प्रवृत्त दोनो हा क सम्बन्ध म नान प्राप्त करवे वह उष उचित निर्देशन प्रदान कर सकता है। प्रपन जीवन के विविध पक्षा म अपना क्षमताया क अनुरूप धीरे-धीरे वास्तविक उद्देश्य निर्धारित कर सकन की दिशा म यह व्यक्ति का युक्तियुक्त रूप स सहायता दन म समर्थ हो सकता है।

(इ) सूचना स्रोत एव सफल निधि वपनित सूचना प्राप्त करन का प्रथम स्रोत हा सकता है स्वयं व्यक्ति। उसक प्राथमिक अभिनिर्दिष्ट दस्त स लेकर उरके आकाशा-स्तर तथा "दिव्य याजना सम्बन्धा एसा को भी सूचना नहा जिसम प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष रूप स हम उसस सम्बन्ध स्थापित न करना पड। सामान्य वातचीत विशिष्ट अभिमुख-सवाद प्रापनित प्रश्नतमह समाजमिताय साधन मानकीकृत परीक्षण स्वभावनिपा आदि एसी कई प्राविचिया हैं जिनके उपयोग द्वारा स्वयं छात्र स ही उरके सम्बन्ध म बन्त या उपयोग सूचनाए प्राप्त हो सकती हैं। जसाकि वह युव हैं इन सक् उन विविधा क विषय म विरतन विवचन ना अप्याय 6 म प्रस्तुत किया जाणा किन्तु यहा पर इनका व्यक्ति के एक प्राथमिक सूचना-स्रोत होन क सतदम म उल्लेख मात्र किया जा र। है।

स्वयं व्यक्ति स प्राप्त उसक सम्बन्ध का सूचनाए प्रत्यक्ष मूलदान होते हुए भा उसकी यत्तिनिष्ठता स प्रसूतो नग रह सकती। अतएव आवश्यक हो जाता है कि "न सूचना" का संपुष्टिकरण तथा स पावन प्रथम स्रोत स प्राप्त सूचनाओं द्वारा किया जाव।

एक शाला निर्देशन के लिए स्वयं छात्र के पश्चात उसस सम्बन्धित सूचनाया का महत्वपूर्ण तथा विवसनाय स्रोत हाता है उस छात्र के शिष्यक। यदि यह भी कह लिया जाए ता भतिभायोक्ति नहा होगी कि समस्त शाला परिवार म छात्र के शिष्यको स प्रथिक कार्य भा उसके विषय म नहा ज्ञानता। "गाना प्रसासक को ता छात्र सम्बन्धी सूचनाए शिष्यका क माध्यम से ही प्राप्त होनी हैं। इसलिए छात्र सम्बन्ध भा उनका ज्ञान प्रत्यक्ष होता है। सब पूछा जाण ता स्वयं ज्ञान-उपवापक को भी छात्र क निरंतर सम्पर्क म आन क इतन अवसर नहा मिलन जितन कि छात्र क शिष्यका का। इन शिष्यका म भी मूल कथा प्रख्यापन (यदि इसका प्रावधान हो) का स्थान इस दृष्टि स केनीय महत्त्व का है कथाकि वह छात्र क सबसे अधिक सम्पर्क म आता है। वह छात्र की सामाय रुचि प्रमिषति उपनयि तथा वपत्तिक उपरानो क सम्बन्ध म महत्वपूर्ण दस्त प्रदान कर सकता है। इनके प्रतिरिक्त ब अध्यापक कयवा कायकता जा कि पाठ्यसूचनी क्रियाया वा उत्तरदायित्व पहन करत हैं व छात्र के पाठ्य सार पक्ष म निर्देशन को कर्ण मूयदान सूचनाए दे सकते हैं। य सूचनाए उन-द्वारा प्राप्त छात्र के विम को एक वाक्षनाय सम्पूर्णता एव व्यापकता प्रदान करता है।

शिष्यका स सत प्रसार का सूचनाए सहाय करन क जिन निर्देशक कह सरल प्राविचिया प्रयुक्त कर सकता है-जिनम अभिमुख सवाद आयोजित प्रपन

प्रश्न समूह चिह्नांक सूचियाँ धूम निर्धारण मापनियाँ प्राप्ति हैं। इनका जहाँ की अध्याय ६ में की जावेगा।

प्राप्त के शिक्षा-युग में यह एक स्वीकृत तत्त्व है कि यद्यपि छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा का एक विविध उत्तरदायित्व होगा है फिर भी उसके जीवन का अधिक समय तो यात्रा की जगह-जगह के माध्यम के घटकों से प्रभावित होता है। इन सम्बन्धों में उसका घर एक ऐसा माध्यम रूप है जिसकी उसने व्यक्तित्व निर्माण में निरालावक भूमिका रखी है। यदि छात्र का बहुपरीय 'संविद्य' का सम्बन्ध में समाधि-मौलिक संचालन की संख्या हो सकती है तो वह छात्र का घर ही है। इसके प्रतिरिक्त यहाँ यह है जहाँ उसके सम्बन्ध की विकास-मूलक संचालना का सही स्वरूप रहता है। अतएव छात्र के अभिभावक को व्यक्तिगत संचालन तथा अनुपयुक्त महत्त्वपूर्ण सूचना-सूचना मांगना जा सकता है।

विन्तु इनके संचालन प्राप्त करने में जो कठिनाई उत्पन्न होती है वह है इनके सम्बन्ध स्थापित करने की। विशेषकर भारत में यह कठिनाई अधिकतर अभिभावकों के असहयोगी जगहों द्वारा सिद्धि हो जाती है। किन्तु यह जगहों का विचार-अभिभावक सम्बन्धों प्रपञ्च छात्र के वृद्धि के माध्यम से प्राप्त सम्बन्ध भी स्थापित कर लिया जाता है तो प्रश्न उठता है संचालन-संचालन की प्राविधि को। दल प्रश्न चिह्नांक सूचियाँ प्रपञ्च छात्र सूचना-संचालन की पूर्ति करने की ओर उनकी एक सहज विरक्ति होने के कारण एक सामान्य भारतीय शिक्षण तथा उपवीक का ही साधारण बाल्यक की प्रचलित विधा से ही भाषा-संचालन स्थापित करने का विचार उभरता है। यह उद्देश्य से बाल्यक करने हेतु उनमें प्रारम्भिक सामान्य स्थापन बाल्यक होता भाषा-संचालन है। कई भाषा-संचालन प्रपञ्च बाल्यक के सम्बन्ध का कठिनाई ऐसी शारीरिक संचालन संचालन देना नहीं चाहते क्योंकि उनका विचारानुसार बाल्यक के रूप में न हो। विन्तु यह रूप का विषय है कि हमारे देश के अभिभावक यह विधा में अधिक-अधिक प्रयुक्तता प्राप्त करत हुए भाषा का उत्तमोत्तर सहयोग प्रदान करते जा रहे हैं।

शिक्षण-युग तथा अभिभावकों से अधिक समीक्षा से एक और समूह छात्र को जाता है—और वह है उसका समस्त-मही शिक्षण-संचालन। इस समूह से छात्र विषयक संचालन एकत्र करने में प्रयत्न संचालन प्रपञ्च प्रपञ्च-संचालन प्रपञ्च हैं अनुपयुक्त साधन होने हैं। सामान्यतः शिक्षण-युग में समूह-मालक जगह देते होते हैं कि इस रूप के छात्र एक दूसरे के विषय में कुछ भी बताना समूह-निष्ठा का प्रतिफल समझना है। अस्तु छात्र विचार-जिन प्रकार की संचालन इस क्षेत्र से प्राप्त हो सकती हैं वे उसका समाज-मितीय स्थिति से ही सम्बन्धित होता है। अतएव इन संचालनों का संचालन भी संचालन समाज-मितीय साधन द्वारा करना ही

समीचीन होना है। इन माधमों के परीक्षण एकाक जितने कम पर्याप्त ह्रास उनकी ही अधिक विरसनीय सूचनाएँ तब सामूहिक न प्राण हान की सम्भावना प्राण।

(ई) प्राण्य प्रत्येक सत्र के मध्य में एक मनु प्रश्न उत्तरा है कि उसका आयोजन प्राण्य क्या ही तथा इस आयोजन की प्रभाविता किन घटकों से सम्बन्धित हो सकती है? विशेष कर किमी भी इष्ट वायक्य पर प्रभावशालक दृष्टिकोण से विचार करते समय तो यह एक प्रत्येक महत्त्वपूर्ण बिन्दु हो जाना है। इसविध प्रत्येक निर्देशन तथा न विवेचन में इस पक्ष पर भी विचार किया जाएगा।

व्यक्तिक सूचनाओं का नरत अनुसूचित करने में एक सम्भावित भ्रान्ति का निवारण वादनीय है यह भ्रान्ति हो सकती है इस अनुसूची की हमारी शाखाओं में प्रचलित सचची वृत्त के साथ एकरूपता स्थापित कर देने की।

नरत शाखा का सचची वृत्त अपेक्षाकृत अधिक व्यापक व्यक्तिक अनुसूची का एक महत्त्वपूर्ण अंग ही सचची है। सचची वृत्त में सामान्यतः छात्र का शैक्षिक उपलब्धियाँ सम्बन्धी सूचनाओं का उल्लेख आता है। यह वृत्त अधिकतर शिक्षकों के वाक्य से सम्बन्धित होता है तथा उन्हा द्वारा उल्लेख पतियों भा का जाती है। निर्देशन उपबोधन के वाक्य हेतु आयोजित व्यक्तिक सूचना-सेवा द्वारा जो अनुसूची तयार की जाती है उसमें सचची वृत्त में विहित छात्र की शैक्षिक उपलब्धियों के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार की बहुमुखा सूचनाएँ सम्मिलित रहती हैं जिनका वलन पूरे अनुसूचियों में विद्या जा चुका है।

विषय वस्तु की उच्च व्यापकता के अतिरिक्त सचची वृत्त तथा व्यक्तिक अनुसूची में एक प्रमुख भेद रहता है उनके बाह्य प्राण्य के सम्बन्ध में। सामान्यतः शाखा न अनुसूची वृत्त का प्राण्य सरलित होता है जिसमें समय-समय पर निरचित खाना की प्रति कर दी जाता है। अन्य विषयगत आदर्शरूपेण व्यक्तिक अनुसूची एक एकी मसरचित भुक्त मिश्रित है जिसमें समय-समय पर आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के प्रश्न रख दिए जाते हैं। एक मोलत मिश्रित का मानि इन प्रश्नों पर बढ करने की भी आवश्यकता नहीं। इनमें से किसी एक या एक से अधिक किन्हीं सम्बन्धित प्रश्नों का यदि निर्देशन आवश्यकता अध्ययन करना चाहें तो उन्हा सरलतापूर्वक तिकासा तथा रखा जा सकता है। इस अनुसूची में पूरे वर्णित सभा प्रकार की सूचनाओं सम्बन्धी प्रश्न रहते हैं।

निर्देशन वायक्य की दृष्टि से आवश्यक है कि एकक छात्र की अन्तम मितिल हों जिसमें उसी से विशिष्टरूपेण सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों का विकासक्रम स्वरुप होना जान। व्यवस्थित मितिलीकरण तथा उपबोध की सरलता की दृष्टि से इन मितिलों के बाह्य पृष्ठ पर विद्यार्थियों के नाम लिख कर उन्हा बथानुसार जमा देना चाहिए।

वर्षे व्यक्तित्व सुधना का भी योग्यता प्रकृति के सम्मम म म भी आवश्यक है कि ये निमित्त साधन म रखी जावे । अपने निमित्त उपबोधक के रूप म कनिगेट साइल ड्रामम की व्यवस्था होना अपेक्षित है । इन ड्रामम म मिमित्तें जमाने समय वाता नुसार सकेत विह्वल गत के ये बोर् भी निमित्त साधन विकारने मे समव गष्ट नहीं आता ।

आ ठका के उक्त प्रकार के प्रालय तथा व्यवस्था के निमित्त साधना म अतिरय पूरा व्यवस्थापना की नीति है । मधुप्रथम तो उनके निमित्त अनुसूचना तथा उचित उपबोध हेतु वन प्रयत्न होता अनिवार्य है । एकदली निर्देशक या उपबोधक के निमित्त न तो ये सम्भाव है न कीदरीय ही कि वह उन समस्त प्रकार की सूचनाओं को स्वयं ही सारित करे ।

दूसरे म प्रकार की सेवा व्यवस्था के निमित्त साधना म कुछ अतिरय सखट की भी आवश्यकता होता । बिना निमित्तन धनराशि के इन सेवा की अनुसूचना आवश्यकताओं यथा वापस मान्य कनिगेट जने आदि की भी व्यवस्था होना अपेक्षित है ।

तीसरे म सेवा मे निहित कई छोटे भोरे वचनीय वृत्त्या के लिए इसी वन का कुछ अनुसूचना का आवश्यक होना कीदरीय है । यदि प्रशिक्षित उपबोधक की उन्नीए मा मय प्रकार के नवी वृत्त्या म गष्ट होगी रद्दी तो उपबोधक के निमित्त तकनीकी तथा उच्चमनीय वृत्त्या के लिए उनके पास पर्याप्त शक्ति नहीं रह पावेगी । अतएव इस विधा म यदि साधना का कात्र प्राथिक क्षेत्र म मय भी वस्ता पर तो वस्तुतः मानवीय शक्तियों के क्षेत्र म वर अनुसूचना व्यवस्था ही सिद्ध होती है ।

(५) म विरलीय सूचना-सेवा परिवारशील परिवारियों प्रवन्धन मने साधना तथा आवश्यकताओं मे सम्बन्धित सूचनाई वन उक्त निर्देशन कार्यियों का उपनयन नहीं होती तब तक व्यक्ति को उनके सम्पत्ता जीवन मे सम्पत्त सम्बन्धित हेतु सही मां मे सह्यवता दना उनके लिए सम्भव नहीं हो सकता । व्यक्तिक सूचना सेवा के माध्यम से व्यक्ति विपत्त या मल साधना व्यक्ति की जाती है वह अपने प्राप्त म प्राप्त सुखवाक होने हुए को निमित्त वापस की अपने काम म बहुत शक्ति नहीं ले जाती । आवश्यकता इस बात का होती है कि म साधनी वा परीक्षण उपनय परिवारशील साक्षात्कारियों के सम्मम म किया जाए । तभी व्यक्ति इन सम्पूर्ण चित्र के आधार पर अपने भावा जीवन विपत्त महसूसना निश्चय एक सुनिश्चित म म ले सकता है । इही सूचना कार्यामिपद्दतों के आधार पर निमित्त वापस म का निमित्त महत्वपूर्ण सेवा परिवारशील सूचना सेवा का आवश्यकता विधा जाता है ।

या एक प्रकार से तो कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व सुधना की सुधना मे इनका आधार अतिरय विस्तृत होता है । कई परिवारशील वन मे कई व्यक्ति एक साथ रह सकते हैं । किन्तु प्रत्येक किन्तु वे एक उक्तकी मय व्यक्तिक विधिगता के

सन्तान म स्त्रुत्र महत्व रखत है। इतिहास सग्रह का दृष्टि न कर् प्रकिया क लिए एक साथ सञ्चलन कर तन पर ना निवचन के समय इन सूचनाभा का एक व्यक्ति क लिए विभिन्न प्रकार से व्याख्या कनी पण्ड ह।

(अ) प्रकृति—विस्त प्रकार प्रकृति व्यक्ति के व्यक्तित्व क नामा सन्तानम्बना पण हाते है उनी प्रकार उतना पण्डरण नी कर् प्रयो-प्राथम्य प्राधान्य का एक सुसंगतित प्राप्त रूप होता है। इन पण्डरणीय सूचना सदा म समन जायन क विविध सेवा से सम्बन्धित सूचनाभा का विविधन सञ्चलन किया जाता है। वस्तुतः प्रथम एही प्रकार सूचना का समाहित किया जाता है जिसका प्राथम्यता छात्र को अपना परिवारगत व्यवसाय क मूल्यांकन हेतु पण सकता है। निर्देशन इतिहास क आधिकारिक म इस सेवा को शक्ति सूचना-सेवा अथवा प्रावसायिक सूचना सेवा क नाम से सम्बोधित किया जाता था। निर्देशन क परिवर्तित सन्तान तथा निर्देशन कार्य की विकासगत परिधि के अनुष इस सेवा का कार्य विस्तार आगिता तथा व्यवसाय की सञ्चालन सामा को पार करके व्यक्ति जीवन क गता सेवा को स्था करत लगा। किन्तु यह क्या ता सञ्चालन है कि विस्तार कर शाना कार्य क दृष्टि नीचे से तो इस सेवा के अन्तगत अधिकार म अधिक-व्यावसायिक सूचनाएं समाहित करना पण्ड होगा।

सञ्चालन म हम इन सेवाओं की प्रकृति क समन म कह सकत है कि इस सेवा क माध्यम से व्यक्ति क वृत्तपथा परिवारण के सम्बन्ध म आस-पास ए उतना सूचनाभा का सञ्चालन करिण्डा विस्तारण मितिलीकण निवचन एवं उपयोग विविधन रूप से किया जाता है। पुन प्रकारिक दृष्टिकारण म हमन विस्त प्रकार वैयक्तिक सूचनाओं का वास्तव्य प्रकृति क सम्बन्ध म व्यक्तिगत विविध मापण्ड निमा मित कर दिय य उतना प्रकार इन सेवा क अन्तगत प्राप्त की जाने वाला सूचनाभा क सम्बन्ध म भा कर नना उपाय्य रहता। हमन विचारानुसार निम्न प्रकार क मापण्ड पण सूचनाभा क सम्बन्ध म हमारे निर्देशक विन्दु हो सकत है —

अद्यतन—अद्यतन म तानि स आण क विकासमान युग म यदि को नी सूचना अद्यतन नहीं हू तो उतना वाइ विरूप मूल्य नहा रहता। उत अर्थ का पुष्टि म कनिपण अनुभूत वास्तविकताए स्पष्ट उदाहरण क रूप में अद्यतन की ना सञ्चालन है। प्रकृति जाण्डक निष्पत्त यह जानना है कि यदि वह अद्यतन विषय-वस्तु तथा अद्यतन-विषय अद्यतन नन्दनम सेवा से अद्यतन नहीं है तो वह अद्यतन रूप से अद्यतन विद्यादिना तक अद्यतन सेवा सम्बन्धी सूचनाभा का सञ्चालन कर सकता। विस्तार व्यावसायिक निष्पत्त पाठ्यक्रमा क विषय म तो यह का बार नवान वायकताका का क अनुभूतिया क रूप म सिद्ध हा चुका है कि अद्यतन निष्पत्त काल का अर्थवि पूण करके जब त-वे अद्यतन वास्तविक वाय हय म प्रकृति हो पात है त-त-तो नना अर्थवि पात-नीत्य अद्यतन हा जाता है। आद्यतन काल की औद्योगिक प्रगतिवा क परिवर्तन म यह बात तजनाका सेवा का सूचनाभा

पर भी प्रोत्साहेक प्राप्त हुआ है। जो शिक्षात्मक सूचनाओं का महत्व एक तुलनात्मक अध्ययन तथा शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्रोत्साहित करता है। किन्तु निर्देशन के प्रयोग पर म. हा. अध्यापन सूचनाएँ ही सबसे अधिक साध्य सिद्ध होती हैं।

अभिव्यक्त एक परिपक्व— यदि सूचना में परिपक्वता न हो तो वास्तविक वातावरण के रूप में उसका कोई भी मूल्य नहीं। यह तो एक सामान्य अनुभव का विषय है कि कुटिलसूत्र सूचनाएँ होने से तो सूचना विवरण नहीं होना अधिक अच्छा होता है। यहाँ एक सूचना में निर्यात प्रभाव में अधिक कम से कम घबराता सामान्य शब्द प्रयुक्त करने में लिए स्वतंत्र रहता है यहाँ सूचना के नाम पर कोई नया सूचना उत्पादन हो जाने पर घबराता सामान्य में अनिश्चितता उत्पन्न भयावह एक एक का अकारण उत्पन्न बन सकता है। विशेषज्ञता की अव्यक्तता प्रवृत्तियों में प्रकाश की परिस्थिति में संशयित परिणाम और भी अधिक प्रवृत्त हो सकते हैं। अधिक आवश्यक है कि छात्रों को शब्द रूप में विशेषज्ञता इस प्रकार स्थिति शान्तता को सूचना प्रवृत्तियोंनामो हनु अश्विन सूचना-साधकों की परिपक्वता के विषय में उत्तम आवश्यकता प्राप्त करनी चाहिए।

कभी-कभी सामग्री के संयोजन प्रवृत्तियों में सूचनाधारा के विधी प्रविष्टता का अन्वेषण ही सूचना की परिपक्वता को विवरीत रूप में प्रभावित कर सकता है। इस प्रभाव के सम्बन्ध में उनके सम्बन्ध केवल साधुता ही रहें, और आवश्यक नहीं। अपने पूर्वनिर्देशन के अनुसंधान कई अवस्थाओं में प्रविष्टता और कभी-कभी व्यक्तियों के सम्पूर्ण कार्यविधियों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरणार्थ किसी विशिष्ट प्रकार के अध्ययन में अथवा अध्ययन प्रवृत्तियों के मुक्त परिणाम स्वरूप व्यक्तियों को साधारण के प्रति उत्पन्न करने के लिए अनुसंधान प्रवृत्तियों प्रवृत्तियों रचिये बना देना है। इस प्रकार नए व्यक्तियों का नाम—नाम वह प्रविष्टताएँ एक विशिष्ट विषय को अध्ययन निर्देशन कार्यक्रम की सूचनाधारा। इन आधारों के सम्बन्ध में विशेषज्ञता को प्रविष्टता प्रवृत्तियों करते समय ध्यान देने की प्रवृत्तियों को ही अपनी सूचनाधारा के साथ धन मिलने पर म. सधुक्त करके उन तक प्रभावित हो प्रेषित कर देना है। आवश्यक नहीं कि इस प्रवृत्तियों में सामान्य रूप से अन्वेषण विधा के रूप में ही हो। यहाँ पर अधिक म. अन्वेषण या एक प्रविष्टताएँ प्रविष्टताएँ प्रवृत्तियों-साधारण-साधारण के द्वारा वे प्रविष्टताएँ स्पष्ट वही हूँ जिनके साथ साथ प्रभावित ही प्रविष्टताएँ जाती है। एक अनुसंधान प्रवृत्तियों के साथ में अपने के अकारण विशेषज्ञता महत्व ही सामान्य प्रवृत्तियों पर लेते हैं—और वे उनके सम्भावित प्रवृत्तियों तथा प्रवृत्तियों को सामान्य प्रभावित करती रहता है।

अन्वेषण प्रवृत्तियों ही आवश्यक है कि निर्देशन कार्यक्रम की सूचना सेकाया का उत्तरदायित्व निर्माण करने का अधिक प्रभावप्रभव प्रविष्टताएँ मुक्त है। जो तो प्रवृत्तियों व्यक्तियों के लिए अपने मुक्त प्रविष्टताओं प्रविष्टताएँ हीना एक अनौपचारिक रूप है। किन्तु किसी

वैज्ञानिक तकताकी उत्तरदायित्व का भार-बहा करते समय यह अनिवाय हो जाता है कि अपनी निजी व्यक्तिनिष्ठता से पर होकर कार्मिक दानिक वस्तुनिष्ठता को सर्वापरि महत्त्व प्रदान करें तथा अपने व्यक्तिगत प्रतिभा को द्वारा सूचना सफल प्रथम सूचना संचरण की क्रियाओं का ध्यान न होने दे ।

सूचना का परिशुद्धता का सम्बन्ध एक सीमा तक हमारे पूर्व-चर्चित किन्तु अत्यन्तता से भी है । हो सकता है कि सूचना विशेष किन्तु विशेषकारी अथवा परिस्थितियों में परिशुद्ध हो किन्तु वर्तमान स्थिति में यह प्रष्टिपूर्ण है । इस तथ्य के ता वह प्रथम उदाहरण निम्न परिवर्तित एवं सतत परिवर्तनशील हमारी वर्तमान पाठ्यपुस्तकों में सम्बन्धी सूचनाओं में प्राप्त हो सकती है । आज के विद्यार्थी के लिए सर्वप्रथम अपने पाठ्यक्रम में अति विविध विषय विविध नियम तथा बहु पक्षीय सूचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़ना अनिवार्य हो गया है क्योंकि वर्तमान बाल में इनमें निरन्तर परिवर्तन होने की सम्भावना रहती है । आज के परामर्शकों को भी इन परिवर्तनशील आवश्यकताओं से सतत अनिगता बनाए रखना चाहिए अथवा उसका द्वारा अतिशुद्ध सूचना संचरण का आयोजन करना ।

उक्त विवेचन में सूचनाओं का विकासात्मक प्रकृति का धार भी इंगित करता है । जो भी व्यक्ति के अति निश्चय लेन हेतु अत्यन्तम मामलों का महत्त्व ही सर्वाधिक हो सकता है—सर्वापि जोयामिन् व्यावसायिक क्षेत्रों में विकासामक सूचनाओं का भी अपना एक महत्त्व होता है । परिवर्तित व्यावसायिक धाराएँ नई धार उन्ने मविष्य परिवर्तन को शिक्षाओं के वाछनीय सक्त दे सकती हैं जोकि यकित के व्यवसाय-सम्बन्धी निश्चयों में एक सामा त्व सहायक हो सकते हैं ।

विविधता निर्देशन काम हेतु तकिक की जाने वाली सूचना सामग्री को प्रकृति के त्व वाछनीय लक्षणों का कई दृष्टिकोणों से परखा जा सकता है । सर्वप्रथम तथा सबसे विस्तृत उपागम ही होता है व्यक्ति के निजी व्यक्तित्व तथा अन्वित परिवारण की बहुदीयता के सम्बन्ध में । व्यक्ति का कोई भी निश्चय उसके जीवन के किसी एक ही पक्ष में विशिष्टपण स्थित होने पर ही उसके अन्य जीवन पक्षों से भी अविद्यन रूपेण सम्बन्धित होता है । अतएव उक्त निर्देशन दत्ते समय उनके सम्मुख उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं समूह परिवारण की एक सुसंगठित तस्वीर प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है । स्पष्ट है कि यह तस्वीर उसने माना पक्षों सम्बन्धी विविध प्रकार की सूचनाओं द्वारा ही बनाई जा सकती है । जहाँ उसके शैक्षिक निश्चयों को विभिन्न सम्बन्धित वायव्यिक अयसरो की पृष्ठभूमि में सजाना होता है वहाँ उनके व्यवसाय सम्बन्धी निश्चयों में उसके वैयक्तिक गुण मनाव्यक्तिक लक्षण शैक्षिक उपलब्धियाँ तथा प्रशिक्षण—पृष्ठभूमियाँ की भ्रमकाना होता है । अतएव विविधता का प्रथम प्रकार व्यक्तित्व के नाना पक्ष तथा परिवारण के विभिन्न आयामों में देखा जा सकता है ।

विविधता का द्वितीय प्रकार होता है जीवन में उपलब्ध विभिन्न अवसरों के

रूप में। शीतक यावसायिक व्यवस्था के विषय में एक निम्न-कार्यिक की अभिलषा सीमा मिलती अधिक विभूत होगा उगा ही विभिन्न विचारों को व्यक्त के सम्मुख न केवल प्रस्तुत कर सकेगा बल्कि उनका अपनी क्षमताओं के साथ न पुक्तिमान रूपान्तरण कर करने में सक्षमता प्राप्त कर सकेगा।

व्यक्ति का व्यक्तित्व क्षमताओं की शान सुव्यवस्था की एक तीव्र प्रवृत्ति की विनिर्दिष्टता की धार द्वारा स्थान प्राकृतिक करती है— धीरे वही है व्यक्ति-व्यक्ति के बीच की क्षमताओं के अंतर से सम्बन्धित। व्यक्तिगत विनिर्दिष्टताओं का मनाविचार हम बताता है कि कोई भी दो अभिलषा की कुशलता शक्ति प्राप्ति अथवा प्राप्ति प्राप्ति में विचार में एक-दूसरे को छोड़नी। अतएव विभिन्न व्यक्तियों के साथ साथ करने वाले निर्देशन कार्यिक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उसके साथ विभिन्न व्यक्तिगत क्षमताओं में मनुष्य का करने वाले विविध सूचना सामग्री हो।

यहाँ तक ही पूर्ण अभिलषा में व्यक्ति के अक्षमता से सम्बन्धित बात। किन्तु यह विचारकर नवयुवकों के उच्चस्तरीय शिक्षा अथवा मनुष्य प्रवेश का प्रश्न आता है यहाँ पर हम शिक्षा के विभिन्न अक्षमताओं को नूनन यावसायिक जीवन के विविध अक्षमता से सम्बन्धित सूचना भी इन नव कार्यिकताओं का दे सकना आवश्यक हो जाता है। जीवन के इन अक्षमताओं में व्यक्ति से अधिक स्वतंत्र व्यवहार की क्षमता की बात है। सामाजिक-व्यवस्था में प्रवृत्ति का व्यवहार कर करने के लिए आवश्यक है कि वह अपने विचारों को मानने की क्षमता भी प्रवृत्ति पर विकसित हो। अतएव निर्देशन कार्यिक का मनुष्य सूचना सामग्री में ही अपनी सम्पूर्णता होने चाहिए जोकि व्यक्ति जीवन के अक्षमता से सम्बन्धित अक्षमताओं में ही क विविध अक्षमता एवं अक्षमता को अपने में समाहित कर सके।

(अ) प्रवृत्ति उच्च अक्षमता में पर्यावरणीय सूचना अथवा प्रवृत्ति के विस्तृत विवेचन में उच्च अक्षमता का ज्ञान वाली सूचनाओं में प्रवृत्ति के सम्बन्ध में विविध अक्षमताओं का प्राप्त हो चुकी है। उन्हें अपने पर एक स्वतंत्र पर अक्षमता विस्तृत विस्तृत अक्षमता रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है —
शिक्षक पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्याएँ

शिक्षक विनिर्दिष्टकरण के अक्षमता रूप में अक्षमता के विचारों के लिए व्यक्तिगत पाठ्यक्रमों एवं पाठ्यचर्याओं सम्बन्धी सामग्री का प्राथमिक महत्त्व है विशेषकर अक्षमता में अक्षमता पर विचारों विनिर्दिष्टता की अक्षमता शैक्षिक रूप से ही अक्षमता रूप में अक्षमता करने का ही अधिक अक्षमता अक्षमता है। विषय के सीमा विस्तार तथा उनसे सम्बन्धित अक्षमता की वृद्धि के कारण प्राथमिक पाठ्यचर्याओं की अक्षमता अक्षमता का अक्षमता है। अक्षमता परिकल्पना के अक्षमता में पाठ्यक्रमों तथा उनकी अक्षमताओं सम्बन्धी सूचनाओं का अक्षमता में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

‘यावसायिक’ अवसर

शौचांगिकान्तर्नीकी हस्तलि व्यवसायों के विविधतरण तथा काम कुशलता का विनिताकर न यावसायिक अवसर सम्बन्ध सूचनाओं को इनका अधिक सजाटल बना लिया कि बिना किता अवस्थित विस्तार विनि के इस क्षेत्र में सूचना सरलित कर सजना भी एक महता चुनौती है। पूरा इत सूचनाओं का छात्र के शक्ति निश्चया से प्रयत्न सम्बन्ध हाता इतलिय परावरणाय सूचना-सवा क माध्यम से इन सूचनाओं का विविध सजना तथा उन्नी हाता चाहिए।

‘यावसायिक’ प्रशिक्षण

विनी भी व्यवसाय में प्रवृत्ति प्राप्ति तथा सजना काम का एक महती चुनौती परता हाती है उन व्यवसाय के निम्न बाजना कुशलताप्रोत्पनाया में विविध प्रशिक्षण। वरमान व्यवसाय शाशाओं की प्रवृत्ति उनमें अवसर कुशलताओं का रूप देना तथा उनका शक्ति के का मन्ना में इतना परिवर्तन एवं विन्नार हुआ है तथा होना बा रहा है कि छात्र ता करा—वरमान निम्नो के लिए भी इन विन्नों सम्बन्धी वषमाद सूचनाएं एवं सजना सम्भव नहा हो पाता। काक क सजटिन व्यवसाय गुा में मनी प्रकार समजिन हो सजना क लिए छात्र क लिए इन सूचनाओं की आवश्यकता का मुख्य प्राजना बाजना है। निर्दोष कार्यक्रम की परावरणीय सूचना सवा छात्रा तथा नव-व्यवसाय प्रवृत्तों के लिए इन महती सूचनाओं का सजलन उपयोग करता है।

सामाजिक आर्थिक

विनी भी शक्ति पाठ्यक्रम तथा यावसायिक क्षेत्र की प्राथमिक जानकारा का उल्लेखी स्थलाय आवश्यकताओं तथा कायकुशलताओं में सम्बन्ध होना है। इन प्रकार का विषय अनुसंधान व्यवसाय-वषण सम्बन्ध सूचनाओं का विवरण ‘निम्न पाठ्यक्रम’ तथा व्यावसायिक अवसर के प्रयत्न हम कर चुके हैं। विन्नु निम्ना तथा व्यवसाय क्षेत्र के इन प्राथमिक परिचय के परिचित हाता एक सामाजिक आर्थिक पक्ष भी हाता है। विनी भी तरनीकी शक्ति पाठ्यक्रम के पारण में कति पर आर्थिक शक्ति हाता हैं जिनके सम्पूर्ण जान बिना विद्यार्थी के निम्न उनमें प्रवृत्ति प्राप्ति के निश्चय न सजना कठिन हाता है। इसा प्रकार विना ना व्यवसाय की एक सामाजिक आर्थिक निधि होनी है। उनमें प्रविष्ट होने के निश्चय की यह परि निधि एक बहुत बसा सामाजिक अनुवर्षण करती है। परावरणीय सूचना सवा में विनी मा पाठ्यक्रम तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में इन प्रकार की सूचनाएं एवं सजना भी परमावश्यक है। कई बार किन्हीं शक्ति पाठ्यक्रम के अनुसंधान सजना व्यावसायिक प्रशिक्षण के पारण हेतु आर्थिक छात्रवत्तियां तथा शौचांगिक प्रावधान भी हाते हैं। पश्चिम में तो यह एक सामाजिक तथ्य है अतएव छात्र माभायत वष प्रकार की सूचनाओं के शीत शोधते रहन हैं। विन्नु हमारे देग में यह एक अनेपाहृत नवान विचारधारा हाता क कारण इनके सम्बन्ध में भी परावरणीय सूचना सेवा को सजना रहन की आवश्यकता है।

सूचना सलाखा के पास इतना समय था रहता है कि वे इन कार्रमिका में बतबर बातचात कर सकें । उनके अगिरिक्त प्रातिष्ठित शक्ति एव औद्योगिक अभिवरण अपनी प्रकृति हेतु नाना प्रकार की मुक्ति सामग्रियाँ तयार करवाके रखते हैं । किसी भी प्राचीन मन्थ के प्रवर्ग निरम पाठ्यक्रम आधिक प्रयोगेण प्रातिष्ठित प्रोत्पन्नम अथवा प्रशक्ति पत्रिका में उपनयन हा सकती है । एतएव शाखा में भिन्न भिन्न प्रकार के उच्चस्तरीय मन्थविद्यालय एव प्रशिक्षण सलाखा के य प्रकाशन डाक द्वारा मंगना निय जा सतत हैं । आनकल कर्ष औद्योगिक तकनीकी उपनयन भा अपन काय क विविध पक्षों के सम्बन्ध में अध्यायन छाकनक पम्फलेटम तयार करवा कर रखते हैं । अतएव प्रकार के चाट विन आरेख तथा आरेखी गारा इन सलाखा के विविध पक्षों में जीवन परिस्थिति तथा अपनभाषा के सम्बन्ध में जान पाय हा सतता है । कर्ष बार तो एसी सूचना-मामग्री नि शुल्क वितरित की जाती है किन्तु हमारे विद्यालयों को दस तथ्य के सम्बन्ध में जान नही होता ।

हमारे देश में इस प्रकार की महत्वपूर्ण सूचना सामग्री व मुक्ति विहित दृश्य श्रव्य व साहाय्य उपकरण राष्ट्रीय-स्तर पर शक्ति औद्योगिक तथा शोध सलाखा द्वारा तयार किए गए हैं । पुस्तक के सातव अध्याय में इनके विषय में अधिक विस्तार तथा विशिष्ट रूप से उपाय दिया जायेगा ।

एक मुक्ति सामग्री में प्राप्त सूचनाओं का आठरिक्त भी छाक को कर्ष एव साया प्रशिक्षण सलाखा तथा उच्चस्तरीय जिलण मन्थाम्रा सम्बन्धी तथ्यों की कर्ष बार सावकता होी है । इसके लिए शाखा निर्देशक को क्षेत्रीय पपटन की आयोजना करना चाहिए । एक विद्या का प्रयत्न लाभ यह होता है कि छाक प्रमिसुख सवाद प्रभावना एव प्रयत्न पुनि पयवभग प्राति प्राविधियों व उपयोग से न बेकल परिचित हात है अपितु इनके द्वारा स्वय काय परि स्थितियों व परिधीक्षण अध्ययन द्वारा अपन भावा निश्चय अधिक बध रूप स न सकत है । शक्ति अथवा परिणाम सलाखा का स्थानीय अपनभाषा आवश्यकताओं के सम्बन्ध में उपाय प्रथम साहाय्य नन विधिन होता है । व्यावसायिक तरवा व सम्बन्ध की विनद सचनाए भी ब्यवसाय विनपण का तकनीकी प्राविधि द्वारा ही प्राप्त हो सकता हैं । इस विनपण के मदम में जहा छाक की वापनविन काय-परिस्थितियाँ उ प्रत्येक परिचय प्राप्त करन का प्रवसर मिलता है वना निर्देशन कार्रमिक को अवस्थित रूप में कर्ष तकनीकी सूचना विद्युता का सञ्चन कर सकने की शक्ति प्राप्त हो जाती है ।

(ई) प्रारूप—पर्यावरणीय सूचना-सलाखा के प्रारूप के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात है इस सेवा द्वारा उपनयन सामग्रियाँ के समुचित उपमाय का । य सच नाए न केवल छाक्री के लिए अपितु शिशुओं तथा अभिभावक के लिए भी प्रत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना-मामग्री हाता है । विषय कर हमारे देश में ता शिशुन तथा अभिभावक छाक द्वारा चयित विशेषता धाराओं व आवश्यकताओं के सम्बन्ध में भी प्राय अपनभिन ही रखते हैं । अतएव आवश्यक है कि एक सामग्रियों का सञ्चन

विद्यार्थीकरण तथा "सबसे कम से कम किया जावे" छात्र की व्यक्तिगत पि सीमा में रहने का तथ्य है। इनके रहने के अनिश्चित छात्रागण्युत्तरा से भी वे सामान्य रूप से भावधिन कर सकें ।

विभिन्न प्राथमिक पाठ्यक्रमों में सम्बन्धित प्रत्येक पाठ्यक्रम के विषय विभिन्न "सबसे कम से कम" शैक्षणिक सचनानाओं की शारिणीयों निम्न निम्न "सबसे कम" शिक्षाओं के कारण छात्रों के किसी ऐसे क्षेत्र पर ध्यान पर न्याय जा सकते हैं जहाँ पर छात्रों की प्रारम्भिक शिक्षा शारिणीय रूप में आते हैं। इनके अनिश्चित शैक्षणिक "सबसे कम" शैक्षणिक मुक्ति सामग्री छात्रों परलगततय में वरन्ना से उदाहरण हो छात्रों शक्ति—बन्धन भवतीन विद्या के समान रूप छात्रों में महान शक्ति सीमा के अन्तर्गत रहने के शक्ति। इस प्रकार की सचनाना-सम्बन्ध प्रवचन श्रमका शिखर प्रवचन में छात्रों के अनिश्चित शक्ति तथा अनिश्चितता का भाग सम्बन्धित करता चाहिए ।

अन्यत्र सचनाना-सेवा के समान कल्पित प्रवचन प्रवचनगीय सचनाना सेवा की प्रभाविता का अनुभवित प्रवचन है। प्राथमिक—प्राथमिक प्रवचन तो इस प्रकार में छात्रों के अन्तर्गत का। बहानों की प्रवचनाना नहीं कि अनिश्चित सचनाना सेवा में समान ही रूप तथा शैली भी एक अनन्त प्रवचन का प्रवचन होता चाहिए जिससे अनन्त एवं अनन्त सामग्री का प्रवचन निरन्तर बना रहे। शैक्षणिक सामग्री के प्रवचन के साथ ही उनके प्रवचन का प्रवचन या सचनाना रहना है—शैली में प्रवचन हेतु प्रवचन उपकरण तथा प्रवचनित शक्ति—सेवा का ही प्रवचनका शक्ति है ।

प्राथमिक प्रवचन के अनिश्चित अनिश्चित सचनाना सेवा का ही इस सेवा में समान सचनाना हेतु भी कुछ अनिश्चित सचनाना का प्रवचनाना होती है। व्याप्त शक्ति सुभाषण का ही रूप रहना चाहिए कि इस प्रकार के अनिश्चित सचनाना के कई अनिश्चिततयों में छात्रों के अनन्ततय अन्तर्गत तथा स्वयं छात्रों का अनिश्चित सचनाना सेवा का सचनाना है। अनन्त छात्रों का ही अनिश्चित "प्राथमिक" सचनाना सामग्री के सचनाना के विषय भी अनिश्चित किया जा सकता है। प्रतिदिन के सचनाना पर स्वयं के अनिश्चितता से छात्रों "सबसे कम से कम" शैक्षणिक सचनाना सेवा के प्रवचन सचनाना-सेवा हेतु अनन्त विवरण—शक्ति के रूप में प्रवचन का सचनाना है जिसके द्वारा छात्र अनिश्चिततय सचनाना के सचनाना सचनाना एवं उपयोग हेतु अनिश्चित विषय जा सकते हैं ।

(ब) उपबोधन सेवा

यद्यपि शैक्षणिक शक्ति की अनिश्चित प्रवचन तथा प्राथमिक शक्ति द्वारा अनुभवित निर्देशन तो सामान्यतः प्राप्त होता ही रहता है। किन्तु इस अनुभवित निर्देशन की दो प्रमुख अनिश्चितताएँ अनन्त हैं। एक तो न अनन्तता की अनिश्चितता द्वारा किया हुआ अनन्ततय निर्देशन प्राथमिक शिक्षाओं की सामग्री तथा अनिश्चितताओं में सम्बन्धित रहता है। अन्तर्गत अनन्तता के कारण पर कुछ अनन्ततय प्रवचन प्रवचनकारणों से परिचित होने पर भी अनन्त अनन्तता की अनिश्चितता से न तो छात्रों के

मनोवैज्ञानिक नक्षत्रों का अवबोध होता है न इन लक्षणों का पर्यावरणीय प्रभावों से सम्बन्धित करके देखा जा सके। छात्र को वैज्ञानिक रूप से धर्म निर्देशन देने के लिए उक्त क्षमता आवश्यक होती है जिनका प्रमाण विशिष्ट रूप से तबनीकी उपबोधन सेवा में होता है।

एक अतिरिक्त शिक्षकों को आदि द्वारा दिया गया शास्त्रात्मक निर्देशन प्रायः छात्रों की कुछ सामान्य आवश्यकताओं के ही संकेत में होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक संकेत है कि शाला के कार्यक्रम से सम्बन्धित विद्यार्थियों की वैसी आवश्यकताओं का अतिरिक्त भी एक अनन्य व्यक्ति के नाते प्रत्येक छात्र को कुछ निजी समस्याएँ भी हो सकती हैं। कई बार इन व्यक्तियों की समस्याओं का उत्तर भारतीय उपनिषद्वादी पर भी विपरीत प्रमाण पड़ता है। किन्तु व्यक्तिगत सहायता के अभाव में उसे यह सब कुछ जान भ्रमजान सहन करना पड़ता है। विशिष्ट रूप से व्यक्तिगत स्तर पर विद्याशाला उपबोधन सेवा में इन व्यक्तियों के आवश्यकताओं के सम्बन्ध में ही विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। तदनुसार इस सेवा का प्रकृति के सम्बन्ध में निम्न विद्युत्वा का विविध रूप से उल्लेख किया जा सकता है।

(घ) प्रकृति

व्यक्तिगत—उक्त विवेचन के परिप्रेष्य में उस सेवा की अनन्य व्यक्तिगत प्रकृति पर ही सबसे प्रथम बत देना समाधान रहेंगा। वस्तुतः यदि यह कहा जाय तो कार्य प्रतिशयोक्ति नहीं होगी कि उपबोधन सेवा एक एक व्यक्तिगत सम्बन्ध के आधार पर ही नियोजित होती है। इस सम्बन्ध का प्रकृति भी विभिन्न एक एक सम्बन्धों की तुलना में अत्यन्त ही अनन्य होती है। इस सेवा के सफल संचालन की एक प्राथमिक पूर्वानुसंधान ही यह होता है कि इस घट्ट एक एक सम्बन्ध में सामरस्य ही सग अनुभूति ही सौहार्द ही। एक उपबोधक तथा उपबोध्य के मध्य यह एक विशिष्ट प्रकार का सम्बन्ध-स्थापन होता है जहाँ पर कि विचार-संचारण के लिए सर्व ही भाषा के सामान्य भाष्य की आवश्यकता नहीं होती। कई बार उपबोध्य अपनी निजी समस्याओं को नाता प्रकार के अज्ञान्य संचार-साधना द्वारा उपबोधक तक प्रेषित कर देता है। कई परिस्थितियों में दोनों पक्षों के वास्तविक सग जितना नहीं कह सकते उससे बड़ी शक्तिशाली के इतिल वागी के स्वरक अग के हाव भाव सेना को दृष्टि यक्ति के अज्ञान आदि संचारक द्वारा प्राप्त हो सकता है। जग विशिष्ट सम्बन्धों के ही निश्चित अर्थ ही सभी व्यक्तियों के लिए समान होत हैं जहाँ पर इन व्यक्तिगत प्रभावों का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न-भिन्न होता है। इस लक्ष्य का आत्मोपकरण तथा इसके आधार पर वास्तविक काम कर मनन की क्षमता ही उपबोधन सेवा का मूलान आवश्यकता होता है।

एकान्त व्यवस्था—इस सेवा की विशिष्ट व्यक्तिगत प्रकृति का संतुलित निष्पत्ति यही निकलता है कि इससे नियोजन संचालन हेतु शाला में किसी एकान्त कर्म की व्यवस्था होना अनिवार्य है। का भा व्यक्तिगत प्रभाव निरा तथा गोपनीय प्रभाव के

का विवरण यह कह कर प्रारम्भ करना असम्भव नहीं होगा कि अपने शालिक तथा पाठ्यपुस्तक-पाना ही अर्थों के सम्बन्ध में उपबोधन सेवा को निर्देशन कार्यक्रम की श्रेणी में गणना नहीं की जा सकती है।

सबप्रथम तो प्रमुख निर्देशन-सेवाया की जो प्राथमिक अनुगची हस्त प्रारम्भ में प्रस्तुत की उसमें यह सेवा की सहायक शक्ति रूप से भाग लेती है। फिर वास्तविक निर्देशन कार्य संचालित करने के दृष्टिकोण से भी निर्देशन कार्यक्रम का प्राथमिक दो सेवाया का कियाए सम्बन्ध न हो सकने तक उपबोधन का तकनीकी सेवा समुचित रूप से नहीं की जा सकती है। स्पष्ट है कि जबतक व्यक्ति तथा उसके परिवार सम्बन्धी आवश्यक संचालन का विवरण तकली-वर्गीकरण ही न हो पाया हो तो उस दृष्टि सामग्री के आधार पर विवरण किस प्रकार किया जा सकता है? तन्नुसार यह भी एक वास्तविकता है कि जबतक उक्त प्रायोगिक पर व्यक्ति अपने स्वतन्त्र निश्चय नहीं निर्धारित कर लेता तबतक उस नियोजन में किस प्रकार सहायता दी जा सकती है? तथा उसके निश्चय का कुतियुक्त अनुपदान किस प्रकार किया जा सकता है? तो इस प्रकार कहा जा सकता है कि कार्य-व्यवस्था की दृष्टि से भी इस सेवा का एक कर्तीय स्थान होता है।

अतः में तकनीकी महत्त्व के दृष्टिकोण से भी इस सेवा का न केवल निर्देशन कार्यक्रम में अपितु समूची शाला व्यवस्था में एक कर्तीय महत्त्व होता है। यदि यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सम्पूर्ण शाला की बहुमुखी क्रियाओं में से कार्य का प्रथम श्रेणी नहीं है जो इस स्थानापन्न कर सके।

(भा) प्रकार—मूलतः उपबोधन सेवा द्वारा छात्र को उसके जीवन के कई पक्षों में व्यक्तिगत सहायता दी जाती है। कतिपय समाधि पक्षों का उचित उदाहरण स्वरूप यहाँ पर किया जा रहा है।

शिक्षक पाठ्यक्रम—एक पक्ष में शाला में उपलब्ध पाठ्यक्रमों के स्वरूप और आवश्यकता तथा भावी सम्भावनाओं के तान के आधार पर छात्र अपने शक्ति निश्चय तन में सहायता प्राप्त करते हैं।

शक्ति कुशलताएँ—पाठ्यक्रम प्रदान के उपरान्त छात्र को उसके सफल परमाणु में भी कई प्रश्न हो सकते हैं जो कि उसके भूचला तान की-स्य शक्ति अभिनमता अभ्ययन आर्थों परीक्षा-कुशलता आदि से सम्बन्धित हो सकते हैं। इन प्रश्नों का समाधान छात्र को उपबोधन सेवा द्वारा प्राप्त हो सकता है।

पाठ्यतर क्रियाएँ—एक पक्ष में पाठ्यक्रम से अग्रतः स्वरूप-सम्बन्धित प्रवृत्ति सम्बन्धी जानकारी द्वारा छात्र इनका सन्तुलन अपने समूचे व्यक्तित्व के साथ करने में सहायता प्राप्त करते हैं।

व्यक्तिगत सामाजिक समर्थन—छात्र के बहुपक्षी-व्यक्तित्व की कई उलझनों हो सकती हैं जिन्हें सुलभान में वह व्यक्तिगत सहायता की अपेक्षा करता है। ये कतिपय उसके कक्षा अधिगम के सम्बन्ध में हो सकते हैं अथवा शाला-विद्यार्थी

होती है जोकि उपबोधन सेवा द्वारा प्राप्त हो सकती है।

(इ) प्राथम्य एवं आवश्यक तत्त्व—जसाकि इस सेवा के विवेचन के प्रारम्भ में ही स्पष्ट किया जा चुका है इससे प्राथम्य का प्राथमिक आवश्यकता होती है—भौतिक माध्यम-सुविधाओं के रूप में। एकांत कक्ष शांत वातावरण विश्रामपूर्वक बैठकर बात कर सकने का उपस्करणीय व्यवस्था दत्त सामग्री को सुरक्षित एवं शोचनार्थ रख सकने के कनिष्ठ फार्मल होने आदि ये ऐसी भौतिक सुविधाएँ हैं जिनके बिना उपबोधन सेवा का चलायन करना ही मूल्यहीन होगा।

उक्त भौतिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित है उस सेवा में निहित आर्थिक पक्ष। उक्त प्रकार के स्थान व उपकरणों की व्यवस्था बिना अर्थ के करना असम्भव है।

दूसरी अर्थ-व्यवस्था से निकटस्थता में बिना जुला प्रयत्न उपस्थित होगा प्रशासक का आस्था का। यदि उसका स प्रकार की सेवा में आस्था नहीं हुई तो वह उक्त प्रकार के महत्त्वपूर्ण तत्वोंकी काय को आर्थिक सम्बन्ध के रूप में देख सकता है। विशेषकर उक्त प्रकार के आर्थिक तत्वों में जखड़ हर प्रकार के माध्यमिक विद्यालयों के प्रशासकों को अपनी अधिक प्रकार की आवश्यकताओं का सामना करना पड़ता है कि उन्हें विवेक इस सम्बन्ध में अधिक पूर्वदक्षिणा निश्चिन्ता कर सकना सचमुच एक दूगर नाम ही उठता है।

प्रशासन की आस्थाहीनता का एक और उपपरिणाम हो सकता है उपबोधक को पर्याप्त समय का अभाव। यों तो आदर्श व्यवस्था का हावी जयकि एक पूरे समय का उपबोधक एक स्वतंत्र रूप से खाली उपबोधक का काम कर सके। किन्तु यदि बजट की आर्थिक सीमितताओं के कारण यह सम्भव न हो सके भी खाली का समय सारिखा न शान्त उपबोधन का काम संकम सप्ताह में दो तीन घण्टे का तो प्रावधान होना अनिवार्य है।

सबसे अधिक शोचनीय तो वह परिस्थिति होती है जबकि शान्त उपबोधक को एक एस. एक्स. के रूप में देखा जाता है जो ट्यूटी की हाजिरी या ने क्लब का निरीक्षण भी करे तथा किसी अनुपस्थित शिक्षक की कक्षा की व्यवस्था भी रख सके। सर्वप्रथम तो इस प्रकार के बहुमुखी आर्कस्मिक काय विमान वात उपबोधक को अपना निर्जीव तन्त्रिका काय करने हेतु समय व शक्ति की सन्तुष्टि करनी पड़ती है। दूसरे अपने स्वयं के काय की यह मुक्त शालीय उपेक्षा शन ज्ञान उसके मन में भी अपने उत्तरदायित्व के प्रति निष्ठा में कभी करती जानी है। और अंत में ऐसा उपबोधक छात्रों का विश्वास भी प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। फलस्वरूप यह सेवा केवल नाममात्र की रहकर शिक्षक तथा अभिभावक दोनों की हता तथा उपेक्षा का विषय बन जाती है। हम स्वयंकी सेवा के प्रति इस प्रकार की अनुक्रियाएँ उत्पन्न करने से तो अधिक अच्छा यही होगा कि इस सेवा के नाम पर कोई दाग न पना पड़े।

(घ) नियोजन सेवा—उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर छात्र को वित्तीय रूप से ध्यान रखता निकाय से सदन के नियमों के अन्तर्गत व प्रचलन में आने वाले नियमों के सम्मुख या प्रत्यक्ष व्यावहारिक सुविधा प्रस्तुत करता है यह है कि इन नियमों को एक प्रारम्भिक अवस्था तक से व्यक्ति को वास्तविक ग्राह्यता तक है। निर्देशन कार्यक्रम की निष्पादन सहायता का मूलतः श्रेणी सुविधा का ही भाग होता है।

(ङ) प्रवृत्ति—जिन समाचारों तथा साधारणतः छात्रों के लिये निर्देशन सहायता के अभाव में अवस्था का प्रस्तुति कर रहे हैं उनमें परिश्रम में एक सहायता के लिये नियोजन सामग्री का उपयोग ग्राह्यता प्राप्त होता है। निम्नलिखित रूप में सामान्य सुलभ होता है किन्तु व्यक्ति को किसी व्यवसाय क्षेत्र या काम में नियुक्त करने से। निर्देशन कार्य में पुराने सामित-सामग्री के परिश्रम में ही नियोजन कार्य का यह प्रयोग स्वीकार किया जा सकता था। जब निम्नलिखित कार्य का विस्तार हो व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन तक सीमित रहता था तब नियोजन सेवा की परिधि भी व्यवसाय क्षेत्र सम्बन्धी विविध प्रकार की सहायता तक मात्र ही सीमित थी। जब निर्देशन के विस्तृत सहाय्य के अनुसार नियोजन कार्य की प्रवृत्ति मायका की रखावर करते हुए भी स्वयं सहाय्य की प्रवृत्ति स्पष्ट करते ही सावधान्य है। अपनी बात को प्रस्तुत करते हुए निर्देशन सेवा की प्रवृत्ति की व्याख्या निम्न लक्षणों के अन्तर्गत की जा सकती है।

समाहारी नियोजन सेवा व्यक्ति जीवन के विविध पक्षों में विभिन्न प्रकार के प्रारम्भिक परामर्श से सम्बन्धित होती है। बहुत दिनों से समाचार पत्रों के अन्तर्गत उत्तरदायित्व कार्य में सम्बन्धित प्रथम व्यावहारिक चरण तक जाने में ही सम्बन्धित है। नियोजन सेवाओं के अन्तर्गत कार्य जा सकता है। यह सेवा के अन्तर्गत व्यक्तियों के सम्मुख में ही हमने एक समाहारी सहायता द्वारा व्यक्ति व्यवसाय प्रवृत्ति पर जोर देना जीवन सम्पत्ति। व्यक्ति के जीवन में इसको व्यावहारिक उपयोग के रूप में ही माना जा सकता है। यह बात सुनिश्चित रूप से सामान्य नियमों के अन्तर्गत ही प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है। सबसे पहले न केवल सुख और स्वास्थ्य तत्त्वों का सामना करना पड़ता है बल्कि सहाय्य स्वरूप में बहुत विचार से भी उत्तर कर 'व्यवहारिक' की ओर ध्यान पर जोर देना समाहारी परामर्श के अन्तर्गत ही प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है। निर्देशन से समाहारी परामर्श के अन्तर्गत ही प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है। निर्देशन से समाहारी परामर्श के अन्तर्गत ही प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है। निर्देशन से समाहारी परामर्श के अन्तर्गत ही प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है।

यूज सेवाओं का परिणाम उत्तर देवता के अनुवर्तन में ही रहता है। समाहारी परामर्श का अन्तर्गत ही निर्देशन सामग्री की प्रवृत्ति पर निर्देशन से किया जाता है।

काय व परिणामस्वरूप होता है। यह एक प्राथमिक सत्य है कि जबतक प्रथम तीन सहायों की क्रियाएँ समुचित रूप से सम्पन्न नहीं हो जाती तबतक नियोजन सम्बन्धी कार्यों का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। जबतक छात्र सही निश्चय न ले कि उसे कौनसी विश्वविद्यालयों का अध्ययन करना है तबतक उसे प्रथम सम्बन्धी शैक्षणिकताओं का क्या चिन्ता ही सकती है? इस प्रकार व्यवसाय स्वरूप के सम्बन्ध में सञ्ज्ञानिक रूप से भाववस्तु होने के उपरांत ही व्यक्ति उसमें प्रविष्ट होने की प्रारम्भिक आवश्यकताओं में सहानुभूति प्राप्त करने पर विचार करता। इसी प्रकार शैक्षणिक सामाजिक पक्षों के कतिपय निश्चयों के सम्बन्ध में पूर्ण स्पष्टता प्राप्त कर चुकने के पश्चात् व्यक्ति इन निश्चयों के प्राथमिकीकरण से सम्बन्धित सहायों के विषय में अग्रसर होगा। जैसा कि कहा जा चुका है कुछ व्यक्ति तो अनिश्चित परिस्थितियों में प्रत्यक्ष रूप से सहायता चाहते हैं। कौन व्यक्ति कितनी शैक्षणिक सहायता की नियोजन की राह में प्रेषणा करता है यह तो बहुत कुछ व्यक्ति की प्रकृति तथा परिस्थिति के स्वरूप पर निर्भर करता है। किन्तु इसमें वाद सदेह नहीं कि यदि व्यक्ति-सूचना तथा पर्यावरणीय सूचना तथा उपबोधन सहायों के माध्यम से तत्काल परिणाम का नियोजन सेवाओं के रूप में अनुभवत नहीं किया जाता तो व्यक्ति को अपने बहुपत्नीय जीवन में प्राथमिक सहायता देने के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति निर्देशन कार्यक्रम द्वारा नहीं हो सकती।

सहायों में प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है कि नियोजन सेवा द्वारा व्यक्ति के बहुपत्नीय जीवन में सहायता प्रदान की जाती है। स्पष्ट है कि यह बहुपत्नीय सहायता एक ही व्यक्ति द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती। सञ्ज्ञानिक तथा तकनीकी रूप से प्रशिक्षित उपबोधक विविध पक्षा द्वारा प्राप्त हो सकने वाली सहायता के सोनास व्यक्ति का न केवल परिचय कराता है अपितु उनके सम्बन्ध में समुचित भाव-निर्देशन भी करता है। वस्तुतः मातृ-सहायता का तो पश्चिमीय शैक्षणिक मण्डल स्थानों पर एक स्वतन्त्र निर्देशन-सहायता का स्थान दिया गया है। उक्त विवेचन का एक तत्काल उपसिद्धान्त यह होता है कि नियोजन सेवा का कार्य समुचित सहयोग के बिना आग नहीं बढ़ सकता। एक उपबोधक से यह प्रेषणा करना आवश्यक नहीं होगा कि वह प्रत्येक पाठ्यक्रम व्यवसाय अथवा जीवन परिस्थिति के सम्बन्ध में सभी कुछ जानता हो। किन्तु हा उससे यह प्रेषणा की जाती है कि समस्या के स्वरूप के अनुकूल विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञों के सम्बन्ध में परामर्श जानकारा रखता हो। यही नहीं उससे यह भी प्रेषणा की जाती है कि विविध शैक्षणिकताओं से प्रत्येक प्रकार का समस्त सम्बन्ध हो कि वह विद्यार्थी के उपबोधक के उनके पास मातृ-सहायता कर सके। ऐसे सम्बन्ध-स्थापन तथा अनुसंधान के लिए आवश्यक है कि उपबोधन सम्बन्धी विविध शैक्षणिकताओं में समुचित सहयोग हो।

एक प्रकार के सहयोग के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि विविध शैक्षणिक

करना। तारा दिए गए माम इत वा यक्ति -- "सबान्त प्रथम म समुचित रूप म सञ्चालन हो सकें। प्रकाशमक उक्त स म स योजन नियोजन सवा म एक बहुत बनी सीमा तक यन्त्रित होता है। कन्व को आवश्यकता नहीं कि श्रेणी काय किसी भी सखर सयोजन का पूर्वनिश्चयता हानी है। शरीरिण हमन म्हायोगी तरवा की नियोजन सवा व प्रमुख तथालो म स्थान दिया है।

विकास मन्त्र— प्रस्तुत पुस्तक म स्थान स्थान पर क्वचित तथा उक्तक यथा करण के सन्त विनाम मन्त्र स्वरूप पर बत िया गया है। बहुते निर्देशन की मूल आवश्यकता न एक कन्व बनी सीमा तक सब शर्तों सह प्रथम की प्रायाम की विकासमन्त्र प्रकृति व कारण अनुभूत की जाती है। क्वचित् क्वचित् य यन्त्रिणीयता का मन्त्र होता तस उक्तके पदावली म विवरण लेनी तो क्वचित् क्वचित् क्वचित् उक्तका समन्वय ही विचार का प्रथम उपस्थित करला उ ह्ये निर्देशन सेवाका को को आव श्यकता हानी। इस मौलिक कारण व परिश्रेय म ही क्वचित् मूचना सवा तथा पदविशेषीय मूचना सेवा म भी विकासमन्त्रता पर बत िया गया है।

नियोजन व विकासमन्त्रता का स्वरूप यन्त्रिणीय व विविध स्तर तथा उक्तक काय प्रायामो की विभिन्न परिस्थितिया व परिश्रेय म भी यथा जा नयता है। उदाहरणार्थ माध्यमिक शिक्षा स्तर पर नियोजन वास्तव म प्राथमिक स्तर की शिक्षा का यन्त्रिणीय रूप होता है और माध्यमिक स्तर व उक्तक वा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा म विस्तार होता है। पुन प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप का विभिन्न परिस्थितिया म्हादमाय शिक्षा धाराका क्वचित् विभिन्न "व्यवस्था - सेवा" मे विस्तार होता है। सब सभी म समुचित नियोजन की आवश्यकता होती है और यानी विकासमन्त्र प्रकृति के अनुभूत निर्देशन वाक्यम की विकासमन्त्र - सेवा क्वचित् यन्त्रिणीयता उक्तक स्तर हए क्वचित् को उक्तक वाक्यम के विभिन्न विस्तार पर निर्धारक सञ्चालन प्रथम करला रहनी है।

(आ) प्रकार— नियोजन सेवाका व माध्यम स दी जा सकन वाली सञ्चालन के कुछ प्रकार तो इस सेवा की प्रकृति के विवेचन मे ही प्रतिबिम्बित हो सके हैं। कुछ शैलीका के अन्तगत उक्तक और विविध श्रेणीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

शिक्षक पाठ्यक्रम— माध्यमिक उच्च माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमो के प्रथम म सञ्चालन।

शिक्षक कठिनाईयाँ— इन पाठ्यक्रमो के म दम म अधिगम अध्ययन प्राप्त कृत्वाय कराया जाया दोष आदि सम्बन्ध म कठिनाईयाँ के परिहार हेतु विभिन्न मायदान।

शिक्षक विशेषज्ञता— शिक्षा के विभिन्न स्तर पर विभिन्न विविध प्रकार की आवश्यकताओ के अनुकूल प्रवृत्त-प्रकृति की शैलीकारिताया का पूर्ति म नियोजन।

प्रशिक्षण—विज्ञान विभिन्न प्राथमिक शैक्षणिक प्रयत्न सत्रनाकी पाठ्य
धारा के प्रशिक्षण का नाम उठा सकन हेतु 'वायवहारिक भाग' 'मान-विषय' 'वार्मिका'
स प्रत्यक्ष परिचय आवदन पन तथा अन्य प्रपनों का पूर्ति तथा प्राथमिक अभिवि
'पाठ' ना सम्मिलित रहता ह ।

पाठ्यसूचक नियाम—शाला का विविध पाठ्यसूचकमा नियामा म भाग ने
सकन हेतु सहायता एवं सहारा । विशेषकर अतमुली छात्रों के लिए इस प्रकार क
अवलम्ब की बहुत आवश्यकता होता है ।

यवसाय प्रवेग—नवयुवक के जीवन का यह एक अत्यन्त ना निर्णायक
स्थल होता है । हमारे देश म ता इस निश्चय के पूर्व की भी कई नियोजनो तमिया
की पूर्ति म नवयुवका को नानाप्रकार की सहायता का आवश्यकता हाती है । यह
सहायता नियामन सेवा के माध्यम से दी जा सकती है ।

साक्षात्कार की तयारी—शक्ति तथा व्यावसायिक क्षमो म प्रबल प्राप्ति हेतु
साक्षात्कार प्राय एक अनिवार्य पूनावश्यकता रहती है । किन्तु साक्षय की बात ह
कि सामान्यत इय साक्षात्कार की कला म हमारे किशोर तथा नवयुवका को तनिक
भी तकनीकी सज्जता नहीं दी जाती । हमारे उच्चस्तरीय विश्वविद्यालयो म भी जहा
सद्वाचिक परचा की शिक्षा का ता नियमित कक्षाया का विद्यालय की समथ परिणामो
म प्रवधान होता है वहा परन्तु कमकल्प हा अकी वाली या साक्षात् परचा ही
योग्यता विद्यार्थी म पूरागुमानित करके उह इस दिशा म कोई व्यावहारिक प्रशिक्षण
नही दिया जाता । फलस्वरूप वह तजीव एवं अनमुरी छात्र इस दिशा म अपना
कुचरणा के कारण अकारण हा निर्णत हा जात । यहा तथा दूसरे ढंग म व्यवसाय
प्रवध सम्बन्धी साक्षात्कार पर तालू होता है जहा क प्रकृतो की अतमुली प्रकृति
साक्षात्कार के समय उनके क गुण गुणा को प्रकट नही होने लगी । इसके विपरीत
कुछ कम कौश य वाता पात अपने गुण पहचान द्वारा साक्षात्कार करन वाता को
प्रभावित करके बाजी मार न जाता है । काने का तात्विक म ह कि विवाजन
सवा तारा नागा प्रवध तथा विभिन्न 'दृश्यो मे विग जाने वाल सा साक्षार हेतु
यक्तिया का तकनीकी सहायता दी जा सकती है ।

(इ) प्रारूप तथा आवश्यकता—नियोजन सेवाया के प्राप्ति के सम्बन्ध
म एक विचारणीय तथ्य यह है कि भारत म हमारे वर्तमान नियोजन के । की
तुलना म इनम तिनो सवालना हो ? — कितना भिन्ना हो ? सम्बन्धित म
राज के नाम म अभी हमारे तथा म पृथक् नियोजन का सरकारो स्तर पर प्राप्ति
जाने । इसम कानि सन्देह नहा कि इन केना का भा अपना एत महत्व हाता है ।
किन्तु निर्देशन-सेवाया के प्रस्तुत विवचन म ता नियोजन सेवा को शाना - निर्देशन-
वाचनम की एक अन्तरंग सेवा के रूप म विचारा जा रहा है । सर्वप्रथम ता सरकारो
नियोजन काना का उद्देश्य 'यक्ति को केवल व्यावसायिक नियोजन तेन तक ही सीमित
न रहता है । हमारे इस नियोजन प्रयास का व्यक्ति के अन्य वैयक्तिक-मनोवैज्ञानिक

घटना से बो, सम्भव स्थापन नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में इस नियोजन को धनात्मक दृष्टिकोण से बहुत बंध नहीं कहा जा सकता।

निर्देशन कार्यक्रम के नियोजन के पूर्व तो व्यक्ति के समस्त मानसिक शारीरिक शक्ति-सामाजिक आदि पाना का परीक्षण शैक्षणिक प्रथम आवश्यक धर्मो के सन्दर्भ में समुचित रूप में कर दिया जाता है। दूसरे यह नियोजन शान्त के शक्ति तथा निर्देशन कार्यक्रम के साथ साथ चलता रहता है।

इसके सफल संचालन हेतु कतिपय आवश्यक तत्वों का विवेकान्वित विचारों के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

वास्तविक उपायों में सबसे प्रथम तो हमारी शारीरिक परिस्थितियों की उस प्रयोगात्मक अनुसंधान से प्रेरित मना हेतु कार्यकर्ताओं की उसमें समुचित आस्था होनी चाहिए। शैक्षणिक-व्यवसायिक प्रथम बर्षात्मिक नियोजन को सामान्य हम शारीरिक कार्यों की परिधि में पर की वस्तु मानते हैं। अतः प्राथमिक आवश्यकता तो इस बात की है कि शाला-व्यवसायिक छात्र नियोजन का अर्थ एक उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकारें। तभी इस सवा के आयोजन तथा उसकी क्रियाशीलता की बात कुछ आगे बढ़ सकती है।

कार्यक्रम सहायता एवं अनन्त आर्थिक प्रावधान हम यह चुके हैं कि इस सहायता के आयोजन-संचालन हेतु विविध सामाजिक औद्योगिक अभिकरणों का सहयोग प्राप्त करना पड़ता है। स्पष्ट है कि उस संचालन के लिए अभिकरण अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता होती है। यह सम्पर्क विहित तथा अविहित दोनों ही प्रकार से करना अपेक्षित होता है और किसी भी प्रकार के सहयोग में सहयोगी स्वरूप अथवा माता-पिता हेतु अनुभव अथवा अनुभवता होती है। कवन सहायिक स्तर पर योजना बना करके ही यह सम्पर्क सम्भव नहीं हो सकता। अतः आवश्यक है कि इन वास्तविक योजनाओं को प्रकाशमय स्वरूप देने के लिए शान्त के बजट में प्रयत्न प्रावधान हो।

इस प्रावधान के अतिरिक्त इस सवा में निहित कई सामान्य नेमी क्रियाओं को सम्पन्न करने हेतु कुछ कार्कीय सहायता का होना भी अत्यन्त उपाय सिद्ध होगा। उसमें उपबोधक की शक्ति अधिक महत्वपूर्ण एवं तबकीकी उपवाहन उत्तरदायित्वों हेतु प्रारम्भ की जा सकती है।

अणकालीन कार्य-व्यवस्था छात्रों के सक्षम आर्थिक-व्यवसायिक नियोजन दे सकने की एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन होती है अशकानीय कार्यों की शाला-परिधि में व्यवस्था। अभी हमारे देश में यह एक नए विचारधारा है। किन्तु पश्चिम के प्राचीन शोध देशों में विद्यालय के अन्तर्गत ही अत्यन्त अक्षरकारीय कार्यों का प्रावधान रहता है कि किसी निम्न छात्र का अर्थसाधक से उद्भूत अर्थों का अर्थ नहीं होना पड़ता। विद्यालय परिधि के अतिरिक्त इन देशों के समुदायों समाजों में भी नाना प्रकार के

प्रकारों की सुविधा होती है जिनके साथ निम्न छात्रों को अपनी शैक्षिक गतिविधियाँ में बहुत सहज भिन्न सकती है। यहाँ के विद्यालय नियोजन के इस प्रकार के व्यवस्थापन की व्यवस्थित सूची अनुसूचित कर रहे हैं तथा छात्र इस विद्यालय में व्यवस्थापन प्राप्त कर सकते हैं।

यद्यपि हमारे देश में अभी इस प्रकार की सुविधाओं का प्रायः अभाव सा ही है फिर भी इनकी स्वीकृत पर्यायिता तथा अनुभूति निम्न लाभदायिता के परिप्रेक्ष्य में हमारा सख्त मुभाव है कि हमारी सरकार शिक्षा-व्यवस्था तथा अन्य सम्बन्धित कार्यों में इन दिशा में गम्भीर चिन्ता तथा सक्रिय प्रयास करें।

इस प्रयास से सम्बन्धित एवं महत्वपूर्ण तथ्यों की श्रौर शालकों का ध्यान प्राप्त करने हम निर्माण तथा-सम्बन्धी चिन्ता का समाचार करते हैं।

इस प्रकार के अक्षरानीय व्यवस्थापन अन्तर्गत रूपण निम्न युवा प्रश्न उपस्थित होता है—मनाव्यवस्था का। हमारे देश में वर्तमान पर्यायों के साथ हमारे समाज के मन में कुछ हीन भावनाएँ संयुक्त हो चुकी हैं। आशा है कि हमारे छात्र व्यवस्थापन-व्यवस्था इस प्रकार के व्यवस्थापन की आशिक रूप में करने को किसी प्रकार उत्पन्न हो भी पायें तो उनके प्रतिभावकगत उनके मन काय-पारण में अपनी मान्यताओं का समर्थन। ऐसी परिस्थिति में हम यहाँ कह सकते हैं कि यहाँ पर तो प्रश्न अभिव्यक्तियों की पुनर्गति-व्यवस्था करने का है।

(क) अनुवर्ती सेवाएँ जो इन सेवाओं के नामानुसूचित सामान्यतः इनका कार्य उक्त चार सेवाओं के अन्तर्गत आयोजित किया जा सकता है। शैक्षिक निर्देशन के विशिष्ट में अनुवर्ती कार्य का एक और विशेष गुणाय होता है—शाला छोड़कर जाने वाले छात्रों का अध्ययन। प्रस्तुत सामान्य में अनुवर्ती कार्य का अर्थ उक्त दोनो ही प्रकार की गतिविधियों का प्रतिफलन करने एवं प्रयुक्त किया जा रहा है। वर्तमान अनुवर्ती का यहाँ तात्पर्य है न्यायिक प्रक्रिया की समर्थता में। कार्य भाग्य सम्पन्न करने पर बुद्धिजीवी मानव के मन में एक सहज प्रश्न उठता है—मेरा कार्य कितना अच्छा हुआ? परिणाम का जिज्ञासा से सम्बन्धित इस सहज प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु व्यक्ति को अपने कार्य का अनुवर्तन करना होता है—पुनरावलोकन के रूप में। निर्देशन के नवनव कार्यक्षेत्रों का बहुआयामी सेवाएँ भी इस प्रकार की जिज्ञासाओं में—अच्छी तरह कर विश्वसित नहीं हो सक्ता। सोचिए अन्तिम किन्तु प्रत्यक्ष महत्त्वपूर्ण सेवाओं के रूप में निर्देशन कार्यिक इनका आयोजन निर्देशन कार्यक्रम में करते हैं।

(ख) प्रकृति अनुवर्ती सेवाओं के स्वरूप का संक्षेप में सख्त सामयिक परीक्षणों का एक सु-व्यवस्थापित प्रयत्न के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसकी प्रकृति के कुछ महत्त्वपूर्ण निम्न कारण से वर्णित किए जा सकते हैं—

—सातत्य केवल शब्दिक अर्थ की दृष्टि से चाहे अनुवर्तन और

सातय मे एक विरोधानास पाया जाता है। किन्तु निर्देशन काय मे तो ये दोनो लक्षण अनुवर्ती सवाप्रो की प्रकृति मे अंतरण रूप से पुन मित्रे रहते हैं। वस्तुतः मूत्रांकन के रूप मे अनुवर्तन का काय निर्देशन के उद्देश्यो व निर्धारण के समय से ही प्रारम्भ हो जाता है। तत्पश्चात् निर्देशन कायक्रम के प्रत्येक सोपान पर एक क्रिया के स्वरूप विधा तथा परिणाम के सम्बन्ध मे वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछता हुआ यह काय प्रत्येक बिन्दु पर निर्देशन के स्वरूप मे वाद्यनीय सुधार लाने हेतु उभर रहता है। काय अंत मे या यो कहें कि चारा सवाप्रो के माध्यम से विभिन्न उत्तर दायित्व पूरा हो जान पर एक समानारी परीक्षण का दृष्टिकोण लिए हुए अनुवर्ती सेवाया द्वारा सम्पूर्ण कायक्रम की विविध भांति जांच का जाती है।

अनुवर्तन के सातय को एक और दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। हम कई बार इस बात पर बल दे चुके हैं कि निर्देशन कायक्रम का कर्त्तव्य व्यक्ति होता है। अब यह भी एक मनोवैज्ञानिक साय है कि व्यक्ति प्रकृति मे ही एक विकासमान एक गत्यात्मक इकाई होता है। तदनसार विशेष रूप से हम व्यक्ति के विकास एक समजन से सम्बन्धित काय के स्वरूप मे सातय का हाना अनिवार्य है। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि हम तक से तो सातय का लक्षण निर्देशन की प्रत्येक सवा मे पाया जाना चाहिए। हम अब तक से कोई आर्पित नहीं। बकि हमारी तो यह मायता है कि विकासमान व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन मे ही उसके बहुमुमी समजन हेतु निर्देशन काय मे एक सहज सातय की आवश्यकता होती है।

—सहयोगी अनुवर्तन काय की प्रकृति का तीसरे वाद्यनीय लक्षण है सहयोगिता का। इस सहयोगिता का विवचन दो दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। प्रथम तो विविध सेवाया के बीच मे सहयोग तथा दूसरा विभिन्न कारिणो के मध्य सहकारिता की भावना। जसाकि निर्देशन सेवाया के प्रारम्भिक परिचय के समय ही स्पष्ट कर लिया गया था—हम इन सवाप्रो का सचासन जल एक विभागा के रूप मे नहीं कर सकते। समतयीय स्पष्टीकरण की सुवधा का दखत हुए हमने उनका वर्णन स्वतंत्र शीपका के अतगत अवश्य किया है। किन्तु इसका यह ताप्य बदाधि नहीं कि इनका अस्तित्व अथवा आयाजन एक दूसरे की शून्यता मे हो सकता है। व्यक्ति मूचना के माध्यम से छात्र विषयक समाहारी मूचना एकत्र करने के साथ ही उससे सम्बन्धित पर्यावरणीय मूचनाया का भी संकलन किया जाता है। वस्तुतः दोनों मूचनाया द्वारा यह संकलन एक दूसरे की सापेक्षता मे ही बध रूप से किया जा सकता है। तत्पश्चात् उपकोजन सवाप्राय दी गई तकनीकी सहायता मे पुन व्यक्ति मूचना पर्यावरणीय तथ्य तथा नियोजन की सम्भावनाया को ध्यान में रखा जाता है। साथ ही प्रत्येक स्तर पर प्रस्तुत तथा पूर्व तथ्यो का अनुवर्तन के रूप मे सतत मूत्रांकन चतता रहता है।

अनुवर्तन की सहयोगी प्रकृति का तीसरे स्वरूप निर्देशन के विविध कारिणो

निर्देशन सेवाओं की भारत में सम्भावनाएँ

यदि पृष्ठों में निर्देशन-सेवाओं के लिए स्वरूप का विस्तृत चित्रण किया गया है वह भारत में एक आदर्श प्राप्त का प्रक्षेपित चित्र है। प्रश्न उठता है कि भारत में वर्तमान परिस्थितियों में कसम से कितना प्रगतिवादी स्वरूप संभव हो सकता है। यदि तो प्रत्येक सेवा के विवरण में हमने स्थान-स्थान पर प्रवर्धनात्मक इंगित किए हैं। साथ ही सम्पूर्ण प्रस्तुतिकरण में भी हमने सर्व भारतीय गृहभूमि का ध्यान रखा है। फिर भी वाचका का ध्यान हम यहाँ पर कुछ वास्तविक तथ्यों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

सबप्रथम तो हमारा ध्यान यद्यपि निर्देशन कार्यक्रम की स्वाकृति अपेक्षित है। यह सत्य है कि हमारे अधिकांश माहिरों में यह स्वाकृति प्राप्त हो चुकी है। किंतु हमारा तात्पर्य यह पर दो बातों से है—श्रीर के हैं मौलिक आस्था तथा "मानविक प्रवर्धन"। इस समय निर्देशन सम्बन्धीय दाना ही मौलिक आवश्यकताएँ हमारी शिक्षा-व्यवस्था में उदरस्थित नहीं हैं। हम इस स्तर पर इस अनास्था तथा प्रवर्धनहीनता के कारणों में जाना नहीं चाहते। ऐसा प्रयास न केवल विषय का अनिश्चय होगा अपितु प्रस्तुत विषय के प्रति भी एक नकारात्मक उपादान होगा। हम तो यहाँ पर एक सकारात्मक दृष्टिकोण से ही कनिष्ठ प्रवर्धनात्मक सुभाव देना चाहते हैं।

(१) प्रशासकीय अभिव्यक्तियाँ—च कि किसी भी वास्तविक विकास के लिए सबप्रथम तथा सत्य प्रशासकीय नेतृत्व की आवश्यकता पड़ती है इसलिए हमारा सुभाव है कि भारतीय शिक्षा क्षेत्र के विभिन्न स्तरों पर प्रशासकों की निर्देशन कक्षा तथा इसकी विधियाँ के सम्बन्ध में अभिव्यक्तित्व किया जाव। तभी ये आस्था पूर्वक निर्देशन कार्यक्रम की स्थापना, संगठन तथा विकास में अपेक्षित नेतृत्व दे सकते हैं। उनकी "संक्षिप्त भूमिकाओं" के सम्बन्ध में अगले अध्याय में विस्तार से प्रकाश डाला जायगा।

(२) कार्मिकों का प्रशिक्षण—प्रशासकों के सामान्य अभिव्यक्तियों के पश्चात् प्रश्न उठता है कार्य-क्षेत्र के वास्तविक कार्मिकों का विधिक प्रशिक्षण। यह प्रशिक्षण किन्हीं स्तरों पर कितने प्रकार से कितने अभिकरणों द्वारा किस प्रकार आयोजित किया जा सकता है इसकी विस्तृत चर्चा आठवें अध्याय में प्रस्तुत की जावेगी। यद्यपि केवल भारतीय शिक्षा में निर्देशन कार्यक्रम की एक पूर्ववश्यकता के रूप में वाचकों का ध्यान "संविद्यु की ओर आकर्षित किया जा रहा है।

(३) अल्प-व्ययस्था—कारण हमने जिसे पूर्ववश्यकता की प्रथम सेवा के प्रस्तुतिकरण में बल दिया है उसे यहाँ पर निर्देशन कार्यक्रम की एक सुवर्धन समाहारी अनिवार्यता के रूप में पुनः दोहरा रहे हैं। यदि यहाँ पर प्रश्न पूछा जाता है कि जब अर्थभाव के कारण हम अभी तक प्राथमिक स्तर पर—अनिवार्य निष्पत्ति शिक्षा का ही प्रवर्धन नहीं कर पाए हैं तो निर्देशन कार्यक्रम की शर्तें कला प्रतिक

पना के विस्तार के समान होगा।

एक सम्बन्ध में हमारा यही प्राप्ति है कि प्रस्तुत पुस्तक में निर्देशन का जो मौलिक संप्रत्यय प्रस्तुत किया गया है वह बड़े किसी भी प्रकार सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था से भिन्न करने नही देखा जा सकता। हमारे विचार से तो समूची शिक्षा व्यवस्था ही निर्देशन अभिविधायित्व होना चाहिए। शिक्षा का योजना बनाने में ही "एक चरण पर शिक्षाविदा तथा निर्देशन विशेषज्ञों का सहयोग होना चाहिए। सभी शिक्षा प्रदान वास्तविक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है।

(४) यत्न स्वल्प अतिम तथा सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक सुभाव हमारा एक विषय में यह है कि कोई भी नवान योजना प्रारम्भ करते समय उस छोटे पमान पर आयोजित करने में उम्मीद कई प्रकाशात्मक सीमितताओं के सम्बन्ध में स्पष्टता प्राप्त हो जाती है। सबसे मानवी शक्ति तथा आर्थिक साधन दोनों का ही उपयोग नही होना। अतः हमारा प्राप्ति है कि निर्देशन-संवादा की प्राथमिक परीक्षा भी सीमित रूप में बरक फिर इसकी विस्तृत योजना बनाना अधिक उपाय्य रहेगा।

शाखाओं में काम प्राथमिक दो संवादाओं से शुरुआत प्रारम्भ किया जाना चाहिए। सभी संवादाओं का योजनाएँ पारित करने की सम्भावनाओं का यथासाध्य चिन्तन करने की प्रवृत्ति कुछ ही वर्षों में उपलब्ध का सतोप प्राप्त करना जनता के लिए एक सकारात्मक प्रवृत्ति होना है। फिर प्रकाशात्मक दृष्टिकोण से भी व्यक्तिक सचनाना हेतु साधन निर्माण तथा पर्यावरणीय सचनाना हेतु पाठ्यक्रम एवं व्यवसाय विश्लेषण इतने प्राथमिक एवं अनिवार्य चरण हैं कि इन्हें सम्पन्न किए बिना निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने का कल्पना करना मुक्तिमग्न ही होगा।

चूँकि हमने प्रारम्भ से ही निर्देशन कार्यक्रम की प्रकाशात्मक प्रवृत्ति को सम्बन्धपूर्ण समझा है इसलिए वर्तमान भारत में इसके सम्भावित स्वरूप पर एक स्वतंत्र अध्याय से परतक में लिखा गया है। वर्ग पर उसका आयोजित करने के प्रावहारिक चरणा का सविस्तार उल्लेख किया जाएगा।

उपसंहारात्मक कथन

प्रस्तुत अध्याय एक पुस्तक का एक बिन्दु है जहाँ से हमने निर्देशन के प्रकाशात्मक परंपरा पर प्रावहारिक विवचन प्रारम्भ किया है। निर्देशन के दर्शन की साकार स्वरूप प्रदान करने वाले कार्यक्रम की महत्वपूर्ण संवादाओं के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। पर प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के प्रारम्भ में विवेचित मूलभूत श्रमयुगम ममलन कार्यक्रम का एक सहायिक अवलम्ब एवं आस्था प्रदान करने के आशय से लिखे गए हैं। कार्यक्रम के अंत में दिए गए कुछ प्रकाशात्मक गीता का विस्तृत विवचन अधिक प्रावहारिक रूप से प्रागे के अध्यायों में प्रस्तुत किया जाएगा।

निर्देशन कार्यक्रम का संगठन

(विषय-प्रवेश संगठन के मूलभूत सिद्धांत राष्ट्रीय कार्यक्रम का अन्तरगत भाग शान्ति की नीति के अनुरूप आरक्षित पुनर्गत आर्थिक व्यवस्था उद्देश्य सहयोग की सम्भावना उपलब्ध स्थान खोलने के माध्यम पर अन्तर्गत उपकरण तकनीकी दृष्टिकोण कामिकों की उत्पत्ति-कार मानसिक तत्परता बौद्धिक-तकनीकी उत्पत्ति उद्देश्य की स्पष्ट योजना आदेश-सावहारिक अन्तिम तात्कालिक स्पष्ट योजना कामिकों की भूमिका प्रधानाध्यापक स्पष्ट स्वांगति कामिकों की अनुकूल अभिवृत्तियाँ प्रशासनाय प्रावधान विज्ञान प्रावधान—कतम्बा का विचारण—भौतिक वायु व्यवस्था-समय आरक्षण प्रावधान निर्देशन समिति का अध्यक्ष उपवायक छात्रा का उपबोधन प्रोत्साहन छात्र की सामाजिक समस्याएं-प्रसामाज्य छात्र की विशेष समस्याएं-अतिरिक्त निर्देशन तथा शिक्षकों को सहायता वर्यक्ति विभिन्नताया का निदान—व्यक्तिक अनुसूची दत्त संपन्न—निर्देशन अन्ति विद्यार्थित अध्यापन-वाठयसहगामी कार्यक्रम की समुचित व्यवस्था—पद्यावरणीय सूचना प्रसारण निर्देशन कार्यक्रम में अभिविद्यार्थित शान्ति समुदाय संयोजक शान्ति-शिक्षक मनोवैज्ञानिक जनकाम्यु का सृजन निर्देशन नीतियों के अन्तर्गत में सहायता वर्यक्ति दत्त दृष्टत पर्यावरणीय सूचना-प्रसार विषय अध्यापन के माध्यम से-पाठय सहगामी नियामा ग छात्रों को उपबोधन हेतु निर्देशन अभिनायक सहाय वर्यक्ति सूचना तथा पर्यावरणीय सूचना सवा उपबोधन सवा नियोजन सवा अनुवर्ती सवा समुदाय अतिरिक्त निर्देशन सेवा पर्यावरणीय सूचना प्रसारण छात्र निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन के विविध सोधान निर्देशन आवश्यकताओं का सर्वेक्षण प्रमाणीकृत उपकरणों द्वारा यूनोभावलम्ब चक निस्ट-वाक्यपूर्ति सूची शिक्षक निर्मित साधनों का उपयोग स्थानीय साधनों का सर्वेक्षण एवं उपयोग सचवा एक वेब दर-व्यवस्था शनिवारीय सभाएं प्राप्त प्राप्ति सभा शिक्षक-अन्ति भावन सम्मेलन वरकाय-जीवनवृत्तीय तल सामाजिक पिताल के विषय कामिका को उत्तरकारणर का निमाण समितियों का निर्माण उपमहारात्मक नथन)

सम्भावित निर्देशन-समाप्तों का विस्तृत परिचय प्राप्त कर चुकने पर प्रश्न उपस्थित होता है वास्तविक संगठन कार्य का। बरतुत यहाँ यह स्पष्ट है जो कि कामिकों के सम्मुख कई प्रकार की चुनौतियाँ उपस्थित करता है। प्रस्तुत लेखकों का

इस विषय का सङ्घातित अध्ययन करने के अतिरिक्त वास्तविक परिस्थितियों में निर्देशन काय सम्बन्धी गतिविधियाँ प्रणालीगत प्रयोजनाएँ तथा शारीरिक आयोजन करने के कई अवसर प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत अध्याय में इसी प्रयत्न अनुभवों के आधार पर निर्देशन कार्यक्रम व सगठन सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत किये जायेंगे।

सबप्रथम तो हमारा वाक्य है कि इस अध्याय में अगर हमारे विचारों में सुझावों का बहुरूप एक प्रयत्न तबान्ना के रूप में प्रकट किया जावे। तब कि निर्देशन कार्यक्रम का सगठन किसी सङ्घातित विषय को चर्चा मात्र न होकर एक वास्तविक कार्य योजना का कार्यात्मक विवरण है अतिस विविध परिस्थितियों में इनके स्वल्प में भी विभिन्नता ध्यान की सम्भावना ही तबती है। अतएव हमारे प्रस्तुतिकरण एक रूपरेखा मात्र है। चित्र का विद्यताका का प्रकृत करने का उत्तरदायित्व विभिन्न कार्यात्मक यत्नगत रूप में विभाजित है। अतिस महत्त्वपूर्ण सम्बन्धित विदु है निर्देशन संस्था का प्रशासन का। या तो सगठन तथा प्रशासन व प्रवर्तन के बीच का जन-रोक विभक्त रणनीति तबती जा सकता। यत्नोना ही प्रथम एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। फिर भी निर्गुण काय सोमाका का दृष्टि से कक्षा जा सकता है कि प्रशासन का उत्तरदायित्व सामायित सगठन व अनुवर्तन में आता है। तब कि भारतवर्ष में तो धना निर्देशन कार्यक्रम व सगठन सम्बन्धी कई प्रश्न ही अनवधानित पण हुए हैं— अतिस प्रस्तुत तबान्ना ने सगठन तथा प्रशासन व कार्यों का दो विभिन्न भागों में विभाजित करना उपयुक्त नहीं समझा। यह भी सत्य है कि इस अध्याय में अनेक नामानुसूल-अपित वन सगठन सम्बन्धी धना का ही किया गया है। साथ ही प्रशासन व कतिपय तथ्य भी मित जुने रूप से वर्णन स्थान पर न किया गए हैं। हमारे विचार में निर्देशन के क्षेत्र में वर्तमान भारतीय परिस्थितियों व सन्दर्भ में इसी प्रकार की सामग्री की अधिक आवश्यकता है।

विवरण का सुविधा का दृष्टि से अध्याय की सामग्री का निम्न भाग में विभाजित किया गया है —

- (१) सगठन के मूलभूत सिद्धांत
- (२) कार्यात्मक का भूमिकाएँ
- (३) कार्यक्रम आयोजन के विविध साधन

सगठन के मूलभूत सिद्धांत

(१) शारीरिक कार्यक्रम का अन्तर्ग भाग

निर्देशन काय के सगठन व वर्तमान भारतीय प्रारूप के सन्दर्भ में ही इस सिद्धान्त को यहाँ प्राथमिक महत्त्व दिया जा रहा है। यदि यह कक्षा जाय तो अति प्रयोक्त नहीं होगी कि भारत में निर्देशन कार्यक्रमों के प्रति एक सामाय उत्पन्नता प्रवर्तना अनास्था के मूल में एक प्रमुख कारक यह रहा है कि हमारे देश में निर्देशन सेवा की व्यवस्था तथा सुविधा अत्यन्त स्थितियाँ में की गई है। अतएव म धर्तों

का निर्देशन सेवाएँ प्रदान करने का उत्तरदायित्व उन प्राथमिक निर्देशन वेगों पर है जिन्हें हम गाँवों में प्रोजेक्ट प्रथम मातृकानाजिक प्रयोजन के नाम से पुकारते हैं। इन अभिव्यक्तियों का जाला के उद्देश्य संगठन प्रणाली का कार्यक्रम आदि में उचित भी सम्बन्ध नहीं रहा। वस्तुतः इनके कार्यान्वयन—शाखा में अपरिचितता की भाँति ही वय में दो तीन बार प्रथम करते हैं। स्पष्ट है कि निर्देशन गृहस्थ कर सकने की मूलभूत मानसिक परिस्थिति समानुभूति या सामरस्य छात्रों में स्थापित हो सकने का तो प्रथम ही उपस्थित नहीं होता। बल्कि ये मोसमी अग्रगण्य तो छात्रों तथा छात्रा—अभिव्यक्तियों द्वारा उभरे बाह्यनीय अभिव्यक्तियों के रूप में देखे जाते हैं जोकि भावों अपन स्वयं के स्थाय्य हेतु शाखा के कार्य में व्यवधान डालने का उपयुक्त है। इनके द्वारा शांति प्रदान परीक्षण प्रणालीया आदि एक अनिच्छित अपेक्षा रिक्तता के रूप में भरवा दी जाता है। और वास्तविकता तो यह है कि शाखा के सामान्य शिक्षक भी अपन छात्रों को इन दिशयना में अधिक अज्ञेय तरह जानते हैं। एवं बाह्य अभिव्यक्तियों होने के कारण ये न तो छात्रों का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं न छात्रा—अभिव्यक्तियों का सहयोग।

हम सहायिक तथा व्यावहारिक दोनों ही दृष्टिकोण से इस मूलभूत सिद्धांत पर ध्यान देना चाहते हैं कि निर्देशन का कार्य शाखा के दैनिक कार्यक्रम का एक अविच्छिन्न अंग होना चाहिये। अतः आयोजन संचालन मूल्यांकन न केवल शाखा के कार्यक्रम के सन्दर्भ में होना चाहिये अपितु उससे मिले जुले रूप में चलना चाहिये। हम तो इस पाठ्यतर प्रवृत्ति के रूप में भी देखना नहीं चाहते। यह तो बड़े पाठ्य सहाय्य प्रवृत्ति है जिसकी भ्रम शाखा का प्रत्येक गतिविधि में दिखाई देनी चाहिये। शाखा पाठ्यचर्या की यह वह समझनी भ्रमर मात्र नहीं है जिसके वचन शोभा के लिये टाक दिया गया हो और जिसे चमक-रमक पूरी होते पर फाड़ कर फेंक दिया जा सकता है। निर्देशन का दशन शाखा रूपी अस्त्र के प्रत्येक तात-जाने में अविच्छिन्न अंग से जुड़ा हुआ होना उपयुक्त है। शाखा के अधिकारी शिक्षक तथा छात्र—सभी का यह भावना होनी चाहिये कि यह कार्यक्रम उनका अपना है इसका बिना उनका शालीय जीवन विलसित हो जायगा।

वास्तव में शाखा के साथ सुगठित निर्देशन कार्यक्रम द्वारा शाखा की विविध आयामों प्रवृत्तियों को कर्त्त माना में पुष्टि ही होती है। निर्देशन अभिव्यक्तियों पाठ्यचर्या सदक छात्रों की अनुभूत आवरणपताओं पर आधारित रहती है। बन्धिय साम में मूलभूत आवरणपताओं के सम्पर्क में उभरे आयोजित करने पर भी उत्तम धार्मिक विभिन्नता से उद्भूत व्यक्तिगत विशिष्टताओं के लिये भी समुचित समादर एवं प्रायश्चित्त रहता है।

निर्देशन सेवाओं के शाखाय कार्यक्रम का अन्तर्गत भाग होने की बाह्यनीयता का एक और प्रमुख कारण छात्रों के अतिरिक्त जनता से सम्बन्धित है। निर्देशन सेवामों के एक आदर्श कार्यक्रम का उत्तरदायित्व केवल छात्र हीन एक सम्पर्क तक

ही सीमित नहीं रहता। सबप्रथम तो शाला के शिक्षक इस सभ्यता द्वारा कर्म-कार्य नोकी सेवाएँ प्राप्त कर सकते हैं। शाला के प्रारम्भ तथा घटत में निर्देशन सेवाओं का सामूहिक रूप से आयोजन एक अनुबन्धन करने में उन्हें जिस तकनीकी-वैज्ञानिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है वह उन्हें शाला निर्देशन सेवा से ही प्राप्त होना चाहिये। सकारण यह तात्पर्य नहीं कि शाला का प्रशिक्षित उपबोधक उन्हें यह अभिव्यक्ति सब ही प्रयत्नरूपेण प्राप्त करे। किन्तु म प्रकार के अभिव्यक्ति-कार्य-क्रमों के आयोजन का उत्तरदायित्व उपबोधक का ही होना चाहिये।

एक दृष्ट उपबोधक का छात्र के मवाद्गीर्ण समन्वय हेतु यह भी आवश्यक है जाता है कि वह छात्र के अभिभावक तथा उनकी धरेनू पृष्ठभूमि में सम्पर्क बनाए रखे। इस उत्तरदायित्व को निभाने में शाला के दशन उद्देश्य कार्यक्रम आदि की व्याख्या अभिभावकों तक प्रेषित करता रहता है। इस प्रथम में शाला अभिभावक के वाञ्छनीय सहयोग को सहज प्रेरणा प्राप्त होती है।

शाला के छात्रों को मन्वपूर्ण शक्ति-व्यावसायिक सूचनाएँ प्रसारित कर सकने हेतु उपबोधक के लिये यह भी आवश्यक है कि वह विविध समुदाय अभिव्यक्ति से सतत सम्पर्क बनाए रखकर अपना पान भण्डार अद्यतन बनाए रहे। साथ ही छात्रों का कर्म-जीवन प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में अधिक प्रत्यक्षरूपेण प्रबुद्ध करने हेतु कर्म-वार या तो विविध क्षेत्रों से विशिष्टता को वाता हेतु आमन्त्रित करना होता है अथवा छात्रों को प्रत्यक्ष निरीक्षण हेतु कागस्थलों पर ले जाना होता है। शाला ही प्रकार की उक्त प्राविधिकता में उपबोधक के नियम समुदाय में सतत सम्पर्क बनाए रखना अनिवार्य हो जाता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शाला कार्यक्रम का अन्तरंग भाग होने से निर्देशन सेवाओं का नाभ कवच छात्रों तक ही सीमित न रह कर शिक्षक अभिभावक समाज एवं समुदाय तक प्रसारित होना रहना है।

(२) शाला की नीति के अनुरूप

यदि उपरोक्त सिद्धान्तों को मादता देखकर हम निर्देशन सेवाओं को समुदाय शालीय कार्यक्रम के एक अन्तरंग भाग के रूप में सगठित करते हैं तो द्वितीय निहित सिद्धान्त की व्याख्या हम यह कर सकते हैं कि एक वध निर्देशन कार्यक्रम को शाला की नीति के अनुरूप ही आयोजित विवर्तित किया जाना चाहिये। यदि निर्देशन कार्यक्रम शालाचर्या का अविच्छिन्न भाग है तो तत्काल ही है कि शाला की साम्प्रदायिक-नीति उस पर भी लागू होगी। इस मन्वपूर्ण सिद्धान्त के प्रवर्धन-कार्य-क्रम अभिप्रवृत्त घटत निम्न प्रकार से प्रस्तुत किए जा सकते हैं -

(क) आस्था

जिसी भी शक्ति-प्रक्रिया के लिये शाला की स्वीकृत नीति के अन्तर्गत स्थान प्राप्त कर सकने हेतु सबप्रथम शाला अधिकारियों की उक्त प्रक्रिया में भौतिक आस्था हाता अनिवार्य होता है। वस्तुतः अधिकारियों के स्रोत से ही यह आस्था

उत्पन्न होकर तब शाला कार्मिका तथा छात्रों तक विस्तृत हो पाती है। हम प्रारम्भ में ही यह चुक हैं कि किसी भी कार्यक्रम के सफल सञ्चालन हेतु वायव्यता का उचित आस्था होना एक अनिवार्य पूर्ववश्यकता होती है। ता कर्म का तात्पर्य यह कि छात्रों को जाने पर ही कोई प्रथम शाला की निर्धारित नीति में समाहित किया जा सकता है और इस प्रकार सैद्धान्तिक रूप से समाहित हो चुकने पर ही उसके नियम शाला की नीति में प्रत्यात्मिक प्रावधान किए जाते हैं।

(ख) "सूक्ष्मतम आर्थिक व्यवस्था"

प्रत्यात्मिक प्रावधान का प्रथम महत्त्वपूर्ण बिंदु है आर्थिक व्यवस्था। सैद्धान्तिक रूप से कितनी भी मायता। दन पर भी यदि किसी कार्यक्रम के नियम आर्थिक प्रावधान नहीं किया जाता तो उसके नियमों के अन्तर्गत स्थिति आने की सम्भावना बहुत कम रहती है। किसी भी शाला की नीति के नियम आर्थिक व्यवस्था तभी ही सम्भव है जबकि वह शाला की स्वीकृत नीति के अनुरूप है। सामान्यतः यह पाया जाता है कि शाला का वायव्यता का सदस्य—जो कि नगर के भिन्न भिन्न क्षेत्रों से भी सम्भावित किए जाते हैं—सभी शिक्षार्थी ही ही यह प्रावधान नहीं। कई बार कर्म से कुछ व्यक्ति वित्त व्यवसाय एवं उद्योग के क्षेत्रों में सम्पत्ति प्राप्त किए जाने हैं। शाला के वित्त आयकों को निर्धारित करने में तथा इन आयकों के अन्तर्गत वित्त राशि वितरित करते समय वे सामान्यतः शाला प्रावश्यकता की पूर्णवर्तिताएँ निर्धारित कर देना उपयुक्त समझते हैं। स्पष्ट है कि पूर्णवर्तिताओं के निर्धारण का एक प्रमुख निर्देश तब शाला की स्वीकृत नीति में पाया जाता है। इससे यह स्पष्टा व्यवस्था है कि शाला का निर्देशन कार्यक्रम उसकी नीति के अनुरूप ही हो।

(ग) उद्देश्य

निर्देशन कार्यक्रम का समाहार उद्देश्य हमें छात्रों का उनके समुचित विकास तथा सर्वांगीण समन्वय में सहायता के रूप में स्वीकार किया है। अब यह शाला की नीति के ऊपर ध्यानस्थित है कि वह विद्यालय तथा समन्वय को किस रूप में देखती है। या सामान्यतः तो किसी भी गणतंत्र में व्यक्तित्व का कुछ लक्षण एवं भावनाओं के कुछ गुण स्वस्वीकृत से होते हैं। फिर भी प्रत्येक संस्था के अपने कुछ विशिष्ट "निर्देशन" सामाजिक सांस्कृतिक-धार्मिक मूल्य होते हैं जिन्हें वह अन्तर्गत अन्तर्गत रूप से अपने छात्रों तक प्रसारित करती है। यह सामान्य अनुभव की बात है कि किसी व्यक्ति की बाली-बाली आचार विचार धारणा आदि दख कर हम प्रभावित हो कर उठते हैं कि यह व्यक्ति उस संस्था का प्रावधान होगा। व्यक्ति पर संस्था विशेष की छात्रों से जग जाता है। अर्थात् व्यक्ति के निर्माण में शाला के स्वीकृत मूल्यों का निर्देशन-हस्त नाम करता है।

उक्त तथ्य के अन्तर्गत स्पष्ट है कि शाला के निर्देशन-कार्यक्रम के विशिष्ट उद्देश्य शाला के इन स्वीकृत मूल्यों के प्रकाश में ही निर्धारित किये जान चाहिए।

(घ) सहयोग की सम्भावना

वर्ष स्थाना पर हम य स्पष्ट कर चुके हैं कि ज्ञान का निर्देशन कार्यक्रम एक सहयोगी प्रक्रम है जोकि उपबोधक के तकनीकी नृत्व तथा प्रशासक के समन्वयी निदेशन से चलायित होने द्वारा ज्ञान एवं सम्पुष्टि के वर्धन-प्रक्रिया से सन्धि सहयोग की प्रस्था करता है। विद्यालय तथा समाज के इन विविध कारिणों में यह वाछनीय सम्बन्ध प्राप्त करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन—संगत शारीय नीति के अनुसार ही हो। इस बिन्दु पर हम तो यहाँ तक बताना चाहें कि विद्यालय के छात्र—जिनको प्रमुख वर्धन मान कर निर्देशन कार्यक्रम संचालित किया जाता है—की इस कार्यक्रम में अपना वाछनीय सहयोग तब तक न दे सकें जबतक कि वे इन सेवाओं की शाना के सम्पूर्ण कार्यक्रम के आवश्यक रूप में न देख सकें तथा इन शाना की नीति के अन्तर्गत न परव सकें।

(३) उपरोक्त सामान्य स्थानों के आधार पर

सामान्यतः तो उपरोक्त सिद्धान्त के अनुवर्तन में ही इस तथ्य पर तबसंगत ध्यान दिया जा सकता है कि ज्ञान की शाना के अनुसार आयोजित तथा विद्यालय के सम्बन्धन में अर्थात् अन्तर्भाग के रूप में विकसित निर्देशन कार्यक्रम के निर्माण एवं प्रशासन हेतु उपरोक्त साधना का अत्यन्त उपयोग वाछनीय होता है। इसका यह तात्पर्य बदापि नहीं कि आवश्यकतानुसार सरकारी से प्राप्त हानि धान याह्य उपकरणों का सहिष्कार किया जावे। स्थानीय साधनों पर विशय धन देने के हमारे कुछ विशिष्ट कारण हैं जिन्हें निम्न अनुसूची में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) अपनत्व

सबप्रथम तो कोई भी नवीन कार्यक्रम प्रारम्भ करने में प्रश्न उपस्थित होता है अपनत्व का। नव विकासमान निर्देशन कार्यक्रम में स्थानीय शाला के कारिण स्वयं अपने आपको जितना अधिक अतग्रस्त कर सकेंगे उतना ही वे इस कार्यक्रम को अपना समझेंगे अपने निजी उत्तरदायित्व परास के अतग्रस्त परव सकेंगे तथा अपनी ही शक्ति समझ कर इस पर अभिमान कर सकेंगे। वस्तुतः इस प्रकार की भावनाएँ कारिणों में उत्पन्न हुए बिना निर्देशन कार्यक्रम शाना का अविच्छिन्न अंग बन भी नहीं सकता। यह एक अद्भुत वास्तविकता है कि बाहर से वियोज्य कारिणों का आयत करके भाषा किन्ना कार्यक्रम के लिये वह आत्मायता की भावना उत्पन्न नहीं हो सकती जो कि सामान्य स्थानीय कारिणों के बदाधिक्य में तकनीकी जिन उपायों द्वारा अनायास ही सृजित हो जाती है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि व्यक्ति को किन्ना कार्य में अन्तर्गत करने का सबसे वाछनीय उपाय है उसे उसका लिये उत्तरदायी बना देना।

(ख) उपकरणों के अतिक्रम से

यह तो हुई व्यक्तियों के रूप में साधन स्रोतों की बात। किन्तु व्यक्ति के

परवान् प्रथवा उसके साथ ही साथ प्रश्न उठता है काय करन व उपकरणों के रूप में साधन सुविधा की समस्या का । यह एक बटु वास्तविकता है कि काय करने के लिये तत्पर होने के उपरान्त यदि "दूनतम उपकरणों की सुविधा प्राप्त न हो सके ता कायकर्ता को एक स्वाभाविक अभ्यासा हान की भाशना रहता है । उस यह भास होने लगता है कि उसकी भू-बचान ऊर्जा व शक्ति का उसक विपोजन गारा मानो अनुचित नाश मान "ठाया जा रहा है । तब वह प्रश्न को सीधे गण क्त यो का केवन माना-गालन के रूप में ही सम्पन्न कर देता है और शाला निर्देशन कार्यक्रम में जो आत्मोपना का प्राण माना चाहे वह नहीं आ पाता ।

अब कई बार तो और विशेष कर भारतवर्ष में उपकरण साधन के साथ ही मिनी जुली समस्या रहती है आर्थिक प्रावधाना की । और यन् समस्या न्तारे देश में एक सजाव जटिलता लिए हुए हमारी कई आशिक प्रायोजनाओं का अवच्छिन्न किए हुए है । प्रश्न यह उठता है कि आवश्यक साधन उपकरण आयात करन हनु अर्थ-व्यवस्था न होन की स्थिति में क्या किया जावे । इस प्रकार की स्थिति में दो ही विकल्प हो सकते हैं । या तो साधन-हीनता की स्थिति के सम्मुख धराशायी टाकन कोई नवीन प्रगतिगामी कार्यक्रम हाथ में लेने व विचार का ही त्याग दिया जाव । दूसरा प्राशावाची दृष्टिकारण यह भी हो सकता है कि चालत परिस्थिति में जो बुद्धि नी सामान्य सुविधा उपकरण उपलब्ध हैं उनसे बहुमुखी उपयोग तथा इष्टतम धनुकूलन के सम्बन्ध में प्रयत्नों प्रयास किए जावें । किसी भी विकासो "मुक्त देश के विय न्तीय विकल्प अधिन जानकारी है । इस तथ्य की पुष्टि विकसित देशों के इतिहास से कई उदाहरण प्रस्तुत करके की जा सकती है । प्रस्तुत सन्दर्भ में सबसे अधिक सतत उदाहरण अमेरिका के निर्देशन-तिहास का ही हो सकता है जहाँ पर दूनतम उपलब्ध साधनों से विश्वासपूर्वक उदभूत होकर आज वहा न निर्देशन कार्यक्रम उस स्थिति पर पहुँच चु है जहाँ पर कदाचित् साधनों के अधिशेषों का समुचित उपयोग भी कहा-वही पर विनाशणीय प्रश्न बन जाता है ।

इस स्थल पर हम वाचका का ध्यान एक और सम्झौत मनोव-नामिक मनोवृत्ति की ओर आकर्षित करना चाहता है । कई बार जब व्यक्ति को नवान नाम में अन्तरंग रूप से निहित क्षतिमेव को अपनाते न असमर्थ होता है तब इस दुर्दन्ता की स्थिति को स्पष्टरूपेण स्वीकार कर देने की अपेक्षा साधनहीनता न सट्टे कोई वास्तविक बहान की ओट में पनामन कर जाता उनक लिए बहुत अधिक सरल हो जाता है । दुभाग्यवश इस प्रकार का नमग्यहानता क कई उदाहरण हमारे देश के विविध क्षेत्रीय जीवन से प्रस्तुत किए जा सकते हैं । उस असमर्थ विवे चन में न उनक कर हम यहाँ पर तो इसी बात पर अधिकतम बल देना चाहते हैं कि भारतवर्ष जैसे विकासमान देश में उपलब्ध साधनों का इष्टतम उपयोग करन से ही हम प्रगति की राह पर अग्रसर हो सकते हैं । और फिर एक अत्यन्त प्राणापुण

साथ उस सम्बन्ध में यह है कि सामान्यतः तो जीवन के विविध क्षेत्रों में भारतवर्ष एक प्राकृतिक साधन सम्पन्न देश है। यहाँ पर अनेक महती समस्या प्रायः इन साधनों के उचित उपयोग की ही रूढ़ि है। इस उचित उपयोग के लिये आवश्यक है साधन सम्पन्नता का युग—जिसका विकास निम्नलिखित कार्यक्रम के प्रत्येक भागिक रूप में साथ साथ चलते रहना चाहिए।

(ग) तकनीकी दृष्टिकोण

उपरोक्त साधनों के उपयोग के सम्बन्ध में एक कारण हम शुद्ध तकनीकी दृष्टिकोण में भी प्रस्तुत करना चाहते हैं। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि बाहर से आयात किया गया अथवा उद्योगोद्योग का तकनीकी उपकरण भी कई बार स्थानीय परिस्थितियों में अनुकूलन होना के कारण उन परिस्थितियों में न तो अनुकूल हो पाता है न प्रभावोन्मादक है। भारतवर्ष में मनो-वैज्ञानिक परीक्षण का इतिहास हम तथ्य को सिद्ध करता है कि ये परीक्षण प्रारम्भ करने के समय हमने कई ऐसी उपायों का उद्घोषण मात्र करके उस प्रकार की उच्च बुद्धि करी। बाह्य उपकरणों का उद्घोषण मात्र न करके यदि उनका स्थानीय जनता के आधार पर अनुकूलन कर लिया जाये तब तो ये उपकरण वैज्ञानिक कार्य में लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। अथवा अपने मूलस्वरूप में उपयोग किए जाने पर तो उनमें लाभ प्राप्त करने के स्थान पर उनमें हानि ही होने का अधिक शक्यता रहती है। उपकरणों का अनुकूलन करने में भी पुनः स्थानीय साधन मुक्तियाँ एवं स्थितियों का ध्यान रखना पड़ता है—और इसीलिए हमने उपरोक्त साधनों के उपयोग की हमारे सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

(घ) कार्मिका का तत्परता स्तर

हमारे पूर्व विवेचना में कई स्थलों पर शाला कार्मिकों के सम्बन्ध का महत्ता पर बल दिया गया है। सम्पाद्य तथा तत्परता का अत्यन्त निम्न सम्बन्ध होता है। वस्तुतः यदि यह कार्य जाय तो प्रतिशक्ति नहीं होगी कि कार्यात्मक सम्बन्ध एक वस्तु की सीमा तक तो व्यक्ति की मानसिक तत्परता पर निर्भर रहता है।

(ङ) मानसिक तत्परता

यस मानसिक तत्परता को प्रभावित करने वाले कई घटक हैं। प्रशासकीय दृष्टिकोण से तो सबसे सौधा सम्बन्ध हम स्थिति का होता है। अथवा नृत्य के सामान्य उपयोग से। कार्य अधिकारी की प्रतिक्रिया का कार्मिक की कार्य तत्परता पर उचित प्रभाव पड़ता है। केवल वेतन के बल पर प्रोत्साहन करवाने की प्रवृत्ति रखने वाला प्रशासक अपने सहकर्मियों को सही माने में कार्य तत्पर कर सकने में उचित अनेक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। एक बुद्धिमान प्रशासक तो सामान्यतः यह भावना प्रसारित करने की क्षमता रखता है कि उसका कर्मचारी ही उसकी समस्या का योजनाएँ बना रहा है और सलिये उचित पारित करने में भी

उन्हीं की प्रतिगत शक्ति है। उस प्रकार का भावना से कार्मिक काय संपन्नता का ग्रहण उपलब्धि मान कर सन्तोष ग्रहण कर सकते हैं—धीरे अनायास ही सन्तुष्ट काय-तत्पर रहते हैं।

उपबोध के तकनीकी नेतृत्व के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। शाला के सपत्न्याकृत कम प्रशिक्षित कार्मिकों को काय-तत्पर कर सकने के लिए यन्त्रिक ग्रहण तकनीकी क्षमता का गहनतम वन प्रयोग में लेना है तो उसे न केवल अपने इस तात्कालिक दृष्ट्य में सफलता मिलनी अपितु अपने अन्तिम लक्ष्य—निर्देशन कार्यक्रम के दक्षिण सञ्चालन—में भी उसे नेचल सहायता का ही सामना करना पड़ेगा। अतएव सरप्रथम तो काय अधिकारियों को सही नेतृत्व उपागम द्वारा कार्मिकों में कामसत्परता उत्पन्न करनी चाहिए।

(ख) बौद्धिक तकनीकी तत्परता

मानसिक तत्परता के पर्याय प्रश्न उठता है बौद्धिक-तकनीकी तत्परता का जो कुछ अधिक बतानिक होते हुए अधिक 'यावहारिक' भी है। अपने नेतृत्व उपागम से कार्मिकों को काय के लिए प्रोत्साहित एवं तत्पर करने के उपरान्त ही जो अत्यन्त 'यावहारिक' समस्या उपस्थित होती है वह है वास्तविक काय कोशाय की। मानसिक रूप से पूर्यत काय-तत्पर हो चुके पर भी यदि कार्मिक में कोई बतानिक कुशलता नहीं है तो सफलता जय स्वभाविक मन्नाशाएँ उसकी काय-तत्परता का विपरीत ढंग में प्रभावित कर सकती है। इसके लिए प्रत्येक आवश्यक है कि शाला-कार्मिकों को किसी नवीन कार्यक्रम में अन्तर्ग्रस्त करने के पूर्व उन्हें उपयुक्त रूप से बतानिक अभिविद्याएँ दान किंवा लाय। इसके सम्बन्ध में अध्याय के अन्तिम अंश में कुछ 'यावहारिक' सुझाव दिए जावेंगे।

(१) उद्देश्यों की स्पष्ट व्याख्या

यह तो किसी कार्यक्रम के सम्बन्ध में सामान्यतः स्वीकृत सत्य है कि उद्देश्यों की स्पष्ट व्याख्या किए बिना कार्मिकों के समय शक्ति धन व ऊर्जा के निरुद्देश्य नष्ट हान का दासका बना रहता है। विशेष कर जब कोई अपशाकृत नूतन प्रायाजना हाय में ली जाती है तब तो उन्हीं उद्देश्यों के सम्बन्ध में पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जान की आवश्यकता सर्वोपरि रहना है। यह स्पष्टता केवल अधिकारियों तक ही सीमित न रहकर प्रत्येक कार्मिक तक प्रसारित होनी चाहिए।

उद्देश्यों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जा सकता है—

घादन—व्यावहारिक

अन्तिम—तात्कालिक

दानो ही ब्याकरणों के सम्बन्ध में निम्न प्रकार से अधिक स्पष्टता प्राप्त की जा सकती है।

(क) आवश्यक-व्यावहारिक

यों तो सभी उद्देश्य एक प्रकार से एक आदेश के रूप में ही परिभाषित होकर

काय-योजना एवं वास्तविक क्रियाओं का निश्चित प्रकाश प्रदान करना है किंतु यहाँ पर स बर्णिकरण से मारा तात्पर्य प्रकाशमयता से सम्बन्धित है। एक आदर्श दृष्टिकोण से तो कर्म बान अत्यन्त वाञ्छनीय ही सचनी है किंतु कई बार उद्दे सदा न्तिर स्वीकृति प्रदान करत हुए भा वास्तविक परिस्थितियों की सामंजसताएँ उनक क्रिया-योजना का अवलोकन कर सचनी हैं। ऐसी परिस्थिति में वास्तविकता को ध्यान में रखकर कुछ 'वास्तविकता' उद्देश्यों का अध्ययन बनानो पड़ता है। वस्तुतः उपनयन काय-योजना की दृष्टि में तो यह अत्यन्त वाञ्छनीय होगा कि आदर्श की ही मन्तवा का तात्पर्य उनमें उद्देश्य 'वास्तविकता' के माग को भी आवश्यक रूप से ध्यान में रखा जाव। कई बार बहुत अल्प सगन बान आदर्श उद्देश्य अ-वास्तविक होने के कारण या तो मुन्दर नारा के रूप में ही प्राण-हानि हाकर भी परिशिष्ट बने रहत हैं अथवा प्रयत्न अनुपयोगिता के कारण कार्मिकों के यत्नों का निष्फल करने उद्देश्य मन्ताशा से पूर्णतः करत रहते हैं।

विशेष कर निर्देशन कार्यक्रम ता प्रकृति में ही केवल मद्दानिक नीति मात्र न होकर एक प्रकाशमय वास्तविकता है। जसा कि पुस्तक के आरम्भ में ही हम कह चुके हैं शिक्षा के क्षेत्र पर इस नूतन नयन का उद्देश्य है इमलिए प्रा कि कई शैक्षिक मायताओं का सफल क्रिया-बन्धन किया जा सके। अतएव यह आवश्यक है नयी अधिबुद्धि-विचार है कि शिक्षा का शास्त्र के प्रस्तावित निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्य एक स्वीकृत आदर्श का पृष्ठभूमि में विचार जाकर भी स्थानीय परिस्थितियों का वास्तविकता को ध्यान में रख।

(ग) अन्तिम तात्कालिक

आदर्श तथा अन्तिम एक बहुत बनी सीमा तक अन्तर्सम्बन्धित तथ्य हैं। किसी भी प्रस्तावित कार्यक्रम के अन्तिम उद्देश्य एक आदर्श ध्येय के सहस्र मन्तव्य दूर से भी सतत प्रकाश की 'शिक्षण' प्रमाप्ति करत रहत हैं। इन रक्षितियों के निर्देशन आन्दोलन में व्यक्तिगत सगन किन्तु विषय-सम्बन्धित प्रयत्न चरण एक वाद्यनीय आदर्श का निगा में ध्यान करत रहना है। किन्तु इस निगा के माग में कई उच्च-मानवीय-निर्देशन रहनी हैं और ध्येयपूर्वक उद्देश्य पार करने पर ही 'पति' प्रयास अन्तिम उद्देश्य की ओर जा सकना है। इन माग को अधिक मरत एवं स्वीकार्य बनाने के लिए बहु ध्येय-वाञ्छनीय होगा कि इस नयन के माग पर कुछ उपयोगी विचार-समन्वय निर्धारित कर लिए जाव। कमिषन तात्कालिक ध्येयों के रूप में इस प्रकार के विचार-समन्वय निर्धारित किए जा सकत हैं। कर्म की अत्यन्तयत्ना नहीं है कि ये तात्कालिक ध्येय उस अन्तिम आदर्श के आन्तर्गत ही आमाजित होना चाहिए।

अन्तिम के साथ साथ ही कुछ तात्कालिक ध्येय भी निर्धारित करने का एक और मन्तव्यपूर्ण कारण है यानि कि मनोवैज्ञानिक पथ से सम्बन्धित है। सामान्यतः प्रयत्न व्यक्ति अपने काम में उपनयन की सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है किसी

नवीन प्रायोजन म त्सा प्रकार का प्रारम्भिक सन्तुष्टिया प्रत्यत आवश्यक हैं । वस्तुतः य सन्तुष्टिया ही यत्कि क किसी नवीन माग पर अग्रसर हो सकने हेतु मन्त्र राक्षन प्रेरना का काम करता ह । इसलिये अग्रमन्त्र प्रवच्यक है कि अन्तिम अग्रमन्त्र का पृष्ठभूमि म कनिष्ठ तात्कालिक ध्येय की माख्या कर नी जावे जिनकी उपरान्त न-ह-म-ह सफा मागाना व रूप म कामिना का उचित प्ररणा प्रदान कर सक ।

न-व-र कुछ तात्कालिक ध्येय के निरारम्भ के पीछे आर्थिक कारण भी रहत ३ । किसान भी नवान कार्यक्रम की उसकी सम्पुष्टता म हा बाछनीयता स्वीकार करत हुए भा अभावता की साम्बन्धिक सीमितता के कारण कार्यक्रम क मन्त्री पक्षा का सहयोग प्रायोजन सम्भव नहीं हा सकता । एसी परिस्थिति म कार्यक्रम को विकुल हा स्वाग देने की अपेक्षा अधिक बाछनीय य-हाणा कि उसका उपयुक्त प्रवस्थाकरण कर लिया जाव । प्रारम्भ म उमक यूनतम सम्भवपुण पक्षा से प्रारम्भ करके साधन सुविधाया व उपलब्धि व अनुकूल शन यन उसका अ-म-मायाया म विस्तार किया जा सकता है ।

भारतवप म निर्देशन—कार्यक्रम की प्रारम्भ करने क निम्ने ती दम प्रकार के प्रवस्थाकरण का अत्यत आवश्यकता है । उन सम्बन्ध म अधिक प्रकाय मक सुभाव तथा वावहारिक उत्पन्नण पुम्बक व अन्तिम अ-माय म लिए गए ३ ।

(६) स्पष्ट योजना

स्पष्ट य-या क तात्कालिक अनुवतन म आती हैं स्पष्ट योजना । कहने का तात्पर्य य-कि सामान्यतः कार्य-योजना का स्वरूप निर्धारित उ-या व अनुरूप ही आयाजित हाता है । यदि उद्देश्य म कुछ भी सम्भ्रान्ति हुई तो कार्य-योजना क स्वरूप को बनाना तथा उसे मचालित करन—गाना म ही कार्यवताया के मन्त्र जान की आजवा रहती है । किन्तु निश्चित उ-या द्वारा निर्दिष्ट योजना का स्वरूप तथा उसका वाय चरण भी उ-ही व अनुरूप सुस्पष्ट होने है ।

य-पर स्पष्ट योजना का एक मिद्धान्त क रूप म प्रस्तुतिकरण एक और दृष्टिकाणु म किया जा रहा है । किसान भी योजना क गुचाह दिवा-वचन के लिए आवश्यक ३ कि उम योजना के अन्तगत कार्य करन वाल कामिका के विशिष्ट उत्तर-यायिक उनकी विशय भूमिकाए तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों का अत्यत ही विभ्र म शान्ता म स्पष्टकरण कर िया जाव । इस स्पष्टता क अभाव म क-वार शुभा शायी होत-ए भा कामिक प्रपना वाय प्रभावशाली य-म नहा कर सकने । उनके मन म अयत स्थय म सम्भ्र लि हो सकती ३ दूसरे क कार्य-याय म अतिव्ययण कर वरन की अनात आशचा हा सकती ३ अथवा प्राणै तन या देने के सम्बन्ध म प्रणामपीय सन्तोच हो सकता है । य सभी तत्त्व स-तत कार्य संचालन म अवरोधक ही मिड ोत है ।

चु-कि य-मिद्धान्त को हम निर्देशन कार्यक्रम के संगठन एवं प्रकाय-म-क-म-याजत का एक प्रमुख आचारशिता मानत है वसन्तिय अध्याय क एक रचना

खण्ड म ही इसका विशुद्ध विवचन करना उपयुक्त समझा गया।

कार्यिका की भूमिकाएँ एवं अन्तर्मन्त्र व

यों जो निर्देशन-संवाद्यों व कायक्रम का आयोजन सङ्गन-संवादन प्रणामन एक भूयान्त शाखा के समस्त कार्यिकों का एक संयोग प्रथम होता है। यह साथ ही कि इस प्रथम का कल्पित प्रतिक गुण एवं तन्नामी प्रक्रियाया का विशिष्ट उत्तरदायित्व उपबोधक तथा प्रशासक व ऊपर पड सकता है। किन्तु वास्तविकता के बावजूद भी निर्देशन कायक्रम की सफरना क नियम यह अनिवार्य है कि समस्त शाखाय तथा कर्त्तृशास्त्र नमचारिया की भी मम यथायोग्य सामेलारी हो। सामान्यतः प्रणामन यथा उपबोधक का उत्तरदायित्व तो मुख्यतः कायक्रम व प्रशासकीय यथा वनानिक पक्षा से ही सञ्चालना है। किन्तु इन क्षेत्रों के प्रति रित्त भी कायक्रम का क्व अन्तरय प्रक्रियाएँ होती हैं। जिन्हें सम्पन्न करने में विविध भावों के कार्यिका का संयोग अपेक्षित होता है। यह कहा जाय ता प्रति शयोक्ति नहीं होगी कि समस्त कायक्रम ही प्रभावित एकव्यक्ति के स्वतंत्र निष्पादन से सम्बन्धित होती है।

इसके प्रतिरित्त एक और अन्तरय तन्त्र है जिन्हें प्रतिवाद्य का जोनि समस्त कार्यिका के समन्वित संयोग की अनिवार्यता की बतिया हा करता है। स्वतंत्र रूप से विभिन्न प्रकार की प्रकृति की विविध भी विविध निर्देशन प्रक्रियाएँ एक दूसरे से अती घनिष्ठता से सम्बन्धित रहती हैं कि यह प्रक्रिया की दुबलता का अथ प्रतिवाद्यों के स्वरूप पर तमम प्रभाव पड विना रह नहीं सकता। इन तन्त्रों की समता मानवाय शरीर स्वतंत्रता की सम्पन्नता से ही जा सकती है जहाँ पर विविध अन्तर्मन्त्रों की अवयव भिन्न-भिन्न प्रक्रियाएँ करते हुए भी एक दूसरे व कार्यिका की अनिवार्य रूप से प्रभावित करते रहते हैं। मानव का स्वस्थ एवं प्रभावित प्रकाश मकता व त्रिण आवश्यक है कि उनका प्रत्येक घण हृत्पुष्ट हो तथा उसका विशिष्ट कार्यन्तता से सम्पन्न होना है। तभी व व्यक्ति स्व-क्रियायिरिया व भावों की अथ अगा के काय को भी परिपुष्ट करत हुए समस्त शरीर व संवादन का एक स्वस्थ परिपुष्टता प्रदान कर सकेगा।

इस प्रकार के आन्तःसम्बन्ध को सम्भव कर करने के लिये आवश्यक है कि पहा तो प्रत्येक अथ के स्वतंत्र काय को सही तरह सम्भल लिया जाय ताकि उमम व्यक्तिक रूप से कार्यिकी न रहन पाव। तपश्चान् विविध अथों व अन्तःसम्बन्धों का भी अध्ययन कर लिया जावे जिससे उनका पारस्परिक आन्तःसम्बन्ध का भी इष्टतम स्वरूप दिखा जा सके। अथाय के अन्तःसम्बन्ध का उद्देश्य का लेकर निर्देशन कायक्रम व विविध कार्यिकों की विशिष्ट भूमिकाया का स्वतंत्र विवचन तथा अन्तःसम्बन्धी स्वभाव दोनों ही का विशुद्ध रूप में प्रस्तुतिकरण किया जा रहा है। प्रत्येक कार्यिकी की भूमिका के स्वतंत्र वर्णन में ही अथ कार्यिकों के साथ उमम अन्तःसम्बन्धों का भी स्पष्टान्तरण करने का आवास किया जावगा।

(१) प्रधानाध्यापक

शाला व समस्त कार्यक्रमों में प्रधानाध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका का एक ही कु जी-य में सारांशित किया जा सकता है— और वह पद है प्रत्यक्ष नेतृत्व । वृ कि भारतवर्ष की माध्यमिक शालायां में तो एक अन्तरंग भाग के रूप में निर्देशन कार्यक्रमों की आयोजना एक अपेक्षाकृत नूतन विचार है इसलिये इस क्षेत्र में प्रधानाध्यापक के नेतृत्व को प्रत्यक्ष के साथ साथ अत्यन्त सफल भी होने की आवश्यकता है । एक लम्बे समय से चली आती हुई रहल-पेकिंग्स में तो शाला कार्मिक इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि वह प्रकिंग्स एक स्वाभाविक ढंग से शाला के समूचे कार्य-गञ्ज में गुंथी हुई आयास ही चलता जाती है । इस प्रचालन ढांचे के परिचित ढर्रे में किसी नतन तत्त्व का प्रविष्ट करने का प्रयत्न होता है—समूचे ढांचे के स्वल्प एवं उसकी गतिविधि में परिवर्तन । वृ कि इस प्रकार के परिवर्तन से कई स्थलों पर कई—यन्कि कई प्रकार से प्रभावित होते हैं—सन्निधे उस सम्बन्ध में कोई भी प्रतिक्रियावाली चरण उठाना साहस की अपेक्षा करता है और सन्निधे हमने कहा है कि प्रधानाध्यापक व नेतृत्व की प्रत्यक्ष क साथ साथ इस सम्बन्ध में सचल भी होना अपेक्षित है ।

नूतन कार्यक्रम का अर्थ होता है अपिर्क वाय । और यह भी सामान्यतः हमारी प्रवृत्ति परिस्थितियों में सत्य है कि अपेक्षित परिवर्धित कार्य की तुलना में कार्मिकों को समानुपाती आधिक्योक्ति प्रदान करना प्रधानाध्यापक के लिए सम्भव नहीं है । उस प्रकार का परिस्थितियों के सम्बन्ध में उसके कुछ विविष्ट उत्तरदायित्वों का निम्न तीपका के अन्तगत अधिक स्पष्ट विवेचन किया जा सकता है ।

(क) स्पष्ट स्वीकृति किसी भी शालीय सेवा में प्रारम्भ संचालन अथवा समाप्ति के लिए भी शासक प्रशासक की स्पष्ट स्वीकृति एक प्राथमिक अनिवार्यता होता है । वित्तीय प्रावधान भौतिक व्यवस्था तथा कार्यकारी प्रबंध हेतु तो यह स्वीकृति निश्चिन्त रूप से कई प्रशासकीय कार्यान्वयन में प्रतिक्रियित्व होती ही है । किन्तु यहाँ पर हमारा तात्पर्य विविष्ट रूप से प्रशासक की भावनात्मक-सवेगात्मक स्वीकृति से है । यो तो उच्चाधिकारियों में आये हुए कई अन्य कार्यक्रमों से असहमत हात हुए भा उसे उन्हें न वरत व्यावहारिक रूप से स्वयं स्वीकृति देनी पडती है अपितु उनकी मर्यादा अतन्त्र में न जाने हुए ही कई मर्यादा अतन्त्र पडते हैं । यहाँ पर उसकी स्थिति हाती है आदेश क पालनकर्ता की न कि आदेश के आलोचक की । इस प्रकार की स्थिति में इन कार्यक्रमों को पूरा रूप से सम्पन्न कर सक्ने पर भी वह इनमें अगतत्व का प्राण नही फुक सकता । जहाँ शासक निर्देशन कार्यक्रम का प्रश्न है वहाँ हम उसे एक बहुत बड़ी सीमा तक शाला शासक व निजी पहल के सृजन के रूप में देखना चाहेंगे । इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि उच्चाधिकारियों का समूचे कोई सम्बन्ध न रहे । वस्तुतः हम तो यह चाहते हैं कि व भी वसम सक्रिय रूप से अन्तर्गत किए जा सकें । यह किस प्रकार हो सकता है इसका

विवेक हम स्वयं शीघ्र के अंतर्गत करते। यहाँ पर जो ज्ञान ही कहना सग्त होगा कि निर्देशन कार्यक्रम के लिए शाला प्रशासक की स्पष्ट स्वाकृति उच्चस्वार्थियों के आशा परा अन्तर्धित होकर उसके निजी प्ररणा से प्रभूत हानी वाहनीय है। तभी उसमें वह आशीयता का पट या सवेगा जोकि किसी शालीय कार्यक्रम में जीवन-स्पन्द उत्पन्न कर सकता है। मानसिक बौद्धिक रूप में उसे स्वीकार करने पर उसकी मनोवृत्ति निर्देशन कार्यक्रम सम्बन्धी अपनी विविध व्यवस्थाओं में भक्तकी रहनी। सबसे मजबूत बात तो यह होगी कि वह व्यक्तिगत रुचि उताहारा में सम्बन्धित सभी क्रिया-कलापों में अधिनाधि रूप में उपस्थित रहने का प्रयत्न करेगा।

(ख) कार्यालयों को अनुकूल अभिवृत्तियाँ प्रदाना धारक की ऐसी स्पष्ट मानसिक स्वीकृति तथा उससे उत्भूत निर्देशन कार्यक्रम सम्बन्धी उसके अन्तर्गत प्रयत्न का शाला-कार्यालयों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना। यह तो एक अनुभूत वास्तविकता है कि शाला कार्यक्रमों की पूर्ववर्तितता शाला प्रशासक की निजी रुचियाँ पर एक बन्त बन्त सीमा तक निर्भर रहती है। शाला का प्रधान जिस वायव्याप को मन्त्र्य पूर्य समझता है उसमें शाला कार्यालयों में अनायास ही रुचि उत्पन्न होगी और यह भी एक सिद्ध सत्य है कि कार्यालयों की रुचि के बिना कोई भी कार्यक्रम सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

इस सम्बन्ध में जो बात हमने शाला प्रशासक तथा उच्च प्रशासकीय अधिकाधिकारियों के लिए की थी उसमें पुनः शाला-कार्यालय तथा शाला प्रधान के मन्त्र्य में दोहरा सकते हैं। हममें क्या या कि बहुत एक उच्च-शाला के पालन माध्यम रूप में यदि प्रशासक-व्यापक किसी शालीय कार्यक्रम को सम्भन्धित करता है तो उसमें वह अल्प व का प्राण उत्पन्न कर सकता इसी सामान्यमान की प्रथम स्तर पर चरितार्थ करल हुए हमें कह सकते हैं कि यदि शाला-कार्यालय अपने निर्देशन विषयक उत्तरदायित्वों को बेधन शाला प्रधान के आश-वाचन के रूप में ही पालन करल है तो वह एक कार्यक्रम को आशीयता से नहीं मजबूत करने। इस कार्यक्रम की प्रकाश-मक सफलता के लिए तो आवश्यक है कि शाला का प्रत्यक्ष कार्यालय इस अन्तर्गत आशीयता से दक्षे-परल कि वह अन्तर्गत अनायास ही अन्तर्गत हो सक। शाला का प्रशासक-व्यापक का यह प्रधान उत्तरदायित्व हो जाना है कि वह उस प्रकार की अनुकूल मनोवृत्तियाँ का अन्तर्गत सम्बन्धियों में अन्तर्गत कर सके।

यस प्रकार का मनोवृत्तियाँ से प्रशासक शिक्षक सम्बन्धों में भी एक अन्तर्गत-व्यवस्था समरस्या उत्पन्न हो जाती है। प्रशासक सम्बन्धी साहित्य में एक शाला प्रशासक की तृपता प्रायः आक की घूरा से की जाती है तथा अन्तर्गत सम्बन्धियों का समता दुरी से मधुत बन्त शाला-व्यवस्था से। स्पष्ट है कि अन्तर्गत शाला-व्यवस्था की गति शाला प्रशासक के ही अन्तर्गत की गति विविधों परा पूर्य-रहेण अनुवृत्तित हानी है। शाला प्रशासक की मनोवृत्तियाँ रुचियाँ एक अभिवृत्तियाँ की मूलतः शाला-व्यवस्था के कार्य-व्यवस्था तथा क्रिया-पूर्ववृत्तियों को निर्धारित

करती है और यह एक तकसयत तथा है कि किया भा कार्यक्रम का सफलता में कार्यकताओं की मनावृत्तियों का एक बहुत बड़ा अंग रहता है। ता हम यह समझें हैं कि इस अंग का अत्यधिक भागीदार शाना प्रधानाध्यापक ही होना चाहिए। उम यह भूमिका कुशलतापूर्वक निभा सक्ती चाहिए।

(ग) प्रशासकीय प्रावधान उच्च अनुच्छेद में विवक्षित प्रशासक की मानसिक मनावृत्तियों की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति होती है शाना कार्यक्रम हेतु प्रदान किए गए प्रकाशनात्मक प्रावधानों में। यूनानि "यावहारिक प्रिया व्यवस्था की दृष्टि से यह प्रावधान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है इसलिए निम्न स्पष्ट शायदा के अंतर्गत प्रकाशनीकरण एवं अभिन्न व्याख्या का प्रस्तुतिरूपमा किया जाएगा।

(घ) रितीय प्रावधान

प्राथमिक शाना के अन्तर्गत की नीति-निर्देशनात्मक प्रावधानों का प्रायः उच्च स्तरावधि का विभागों से ही होता है किंतु उस अन्तर्गत में शानाप्रयोगी नूतन एवं प्रगतिशील प्रस्तावों को समाहित करने का उत्तरदायित्व शाना प्रधान का ही होता है। इसलिए सर्वप्रथम तो प्रधानाध्यापक का शारीरिक निश्चय तथा शाना के अन्तर्गत शाना कार्यक्रम हेतु एक "यूनानि धनराशि अनुशासित करना लनी चाहिए। यह तक नीचे भूमिका केवल शाना प्रधान ही अंग का करता है।

इस प्राथमिक अनुशासित के पश्चात् निश्चय मेर्यादा का प्राथमिक स्थापना एवं अनिश्चित संचालन में बर्न-बर्न छोड़े जाने लगे हेतु प्रधानाध्यापक का अनुशासित प्रपक्षित होती है। कई बार कुछ सामान्य से प्राप्तान् प्रदान करके विविध स्तरावधि कारिणों का एक नूतन कार्यक्रम में अन्तर्गत स्तरावधि करता जाता है। कभी निश्चय सम्बन्धी सभाया को धारणक मनाने हेतु कुछ मात्रा में शाना की भी व्यवस्था करनी पत्ता है। इस प्रकार के विविध कार्य-कारिणों के लिए छोटी छोटी धनराशियों की आवश्यकता पत्ती है। तथा ऐम व्यवस्था पर उसका प्रावधान कर सकना एक कुशल प्रशासक की सूक्ष्म सूक्ष्म पर एक बहुत बड़ी सीमा तक निर्भर रहता है।

(आ) वर्तियों का वितरण

निर्देशन-कार्यक्रम के स्वरूप का विवचन करते समय हा इस तथ्य पर ध्यान दिया जा चुका है कि वह एक सहयोगी प्रक्रम है। किंतु प्रशासनात्मक रूप से इस सहयोग का निकषण बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि विविधस्तरीय कारिणों का विभिन्न प्रवृत्तियों भूमिकाओं में अनावश्यक अन्तर्गत न होना पावे। ऐसी सुरावधि धिनि सम्भव करने का पूर्वानुमान है विभिन्न कार्यकताओं के दस कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में मशिम प्राप्तिरूपता।

सामान्यतः एक प्रशासक के बीज में की प्राथमिक परिवर्तन इस तथ्य में होता है कि उसका द्वारा की गई कर्तव्य दक्षता में कितना भौतिक लगति एवं प्राप्तिरूपता है। इस भूमिका का अन्तर्गत निम्न हेतु जहाँ उसे एक शाना का आवश्यक

प्रजापति का एक मानक का मातृचित्र मत्त सम्मुख रचना करना है। वहाँ दूसरी ओर प्रान विचारण के प्रत्येक कार्यान्वय की एक शक्ति अभिव्यक्तता योग्यता आदि का समुचित व्यवस्थापन प्रकृत करना होता है। तभी वह क्रिया का प्रकृति तथा वाचकता की स्वभाव का मध्य समन्वित संगति स्थापन करके अष्टांग वाच-उपादान परमा मरेगा।

शिक्षा अल्प तथा कार्यान्वय स्वभाव की समतता के प्रतिरिक्त एक और समस्त पता का प्रकाशक का वर्तमान वितरण के समस्त ध्यान रचना पडता है और वह है किसी प्रकृति का उत्तरदायित्व से समुक्त वाचकता की प्रकृति में समरसता। उक्त हृदयस्थ यदि पर्यावरण में सुखना भवा के प्रायोदय का उत्तरदायित्व कुछ अन्वयणों की एक साथ दिया जा रहा है तो प्रकाशक को पन्ने धारण्य हो जाना चाहिए कि इन व्यक्तियों का एक ही का सामरण है। विशेषता स्वभाव वाले प्रत्येक वाचकता पूर्वप्रति का एक साथ किसी वाचक का उत्तरदायित्व दन में एक साथ का गति व्यवस्था हो जाने की ही धारणा अभिन रहनी है।

एक समूह में निर्दिष्ट वाचक हेतु वाचकताओं के स्वभाव की समरसता से निम्न जला एक और वाचक प्रान में और वह है उनकी परिच्छेदा एवं योग्यता-स्तरों का। सामूहिक रूप में किसी वाचक का उत्तरदायित्व व्यक्तियों की दो समस्त उस समूह के प्रकाशक को निश्चित करना आवश्यक हो जाना है। स समूहों की पुन एक प्रकाशक की भूमिका निभाते हुए अपने समूह का वाचक प्रायोदय करना पता है व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का वितरण करना होता है तथा समय-समय पर काय सम्बन्ध विविध विराम भी निर्देश के रूप में प्रसारित करने पन्त है। ऐसी स्थिति में एक स्वाभाविक ही है कि कोई परिच्छेद प्रथम सुयोग्य व्यक्ति अपने स निम्न स्तरीय व्यक्ति से किसी प्रकार का निष्पेक्षापूर्ण प्रकृत करना पसन्द नहीं करगा और की दुर्भाव्यवस्था से प्रसार की परिस्थिति उत्पन्न कर दी गई तो वाचकताओं के वाचकता का सम्बन्ध में समन्वय पा जा का धारणा रहती है और समूहों का एक के स्तर की विपरीत रूप में प्रभावित कर सकता है।

(६) भौतिक वाचक-व्यवस्था

चूंकि निर्देशन सेनाओं का संचालन एक शुद्धरूपेण प्रवर्धनीयक वाचकता है इतिवत् उसके प्रकाशन हेतु करिष्य न्यूनतम भौतिक वाचकताओं का होना स्वाभाविक है। उपवाचन काय के लिए एक स्वतंत्र एवं एकांत कक्षा वर्धनीयक समुच्चयों के व्यवस्थित अनुसंधान हेतु स्वतंत्र एवं साधन पर्यावरण में स्वनाया के प्रदान प्रसारण हेतु हुनरिता बोड से आदि उत्तम वाचकताओं के कुछ सामान्य व्यवहारण हैं। इन वाचकताओं की संवेदना तथा उनकी समूह भाव से पूर्ण एक प्रकाशन की ही भूमिका के अन्तगत धारणा है। निर्देशन के वाचकता में सामान्यतः स व हूँ इन विशेषण एवं सूचना प्रेषण की आवश्यकता पन्नी रहनी है। इस प्रकार के वेदों कायों के लिए पूर्णतः एक समुच्चय अणों ने कार्यान्वय का संचालन भी संवेक्षित होनी

है। स्पष्ट है कि यह सहायता बिना प्रशासक के स्पष्ट आदेश क प्राप्त नहीं हो सकती।

(इ) समय सारणी में प्रावधान

हमन बारम्बार हम भौतिक तथ्य पर बल दिया है कि निर्देशन सवाल समस्त शाखा कार्यक्रम को एक सूत्र भाँदर मात्र न हाकर उसका प्रत्येक तान बान म युधी दृष्टि अन्तर्गत नियामक होना चाहिए। उस तथ्य क सफ़्तन कि ा वयन की प्रावहारिक व्यवस्थयवता यह होभी कि शाखा की निर्धारित समय माण्यी म इसक लिए नियमित प्रावधान से। यह एक सामान्य मनोवन्तिया का प्रयत्न हाता है कि समय विभाग चक्र न जिस क्रिया का निश्चित समयानुसार चलता नो दिया जाता यह कार्यक्रमों का एक एकटा क भारवल्प ही रखा जानी है—और इस प्रकार की मनोवन्ति लकर एक अनावश्यक एवं अतिरिक्त कार्यक्रम क रूप में ही सम्पन्न हाकर अपना प्रभावित घटाती जाता है।

भारतीय माध्यमिक शालाया की वर्तमान निर्देशन-व्यवस्था म वही-की पर शिक्षक उपबोधक - टीचर काउन्सलर-अथवा कन्वियर मास्टर की नियुक्ति होना नगी है। किन्तु यदि समय सारणी म उह नियमित रूप से अपने कर्तव्य क लिए प्रावधान नहा मिलता ता प्रतिक्रिया होने पर भी व निर्देशन के लिए अपनी निष्ठा एवं उत्साह को शन शन खाने जतने है। अधिक शोचनीय स्थिति तो नह ही जाता है जब इन कन्वियर मास्टर अथवा शिक्षक उपबोधक जैसे तकनीकी उपाधिया धारण करने वाले व्यक्ति न ता पूणतया सामान्य शिक्षक क सहज करीय सम्पन्न करके मुक्ति पान करने में न ही किनी तकनीकी कामिक के विशेषाधिकार का नाम उठा पाते हैं। शाखा-कार्यक्रम म उनका स्थिति एक विशकु के समान हो जाता है। और यह स्थिति अधिक दुःखदायी तब ही उठता है जब सतत उपबोधक एकसा के समान वे शाखा के मसूचे तय्ये म बिभी भी नित किसी भी समय किसी भा सामयिक रिक्त स्थान पर भ्रष्ट फिट कर दिए जाते हैं। दापार के विश्राम के अन्तर छात्र उपस्थित नहा खेल अध्यापक की अनुपस्थिति म शारारिक प्रशिक्षण अथवा कार्यक्रम सचिव की बीमारी म उसके कुछ उत्तरदायित्व—जस विमान इतिक पुण करने क लिए व विशेषण चलती गानी क कुछ छात्र हुए पेची के समान उस गाड़ी का धक्का पैन क साधन बन अपना वर्धातिक अभिमान भी छात पाते हैं।

निर्देशन कार्यक्रम क लिए यह स्थिति अत्यन्त ही प्रचरोवजनक है। इसलिये प्रशासक का चाहिए कि शाखा के नियमित समय चक्र विभाग म निर्देशन प्रक्रिया दिन में उसका निश्चित समय तथा उस क्रिया का उत्तरदायी व्यक्ति सदा उपेक्ष स्पष्टता से करवा दे।

(उ) निर्देशन समिति का अध्यक्ष

शाला में एक बूतल निर्देशन कार्यक्रम को प्रारम्भ करने तथा उसके सतत संचालन हेतु यदि एक कार्यकारिणी का निर्माण कर दिया जावे तो कार्य बल-सम्पन्न रूप से चल सकता है। इस समिति का निर्माण संचालन प्राप्ति सम्बन्धी बातों का निवेदन तो अध्याय के अन्तिम अंश में ही किया जावेगा। यद्यपि परन्तु इस प्रकार की समिति में प्रधानाध्यापक ही भूमिका के सम्बन्ध में विद्यमान प्रस्तुत किया जा रहा है। यद्यपि यह सत्य है कि निर्देशन सेवाओं को जन-व्यक्ति कार्यक्रम का विषय परन्तु प्रशिक्षण उपबोध ही होता है तथा कुछ शक्ति-दृष्टिकोण में उमम ही इस कार्य में सम्मिलित करने की आवश्यकता होगी है। किन्तु यह 'व्यावहारिक' एवं प्रशासकीय दृष्टिकोण से यह बाध्यता ही नहीं यद्यपि अनिवार्य होता चाहिए कि इस प्रकार का बठका की अध्यक्षता स्वयं शाला का प्रधान ही करे। हमारी इस मांगता में कई कारण हैं जिनमें से कुछ निम्नांकित किए जा रहे हैं।

किसी भी शालीय कार्यक्रम का संचालन में प्रशासक की उपस्थिति मात्र उम कार्य का अनायास ही एक सुरता एवं सन्तुष्ट प्रदान कर देता है। अब यदि उसकी उपस्थिति का पर-तामदायक सम्भवी जाती है तो वह उसका स्तरानुहून ही होना सम्भवित होगा। सम्पूर्ण शाला के नेता को किसी भी समिति में अध्यक्षता पर-संनिम्न-तर स्तर प्रदान करता न उसने लिए ही शोभनीय है न समिति सदस्यों के लिए लाभदायक। सभी दृष्टिकोणों से उस अध्यक्षीय प्राप्त पर ही विद्यमान समीचीन होगा।

हमारे मांगता का द्वितीय कारण व्यावहारिक है। इस प्रकार की बठकों में सम्बन्धित कार्य के विषय में यह नीति निश्चय लिये जाते हैं। इन निश्चयों को गुणता प्रदान करने तथा इनका पारल सम्भव कर देने के लिये आवश्यक है कि अध्यक्ष के स्थान पर प्रधानाध्यापक ही हस्ताक्षर करें। यद्यपि यह किसी भी द्वितीय निश्चय का क्रियावित्त करने का अधिकार न माना में प्रशासक ही पाय रहता है। शाला की किसी भी समिति का कोई भी निश्चय को पारलारिक रूप देने का निश्चय कार्यवाही पर-प्रधानाध्यापक की देखभाल पर-प्रेषित किए जाते हैं। स्वयं प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में पारित किए गए निश्चयों को पुनः यह द्वितीय सोचान नहीं बदलना पता।

किन्तु यह एक सामान्य तथ्य है कि स्वयं के हस्ताक्षर करने पर-यदि उस निश्चय के लिये बाध्य हो जाता है। अतएव नए निर्देशन कार्यक्रम के अविश्व-क्रिया-वर्षन के लिये यह व्यावहारिक हाथों में प्रधानाध्यापक ही निर्देशन समिति के अध्यक्ष की भूमिका निभावे।

(२) उपबोधक

शाला के निर्देशन कार्यक्रम में उपबोधक के स्थान को भी प्रशासक की

भूमिका व महत्त्व का एक ठोस भूमिका के रूप में वर्णित किया जा सकता है। किन्तु यह जल्दो जल्दीय भूमिकाओं में एक मौलिक अंग है। जहाँ छात्रा प्रधान का केन्द्रीय तन्त्रव्युद्घरण प्रणामकीय स्तर पर रहना है तथा उपचारक का जतना ही केन्द्रीय महत्त्व प्रस्तुतकरण तन्त्रकी तरफ़ होता है। किन्ती विद्यु के विवचन अथवा उमम सम्बन्धित निश्चय नन म प्रशासन का भी उपयोक्त का राय बना धभीप्सित हाता है। किन्तु समिति का प्रयत्न अद्यतनता सम्बन्धी अमने जो मायगाण पूर्व कर्म में अमि प्रत की यह पण पर पुन वरपूवक लेखना ही चाण्य। अर्थात् यहा पर यत्न ना मभीकीन होगा कि निर्देशन समिति की अद्यतनता उपनाथक वो नही करता पाण्य। हा—अध्यक्षता न करन पर भी अपनी तर्कनाक। अक्षा व कारण उसका समन्वय नवापा म अम प्रकार का अग्रयन प्रमात्र होना चाहिय कि वह समन्वय सन्स्था या प्रतायास ही अपन विचारा व दृष्टिकोणा क सम्बन्ध म विश्वस्त कर सक लगा समिति म निरा मण निवचन स्वाभाविक रूप स हा। उ का तवनीकी प्रायो जना क अनुकूल लनरें। एत तथ्य का इस प्रकार कहा गाय तो कदाचित अधिक स्पष्ट हा पायगा कि रणमच न पने क पीछे रह कर भी एक कुशल सूत्रधार की भाति उपयोक्त निर्देशन की ममस्त क्रिया व क्रिया विधियो को निर्दिशत—संचालित करता रहता है।

अपना भूमिका के अम सामा य परिचय का पृष्ठभूमि म उपवाधक व विजिण्ट उत्तरदायित्वा का स्पष्टीकरण कतिपय वि.श.प. शोधको के अतगत सुस्पष्ट रूप म प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) छात्रा को उपयोधन

शाखा के छात्रा को उपवाधन देना एक उपयोधन की मसूची काय भूमिका का सबप्रधान सर्वोच्च तथा सर्वोत्तम पण है। वस्तुतः एक प्रशिक्षित वनानिक के रूप म उत्सवा नि इतन ही इमा तवनीकी सेवा व त्रिद किया जाता है। निर्देशन कार्यक्रम की अय सभी सेवाओं म विभिन्न कामिका का विविध भाति सहयोग लना अर्थात् तल होना है। किन्तु यणी वह केन्द्रीय महत्त्व की विशिष्ट सेवा है जिसम उपयोधक के प्रतिरित और को कामिक यथसगत काय नही कर पाता। हम गत अथाय में निर्देशन सेवात्रा के परिचय के समय एत सेवा का तवनीकी प्रकति पर पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। उपयोधन एक एसी वनानिक कला अथवा कलात्मक विनात है जिसम वनानिक नायविधियो तारा मरितित दस मामग्री त्रिण हुए वस्तु निष्ठ विधाया द्वारा मानवीय यत्नित्व अम यत्यापक चर के साथ कनापुण काय किया जाता है। अतएव छात्रा के उपयोधन के रूप में हम शाखा उपयोधन की प्रमुण भूमिका का महत्त्व दना चाहन हैं। एत उपयोधन काय का परीक्षण मोटे रूप म निम्न दृष्टिकोणा म किया जा सकता है।

(ख) श्रोतत छात्र की सामा य समस्याएँ

एक श्रोतत यत्न के अन्तर्नि जीवन म भी साधारण समस्याओं का अस्तित्व

— एक सट्टे वास्तविकता है। साथ ही यह भी सत्य है कि व्यक्ति, स्वयं प्रकार का समस्याघात की अनुभूति के समय विद्या प्रसार की महायत्ना का अग्रणी बनता है। कई बार वह मजबूतता उम उचित व अनानिष्ठ रूप में नतीजा मिल पाता। पर स्वयं वह अग्रणीकृत अनुभविक क्षमता से इन प्राप्त करता है और ऐसी परिस्थिति में लाभार्थिन हान का रूप में कई बार हानि का भी निवारण बन जाता है। कई बार वह मनोबल रिसी भी व्यक्ति के पास न जाकर या तो मन ही मन छूटता रहता है अथवा अपने ही स्तर व अग्रणीकृत महत्वाकांक्षी अथवा निजी अथवा का निवारण करने का अग्रणी प्रयास करता है।

उक्त सभी प्रकार की अवलोकित स्थितियाँ उभय विद्या तथा समझन में बाधक ही सिद्ध हो सकती हैं। शान्ति के नियमित रूप में ही पर्याप्त प्रार्थना अथवा अथवा का शान्ति प्रकार की बाधाओं का अग्रणीकृत करके छात्र के सम्यक विकास एवं समझन में सतत सहायक सिद्ध हो सकता है। छात्रों के लिए भाष्य ही तब अत्यंत ही शारीरिक रहता है कि उनकी अग्रणीकृत अग्रणीकृत दूर करके हनु ही का व्यक्ति शान्ति में विद्या रूप से निरुक्त है तथा व उभय पास जाकर निस्संकोच बात कर सकता है।

सामान्य छात्र की सामान्य समस्याघात के निवारण के अनिश्चित रूप विद्या शिक्षा के सन्तुलन में ही और महत्त्वपूर्ण कार्य है जोकि अग्रणीकृत का विद्या उत्तर दायित्व बनता है।

यह एक सामान्य अनुभव का बात है कि व्यक्ति प्रायः अपने गुणा एवं क्षमता का अत्यंत उपयोग नहीं कर पाता। इसके कई कारण हो सकते हैं। या तो अपनी वास्तविक क्षमता से परिचय न हान व कारण वह अपना प्रतिभूय अथवा अग्रणीकृत करता है या अग्रणी क्षमताओं को जानने हुए भी उसका व्यर्थता में एक अग्रणीकृत अग्रणीकृत जिसके कारण वह सामान्य में अग्रणीकृत शक्ति रखने में भी अपने अग्रणी स्तर में ही सन्तुलन रहना है या यह भी हो सकता है कि स्वयं की क्षमता का पहिचान एवं अग्रणीकृत की महत्वाकांक्षी हान हुए भी न तो उनके पास समुचित साधन उपलब्ध हैं न ही अग्रणी प्राप्त करने के स्रोतों में व अग्रणीकृत में नही। अग्रणीकृत विद्या का अग्रणी महत्त्वपूर्ण अग्रणीकृत है कि व्यक्ति का अग्रणी क्षमताओं का अग्रणीकृत करके तथा उच्च इष्टतम अग्रणीकृत की रक्षा में अग्रणीकृत करके उसे अनुकूलतम विद्या की शिक्षा में निर्देशित करे। अग्रणी शान्ति अग्रणीकृत का अग्रणी प्रमुख भूमिका भी यही शान्ति है कि वह शान्ति के एकक छात्र को उभय क्षमताओं के सम्बन्ध में प्रबुद्ध करे, उनके अग्रणीकृत अग्रणीकृत हनु उच्च अग्रणीकृत शीघ्र बनाए तथा अपने व्यक्तिगत लक्षणा (क्षमता तथा सीमितताओं) के अनुकूल अग्रणीकृत प्राप्ति में सहायता करे।

(आ) सामान्य छात्रों की विविध समस्याएँ यह तो कि अग्रणीकृत छात्रों

क साथ उनके दैनन्दिन जीवन समझत सम्बन्धी प्रश्नों की शान । किन्तु यह एक सार्विकी सत्य है कि प्रत्येक औसत जनता समूह में कतिपय विचलित पक्ति अवश्य रहते हैं । मा प्राय औसत छात्र का कई सामान्य कठिनाईको क तिवारण में तो शाला शिक्षा का भी समुचित योगदान रहता है । किन्तु इन विचलित "यत्किस्वो" की विविष्ट समस्याओं को समझत एक उनक साथ साथ करन हेतु आमन शिक्षक क पास न तो पर्याप्त समय रहता है न अनुकूल परिस्थल क प्रभाव में उसकी "स साथ न आवश्यक गति विधि भी रहती है । इन छात्रों की समस्याओं को साथ साथ करना उपवायक क विविष्ट उत्तरदायित्वों में स एक है । आज के प्रगतिगामी मनोवैज्ञानिक युग में यह सिद्धांत सामान्यतः मान्य होता जा रहा है कि जहाँ विद्यार्थी एक प्रवृत्त अवस्थित छात्रों की उपेक्षा उनके यत्किस्वो को असीम हानि पहुँचाता है वहाँ प्रतिभादान एवं अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के सक्षम लक्षणा की भार उदा सीनता उनके यत्किस्वो को खण्डित करन के साथ-साथ समाज की प्रगति में अपरि साम अवधान उत्पन्न करता है । दाना ही प्रकार क विविष्ट छात्रों का निदान एवं उनके अन्तर्गत लक्षणों क अनुकूल उनकी शैक्षणिक योजना बनाना बिना "न क्षेत्र में प्रशिक्षित ब्यक्ति के सम्भव नहीं ।

मा तो सामान्यतः उपबोधक को अपना अधिकतम समय शाला की अधिकांश जनता औसत छात्रों के अनुकूलतम विकास एवं इष्टतम समाज के प्रयासों में व्यय करना चाहिए-तथा इस काम के सम्भव में हृदय आरोक्त शीघ्र के अतगत विद्या विषयन कर भी चुके हैं । किन्तु अनेकानुकूल कम सन्ध्या वाले विचलित यत्किस्वो के साथ काम करन के लिए विचलन क अनुपात में ह्रा अपिन बना योग्यता समय शक्त एवं ऊर्जा की आवश्यकता होती है ; प्रथम विविष्ट परिस्थल के कारण शाला उपबोधक "स साथ को समुचित रूप से कर सकता है । वह "न छात्रों की विविध पक्षाय समस्याओं का समुचित अवबोध विकसित करता हुआ उन्हें उनकी सामना करने में आवश्यक सहायता प्रदान कर सकता है ।

(इ) अतिरिक्त निर्देश सेवा

निर्देशन कार्यक्रमों के सौपानित क्रम में उपबोधक का स्तर अधिन वैज्ञानिक तकनीकी साधन पर निश्चित होता है । किन्तु यह भी सत्य है कि वह इतना बहुपक्षी विशेषण भी नहीं कि यत्किस्वो की वैयक्तिकी विभिन्न समस्याओं को पूर्णरूपण हल कर सक । "स प्रकार का विशेषण ता किसी भी पिकसित विज्ञान में उपनयन नहीं हो सकता । मानव विकास एक समाज को प्रभावित करन वाले "सते अधिक कारक इतने अधिक जीवन-क्षेत्रों में उपस्थित अवदा उपनयन ता सकते हैं कि उन सभी का सम्यक बोध किसी भी एक विज्ञान में स्वतंत्र रूप से उपनयन नहीं हो सकता । उदाहरणार्थ यदि किसी छात्र का भवगतमक अगन्तुवन उसके वाचा लोप क कारण है और यह वाचा-लोप किसी आंगिक कुरचना या अन्तःप्रकाय में निहित है तो छात्र को किसी विविध के पास प्रदिन करने उम्मा समुचित उपचार करवाना उपयुक्त रहेगा ।

सामान्य प्रवण शक्ति से बन्नी धार छाया की तथोपस्थिति विपरीत रूप से प्रभावित होगी "हता है। "एक वृक्ष स्वस्थ जनक यतिरूप म बन्नी खेतामक प्रथिमा का मृज्ज हो जाता है और म् मृज्ज जनक म्मज्ज का निरंतर पुनरुत्था रहता है। क् वार के म्काववण म्म द्वा का प्रभियन्त वरुण स भी भिन्नवते है अपन सप्त पाठिका की विन्नी के दिग्ग पिन्ग है और एव सप्तगतान् दुवन् न निरार वर वर कुममज्ज की टेवरी पर नीचे नी नीचे पिन्गज्ज न त है। ऐम विशिष्ट शारी रिक माननिक एव सुवेगामर उपाधियों से पीन्ति यक्तियों का उपचार ह्नुमुष्ट विरिक्त र्चनीनोपगत वन उपचार की ग्वाव्यवता होगी हे जो कि सर्म्य का क्षेत्रा क विरुपता द्वारा भी उपचार हो सकती है।

उपाधक का धर्मी परिवर्तितता म् वन् उत्तरापित्तव नो जाता है कि एम व्यक्तिया को अनिरिक्त निष्पन्न सेवा र्च सर्म्यजन विरुपता के पाय निष्पन्न कर सक । म् वक्तय म्मन्विन रूप स नि । सजन क निष्ट उपवाधक को न कवन म प्रवार की उपाधिया का प्रभियान हाना आवश्यक है अपितु सम्बन्धित क्षेत्रा तथा म्मक विरुपता का परिवन्त प्राप्न वन्ना भा अनिवाय है । सम्पुन वी य् वन्ना चय ता अनिजपाधि रहता ।। कि न सकार की अनिरिक्त निष्पन्न सवाए एक म्मन्ति न निष्पन्न वावन्म के प्रन्तरण भाव क र्च म ह्नु उसम सप्त सन्वित्त होनी रहता व दिष्ट ।

(र) शिक्षा की मायता

छात्रा को उपरोक्त रूप के साध-साध उपवाधक की महत्वपूर्ण भूमिका है शान्त शिक्षा क विश्वामात्र म्मन्विक क रूप म । म् सहायता जनक विविध वाय साधनाम निम्न कार स दा जा सकती है ।

(घ) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के निष्पन्न म

प्रभावगती शिरण शय सम्पन्न कर सकन ह्नु शिक्षक क निष्पन्न साध निष्ट आवश्यकता होगी है म्मक छात्रा को वसन्तिन गम्मात्रा योम्पनाया माभित ताका का सर्म्यवित धववाः निम्न वन् विषय म्मन्वापन क सामान्य सध्या वन्ना का पालन करन म्म भा अपन प्रन्वापन को एतक द्वात्र की म्मन्व शक्ति के अनुकूल नी बना सक । हमारी बाभान शारीर परिस्थितिया म्म लो वन्वचित म्म आवश्यकता के प्रति सवेदना की चाणुता की शिक्षक म्म कराना आवश्यक होगा है । और वद् सव दनसाध प्रन्वापन म्म वन् विभिन्नता का निष्पन्न तवा इन्के अनुकूल वार करन की योग्यता म्म ली विन्वाय का आवश्यकता होगी है । कर्षात्मक विभिन्नताओं क म्मना विन्वाय पर ह्नु मूल प्रार्थान्त उपवाधन वाय म्म प्रशिक्षित उपवाधक शान्ता क निष्पन्ना का म्म महत्वपूर्ण मनोव्यक्तिक चर के म्मन्म म्म सन्वा वान् म्मन्व सन्ने म्म सर्म्यवित्त निष्पन्न प्रदान कर सकता है ।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्त्वत मनोव्यक्तिक सिद्धान्त सामगल करन पर शिक्षण म्मे छात्रा के स्वर स भागे न जानर अपन साधसाधिक वाय के अय

आपामो में भी जागू कर सक्ता है। सबप्रथम तो उसके गिराव शिखर सम्बन्ध से इस तथ्य की स्पष्टता कई प्रकार से भूलकर सकती है। यह सम्भव है कि अभी-जमी उस ऐसे व्यक्तियों के साथ शाला-परिचर्या का भार मिल जिनके उपागमो विचारो कार्यविधायी से उसका तनिन भी साम्य न हो। ऐसी परिस्थिति में उसे कई बार भगनाशा के समन्वय की दुःखत भावनायो का सामना करना पड़ता है। ऐसी प्रकार सम्भव है कि वह शाला प्रदान के साथ ही एक भी श्रान्तो से कोई बात गरी देना पाता है। ऐसे अवसरों पर उस का भावभी मान हानि होता है। यदि की दुःख अनुभविया सहन करनी पड़े। ऐसी परिस्थितिया में प्रति-रक्ति के बीच रहन ही वतमान रहने पाती कई विभिन्नताया का बतानिन प्रवर्धन मानव का। इस प्रकार की भगनाशाया परिस्थितिया के कारणों का अधिक वस्तु निष्ठातारुण विज्ञेयण प्रथम प्रवर्धन करने में सहायक होता है तथा व्याक्त की एक प्रबुद्ध प्रगान्तना प्रदान करता है।

(आ) व्यक्तित्व अनुसूची दत्त सप्रह

निर्देशन कार्यक्रम की प्राथमिक सेवा—व्यक्तित्व सूचना-हस्त जो छात्र-सूचनाएँ संचित करनी होती हैं उन्हें शिक्षक की सहमता के बिना देने का उपरोधन नहीं कर सकता। किन्तु इन्हें विधिवत संचित कर लेना में पुन शिक्षकों को उपरोधन के बतानिन नेतृत्व की अपेक्षा रहती है। व्यवस्थित विद्यासाधन तथा मितश्रयी उद्यम से इन्हें एकत्रित कर लेने हेतु कई प्रथम प्रायोजित करने पड़ते हैं जिन्हें विनित करने तथा जिनका उपयोग करने में उपरोधन समस्त शाला-परिवार को समुचित नेतृत्व देता है। इनका विनाशण करने में तो यह अपेक्षित है कि शिक्षक उत्तरी समुचित सहायता कर सकें। किन्तु वस्तुतः यह सहायता देने में स्वयं उनका भी दत्त विशेषण विधिया में भगनाशा ही प्रतिगण होता है। इसके साथ ही एक और सहा लाभ उठ यह भी होना है कि वे अपने विद्यार्थियों को अधिक गंभीर तरह जान पहिचान सकते हैं। उपरोधन की भूमिका इस सम्बन्ध में यह है कि वह मध्यमको को छात्र सम्बन्ध व्यक्तित्व दत्त-भारमयी विधिवत संचित विनयण करने में दक्षता प्रदान करते हुए छात्रों के सर्वांगीण प्रवर्धन में उनकी सहायता करे। उत्तरोत्तर विनित परिपक्व करता रहे।

(इ) निर्देशन अभिविद्यासित अध्यापन

वस्तुतः गत दो विद्युता में किए गए विवेचन का समाहार इस विद्युत के शीर्षक में समुचित रूप से हो जाता है। निर्देशन अभिविद्यासित अध्यापन का मूल तात्पर्य होता है एक छात्र की विनिष्ट व्यक्तित्व आवरणको के अनुसूच मध्यमको को सम्पन्न करना। अधिक स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अध्यापन के उद्देश्य निर्धारण विषय वस्तु वतन विद्या निरूपण एवम मूल्यांकन प्रथम उद्देश्य स्तर पर एक छात्र के व्यक्तित्व के अनुसूच इन साधनों के कारण में आवश्यक हैरत कर सकता चाहिये।

निर्देशन अभिव्यक्ति-प्रणाली का तापय यह भी जाना है कि छात्र का विषय चयन उनकी क्षमतानुकूल है तथा उनके जीवन की भविष्य सम्भावनाओं से भी नारतम्प रचता है। या मतलब तो छात्रों का विषय-योजनाएँ निर्धारित करने में सामान्यतः उपबोधक का ही प्रमुख भूमिका रहनी है। किन्तु यह भूमिका बड़े दिना शिक्षकों व अध्यापकों के सम्पन्न नहीं कर सकता। किन्तु शिक्षकों को कम और गति शक्ति बनाने तथा कम काय में हाथ बढ़ाकर उनके उनमें योग्यता उत्पन्न करने का उत्तरदायित्व पुनः व्यापक उपवाचक का हाँ हाँ जाता है। कमलिये में कम करके है कि निर्देशन अभिव्यक्ति-प्रणाली सम्पन्न कर लेने में उपबोधक शिक्षकों को समर्थित करने प्रदान करता है।

(ई) पाठ्य मन्त्रागामी कार्यक्रम की समुचित व्यवस्था

एक छात्र की शक्ति क्षमता एवं योग्यता के नियत वास्तविक नियमित पाठ्यक्रम व विषय में कौन सा है जो उसका पाठ्यमन्त्रागामी अथवा पाठ्यक्रम प्रवृत्तियों के आधुनिक व सम्बन्ध में भाग लेती है। इसमें अधिकांश अनौपचारिक वातावरण में आयातित तथा परीक्षा के अतिरिक्त अन्तर्गत सन्तुष्टि कायक्रम में तो यह और भी अधिक आसक्त हो जाता है कि उनके अन्तर्गत आधुनिक प्रवृत्तियों में एक छात्र का व्यक्तिगत विनिष्पत्ति एवम् विशिष्ट प्रावधानों के अनुसृत उस प्रकार प्रदान किए जायें। पाठ्यक्रम प्रवृत्तियों का क्षेत्र माना जावे तो वह विमृष्ट आधुनिक है जहाँ विद्यार्थी का व्यक्तिगत वृत्ति की चरणीयारी से उन्मुख होकर उसके विविध प्राकृतिक रूपों में निरख उठता है। उन रूपों को विज्ञान की रचना तथा उनमें समुचित सम्मिश्रण में छात्र का व्यक्तिगत चित्र निर्माण करने का विज्ञान उपवाचक की वास्तविक कला में निहित रहता है। और एक कुशल उपवाचक शास्त्र के नियत का अर्थ ही सहज रूप में कम विज्ञान में अभिव्यक्ति-प्रणाली कर सकता है।

() परिवारणीय सूचना प्रसारण

निर्देशन कार्यक्रम की अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा है परिवारणीय सूचनाओं का व्यवस्थित सशक्त विश्वविद्यालय एवं प्रसार। विद्यार्थियों तक तक सहज प्रसार की विद्याओं में शिक्षकों को अभिव्यक्ति-प्रणाली करने का उत्तरदायित्व पुनः उपबोधक का ही होता है। शिक्षक इस प्रकार को किन्तु प्रकार कर सकते हैं यह तो अर्थ में अर्थ में—तथा अधिक विस्तार पूर्वक सप्तम अध्याय में बताया जावेगा। यहाँ तो केवल शिक्षकों के इस मान में सहायक रूप में उपवाचक की भूमिका स्वल्प इस विदु का उत्तम मान किया जा रहा है।

(ग) निर्देशन कार्यक्रम में अभिव्यक्ति-प्रणाली

निर्देशन कार्यक्रम के सन्दर्भ—सिद्धांतों का विवरण करने समय हम कार्यक्रम के सन्दर्भ-रूप का अर्थ में महत्वपूर्ण स्थान दे चुके हैं। इस सन्दर्भ में जिस मनोवैज्ञानिक तथ्य पर पुनः ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि किसी भी कार्यक्रम के सम्बन्ध

में समुचित व्यवस्था न हान पर कारिका का तारता स्तर में पना एक कति काय ह ।

प्रय निर्देशन के नूतन कार्यक्रम सम्बन्धी यह व्यवस्था—प्रारंभिक शाला कारिका में उपलब्ध करना प्रोत्साहित उपयोक्त का है महत्वपूर्ण कारणाति है ।

यह महत्वपूर्ण किम प्रकार उभय करे—एक शाला प्रसाधन प्रोत्साहित नीतिया प्रदान करके उभय तथा उनका निरीक्षण मूल्यांकन पर निरंतर रहना है । महत्वपूर्ण बात तो यह है कि कार्यक्रम प्रारम्भ करके क पूरा तथा कार्यक्रम विकास के विभिन्न स्तरों पर ना यह आवश्यक है कि शाला-कारिका का उक्त कार्यक्रम क निर्देशन में समुचित प्रतिबिम्ब हो । तना व इतम समय मापकों अनुकूलक प्रत्यक्ष कर सकेंगे ।

इन कारिका में कवन शाला निर्देशन की हा गणना से यह आवश्यक नहीं । निर्देशन कार्यक्रम में विभिन्न कारिका विविध स्तरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करत हैं । और इसलिए हम शाला निर्देशन कार्यक्रम-कनवाणी कला-क्षेत्र एवं छात्रों के अभिभावक-सभा के लिए निम्न निम्न अभिविन्यास कारिकाओं का मापनेत वादीय समझत हैं । हम व्यवस्थित अभिविन्यास में उक्त महत्वपूर्ण प्रान्या क आधार पर है व शाला निर्देशन कार्यक्रम में प्रयत्न प्रोत्साहित सहयोग दे सकेंगे ।

(घ) शाला-समुदाय समन्वयक

शाला उपयोक्त की एक और महत्वपूर्ण शक्ति शाला समुदाय समन्वयक की । सर्वप्रथम तो छात्रों का वैयक्तिक अनुभव का एक महत्वपूर्ण मापना पूर्ति हेतु उपयोक्त को अभिभावकों से निकट सम्पर्क स्थापित करना पना है । छात्रों की क्षमता, प्रतिभा तथा भावा भावना-व्यवस्था, पानाए बनाने व प्रथम में सम्पर्क इन बातें प्रोत्साहित होना जाना है । इस प्रकार शाला अभिभावक सम्बन्ध का एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को उपयोक्त प्रयत्न करमाय व एक नवी कलाय को पूरा करने में सहायता है । सम्पर्क कलाय होता है । छात्रों की वैयक्तिक स्वी की पूर्ति के साथ-साथ ही उपयोक्त का कलाय होगा व पारदर्शी सूचनाओं का अधिकतम सफल तथा व्यवस्थित प्रसारण । अद्यतन तकनीक हेतु नव विभिन्न स्थानीय मत्स्यमा प्रौद्योगिक तकनीक एवं वैज्ञानिक विज्ञाना भाषि से निकट सम्पर्क बनाए रहना पठता है । समय-समय पर इन विषयों का शाला में उपलब्ध सूचना प्रसारण हेतु प्रोत्साहित भा करना हुना है । कारिका शाला छात्रों का भी इन मत्स्यमा के पर पर ल जाना पठता है जिससे छात्रों का व मत्स्यमा परिचितिया का स्वयं प्रत्यक्ष रूप से देख सकें तथा उनके भावा निवचय इन सबके आधार पर अधिक उप रूप से निर्मित हा सकें ।

साध है कि इस प्रकार के आधारक एक क्षमता व परिवर्तक आधार पर नहीं हो करत । इतना सम्भव कर सकने के लिए शाला उपयोक्त की स्थानीय समुदाय से सतत सम्पर्क बनाए रखना होता है । वस्तुतः इस प्रकार के मन्वक के आधार

पर वह शाला व समन्वय को भा अग्रतया रूप से एक दूसरे व निरुद्ध पाता है तथा उनमें वारस्परिक सम्बन्ध आशुत करता है—अनुरागित रहता है।

हमारे विचार में शाला उपवाधक का यह भूमिका न केवल उमक निजी उत्तरदायित्व के लिए बल्कि है महत्वपूर्ण है अर्थात् सम्पूर्ण शालाय विकास की दृष्टि से अत्यन्त ही भूमिका है।

(3) शाला शिक्षक

उपवाधक की भूमिका का विशाल विवेचन करते हुए उसके द्वारा शिक्षण को निरुद्ध रूप नतृत्व व सन्तुष्टि में शिक्षकों का निर्देशन भूमिकाओं के सम्बन्ध में अग्रतया इति वाचका का मित ही चक है। अतः इस शीपक व अग्रतया शिक्षण के विशिष्ट निर्देशन उत्तरदायित्वों व भूमिकाओं का अग्रिम प्रथम विवेचन प्रस्तुत किया जायगा।

अभी तक वाचका का यह तो स्पष्ट है कि शाला निर्देशन वापक में शिक्षकों का भूमिका अत्यन्त ही महत्वपूर्ण होती है। बल्कि यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि शाला अवापका के पूरा सम्बन्ध के लिए निर्देशन वापक का सर्वोत्तम आयोजन भी समुचित रूप में क्रियायित्व नहीं हो सकता।

शिक्षक की निश्चित भूमिका व विषय में विशाल विवेचन प्रस्तुत करने के पूर्व हम स्पष्ट रूप पर एक सम्बन्धित सम्बन्धित का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक होगा।

निर्देशन कार्यक्रम के सफल संचालन में शिक्षक के महत्वपूर्ण स्थान को अग्रिम ध्यान देते हुए अभी-अभी यह विचार अभिव्यक्त किया जाता है कि छात्र व साथ निरुद्धतम सम्बन्ध तथा सहायक कार्य करने वाले अध्यापकों को ही उचित निर्देशन का भी कार्य करना चाहिए। दूसरे शब्दों में हम मायना का यह तात्पर्य है कि शाला निर्देशन कार्य के लिए अध्यापक ही प्रधान कारक हैं। अन्य अतिरिक्त हम कार्य हेतु कोई विशेष पति व नियोजन की कोई आवश्यकता नहीं है।

हम जग उक्त प्रकार की विचारधारा से सम्मत नहीं हैं। हमारी इस सम्बन्ध में स्पष्ट भाषणा यह है कि अग्रिम शिक्षक एक सीमा तक निर्देशन कारक है बिना शिक्षकों के सक्रिय सम्बन्ध के शाला निर्देशन कार्यक्रम केवल एक सन्तुष्टि का आयोजन के स्तर तक ही अवधि हो जायगा। किन्तु यह एक तरफ की वास्तविकता है कि शाला शिक्षक एक प्रशिक्षित उपवाधक को स्थानापन्न नहीं कर सकता। शिक्षक व शाला सम्बन्ध सामान्य निर्देशन कर्तव्यों व अतिरिक्त कतिपय विशिष्ट उपवाधन उत्तरदायित्वों को निभान हेतु कानिच उपवाधक का ज्ञान एक अनिवार्य आवश्यकता है। उपवाधक व इन विशिष्ट उत्तरदायित्वों पर पूर्व शीपक के अग्रतया पर्याप्त प्रकाश भी जारा जा चुका है। अतः अतः विशेष रूप से अध्यापकीय उत्तरदायित्वों का प्रवर्धन कतिपय शीपक अग्रतया किया जायगा।

(क) मनोवैज्ञानिक जलवायु का सजन—अत्यंत पाठनीय प्रवृत्ति के भी शाला छात्रा द्वारा प्राह्व एव स्वीकृत हा सकन हेतु एक महत्वपूर्ण पूर्वावश्यकता होनी है उस प्रवृत्ति के विषय में छात्रों का एक सकारात्मक मनो-नामिक उपागम । सामान्यतः इस प्रकार के उपागम का सजन करन में शाला शिक्षका वा बहुत बड़ा हाथ रहता है । यदि वाई नवीन शाला कार्यक्रम उनके गारानुकूल नहीं है तो वे कई प्रयत्न अप्रयत्न व्यवहार क्रियाशील द्वारा अपनी अनुकूलता से छात्रों को अनायास ही अनुवर्धित कर सकत है । और यदि उन छात्रा वा—जिनके लिए ही मूलतः निर्देशन कार्यक्रम की आयोजना हानी है—ही इस कार्यक्रम के लिए सकारात्मक उपागम बन जाता है तो उसका मूलतः ही तप्ट होन की आशका रहती है ।

वस्तुतः छात्र हेतु आयोजित किसी भी नूतन शिक्षक कार्यक्रम का सफल बनाने की एक महती पूर्वावश्यकता यह होती है कि छात्रों के मन में उसके लिए धारणा उत्पन्न की जावे । उनके गस्तिपन में यह धारणा स्पष्ट हो कि कार्यक्रम उनके हित के लिए है । शाला के एक नवीन नामिक के सम्बन्ध में उनके मन में यह विश्वास स्थापित हो कि यह उनका शुभचिन्तक सहायक है । चूं कि विशेषकर भारतीय परिस्थितियों में शाला के अविभाज्य अंग के रूप में निर्देशन कार्यक्रम की स्थापना छात्रों के लिए एक नवीन बात होगा इसके लिए और भी अधिक आवश्यक है कि इस प्रवृत्ति के अभिप्रेत अर्थों तथा उपबोधक की आवश्यकताओं के विषय में उनके मन में एक अग्रिम प्राञ्जलता हो । छात्रों के साथ सर्वांगिक काम करने वाले शिक्षकों द्वारा यह स्पष्टता सरलता से उत्पन्न की जा सकती है । निर्देशन के नूतन बाज की वे एक सकारात्मक मनोवैज्ञानिक वातावरण की अनुकूल जलवायु प्रदान करके स्वयं अपने सहयोगी बच्चों की खास देकर एक नव पत्रयित पीढ़ी के रूप में विकसित होन में प्रेरणा दत्त ह ।

(ख) निर्देशन-नीतियों के अवबोध में सहायता—उक्त बातों के अनुवर्तन में ही प्रस्तुत भूमिका के निभान वा बात आती है । निर्देशन कार्यक्रम के लिये अनुकूल मनोवैज्ञानिक वातावरण के सृजन के अनन्त प्रयत्न उपस्थित होना है निर्धारित निर्देशन नीतियों के स्पष्टीकरण का । प्रायः ये नीतिया निर्देशन-समिति की उन बठका में निश्चित होती हैं जिनमें मुख्य निर्वाचित शाला शिक्षक भी सदस्य रहते हैं । नीति निश्चय होने के पश्चात् भी उनके क्रियान्वयन के पूर्व प्रथम उद्यता है—छात्रा तप उन्हें प्रसारित करने का या या कह कि उनके अवबोध हेतु इनकी समुचित व्याख्या का । पुनः इस बात का उत्तरदायित्व छात्रा के निकटवर्ती शिक्षका पर ही पड़ता है । ये सामान्यतः निर्देशन कार्यक्रम सम्बन्धी प्राथमिक अभिनिश्चय तो छात्रा को शाला उपबोधक अथवा शाला प्रमाण द्वारा ही प्राप्त हाकर समुचित होगा जिसमें छात्रों के मन में कार्यक्रम अपनी वैज्ञानिक पक्ष तथा प्रशासकीय अर्थलम्बन की बातें मूल ग्रहण करे व । किन्तु इस मूल को दृढ़ करने इसको पनपाने तथा विकसित करने हेतु

शिक्षकों के दक्षिण पोषण की आवश्यकता है जोकि उस कार्यक्रम की विविध प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में उचित विचारा अभिव्यक्तियाँ बाँटी तथा कार्य-योजना द्वारा होता है। छात्रों के साथ यनीत किये गए कई औपचारिक तथा अनौपचारिक अवसरों पर वे निर्देशन सम्बन्धी नीतियों का समुचित स्पष्टीकरण उनका सम्मुख कर सकें हैं— तथा उन्हें निर्देशन कार्यक्रम से अधिकधिक लाभ उठा सकें हेतु तत्पर कर सकें हैं।

(ग) व्यक्तिगत दत्त संप्रह— परस्मिन् रूप से निर्देशन कार्य संचालित कर सकने की एक प्राथमिक आवश्यकता है छात्र विषयक व्यक्तिगत सूचनाओं का विविधता संचयन। इस प्राथमिक सवा में शिक्षक का योगदान सर्वाधिक होता है।

सबप्रथम तो छात्रों के बहुमुखी व्यक्तित्व का सामान्य परिचय कई बार स्थितिओं में शिक्षक को ही सबसे अधिक लेना है। फिर गाना का प्राथमिक उत्तर दायित्व होता है छात्रोपरी यहाँ जिसमें छात्र अभिभावक प्रधानाध्यापक समुदाय तथा स्वयं अध्यापक समान रूप से लचि रहते हैं। शाला के इस महत्वपूर्ण से छोटा सम्बन्ध प्रस्थापना का ही होना है। छात्रों की उपस्थिति के साथ ही शाला के माता सम्मान का प्रश्न भी संयुक्त रहता है—और इस प्रकार शिक्षक का इस विषय में महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व रहता है।

अब शिक्षक को यह कुछ जो कार्मिक है जिसके पान प्रयोगों में विषयगत सूचना-सामग्री रहती है। सबप्रथम तो गाना की नयी आवश्यकता के अनुसार ही उस पर सामग्री का व्यवस्थित रूप से अनुकरण करना होता है। फिर उपबोधक के व्यापक अनुभव से लाभ उठाकर वह विनासात्मक रूप में अधिक व्यापक रूप से इस महत्वपूर्ण सामग्री का उत्तर दे सकना है।

यह तो हुई सूचना-सामग्री के शाला की बात। किन्तु उसमें भी अधिक मूल तथ्य है सामग्री संचयन के उपकरणों का। यो सामान्यतः ही शिक्षक के पास शाला के नयी विषय परी रत्न तथा उनका स्वयं का अनुभवित निष्पत्ति ही के उपकरण होने हैं। इनके माध्यम से वह अपने छात्रों के विषय में सूचनाएँ एकत्रित कर के निर्देशन कार्यक्रम की वर्णित सूचना सवा की परिपूर्ति कर सकता है।

किन्तु उक्त नया साधना के अतिरिक्त भावों में शिक्षक निमित्त उपकरण हो सकते हैं जो तुलनात्मक दृष्टि में अतिरिक्त बन्धनित होत हैं तथा अतिरिक्त माध्यम से संचालित सामग्री अतिरिक्त विषयसमीक्षा के वष होनी है। उपवाधक के निर्देशन में शिक्षक एक कार्य उपकरण—यथा विज्ञान सूचियाँ मय-निर्धारण मार्गनिर्देश प्रस्तावितियाँ समाजनिर्देश विधियाँ— अतिरिक्त करके उचित भाव में छात्रों के विषय में संचयन सूचनाएँ संचालित कर सकें हैं। उनके अतिरिक्त कार्य प्रय विषय भी हो सकते हैं जिनके द्वारा शिक्षक कक्षा में प्रथम अतिरिक्त अनौपचारिक परिस्थितियों में छात्रों के सम्बन्ध में बहुमुखी सूचनाएँ संचालित करके न केवल उनका अधिक उपकरण विश्व शाला के लिये प्रस्तुत करते हैं, अपितु इस प्रकार के

जिन की सम्पूर्णता के परिदृश्य में प्रथम सर्वांगीण सहायता दे सकने की अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हैं। शिक्षक द्वारा निर्मित तथा प्रयुक्त हो सकने योग्य इस प्रकार की विधाओं के सम्बन्ध में विशेष विवेचन तो अगले अध्याय में स्तुत किया जाएगा। यहाँ तो केवल शिक्षक का निर्देशन अभिवाचो के स्पष्टीकरण के अन्तर्गत केवल इतकी श्रेय के प्रति मात्र बर दिया गया है।

(घ) पर्यावरणीय सूचना प्रसार—निर्देशन कार्यक्रम की द्वितीय सेवा पर्यावरणीय सूचना सेवा के संचालन में भी शायद अध्यापकों की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस भूमिका को वे दो प्रकार में निभा सकते हैं—विषय अध्यापन के माध्यम से तथा पाठ्यमहासमी प्रवृत्तियों से। दोनों ही विधाओं का सम्पूर्ण विवेचन अनुच्छेद ११ में प्रस्तुत किया जा रहा है। विशद रूप से इनका वर्णन अध्याय सत्र में मिलेगा।

(अ) विषय अध्यापन के माध्यम से—प्रत्येक शिक्षक का यह कर्तव्य है—निम्न निम्न का वह मानासत आवश्यकता न। सम्बन्ध—निम्न यह दोनों को विषय पठान के पूर्व तथा विषय अध्यापन के साथ साथ ही विषय के शैक्षिक माध्यम उसकी आनन्दमय सम्भावनाएँ उनसे सम्बन्धित विषय शब्दाएँ उससे उद्भूत शैक्षिक-व्यावसायिक धाराओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि संगत तथ्या से छात्रों को प्रबुद्ध करते रहें। तभी उनका विषय अध्यापन छात्रों के लिये उचित मान में अत्यपूर्ण हो सकता है। किन्तु वस्तुस्थिति तो यह है कि हमारे शिक्षकों से सामान्यतः इस प्रकार की अपेक्षा भी नहीं की जाती कि वे ये सूचनाएँ छात्रों तक प्रेषित करें। फलस्वरूप कई शिक्षक वय भी इन तथ्या के द्वारे में अनभिज्ञ रहते हैं। अपनी विषय वस्तु और वह भा केवल परीक्षा पाठ्यक्रम में विद्यमान के प्रतिरिक्त इस प्रकार की माहिदिया उपलब्ध करना उनके लिये किसी भी प्रकार युक्तिमय नहीं होता। निर्देशन के दृशन में अभिविद्यसिद्ध होने पर ही वे विषय-सम्बन्धी इन तथ्या का यावहारिक मूल्य समझ सकते हैं तथा स्वयं छात्रों का भाग्य धार सवेत्तशाल तथा प्रबुद्ध बना कर उनका शैक्षिक चयन को एक सदा वास्तविक आधार प्रदान कर सकते हैं।

(आ) पाठ्य सहायनी विधाओं से—शिक्षा परिस्थितियों के अनिश्चित भी इस प्रकार का प्रवृत्तियाँ हो सकती हैं जिनके द्वारा शिक्षकगण निर्देशन कार्यक्रम की पर्यावरणीय सूचना सेवा को परिपुष्ट कर सकते हैं। कुछ इस प्रकार की विधाएँ निम्न अनुच्छेद ११ में प्रस्तावित की जा रही हैं।

एकप्रथम तो एक प्रबुद्ध हवी के रूप में विज्ञापितियों का व्यक्तिगत आधारियाँ अनुसन्धित करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है जिसमें वे अपने का अन्ध्र नगने वान व्यवसायों आवा विषयों के सम्बन्ध में अद्यतन सूचनाएँ गोल करत आते। एक प्रोत्साहक के रूप में इनका प्रस्तुतिकरण भी शाला की गतिवारण सभाओं में वाचन आवा गणु। पणों के रूप में करवाया जा सकता है।

(४) अभिभावकगण

निर्देशन के मुख्य ध्येय या तो व्यक्ति के बहुमुखी समञ्जन से सम्बन्धित होते हैं अथवा उसके स्वाधीन विकास के परिप्रेक्ष्य में निवारित होने हैं। निर्देशन सवाभो का कार्यक्रम भी व्यक्ति के बहुमुखी समञ्जन को ध्यान में रखकर ही मंचान्वित होता है। सामान्यतः छात्र अपने जीवन के एक तृतीयार्ध से अधिक समय शाला में व्यतीत नहीं करता। चूँकि व्यक्ति का समञ्जन एवं विकास ऐसी सर्जितन प्रक्रियाएँ हैं जिन पर शाला के अतिरिक्त कई कारकों का भी प्रभाव पड़ता है इसलिए निर्देशन को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इन सभी कारकों से सम्पर्क का अंगेना करनी पड़ती है। इन सभी शालेतर कारकों में से हम सर्वाधिक महत्त्व छात्र के घरेलू पत्र को देना समुचित समझते हैं। छात्र के जीवन का प्रारम्भ घर की सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि में होता है। अपने जीवन के सबसे अधिक निर्माणकाल समय में वह घर के ही मूल्या का छात्र अपने कोमल व्यक्तित्व पर सम्बन्धित रूप से लिए धारण का नेता है। उसके जीवन-उपागम मानसिक विरवास सवेगात्मक सप्रत्यक्षण — सभी का मूल इसी समय घर के रहने-महने बोल चाल आचार विचार व्यवहार की भूमि में गहराई से प्रविष्ट हो जाता है— और उसी जीवन वृक्ष की धमनियाँ में सदा सवदा के लिए प्रदानित होता हुआ उसका—पल्लव पुष्प फलो के स्वरूप स्वाद की प्रभावित करता रहता है। अतः स्पष्ट है कि उसके सर्वांगीण विकास में उसके अभिभावकगणों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। उनका समञ्जन के स्वरूप एवं सत्यता को भी उनके बाल्यकालीन प्राथमिक जीवन-प्रनुभव एवं वृद्ध बढी सीमा तक अनुवर्धित करते हैं। अतः यह सुक्तिमय ही होगा कि निर्देशन कार्यक्रम का सतत सम्पर्क छात्रों के अभिभावकों से बना रहे।

इस साधारण मायता की पृष्ठभूमि में निर्देशन सवाभो के कार्यक्रम में अभिभावकों की विशिष्ट भूमिकाओं का विवेचन निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है—

(क) व्यक्तिगत सूचना सेवा— व्यक्तिगत सूचना की प्रवृत्त के विषयों में समय हमने उसके विकासात्मक तथा समाहारी लक्षणों पर बल दिया था। इन दोनों ही लक्षणों का अस्तित्व बिना घरेलू सहयोग प्राप्त किए नहीं हो सकता। व्यक्तिसम्बन्धी विकासात्मक सूचनाओं का मूल प्रारम्भ घर में ही होता है तथा सबसे सही रूप में अभिभावकों से ही प्राप्त किया जा सकता है। निर्देशन कार्यक्रम के संचालन में अभिभावकों का एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व यह हो सकता है कि वे उपवोधक द्वारा निर्मित प्रश्नों में वाछनीय सूचनाएँ विभिन्न भरे दें।

प्रश्नों में मागा हुई तात्त्विक सूचनाओं के अतिरिक्त भाव्य व्यक्ति सम्बन्धी कई प्रश्न इस प्रकार के होते हैं जिनका उत्तर प्रश्नों की खानापूर्ति मात्र करवा के उपलब्ध नहीं किया जा सकता। ऐम प्रपलापुन गहन ताजुक अथवा सर्जितन विभुषा के सम्बन्ध में जब उपवोधक की सूचनाओं की प्रपक्षा होता है तब उक्त स्वतः ही

अभिभावको से सम्पन्न स्थापित करके यत्तिगत रूप स तथ्य एतद्विषय बनना होता है। ऐसा प्रवसरो पर अभिभावको की अपेक्षित भूमिका यह होती है कि वह धन निष्ठा एवं बढावारी के साथ उपबोधक का अपना समय द तथा स्पर्धित सामग्री उसे देने में सहाय न कर। उनके द्वारा प्रदत्त सूचनाओं की योग्यता का आश्वासन हो उन्हें एक कुशल उपबोधक में मिलना अनिवार्य है ही— यह न विवक्षित करने की आवश्यकता न हो।

(ख) पर्यावरणीय सूचना सेवा— व्यक्ति की पर्यावरणीय सूचनाओं का प्राथमिक अभिविज्ञान भी उसका कुटुम्ब में ही जाता है। सर्वप्रथम वह अपने अभिभावकों के व्यवसाय से अनुभावसही परिचिन होना हुआ। उन व्यवसायों के प्रति परिस्थिति के अनुसार मनोवृत्तियाँ भी बना सता है। किसी व्यवसाय विशेष में यदि वह अपना माना पिता को प्रमत्त सफल सन्तुष्ट तथा सम्मानित पाता है तो अनुमाने ही वह भी उनका चरणानुगामी बनने की योजनाएँ बनाने लगता है। इसके विपरीत अपने व्यवसाय के सतार में असंतुष्ट अभिभावकों के बालकों के अचेतन में उन व्यवसाय के प्रति भी नकारात्मक अभिवृत्तियाँ बन जाती हैं।

अपनी यावसायिक स्थिति पर अभिभावकों के इस प्रत्यक्ष एवं सहज स्वाभाविक प्रभाव के अनिरिक्त यत्कि की अभिवृत्तियाँ एवं भावापोत्रनाओं को अभिभावकगण प्रत्यक्ष रूप से भी प्रभावित करते हैं। कई महत्वाकांक्षी अभिभावक अपने बालकों को बहू बनाना चाहते हैं जाकि वे स्वयं न बन सके। उनकी भगना शक्ति प्राकाशना का साकार स्वरूप वे अपने बच्चा की उपजाऊँपा में ही देखकर इस प्रकार अपने प्रयत्न की अप्रत्यक्ष तत्परियाँ भारा करते हैं। इस प्रकार की परिस्थितियाँ में एक माताका यह रहती है कि अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति की कामना में वह अपने तर्कशार पुत्र पुत्रियों के मनोवैज्ञानिक लक्षणों का ध्यान नहीं रखते। वस्तुतः अधिकांश अभिभावकों को तो इनके स्वरूप तथा महत्त्व के सम्बन्ध में अनिश्चिता भी नहीं रहती। एसी स्थिति में हम उनकी गहरी भूमिका के विषय में यकी बढेग कि उक्त उपबोधक से अपने पुत्र-पुत्री के मनोवैज्ञानिक लक्षण तथा इन लक्षणों से सम्बन्धित शैक्षिक-व्यावसायिक प्रवसरो सम्बन्धी सूचनाओं की प्राप्ति करनी चाहिए। इस दोना वज्ञानिक सूचनाओं की समरसता के आकार पर छात्र को उचित शैक्षिक-व्यावसायिक-निर्देशन देने में उक्त उपबोधक की वस्तुनिष्ठ सहायता करनी चाहिए।

जाता के निर्देशन-वायक्रम के अन्तर्गत आयोजित पर्यावरणीय सूचना प्रसारण में भी अभिभावकों को समुचित एवं सन्धिय रूचि लेना अपेक्षित है। इससे वे न केवल अपने शान विधियों के प्रति छात्र की प्राप्ता तथा अपने समुचित समझने में उनकी वैज्ञानिक रूचि को सुदृढ़ करके अपितु इस सम्बन्ध में स्वयं अपने प्राणिक अधिक प्रबुद्ध कर सकेंगे।

(ग) उपबोधन सेवा—यदि यह कहा जाय कि व्यक्ति के माता पिता उसके प्रथम मन एवं महत्वपूर्ण उपबोधक हैं तो प्रतिशयोक्ति नहीं होगी। आवश्यकता इस बात की है कि अपने अपने हाथ में व्यक्तिनिष्ठ अथवा अनुपगित उपबोधन को वे यथासम्भव शाला-उपराधक के वस्तुनिष्ठ एवं वार्षिक उपबोधन की विपरीतता में न जाने दें। हमारे शांति में—व्यक्ति के सम्बन्ध में अधिक सम्पन्न वध विश्व सशाय सचनान्ना के आधार पर प्रायोजित उपबोधन का धन क्वचन अवबोध प्राप्त करें अथिनु उनके साथ समरसता स्थापित कर सकें।

(घ) नियोजन सेवा—समस्त सूचनाओं के परिश्लेष में दिए हुए उपगान के आधार पर ही छात्र के शैक्षिक-व्यावसायिक नियोजन की आयोजना बनायी जाती है। इसमें पुनः अभिभावकों का समुचित सहयोग प्राप्त करके शाला निर्देशन कार्य को सफलता प्राप्त होती है। आयोजना के उपरान्त प्रथम नियोजन में अभिभावकों के सहयोग का आवश्यकता और भी अधिक होती है। नियोजन की स्थिति परिवर्तन की होती है—और किसी भी परिवर्तन में समझन अपेक्षित होता है। नवीन परिस्थितियों में व्यक्ति का समन्वित हो सकने के लिये सहायता देने में अभिभावकों का अवलम्ब निर्देशन कार्यक्रम के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है।

(ङ) अगवर्ती सेवा—जैसा कि कहा जा चुका है अगवर्ती सेवा का मुख्य कार्य भूल्याकन से सम्बन्धित होता है। इस भूल्याकन प्रक्रम में—चाहे वह छात्र प्रगति का हो अथवा शांति निर्देशन सेवान्ना का—अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका निर्विवाद है। पूर्य के शांति काम में प्रत्यक्ष रूप से अंतर्गत नहीं होने इसलिए उनके द्वारा किया हुआ निर्देशन-सेवा का महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक रूप से अधिक वस्तुनिष्ठ हो सकता है।

(५) समुदाय

शांति निर्देशन कार्यक्रम में स्थानीय समुदाय की सहायता भूमिकाओं की और हम स्थान स्थान पर स्केन कर चुके हैं। विशिष्ट विवेचन के रूप में निम्न दो विद्युत् के अंतर्गत इस भूमिका का स्पष्टीकरण किया जा सकता है।

(क) अतिरिक्त निर्देशन सेवा—हम यह चुके हैं कि शाला की निर्देशन सेवान्ना द्वारा ही छात्र की समस्त समस्याओं का हल नहीं शोधा जा सकता। इन समस्याओं के अन्तर्मुखी स्वरूप के कारण कुछ छात्र-व्यक्तिनिष्ठ एकी भी होती हैं जिन्हें शालातर विशेषणों के पास निर्देशित करना पड़ता है। इस प्रकार की अतिरिक्त कठिनायियों का उदाहरण हम अग्रिम में चुके हैं। यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि समुदाय के विविध क्षेत्रीय विशेषणों को ऐसे अवसरों पर छात्रों की समुचित सहायता करके निर्देशन कार्यक्रम में अपनी अतिरिक्त बगानियों की भूमिकाएँ निभाता पाएँ।

(ख) परिवारणीय सचना प्रसारण—इस सेवा के मागानुसार उसके अन्तर्गत सूचना-यामों की अद्यतन उपलब्धि परिवारणीय केन्द्रों से सञ्चारित तथा विश्लेषण

द्वारा ही हो सकती है। ज्ञाना निर्देशन कार्यक्रम में समुदाय पर्यावरणीय सूचना सेवा के संकलन तथा प्रसारण में निम्न दो प्रकार से सहायता कर सकता है।

एक तो ज्ञाना निर्देशन कार्यक्रम द्वारा प्रायोजित शैक्षिक-व्यावसायिक शैक्षिक-व्यावसायिक वार्तापत्र तथा व्यावसायिक दिवसों के आयोजन में समुदाय अपने विशेषण वार्तिकों की सेवाएँ—यूनितम धनराशि स्वयं-सेवा सहायता ग्राहि प्रदान करके उन्हें संपुष्टि प्रदान कर सकता है।

इसके अतिरिक्त छात्रों को शैक्षिक व्यावसायिक जीवन की प्रत्यक्ष परिस्थितियों से परिचित करने के लिये आवश्यक है कि ग्राहक संस्थाओं तथा व्यावसायिक औद्योगिक क्षेत्रों में छात्रों को कार्यस्थल विजिटम आयोजित की जावे। इन आयोजनों में आवश्यक सहयोग प्रदान करके हमें समुदाय पर्यावरणीय सूचना प्रसारण के महत्वपूर्ण निर्देशन कार्य में अपनी भूमिका का समुचित रूपण निर्वाह कर सकता है।

(५) छात्र

अंतिम किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निर्देशन कार्यक्रम में है—उन छात्रों की जिन्हें लिये निर्देशन कार्यक्रम की मूलतः आयोजना की जाती है।

ज्ञाना की भूमिका इस कार्यक्रम के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक उत्तम चुनी मिली रहती है। सर्वप्रथम तो वे अपने विषय में आवश्यक सूचनाएँ सही एवं निस्संकोच रूप से उपबोधन की देकर निर्देशन कार्यक्रम की नींव रखते हैं। इस वयक्तिक दृष्टि के विशेषण में भी यदि वे रुचि लें तो न केवल उनका स्वयं का अवबोधन वर्धित होता है अपितु उनमें एक वस्तुनिष्ठ परिपक्वता का विकास होता है। ज्ञाना निर्देशन कार्यक्रम की पर्यावरणीय सूचना आयोजन में वे विविध भाँति अपनी भूमिकाएँ अदा करते हैं—जिनके उदाहरण—उनकी वयक्तिक डायरियों आयुभाषण स्वयं-पुस्तक विनाश-व्यावसायिक वार्ता-पत्रों के वृत्त में हमें देख चुके हैं। शैक्षिक-व्यावसायिक क्षेत्रों के आयोजन का भी अग्रिम उत्तरदायित्व छात्रों पर ही होना चाहिये। तत्पश्चात् उपबोधन का समय एक द्वितीय प्रक्रियाओं में सम्पन्न होना है तथा छात्र के सहाय के बिना बहुत अग्रसर नहीं हो सकता।

अन्त में अपने स्वयं के विकास-समन्वयन का तथा अन्य विकास-सहायता हेतु आयोजित निर्देशन सेवाओं का सर्वम सही-सूचक स्वयं छात्रों द्वारा ही हो सकता है। इस वयक्तिक भूमिका को निभाने में वे वस्तुतः अपने विकास तथा समन्वयन की राह पर ही अधिक अग्रसर हो पाते हैं।

निर्देशन कार्यक्रम आयोजन के विविध सोपान

इस अध्याय में अभी तक हमने निर्देशन कार्यक्रम संगठित करने के सामान्य सिद्धांतों का निरूपण करते हुए विविध सम्भावित भागीदारों की भूमिकाएँ एवं उत्तरदायित्वों का अध्ययन किया। इस पृष्ठभूमि के परिप्रक्ष्य में निर्देशन-कार्यक्रम के व्यावहारिक आयोजन के कतिपय प्रवर्धात्मक चरणों का विवेचन क्षेत्रीय कार्य

कर्ताओं के लिये अथवा एक सहायक रहेगा। उन चरणों के प्रस्तुतीकरण के पूर्व हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यह प्रस्तुतीकरण केवल एक लचीली रूपरेखा के स्वरूप में ही दिया जा रहा है। प्रत्येक विद्यालय के लिये यह बाध्यनीय होगा कि उस निर्देशन-तंत्र के परिपक्व में स्थानीय आवश्यकताओं तथा साधनों के अनुरूप अपने काम चरणों की निश्चिन करें।

(१) निर्देशन आवश्यकताओं का सर्वेक्षण

यह तात्पर्य तर्कमान नश्य है कि किसी भी राष्ट्रीय कार्यक्रम के अथवा प्रारंभ की एक महती पूर्वनिश्चयता यह है कि उसके उद्देश्य काय विभाग आदि घाना का अनुमत आवश्यकताओं के आधार पर ही निश्चिन हानी चाहिए। तभी प्रध्यापक-वर्ग एवं स्थानीय समुदाय की भी उसमें आवश्यक सहयोग देने की रीति होगी तथा छात्रमणों की उत्तम बाध्यनीय आस्था उत्पन्न होगी। जो कि निर्देशन-कार्यक्रम में उत्तम छात्र केंद्रित होगा है इसलिए छात्रों की अनुभूत आवश्यकताओं का व्यवस्थित सर्वेक्षण ही निर्देशन कार्यक्रम का प्रथम चरण माना चाहिए।

इस प्रकार का सर्वेक्षण करने हेतु प्रयोग में आ सकने वाले साधनों का सक्षिप्त व विवेचन निम्न अनुक्रम में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) प्रमाणीकृत उपकरणों द्वारा

पश्चिम में ता इस प्रकार के सर्वेक्षणों के लिये प्रायः कुछ ऐसे प्रमाणीकृत उपकरण उपलब्ध होते हैं जिनके प्रयोग तथा अवन के आधार पर छात्रों की अनुभूत कठिनाइयों का सरलता के साथ निदान किया जा सकता है। भारत में हम प्रचार का प्राथमिक सर्वेक्षण करने योग्य सरल उपकरणों का प्रायः अभाव-ना है। किन्तु हम कतिपय ऐसे पश्चिमीय उपकरणों का यत्न मुम्भाव देना चाहते हैं जिनके गुणवत्तम दृष्टि से सस्वृति मुक्त हैं तथा जिनका प्रयोग आवश्यक मापधानीसहित आजादाहान होकर किया जा सकता है।

(ख) मूनी प्रालम्भ-चक्र-लिस्ट

इस सरल उपकरण में छात्र के विविध जीवन-क्षेत्रों में से सम्भावित कठिनाइयों की सूची संकलित करदा गई है। छात्र से अपेक्षित है कि वह इस सूची को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए अपने स्वयं पर लागू होने वाली कठिनाई का विज्ञापित करता जाये। प्रत्येक क्षेत्र में अंकित कठिनाइयों का स्वतंत्र एवं सामूहिक रूप से चर्चा करने का इस सूची के प्रारंभ में समुचित प्रावधान है। शाला के समस्त छात्रों द्वारा प्रकृत सूची-प्राहणा का विश्लेषण शाला में छात्रों द्वारा सामान्यतः अनुभूत समस्याओं का एक वास्तविक चित्र प्रस्तुत कर देता है जोकि निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन हेतु एक चर्चा निर्देशन-तंत्र प्रस्तुत करता है।

यदि मूनी प्रालम्भ-चक्र-लिस्ट में दो वर्ष समन्वयाएँ किसी शाला की किसी प्रकार अनुपयुक्त-प्रतीत हो तो इस सरल प्रारंभ का ध्यान में रखकर स्थानीय परिस्थितियों के सम्म में इस प्रकार की सूची बनाई जा सकती है।

(आ) वाक्य पूर्ति सूचिया

एन उपकरणों की गणना अथ प्रक्षेपण प्राविधिया व प्रतगत की जा सकती है। वाक्य के प्रारम्भ में प्रथम वाक्य प्रत के कुछ शब्द अथवा शब्द समूह द्वारा छात्रों का अपनी अनुमत भावनाओं के अनुसार वाक्य-पूर्ति करने को कहा जाता है। इस प्रकार करवाई गई वाक्य पूर्तिया व मूल मय अभिप्राय होता है कि वाक्य पूर्ति करने समय व्यक्ति धरायात ही अपनी प्रचलन भाषाभाषी भाषाभाषी भाषाभाषी भाषा का अपनी वाक्य रचना में प्रयोग कर देता है। पश्चिम में इस प्रकार का व सूचिया उपकरण है। या तो उदा का प्रयोग करके उनका विश्लेषण स्थानीय परिस्थितिया व अनुसार किया जा सकता है अथवा विद्यालयी आवश्यकताओं का अनुरूप है। इस प्रकार की सूचियों का निर्माण किया जा सकता है।

(ख) शिक्षक-निर्मित साधना का उपयोग

उक्त सुभाव व अनुवर्तन में ही एक महत्वपूर्ण विचार का कुछ अधिक विचार रूप से उभारना समीचीन होगा।

हमारे विचार में निर्देशन कार्यक्रम के किसी भी स्तर पर शिक्षक निर्मित साधनों का उपयोग असंभव साधनायक रहेगा कि इसमें उच्च कार्यक्रम को अपनी निजी वृत्ति मान कर उसमें प्रतरण रूप से प्रतगत हो सकने की सज्ज प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

सामान्यतः ये साधन प्रश्नावली समस्या सूची जीवन-वृत्त आख्यानात्मक चित्र आदि के रूप में हो सकते हैं। इनका विशाल विवेचन अथवा अध्यापन में विशिष्ट रूप में किया जायगा। यहाँ पर तो हम केवल इस तथ्य पर बल देना चाहते हैं कि निर्देशन कार्यक्रम की आयोजना करने के पूर्व छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं तथा अनुभवत समस्याओं का समुचित सर्वेक्षण करना एक वध प्राथमिक चरण होगा।

(२) स्थानीय साधनों का सर्वेक्षण एवं उपयोग

छात्र आवश्यकताओं का सर्वेक्षण कर चुकने पर निर्देशन कार्यक्रम आयोजन का द्वितीय चरण करना चाहिए। यह चरण उपर्युक्त साधन-सुविधाओं का मूल्यांकन निर्धारण। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि कितने अधिक साधन उपलब्ध हैं उतनी ही कार्यक्रम की सम्पन्नता में वृद्धि होगी। किन्तु यह आदर्श स्थिति सर्व सम्भव नहीं हो सकती। वस्तुतः आदर्श की पर्याय भी किसी स्थान की सामान्य साधन सम्पन्नता के सन्दर्भ में ही की जा सकता है। विशेषकर भारत की परिस्थिति में जहाँ एक शिक्षक के प्रतिवाप शिक्षण के लिए ही समुचित साधना का कमी है—एक निर्देशन कार्यक्रम के लिए साधना का शोध यत्नमय मनवाना प्रायः कठिन हो जाता है।

यहाँ पर हम इस बात पर बल देना चाहते हैं कि तत्काली निर्देशन कार्यक्रम से सम्बन्धित जितनी प्रवृत्तियाँ शाखा में सामान्यतः प्रचलित होती हैं उनका जला

जो वा परके उनकी समुदायिता का प्रयत्न किया जावे। हमारी इस मायता के पोषण म नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

(१) सचयात्मक लेख

कई वतमान शालाया म छात्रो के व्यक्तिक सचयात्मक लेख रचन का नियम-सा हो चला है। इही लेखो का व्यक्तिक अनुसूची सेवा क रूप म विकास किया जा सकता है।

(क) दल-व्यवस्था—बुद्ध शालाया म छात्रो के निम्ने दल-व्यवस्था की जाती है। इसका निर्माण प्राय कक्षा के आधार पर हा होला है। प्रत्येक कक्षा अथवा दल क लिये कक्षा का मुख्य अध्यापक उत्तरदायी होता है। अध्यापक क इग वत उत्तरदायित्व का सोमा विस्तार शसिक सेवा स बाहर छात्र के अय जावन आयायो म भी किया जा सकता है और नस प्रकार छात्र के सवागण विज्ञान एव समजन के प्रति भी अध्यापक को अधिक सबन्धशील बनाया जा सकता है। इस बाध्यनाय सबन्धशीलता का यदि शाला उपबोधक के निर्देशन-नेतृत्व स समचित तार तम्य बिठाय जा सके तो उसे इस वापशभ म अध्यापक का बाध्यनाय सहयाग प्राप्त करने म वन्त सहायता मिल सकती है। अपने दल कार्य म ही वह विविध निर्देशन उपकरणो का प्रयोग करके अपने काय को अधिक बनानिक बनाते हुए निर्देशन सवाया का नी पुष्टि प्रदान कर सकता है।

(ख) गतिचारीय सभाएँ— वतमान शालाया म आजकल यह प्रवृत्ति भी प्रचलित हो चली है कि सप्ताह म एक दिन—सामायन शनिवार—के अधिकांश समय का उपयोग कतिपय शान्तर प्रवृत्तिया म भा किया जाता है। एग शान्तर प्रवृत्तिया के स्वल्प निरूपण म भी निर्देशन-कार्यक्रम की आवश्यकताया का ध्यान रखा जा सकता है। उदाहरणाय नस समय आयोजित वार्ताओ के अतगत कतिपय शिक्षा शास्त्री अथवा औद्योगिक विशेषता की वार्ताया की व्यवस्था की जा सकता है। इस दिन क निय नियोजित शास्त्रिक कार्यक्रम म व्यावसायिक विषया पर विशयायिका क प्राय भाषणा की व्यवस्था करके उन्हें व्यवसाय ससार सम्बन्धी अद्यतन सूचनाएँ सनलित करने क लिय प्ररणा दी जा सकती है। शाला म स्थापित व्यवसाय-कलत्र के प्रतिवेदन अथवा उसके वापों के सम्बन्ध की प्रगती न्यादि द्वारा भा निर्देशन कार्यक्रम की पयावरणीय सूचना सेवा को पुष्टि प्राप्त हाती।

(ग) प्रात प्रायना सभा—कई विद्यालयो म प्रात प्रायना-सभा क कार्यक्रम क अतगत सूचना प्रसारण की प्रवृत्ति समाहित की जाती है। शाला के कुछ अधिन छात्र अद्यतन सूचनाएँ तयार करके उह समस्त शाला समूह क सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार की नया सूचनाया के साथ सप्ताह मे एकाप वार शनिक-व्यावसायिक पयावरण क सम्बन्ध म अद्यतन सूचना-सपन तथा प्रसारण एतु छात्रो को प्रोसाहित किया जा सकता है। इसस छात्र एव अध्यापक - दाना के हा निर्देशन-अभिविचार म सहायता मिलती।

(३) शिक्षक अभिभावक-सम्मेलन—इस प्रकार के सम्मेलन भी हमारी वर्तमान प्रगतिवादी शान्ताओं का नमी प्रवृत्तियों के अतगत भाग्य हैं। हमारे विचार में यह सम्मेलन निर्देशन कार्यक्रम का दृष्टि से एक स्वयं-अवसर है जबकि निर्देशन मन्त्रिभावकों की आवश्यक शक्ति सहयोग का अनायास ही प्राप्ति हो सकता है। यह एक सम्मेलन है जिसमें अभिभावक तथा शिक्षक छात्र की सम्भावित समस्याएँ तथा उनकी स्वयं की अनुभूत कठिनाइयाँ का सम्बन्ध में विचार विनिमय करते हैं तथा उनका निवारण का प्रयत्न कर सकते हैं। निर्देशन कार्यक्रम का प्रत्येक एक तात्कालिक सम्बन्ध इस प्रकार की कठिनाइयाँ का अवरोधन में होता है। इसके प्रतिरूप एक और मन्त्रवृत्त विषय जिस पर इस समय चर्चा की जा सकती है वह है छात्र की भविष्य में एक-यावसायिक आयोजनार्थी सम्भावनाएँ तथा उनका मूल निर्धारण। ससम्बन्ध छात्रों की वास्तविक तस्वीर एवं परिवारण के उपरान्त अवसरों का पारस्परिक मिश्रण द्वारा अभिभावकों को छात्रों के सही मागदर्शन के लिये प्रेरित किया जा सकता है—या यों कहें कि उन्हें इस विषय में अधिक प्रयत्न बनाकर उनकी भावी मन्त्रवासाधियों को अधिक वास्तविक एवं-यावहारिक स्वरूप दे सकते हैं।

(४) कक्षा-वाचन—नमी कक्षा-वाचन का भी निर्देशन आवश्यकताओं का निम्न मन्त्रवृत्त एवं पूर्ण के लिये समुचित उपयोग किया जा सकता है। नाचे कुछ इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं—जिनका माध्यम पर शाला—कामिक इस प्रकार की निर्देशन अभिविचारित कक्षा प्रक्रियाएँ और भी साव्य सकते हैं।

(अ) जीवन-वृत्तीय लेख

साहित्य एवं भाषा अध्यायन की कक्षाओं में प्रायः एक सामान्य आवश्यकता होती है निम्न-वृत्त। अध्यापक अपने-सुनना मन्त्र-चितन के आधार पर कुछ ऐसे विषय सोच सकते हैं जिनमें विद्यार्थी अपनी प्राज्ञाओं निराशाओं आकांक्षा आशाओं प्राप्ति या मानियों प्रादि से सम्बन्धित अपने भाव अभिव्यक्त कर सकें। यदि अध्यापक छात्र-सामरस्य उचितकोटि का है तो इस प्रकार के लेखों में छात्रों के प्रा-तिक व्यक्तित्व की कई महत्वपूर्ण मन्त्र-उप-वृत्त हो सकता है जोकि उनके विकास एवं सम-जन में सहायता देने हेतु मुरयवान सामग्री प्रदान करती हैं। इस प्रकार के लेखों की कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं—

- मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लिख।
- मेरी मन्त्र-वासाधिका।
- एक भन्नाशापूर्ण अनुभूति।
- मैं क्या बनना चाहूंगा।
- यदि मैं व्यवसायाध्यक्ष होता।
- यदि मैं शिक्षा-मन्त्री होता।

—यदि मैं प्रधानाध्यापक होता :

(आ) सामाजिक विज्ञान के विषय

सामाजिक विज्ञान में सम्बन्धित विषयों के अध्ययन अध्यापन में कर्म पर्याप्त रणनीय तथ्या का समावेश बड़ी स्वाभाविकता से किया जा सकता है। स्थानीय भौगोलिक ऐतिहासिक वास्तविकताओं के सम्बन्ध में जीवन एवं कार्य परिस्थितियाँ तात्कालिक प्रायोगिक व्यवस्थाएँ एवं सम्भावनाएँ विविध व्यवस्थाएँ के आर्थिक सामाजिक स्तर आदि के साथ-साथ ऐसे महत्त्वपूर्ण तान बिंदु हैं जिनका प्रेषण इतिहास भूगोल सामाजिक तान आदि के अध्यापन में छात्रों तक किया जा सकता है।

(इ) कार्मिका के तत्परता-स्तर का निर्माण

निर्देशन-कार्यक्रम के संगठन-सिद्धांत में हमने कार्मिकों के तत्परता स्तर का एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया था। तदनुसार इस वाछनीय स्तर तक कार्मिकों को पहुँचाना निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन का एक प्रमुख चरण होगा। इन कार्मिकों में वे सभी व्यक्ति समाहित हैं जिनकी विशिष्ट निर्देशन भूमिकाओं का चलन हम अध्यापक के पूर्वाज्ञ में कर चुके हैं। इन सभी कार्मिकों को अपने विशिष्ट उत्तरदायित्वों के सन्दर्भ में निर्देशन अभिविद्यास प्रदान करना एक सफल एवं सक्षम निर्देशन कार्यक्रम की महती पूर्वावश्यकता होती है।

यह अभिविद्यास बठका वार्तालाप कार्य गोष्ठियाँ स्थानीय धर्मशास्त्र साहित्य प्रसारण आदि के माध्यम से दिया जा सकता है। अगले अध्यापक ने इन सभी विद्यार्थियों के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत चर्चा पाई जायेगी।

जिस मुख्य कार्य चरण के सन्दर्भ में ये बातें कही जा रही हैं वह हैं कार्मिकों का तत्परता स्तर। बिना उनकी कार्य-तत्परता के निर्देशन कार्यक्रम नहीं चल सकता। उपवाचक को उनके सन्धि सहयोग के बिना एक पद भी अग्रसर करना कठिन है। और बिना कार्य-तत्परता के यह वाछनीय सहयोग केवल एक आदेश आवश्यकता की पारना के स्तर तक ही साधित रह जायगा।

(४) समितियों का निर्माण

छात्रों के बहुमुखी समन्वय एवं सहायीय विकास में सम्बन्धित होने के कारण निर्देशन सेवाएँ एक सञ्चालित कार्य-व्यवस्था हैं। इन आवश्यक सञ्चालनता को साधन लिए हुए भी सत्र सत्र एवं सञ्चालन सञ्चालन का एक उपाय यह हो सकता है कि इसके अन्तर्गत अपेक्षित विविध प्रक्रियाओं के लिए विभिन्न समितियों का निर्माण कर दिया जाय। उदाहरणार्थ कुछ अध्यापकों को छात्रों की व्यक्तिगत सूचनाओं के जल्दी से उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है तथा कुछ अन्य कार्मिकों को पर्यावरणीय सूचनाओं के सन्वयन-व्यवस्थापन एवं प्रसारण विषयक कक्षाध्यक्ष दिए जा सकते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार व्यक्तिगत तथा सामूहिक उत्तरदायित्वों के निर्धारण तथा इनसे सम्बन्धित समितियों का निर्माण में कार्मिकों की व्यक्तिगत रुचियों वांछनाओं तथा अनुसन्धानों का पूरा ध्यान रखा जाना

चाहिए। वस्तुतः आत्मा स्थिति नो यह होगी कि प्रस्तावित निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उसके अंतर्गत आयोजित कार्यों से अभिव्यक्तित हो जान के उपरांत कार्मिक स्वयं अपने दक्षिण क्षेत्र से सम्बन्धित उत्तरदायित्व के लिए स्वयं आग्रह करे। हम प्रचार के पूर्व आयोजनाओं के आधार पर किया हुआ उत्तरदायित्व वितरण सामान्यतः अधिक सक्षम एवं प्रभावशाली होता है।

सक्षेप में यह एक सामान्य निर्देशन कार्यक्रम संयोजित करने के पूर्व चरणा की एक संक्षिप्त रूपरेखा। विशेषकर वर्तमान भारतीय परिस्थितियाँ के अंतर्गत एक सम्भावित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम के स्वरूप तथा उसका आयोजन चरणा का विशद विवेचन पुस्तक के अंतिम अध्याय में किया जाएगा।

उपसंहारात्मक बचन

प्रस्तुत अध्याय का मूल उद्देश्य था एक व्यावहारिक निर्देशन-कार्यक्रम के प्रत्यक्ष संगठन के विषय में वाचकों को सामान्यतः अभिव्यक्तित करना। तदनुसार सबप्रथम संगठन के कतिपय मूलभूत सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवेचन विषय की एक पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में ही हमने विविध निर्देशन-कार्मिकों की विशिष्ट कार्य भूमिकाओं का विशद अवबोध प्राप्त करने का प्रयास किया। अध्याय के अंतिम अंश में एक निर्देशन कार्यक्रम को प्रचारार्थी रूप से आयोजित कराने हेतु आवश्यक कतिपय कार्य चरणा का संक्षिप्त निरूपण किया।

अवतरण के प्रस्तुत अध्यायों में से उद्भूत विविध महत्त्वपूर्ण विदुषों का विस्तृत विवेचन अगले अध्यायों में किया जाएगा।

व्यक्ति के अध्ययन हेतु प्रयुक्त प्रविधियाँ एवं साधन

[प्रस्तावना—व्यक्ति के अध्ययन का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग—व्यक्ति अध्ययन सम्बन्धी कुछ प्रमुख सिद्धान्त—(१) विविधता (२) व्यापकता (३) विश्वसनीयता व्यक्तिगत सूचनाओं के स्रोत व्यक्तिगत सूचनाओं के क्षम व्यक्तिगत अध्ययन हेतु प्रयुक्त प्रविधियाँ—

(१) प्रेक्षण—(क) यथार्थिक प्रेक्षण के लक्षण (ख) उद्देश्य निर्धारण (घ) याचना (ङ) परिणामों का अभिलेखन (ई) उपयुक्त नियंत्रण (ए) प्रश्नों का उपयोग (ग) वाक्य का कला में प्रेक्षण (घ) बालक का पाठ्यसह गापी प्रवृत्तियाँ में प्रेक्षण (ङ) वाक्य का अर्थ परिवर्तनियों में प्रेक्षण (च) प्रेक्षण के प्रकार (छ) नियमित एवं अनियमित प्रेक्षण (झ) भाग ग्राही एवं भाग अग्राही प्रेक्षण (ज) प्रेक्षण प्रविधि की सीमाएँ (झ) प्रेक्षण क अवसर की अनिश्चितता, (झ) प्रत्यक्ष व्यवहार का प्रयोग सम्भव नहीं (इ) प्रेक्षक क पूर्वापेक्षों का प्रभाव (ई) प्रेक्षक का प्रतिष्ठा ।

(२) साक्षात्कार—(क) साक्षात्कार के स्तर (ख) गृहत्वपूर्ण सूचना प्राप्त होने का सम्भावना (घ) साक्षात्कार से प्राप्त सूचनाओं का महत्व (ङ) सूचनाओं के स्पष्टीकरण की सम्भावना (ङ) सूचनाओं की पृष्ठभूमि का पता लगाना (उ) अर्थ प्रविधियों एवं साधनों में प्राप्त सूचनाओं की संपुष्टि एवं सत्यापन (घ) साक्षात्कार की सीमाएँ (ङ) व्यक्तिविष्ट प्रविधि (घा) प्रशिक्षण की आवश्यकता (ङ) समय एवं अर्थ का अधिक उपयोग (ग) साक्षात्कार क उपयोग (ङ) व्यक्ति की भविष्य योजनाएँ एवं आकांक्षा स्तर (घा) व्यक्ति की अभिवृत्त प्रभिरूपिता (ङ) व्यक्ति के शीघ्रगुण (ङ) मानसिक दृष्टि एवं समन्वयन समस्याएँ (उ) पारिवारिक सूचनाएँ (ऊ) शालीय जीवन सम्बन्धी सूचनाएँ (ए) छात्र के सम आधु साथी (घ) साक्षात्कार के प्रकार (ङ) संरचित साक्षात्कार (घा) अ-संरचित साक्षात्कार (ङ) साक्षात्कार के कुछ प्रमुख सिद्धान्त—(अ) साक्षात्कृत से साक्षात्कृत (घा) सूचनाओं का गोपनीयता (ङ) साक्षात्कार का वातावरण (ई) साक्षात्कार क परिणामों का

अभिव्यक्त (उ) साक्षात्कार का समापन (घ) साक्षात्कार वर्त्ता व बुद्ध साक्ष्याय गुण ।

() समाजमिति— (क) समाजमिति स्तर का अध्ययन (ख) नात्रिय एवाकी व तिरस्त्रुत गन्स्य (ग) समाज भावन ।

धर्मविक्रम अध्ययन के साधन— (१) मानवाकृत साधन (क) विविध एवं निष्पादन साधन । (ख) विविध साधन (१) विविध साधना का उपयोग (२) विविध साधना व प्रकार परीक्षण — (१) वृद्धि परीक्षण (२) अभिधमता परीक्षण (३) निदानात्मक परीक्षण (४) उपनयन परीक्षण मूत्रियाँ विद्यावन मूत्रियाँ प्रणेयी प्रविधिषाँ - रोगा परीक्षण टी ए टी परीक्षण अथ प्रणेया विधिषाँ । (घा) निष्पादन साधन (१) बुद्धिभावन हेतु प्रयुक्त निष्पादन परीक्षण (२) अभिधमता मापन हेतु प्रयुक्त निष्पादन परीक्षण ।

(ख) धर्मविक्रम एवं सामूहिक मापन (घ) धर्मविक्रम साधन (घा) सामूहिक साधन (२) अमानकीकृत अपवा निष्क निमित्त साधन — (क) निर्धारण मापना (ख) निर्धारण मापनी के नाभ (घा) निर्धारण मापनी व निर्माण एवं उपयोग सम्बन्धी बुद्ध प्रमथ सावधानियाँ (ख) उपाख्यान वृत्त (घ) उपाख्यान वृत्त का महत्व (घा) उपाख्यानवृत्त की आवश्यकता () उपाख्यानवृत्त म रिन घटनाघ्रा का समावेश किया जाय ।

(३) आत्म विवरणात्मक साधन - (क) आत्मकथा (ख) घटना विवरण (ग) प्रश्नावलियाँ ।

(४) धर्मविक्रम सूचना सकलन हेतु प्रयुक्त साधनों के उपयोग व प्रमुख सिद्धान्त— (क) मानवाकृत साधना व उपयोग व सिद्धान्त (ख) मानवाकरण सम्बन्धी सूचनाएँ (घा) साधन की उपयुक्तता (इ) साधन स प्रा न दत्त (ई) साधन के उपयोग स पूर्व उमसे पूर्ण परिचित होना (उ) प्रशासन के समय सावधानियाँ (ऊ) परीक्षण के परिणाम (ए) मानकीकृत साधन ही एकमेव साधन ननी (ए) भारत म परीक्षण के प्रयोग की विषय सावधानियाँ (ख) म मानकीकृत साधना के उपयोग के सिद्धान्त—(घ) निर्माण के प्रमुख साधन (घा) उपयोग स सम्बन्धित सावधानियाँ भारत म उपलब्ध पराक्षरों के बुद्ध उदाहरण

वृद्धि परीक्षण व्यक्तिव परीक्षण अभिरुचि परीक्षण अभिधमता परीक्षण । उपमहारात्मक कथन ?

निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य है व्यक्ति म अपनी समस्याएँ स्वतन्त्रता स मूल भाव की क्षमता उपन करना अथवा विविध पक्षीय जीवन सम्बन्धी विभिन्न निश्चय स्वयं वृद्धिमता पूरा एवं स्वतन्त्रता स ले सकने की क्षमता उत्पन्न करना । यह तभी सम्भव है सकता है जब एक धार व्यक्ति को अपने सम्बन्ध म अग्रिक स प्रथिव जानकारी हो तथा दूसरी ओर जिस वातावरण स सम्बन्धित समस्या उद्भूत

हई है उमका पूरा परिचय हा। यदि व्यक्ति अपनी विशेषताओं एवं सीमितताओं को ध्यान में रखते हुए कोई नियम बनाता है अथवा कोई योजना बनाता है तो वह अधिक वास्तववादी होगा। अनेक बार माता बालक स्वयं अथवा उनके माता पिता बालक की योग्यताओं अथवा गुणों की वस्तुस्थिति को समझ बिना या फिर अथवा यावत्तायिक अथवा सम्बन्धी नियम बनाते हैं और फलस्वरूप बालक एवं अभिभावक दोनों को अस्वाभाविकता का मुह देखना पड़ता है। विज्ञान विषय लेना व लिंग तो बालक में प्रयत्न विद्यार्थी आतुर होता है चाहे उसमें अस्वाभाविकताएं अथवा न हों। अनेक बार तो समझते हैं कि विद्यार्थी अथवा माता पिता अथवा शिक्षक जानकारी के अभाव में ही अस्वाभाविकताएं उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति के सम्बन्ध की जानकारी के आधार पर उचित नियम बनाकर व्यक्ति को तो सतोष प्राप्त होगा ही साथ साथ राष्ट्रीय मानवीय ऊर्जा का भी संरक्षण सम्भव हो सकेगा।

व्यक्ति अध्ययन का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग

यदि व्यक्ति अध्ययन के फलस्वरूप अस्वाभाविकताओं से व्यक्ति सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह किया जाय तो उसके उपयोग अनेक परिस्थितियों में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया जा सकता है। यद्यपि अपने मूलत्व का कारण अध्याय ४ में विस्तृत रूप से दिया गया है फिर भी इस अध्याय के अन्त में कुछ प्रमुख तथ्यों की पुनरावृत्ति करवाचित यथोचित सिद्ध हो सकती है। जहां उपरोक्त अनुच्छेद में कहा गया है कि बालक को जीवन की अस्वाभाविकताओं पर परिस्थितियों में बुद्धिमत्तापूर्ण एवं स्वतंत्र नियम बनाने में उसके सम्बन्ध की जानकारी अस्वाभाविक होती है। उसके अनिश्चित शिक्षकों के लिए भी यह सूचनाएं अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं। यदि शिक्षक अपने छात्रों की विशेषताओं सीमितताओं को पूर्णरूप से समझें तो वह अध्ययन अध्यापन परिस्थितियों का निर्माण अधिक कुशलता से कर सकता है। साथ ही वह कक्षा में बालकों द्वारा निर्मित समस्याओं को भी अधिक अच्छे ढंग से सुलझा सकता है। पाठ्यक्रम निर्माण कक्षाओं एवं बालक प्रशासकों के लिए भी इन सूचनाओं का अत्यधिक महत्त्व है। माता पिताओं एवं अभिभावकों के लिए तो अपने बच्चों की विशेषताओं एवं सामान्यता का जानना अनेक परिस्थितियों में उपयुक्त नियम बनाने के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। उपयोग में सदा यह तो आधार ही व्यक्ति के सम्बन्ध का पूर्ण विश्वसनाय अस्वाभाविकता से एकत्रित वा हई सूचनाएं हैं। बिना पर्याप्त सूचनाओं के उपयोग अस्वाभाविकता को किसी समस्या के हल के रूप में सहायता ही नहीं प्रदान कर सकता। व्यक्ति सम्बन्धी सूचनाओं के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए निर्देशन सेवाओं में से एक सम्पूर्ण अस्वाभाविकता सूचना अस्वाभाविकता के बिना अध्यापन के अभाव में व्यक्तिगत सम्बन्धित अस्वाभाविकता सूचनाओं का सफल विश्लेषण अस्वाभाविकता निर्धारण नियमन एवं उपयोग विभिन्न ढंग में किया जाता है।

यक्ति अभ्ययन सम्बन्धी कुछ प्रमुख सिद्धांत

(१) विविधता—व्यक्ति का जीवन इतना जटिल है कि उसके जीवन का किसी भी क्षेत्र की समस्या का सही हल तबतक नहीं ढूँढा जा सकता जबतक उसके जीवन के विविध पक्ष सम्बन्धी पूर्ण जानकारी हम न हो। अतः व्यक्ति का बहुप्रायामो व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना निर्देशन का प्रथम कदम लिए आवश्यक हो जाता है। विभिन्न क्षेत्रों के घनिष्ठ अनुसन्धानों को चिकित्साशास्त्र का उदाहरण स्पष्ट किया जा सकता है। प्रत्येक बार रोगी को मित्रता है कि रोगी का पेट का विकार का निदान एवं उपचार के लिए चिकित्सक रक्त मूत्र मूत्र आदि का परीक्षण करता है। एक सामान्य व्यक्ति के लिए शायद इतने परीक्षण अनावश्यक लगें किन्तु चिकित्सक यह जानता है कि राग का उदरण एक क्षेत्र में हो सकता है तथा कारण शरीर का किसी अन्य क्षेत्र में। अतः राग का सम्बन्धित निदान हेतु शरीर सम्बन्धी अनेक सैद्धांतिक सूचनाएँ एकत्रित करना उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(२) व्यापकता—व्यापकता से हमारा तात्पर्य यह है कि व्यक्ति का सम्बन्ध का सूचनाएँ जितनी जल्दी अधि का होगी उतनी ही उनमें अधि विश्वसनीयता होगी एवं उन सूचनाओं की उपयोगिता भी बढ़ जावगी। पुनः चिकित्साशास्त्र के ही उदाहरण को लें तो रोगी को स्पष्ट करना चाहेंगे। एक चिकित्सक रोगी के रोग का निदान करने से पूर्व उसमें उमर राग का इतिहास पूछता है। तात्का जिन जानकारी का आधार पर हो सकता है कि व्यक्ति पूर्ण निष्कर्ष निकाला जाय। वस्तु भी यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि सामित तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण तथ्यों पर आधारित निष्कर्षों से विश्वसनीय होता है। व्यक्ति के किसी एक व्यवहार के आधार पर उसके आचरणों का अनुमान लगा देना न तो उचित होगा न ही विश्वसनीय। जबतक व्यक्ति का लम्बे समय तक अभ्ययन कर उसके सम्बन्ध की पूर्ण सूचनाएँ हम एकत्रित न कर लें तबतक हम कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

(३) विश्वसनीयता—व्यक्ति सम्बन्धी सूचनाओं को एकत्रित करने का एक सिद्धान्त यह भी है कि जो भी सूचनाएँ हम एकत्रित कर व विश्वसनीय हो। इस अध्याय में हम वैयक्तिक सूचनाओं को एकत्रित करने की विभिन्न प्रविधियाँ एवं साधनों की चर्चा करेंगे। परन्तु सूचनाएँ एकत्रित करने वाले व्यक्ति को प्राविधि अथवा साधन का चयन करते समय यह देखना चाहिए कि विभिन्न परिस्थितियों में कौन सा साधन अथवा प्रविधि अधिक विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने में सहायक हो सकती है। एक परिस्थिति में तो साधन या प्रविधि उपादेय सिद्ध हो सकती है शायद दूसरी परिस्थिति में उसकी उतनी उपादेयता न हो। दूसरा तथ्य यह ध्यान में रखना चाहिए कि एक ही चोत पर आधारित सूचना का स्थान पर यदि

हम विविध स्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त कर उनका संकलन विनियमों पर ही शायद हम अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

व्यक्तिक सूचनाओं के स्रोत

निर्देशन वाक्यकर्ता का व्यक्तिक सूचनाओं को अधिक से अधिक विश्वसनीय बनाने हेतु किसी एक स्रोत से प्राप्त सूचनाओं पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। जिनसे अधिक से अधिक स्रोतों से सूचनाओं का संकलन किया जायेगा सूचनाओं का सत्यता उतना ही अधिक सारगर्भित हो सकेगा। उन कथनों के सन्दर्भ में ही यहाँ व्यक्तिक सूचनाओं के कौन-कौन से स्रोत हैं, संकलन हेतु इनका चयन करना सम्भव नहीं होगा। सबसे प्रथम तो जिन व्यक्तियों से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित की जा रही हैं वह स्वयं सूचनाओं का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उन व्यक्तियों के सहयोग बिना व्यक्तिक सूचनाओं का संकलन अपूर्ण हो रहा है। जैसा कि अध्याय ४ में लिखा जा चुका है कि ‘यक्ति के प्राथमिक अभिभावक दत्त से लेकर उसकी भविष्य योजनाओं सम्बन्धी प्रत्येक सूचना में हम उस व्यक्ति के सहयोग का आवश्यकता पड़ती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति सम्बन्धी सूचनाएँ केवल उसी व्यक्ति से ही प्राप्त हो सकती हैं। बल्कि यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उन सूचनाओं की ‘यक्तिनिष्ठता को कम करने हेतु यह अनिवार्य माना जाता है कि हम व्यक्ति से प्राप्त सूचनाओं का संपुष्टिकरण एवं सत्यापन अन्य स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं से करें। उन अन्य स्रोतों में व्यक्ति के अभिभावक अथवा घर के अन्य सदस्य समझायायुक्त प्रख्यापक प्रधानाचार्य उच्चशिक्षण हैं। अध्यापकों से छात्रों की समझन समझाओं शारीरिक उपलब्धियाँ अनिश्चितता सामाजिक गुणा अध्ययन आदता अथवा अन्य आदता समझायायुक्तियाँ व अन्तर्मन्त्रों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। अभिभावकों के शालक की आदता अभिश्चितियों घर के अन्य सदस्यों के साथ समझन अथवा अन्य सामाजिक आर्थिक दत्त सामग्री प्राप्त की जा सकता है। बालक को किसी भी समस्या के हल हेतु उसके घर की पृष्ठभूमि का ज्ञानक हम पूर्णतः नहीं होगा हम समस्या का समुचित हल ढूँढने में उसे सह्यता प्रदान नहीं कर सकते। बालक के मित्रों से भी हम उसके विभिन्न गुणा उसके समाजमतिक स्तर वृद्धि व घटि का पता लगा सकते हैं। साथ ही यह भी जान हो सकता है कि बालक किस प्रकार के छात्र में रहता है। बहन का तात्पर्य यह है कि उपरोक्त वर्णित विभिन्न स्रोतों से हम व्यक्ति के सम्बन्ध की सम्पन्न दत्त सामग्री प्राप्त हो सकता है। और अधिक से अधिक स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर हम उन सूचनाओं की विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता को जाँच सकते हैं।

व्यक्तिक सूचनाओं के क्षेत्र—

निर्देशन वाक्यकर्ता को सामान्यतया व्यक्ति से सम्बन्धित जिन क्षेत्रों की जानकारी

कारी उपयोग सिद्ध हो सकती है इसकी विषय विवचना अनुप ग्रन्थ में की जा चुकी है वनम यत्ति के अभिनिर्धारण दत्त शारीरिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी दत्त शारीरिक उपनिर्देशों में मनाव्यक्तिक दत्त आकाश भविष्य योजनाएँ आदि प्रमुख हैं। इन विभिन्न प्रकार की दत्त सामग्रियों को एकत्रित करने हेतु निर्देशन कार्यकर्ता को विभिन्न प्रकार की प्रविधियाँ एवं साधना का उपयोग करना पड़ता है जिनका बखान आगे के अध्याय में किया जावेगा। इन प्रविधियों का बखान बखान मात्र ही नहीं अपितु इनका उपयोग सम्बन्धी सामान्य सिद्धांतों का भी यथाम्थान प्रतिपादन किया जायेगा। अतः भारतीय निर्देशन कार्यकर्ताओं की जानकारी हेतु भारत में उपरोक्त कुछ साधना का भी उल्लेख किया जायेगा।

व्यक्तिव्ययन हेतु प्रयुक्त प्रविधियाँ

यत्ति में सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करने की तीन प्रमुख प्रविधियों की हम यहाँ पर चर्चा करेंगे जो हैं—प्रेरण, सामाजिक एवं समाजमिति।

(१) प्रेरण—प्रेरण का उपयोग वस तो प्रत्येक व्यक्ति दैनिक अपने जीवन में करता है। हम जिस सुन्दर दृश्य दुःखटना मनुष्य पर हो रहे भगद यत्ति अन्तर्परिस्थितियों का प्रेरण करते हैं। समाज प्रसार हम जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं उनकी आत्मा रचिया गुण एवं कमियाँ का अनुमान अपने प्रेरणा के आधार पर लगाते हैं। प्रेरण के आधार पर सूचनाओं का संचयन करना यह कोई नई विधि नहीं है। वनानिक प्रेरण एवं सामाजिक प्रेरण में अन्तर यह है कि वनानिक प्रेरण अधिक सोद्देश्य सुनिश्चित एवं सुयवस्थित ढंग से किया जाता है तथा प्रेरण का प्रभाव प्रशिक्षित होता है। जबकि सामाजिक प्रेरणों में इतनी सुनियोजितता नहीं होती। प्रेरण को वनानिक बनाने हेतु हम निम्न सावधानियाँ बनानी चाहिए।

(क) वनानिक प्रेरण के लक्षण

(अ) उद्देश्य निर्धारण—प्रेरण करने में पूर्व हम यह निर्धारित कर लेना चाहिये कि हम व्यक्ति के व्यक्तित्व के कौनसे पक्ष का प्रेरण करने जा रहे हैं। यदि प्रेरण के उद्देश्य स्पष्ट न होंगे तो हम एसी अनावश्यक दत्त सामग्री एकत्रित करने में हमारा समय नष्ट करेंगे जोकि शायद हमारे नियम सहयोगी सिद्ध न हो। यदि हम व्यक्तियों की रचियाँ के अध्ययन हेतु प्रेरण प्रविधि का उपयोग करना है और हम उनके रण रूप बचने के ढंग पोशाक आदि सम्बन्धी प्रेरणों में हमारा समय नष्ट करेंगे तो वह नितात्मक निरर्थक होगा।

(आ) योजना—प्रेरण करने से पूर्व प्रेरण की सम्पूर्ण योजना बना लेनी चाहिये। वस समय बिन परिस्थितियों में कितनी अवधि के नियम कौन-कौन से व्यवहारों को दखना है इसकी यदि हमारे मस्तिष्क में स्पष्ट रूपरेखा होगी तो हम प्रेरण से महत्त्वपूर्ण दत्त एकत्रित कर सकेंगे। आकस्मिक प्रेरणों से महत्त्वपूर्ण एवं

हमारे उद्देश्य से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त होने का सम्भावनाएँ कम होना है। और प्रति एक प्रश्न से सूचनाएँ प्राप्त होनी चाहिए ताकि उनकी विश्वसनीयता एवं विश्वसनीयता पर संशय न रहता है। यदि सुनिश्चित रूप से प्रश्न पूछा गया तो हम निर्धारित पन्ना को अधिक गहराई से देखने के लिए तैयार रहेंगे और अधिक सार्थक परिणाम प्राप्त कर सकेंगे।

(इ) परिणामों का अभिलेखन—प्रश्न के परिणामों का अभिलेखन तुल्य एवं योजनारहित विधि से हो जाना चाहिए। प्रश्न के परिणामों का अभिलेखन किस क्रिया जायगी इसके सम्बन्ध में यदि पूर्व विचार नहीं किया गया तो यह सम्भव हो सकता है कि प्रश्न के समय पर महत्वपूर्ण विन्दुओं का अभिलेखन करना भूल जाय। प्रश्न एवं अभिलेखन में कम से कम समयांतर होना चाहिए अन्यथा प्रश्न के परिणामों की विश्वसनीयता—तथ्या में अन्तर पता चलने का सम्भावना के कारण घट जाती है।

(ई) उपयोग नियंत्रण—प्रश्न के परिणामों की विश्वसनीयता एवं वास्तविकता को बताने हेतु कुछ नियंत्रणों का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ प्रश्न के आधार पर प्राप्त परिणामों का संपुष्टिकरण घट्य छोटा से प्राप्त सूचनाओं से कर लेना चाहिए। फिर प्रश्न के परिणामों का विश्वसनीयता एवं वास्तविकता पर ध्यान देना चाहिए कि प्रश्न एक कुशल एवं प्रतिष्ठित प्रश्न है या नहीं यथा प्रश्न के तटस्थता के लिए प्रश्न के प्रश्नों का अवलोकन कर सकता है या नहीं। पूर्वाग्रहों पर आधारित प्रश्न वास्तविक अवलोकन के आधार पर बन सकता है।

(ख) प्रश्न का उपयोग—जब हम व्यक्ति के विभिन्न व्यवहारों सम्बन्धी सूचनाएँ एकत्रित करनी होती हैं तो हम प्रश्न प्रविधि का उपयोग कर सकते हैं। निर्देशन कार्यकर्ता व्यक्ति सम्बन्धी अनेक सूचनाएँ प्रश्न आधार पर प्राप्त कर सकता है। आवश्यक नहीं कि प्रश्न के लिए बड़े स्वयं ही बालक का प्रयोग करे। बालक से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों के प्रश्नों के आधार पर भी बालक से सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

(ग) बालक का कक्षा में प्रयोग—कक्षा में बालक के व्यवहार का प्रश्न करके प्रश्न यथा निर्देशन कार्यकर्ता बालक से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाएँ एकत्रित कर सकता है। उदाहरणार्थ बालक को विषय के प्रति विज्ञान एवं एकी अव्यापक छात्र छात्र-छात्र अन्तर्मन्यत्र बालक का सृजनमय शक्ति बालक को अन्तर्मुखता या अन्तर्मुखता का पता बालक का कक्षा में प्रश्न कर लगाया जा सकता है।

(घ) बालक का पाठ्य सहयोगी प्रवृत्तियों में प्रयोग—इन प्रवृत्तियों में जब बालक का प्रयोग करने हैं तब उम्मीद है कि संपूर्ण समझन प्रत्येक के प्रश्नों सृजनमय शक्ति या पता आसानी से कर सकता है। अनेक प्रश्नों के बाहर प्रश्न के लिए जब बालक को न जानें तब हम उनका अन्तर्मुखता हेतु

समतायाः सामितयायाः का पना चरना है क्योंकि ऐसे अवसरों पर बालक अधिक स्वाभाविक व्यवहार करत है। शायद उन गुण दोषों का पना हम अधिक धीपचा रिक्त सापनो म नी नग सकता। एमी प्रकार स बालक को खेन क मदान पर जब हम देखते है या निविरा म उमका प्रेरण करते हैं तब उमक अनक मण गुण हमारे सामने आ जाते है। शायद एमीनिण अन्धी पाठशालाया म शाना के सीमित वातावरण क प्रतिरिक्त भी बालक मे मणक पर प्राग्रह रण्ता है। कोर आरवय महा नि जिन शानाया म भ्रमण निविरा याथाया आनि पर वन णिया जाता है वहा क शिकक अपने छाया की क्षमताया-नीमितताया को अधिक निरुट ग पन्चा नत है। उन अनौपचािक परिस्थितिया म ही बालक के सहज व्यवहार का प्रेणन कर हम उसकी आण्ठा एव चारित्रिक गुणों का सनी मूयावन कर सने है।

(इ) बालक का अन्य परिस्थितियों में प्रक्षण—शारीर्य जीवन मे सम्प्र धित उपरात को महत्वपूर्ण परिस्थितिया क प्रतिरिक्त भी एमी अनक परिस्थितिया हो सकता है जिनमे बालक का प्रेक्षण किया जा सकता है और उममे सम्बधित मन्वपूण सूचनाया का मखलन किया जा सकता है। उदाहरणाय बालक की अध्ययन आदता क सम्प्र ध की जानकारी प्राप्त करन हेतु जब बालक अध्ययन करता है या गृहकाय करता है अथवा प्रयोगशाला म काय करता है तब एमी परिस्थितिया म र्पा प्रेक्षण किया जाय तो हम महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती है।

एमी प्रकार बालक का यदि अपने समस्रायु माधिया के बीच प्रेणन किया जाय तो हम उमके अनक सामाजिक गुणा का पना चरता है। एसी प्रकार बालक क उमके माता पिता अथवा अन्य पारिवारिक मन्व्या क साथ कम मन्व्य है इसका पता हम बालक क घरेनु जीवन का प्रेणन करने पर ही नग सकता है। निर्देशन कायकर्ता को ता एमी अनक समस्याया का सामना करना पण्ता है जिनमे बालक क पारिवारिक जावन का अध्ययन बिना बिना समस्या का उचित निदान को नर्ण मिन सकता।

(ग) प्रक्षण क प्रकार

(अ) नियन्त्रित एव अनियन्त्रित प्रक्षण—प्रेणन का उपयोग जताकि उप युक्त अनुष्ठेण म कहा गया है व्यक्ति क विभिन्न व्यवहारा का मन्वयन करने हेतु किया जाता है। यन् अध्ययन दो प्रकार म किया जा सकता है एक तो जिन परि स्थितिया म व्यवहार घटित होता है उही स्वाभाविक परिस्थितियों म व्यवहार का अध्ययन किया जाय। एस प्रकार क प्रेणन को अनियन्त्रित प्रक्षण कहत हैं। दूसरा विधि यन् हा सकती है कि हम जिन परिस्थितिया म व्यक्ति का व्यवहार खना चान्ते है पहन उन परिस्थितिया का यथावत निमाण किया जाय और उन परि स्थितिया म विषया का रख कर उसके व्यवहार का प्रेणन किया जाय। मनावना

निम्न प्रयोगशालाया म अधिकतर दूसरे प्रकार के प्रेक्षणा का प्रयोग किया जाता है । पहल प्रयोगशाला म प्रयोग म निर्धारित परिस्थितिया का ठीक निर्माण एव नियन्त्रण किया जाता है और फिर उन परिस्थितिया म विषयो का प्राण दिया जाता है । चूना पर अम्लक प्रयोग करके उनका व्यवहार का प्रेक्षण करना मनोवैज्ञानिक के लिए एक सामान्य बात है । य प्रेक्षण नियंत्रित है । कदाकि प्रयोगशालाया म हम हमारी सुविधा एव गायब्यवधानुसार परिस्थितिया का निर्माण कर सकते है । अत हम प्रयोग के परिणामो का अभिलेखन अधिक व्यवस्थित ढंग स कर सकते है । साथ म नियंत्रित प्रेक्षण म हम निश्चित रूप से कह सकते है कि अम्लक प्रयोग द्वारा अम्लक परिस्थितिपो का फलस्वरूप घटित हुआ है कदाकि परिस्थितिया पर हमारा नियन्त्रण रहता है । अनियंत्रित प्रेक्षण म अम्लक द्वारा परिस्थिति जल्दी बदलित होती है कि पत्र यह सक्ता अवलोकन कठिन होता है कि व्यवहार किन कारणो से घटित हुआ है फिर अम्लक द्वारा अनियंत्रित प्रयोग क परिणामो के अभिलेखन म भी कठिनाई होगी की सम्भावना रहती है कदाकि इस प्रकार क प्रेक्षण के समय को हम अपना अनुमान द्वारा जित नपा कर सकते । नियंत्रित प्रेक्षण क मुख्य नाम होत हुए भी एक निर्देशन वाक्यता को तो अधिकतर परिस्थितिया म अनियंत्रित प्रेक्षण का ही प्रयोग करना पडता है क्योंकि निर्देशन वाक्यकर्ता शुद्ध मनोवैज्ञानिक की नाति प्रयोगशाला का नियंत्रित परिस्थितिया म बालक क व्यवहार का प्रेक्षण नहीं कर सकता उस तो बालक के सहज व्यवहार का स्वाभाविक परिस्थितिया म ही अध्ययन करता होगा । अत निर्देशन क क्षेत्र म अनियंत्रित प्रेक्षण का ही महत्वपूर्ण स्थान माना जा सकता है ।

(आ) भागशाही एव भाग-अशाही प्रेक्षण—एवपि इन दो प्रेक्षणा की निर्देशन के सम्बन्ध म चर्चा आवश्यक नहीं । फिर भी सतिप्त म इनके सम्बन्ध म बतला दना विषय के औचित्य की दृष्टि स आवश्यक समझा गया है । जब प्रेक्षक किसी समूह का सदस्य बनकर उस समूह का अध्ययन करता है तो इस प्रकार के प्रेक्षण को हम भागशाही प्रेक्षण कहते है । और यदि प्रेक्षक समूह का अध्ययन एक बाह्य के व्यक्ति की हैसियत स करता है तो हम एसे प्रेक्षण को भाग अशाही प्रेक्षण कहते है । उदाहरणार्थ जब किसी कक्षा का शिक्षक अपने विद्यार्थियो की विशेषताओ का पक्षाध्यापन के समय अध्ययन करता है तो यह प्रेक्षण भागशाही प्रेक्षण कहनायगा । किन्तु यदि अध्यापक कक्षा म पढा रहा हो और निर्देशन वाक्यकर्ता पीछे खड़े कुछ बानको का अध्ययन करे तो यह प्रेक्षण भाग अशाही प्रेक्षण कहलाना है । भागशाही प्रेक्षण म प्रेक्षक क्योंकि समूह का स्वीकृत एव आना पहिचाना सम्बन्ध होता है अत समूह के सदस्यो के व्यवहार म औपचारिकता अथवा कृत्रिमता नहीं होती । अत एसे प्रेक्षण म हम व्यक्ति क सहज व्यवहार का अध्ययन कर सकते है । किन्ता बाह्य व्यक्ति क सामने हम अम्लक द्वारा हमारे सहज व्यवहारो को प्रदर्शित नहीं करत अथवा हमारे म एक कृत्रिमता आ जाती है । जहा तक हो सके

हम 'यक्ति' का महत्त्व एवं स्वामाबिन्न व्यक्तियों का अध्ययन करना चाहिए तभी हम उसके सम्बन्ध में सही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

(घ) प्रक्षेपण प्रविधि की सीमाएँ

प्रक्षेपण के उपयुक्त गुणों एवं विशेषताओं से वह है। हम यह अनुमान न लगा सकते कि व्यक्तिगत अध्ययन की यह पर्याप्त सर्वोत्तम प्रविधि है। इस प्रविधि की अपनी सीमाएँ हैं जिन्हें ध्यान में रख कर यदि हम इस प्रविधि का प्रयोग करें तो शायद हम अधिक सफलतापूर्वक इसका लाभ उठा सकते हैं।

(अ) प्रक्षेपण के अवसर की अनिश्चितता—अन्य बातें अनिश्चिततया प्रक्षेपण में हम जानते हैं कि जिन व्यवहारों का प्रक्षेपण करना चाहते हैं वे उस समय घटित होते हैं जब हम प्रक्षेपण के परिणामों का अनुमान करने के लिये तैयार नहीं होते। या ऐसा भी हो सकता है कि हम जिन व्यवहारों का अध्ययन करना चाहते हैं वे हमारे समय तक हम देखने को ही न मिलें। उदाहरणार्थ हमारा बालक निराशाजनक परिस्थितियों में बसा व्यवहार करता है यदि हम देखना चाहते हैं कि वह हो सकता है दुर्भाग्य से हम ऐसी परिस्थिति ही न मिले।

(आ) प्रत्येक व्यवहार का प्रक्षेपण सम्भव नहीं—कुछ व्यवहारों का प्रक्षेपण करना कठिन होता है। सोलता माँ बालक के साथ बसा व्यवहार करती है यह प्रत्यक्ष रूप से देख सकता कठिन हो सकता है। क्योंकि बाहर के व्यक्ति के सामने कृत्रिम स्नेहपूर्ण व्यवहार की अभिव्यक्ति कठिन नहीं है। अतः वास्तव में अत्यन्त दूर होत हुए भी हमें यह आभास हो सकता है कि माना पुत्र के सम्बन्ध में अत्यन्त स्नेहपूर्ण है।

(इ) प्रक्षेपण के पूर्वप्रश्नों का प्रभाव—प्रक्षेपण के परिणामों का विश्वसनीयता बहुत सीमा तक प्रत्यक्ष पर निर्भर करती है। अतः यदि प्रक्षेपण के अपने पूर्वप्रश्न हुए तो वह प्रेरणा के परिणामों का आसानी से दूषित कर सकता है। जिन परिणामों के किसी छान से सम्बन्ध स्थापित करने हैं उनमें यदि हम छान की विशेषताओं के सम्बन्ध में पहले तो उसके प्रक्षेपण कितने विश्वसनीय होने इसका अनुमान सहज लगाया जा सकता है।

(ई) प्रक्षेपण का प्रशिक्षण—प्रक्षेपण यदि प्रक्षेपण की उलाहना में प्रशिक्षितता भी वह वैज्ञानिक ढंग से तथ्यों का संकलन नहीं कर सकता है। उसने प्रक्षेपण में अधिक महारत हो सकती है।

(२) साक्षात्कार

व्यक्तिगत अध्ययन की दूसरी प्रमुख प्रविधि साक्षात्कार है। साक्षात्कार में हमारा काल्पनिक है व्यक्ति से प्रत्यक्ष सेंट कर उससे बातचीत कर उसमें सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करना। साक्षात्कार के लिये अग्रजी शक्ति रखनी है जिसका अर्थ है पारस्परिक मानसिक संव्यवस्था अथवा पारस्परिक दृष्टि निराक्षण।

“सौ अग्रजी का” के मूल फॉर्म का प्रय है एक अनक प्राप्त करना। अतः साक्षात्कार में हम व्यक्ति में प्रत्यक्ष में प्रवेश कर उसके गुणों एवं नीमाणा की एक अनक प्राप्त करते हैं। साक्षात्कार के अन्तर्गत दो अनिवाय बातें हारा चाहिए एक तो जिस व्यक्ति के सम्बन्ध में हम आनकारी प्राप्त करना चाहते हैं उससे हमारा प्रत्यक्ष में प्रवेश होना चाहिए और अतः प्रवेश के पीछे कुछ एवं निर्धारित सूचनाओं का सफल एक अनिवाय उद्देश्य होना चाहिये। केवल दो व्यक्ति को मिलकर गणना करने को हम साक्षात्कार नहीं कर सकते। इसी प्रकार अध्यापक कक्षा में किसी आनक से पढ़ाने का पाठ्यवस्तु पर प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त कर रहा हो तो उस भी साक्षात्कार नहीं कहा जा सकता। इस चर्चा के अन्त में यदि हम साक्षात्कार को परिभाषित करने का प्रयास करे तो शायद परिभाषा इस प्रकार होगी— साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार के व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित कर पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु कुछ सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास करता है।

(क) साक्षात्कार से लाभ

(अ) महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होने की सम्भावना—किसी साक्षात्कार में हम व्यक्ति से व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित कर सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं अतएव अनेक बार हम ऐसी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होने का सम्भावना होता है जो अन्य प्रविधियों से प्राप्त नहीं हो सकती। लिखित रूप में व्यक्ति अनेक व्यक्तिगत सूचनाएँ देने से हिचकिचाहट करता है किन्तु जब साक्षात्कारकर्ता सामाजिकता का विश्वास प्राप्त कर लेता है तो साक्षात्कार अपने आपमें के अनेक रहस्य उसके सामने खोलकर रख देता है। अज्ञान समाज “कारकर्ता सवाद के माध्यम से ही व्यक्ति से अन्यायपूर्ण महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ निकलवाता है जो शायद लिखित प्रश्नों के उत्तर के रूप में व्यक्ति कभी नहीं देता। समाचार पत्र के सवाददाता मजिस्ट्रेट प्रश्नों के प्रश्नों के माध्यम से ही अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य निकलवाते हैं।

(ब) साक्षात्कार से प्राप्त सूचनाओं का महत्त्व—व्यक्तिगत सम्बन्ध से महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ तो प्राप्त होती ही हैं साथ ही इस प्रकार प्राप्त सूचनाएँ लिखित रूप में प्राप्त सूचनाओं से अधिक विश्वसनीय होती हैं। क्योंकि लिखित रूप में लिख गये उत्तरों में अधिक औपचारिकता होती है। व्यक्ति लिखित उत्तर देते समय कई बार यह मानता है कि कहीं उसका उत्तर ऐसा तो नहीं है जो समाज की सामान्य मान्यताओं के विपरीत है अतएव वह अपने वास्तविक उत्तर को ऐसा रूप देने का प्रयत्न करता है जो सामान्य हो। साक्षात्कार में एक बार साक्षात्कारकर्ता यदि साक्षात्कार के अनिवाय सम्पादन कर ले तो इस प्रकार के द्विगम एवं औपचारिक उत्तर प्राप्त होने की सम्भावना घट जाती है।

(इ) सूचनाओं के स्पष्टकरण की सम्भावना—यस प्रविधि में कथोक्ति

साक्षात्कार वर्त्ता एवं साक्षात्कृत एवं दूगर के अभिमुख होने से घनएव यदि साक्षात्कृत व विज्ञा उत्तर के सम्बन्ध में अनिश्चितता हो घनएव उत्तर घ पष्ट हो तो उसी समय साक्षात्कृत से स्पष्टीकरण प्राप्त किया जा सकता है ।

(ई) सूचनाओं की पट्टभूमि का पता लगाना — साक्षात्कार में हम न केवल व्यक्ति न प्रश्न का क्या उत्तर दिया है उसका पता लगाना है अपितु इस प्रकार के उत्तर देने के पीछे क्या कारण है इसका भी पता लग सकता है । एक छात्र यदि यह बताता है मुझे गणित के किताब अच्छी न । उगल तो साक्षात्कार वर्त्ता पट्टी पर नहीं ठहरता वह यह भी जान सकता है कि छात्र की परिणत शिक्षक के प्रति ऐसी मनोवृत्ति क्या बनी ?

(उ) अन्य प्रविधियों एवं साधनों से प्राप्त सूचनाओं की सफाई एवं सम्पादन — साक्षात्कार का उपयोग अन्य साधनाएँ एवं प्रविधियों से प्राप्त सूचनाओं की सफाई एवं विश्वसनीयता की जाँच करने में भी किया जा सकता है ।

(ग) साक्षात्कार की सीमाएँ

यद्यपि सामान्यतया यह देखा गया है कि एक कुशल साक्षात्कार वर्त्ता से प्रविधि से व्यक्ति से सम्पूर्ण सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है फिर भी इस प्रविधि की घनता सीमाएँ हैं जिन्हें निदान कायवर्त्ता का ध्यान में रखना चाहिए ।

(अ) व्यक्तिनिष्ठ प्रविधि — प्रश्न की भाँति इस प्रविधि में भी दत्त की विश्वसनीयता काफी सीमा तक साक्षात्कारकर्त्ता पर निर्भर करती है । एक सूचना जो एक साक्षात्कारकर्त्ता प्राप्त करता है हो सकता है अन्य व्यक्ति उस सूचना को प्राप्त करने में सफल न हो । साक्षात्कारकर्त्ता के पूर्वाग्रहों का भी इस प्रविधि से प्राप्त सूचनाओं पर प्रभाव पड़ सकता है ।

(आ) प्रशिक्षण की आवश्यकता — साक्षात्कार की सफलता ही साक्षात्कार वर्त्ता की सवाल या वातावरण द्वारा सूचनाएँ प्राप्त कर सकने की क्षमता पर निर्भर करती है । यह क्षमता प्रशिक्षण एवं उच्च अनुभव के फलस्वरूप ही प्राप्त की जा सकती है । और फिर यह आवश्यक भी नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति इस कला का प्राप्त कर ही ले ।

(इ) समय एवं अर्थ का अधिक व्यय — साक्षात्कार प्रविधि में हम प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित कर सूचनाएँ प्राप्त करते हैं । अतः यह प्रथम में अधिक समय एवं धन का व्यय होता है । जितना समय एवं धन से सम्पर्क स्थापित करने में व्यय करते हैं उतने समय में ही समूह प्रविधि से सम्पूर्ण सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं । साक्षात्कार में हम बहुत सा समय तो व्यक्ति के साथ तात्कालिक स्थापित करने में लगता है । बिना तात्कालिक स्थापित किए हम व्यक्ति से वास्तविक सूचनाएँ प्राप्त भी नहीं हो सकती । परीक्षणों में हम इसके लिए अधिक समय नहीं लगाना पड़ता ।

(ग) साक्षात्कार के उपयोग

बश तो साक्षात्कार का उपयोग अनेक परिस्थितियों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है किन्तु यहाँ पर हम अपनी चर्चा मूलतः साक्षात्कार का उपयोग व्यक्तिगत सूचनाएँ एकत्रित करने में कस दिया जा सकता है इस विषय पर केन्द्रित करण। साक्षात्कार के अग्र्य उपयोग है-उपवोधन के लिए नौकरी हेतु व्यक्ति की रुचि, क्षमताओं को आकलन हेतु मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति के उपचार हेतु अनुसंधान कार्य में दत्त सफल हेतु किसी राजनीतिज्ञ अथवा अग्र्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के विचार जानने के लिए। प्रभावनात्मक इसका उपयोग अनुसंधान समस्याओं को सुवधान हेतु भी कर सकते हैं। अब हम यह देखें कि साक्षात्कार प्रविधि से हम व्यक्ति सम्बन्धी कौनसी सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

(अ) व्यक्ति की भविष्य योजनाएँ एवं आकांक्षाएँ—साक्षात्कार के माध्यम से हम पता लग सकता है कि व्यक्ति के भविष्य क्या क्या योजनाएँ हैं उसकी क्या आकांक्षाएँ हैं तथा इन आकांक्षाओं और भविष्य योजनाओं के कार्यान्वयन में उसकी क्या तयारी है। हम यहाँ भी पता लग सकता है कि प्रति की भविष्य योजनाएँ एवं आकांक्षाएँ वास्तववादी हैं या नहीं।

(आ) व्यक्ति की अभिव्यक्त अभिरूचियाँ—व्यक्ति किन क्षेत्रों में अभिरूचियाँ अभि व्यक्तिके माध्यम से प्रदर्शित करता है उसका आभास साक्षात्कार कर्ता को हो सकता है। जिस क्षेत्र में व्यक्ति की रुचि है उस क्षेत्र के सम्बन्ध की उस रुचि जानकारी हमें दी जाये वह उस क्षेत्र के सम्बन्ध में बातचीत करने में अधिक रुचि लेगा।

(इ) व्यक्ति के शीलक्षण—व्यक्तित्व के कुछ शीलक्षण ऐसे हैं जिनका पता साक्षात्कार के माध्यम से लग सकता है जैसे अंतर्मुखता आगविरता अथवा मान आशावाद निराशावाद। साक्षात्कार कर्ता व्यक्ति का अनेक अभिव्यक्तियों से उपयुक्त गुणों का पता लगा सकता है बहुत कम धोखे के साथ व्यक्ति या जितना पूछा जाए वही जवाब देना वाला व्यक्ति अंतर्मुखी है यह कुछ साक्षात्कार कर्ता सामान्यी में देख सकता है। इस प्रकार व्यक्ति जब अपने भविष्य के सम्बन्ध में उत्प्रेरित करता है या उपनिषदात्मकपनवादी के सम्बन्ध में अभिव्यक्ति करता है तब इस बात का पता लग सकता है कि वह आशावादी है या निराशावादी।

(ई) मानसिक द्वन्द्व एवं समन्वयन समस्याएँ—साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कार अपने अनेक मानसिक द्वन्द्वों का प्रथम समन्वयन समस्याओं का दृश्योत्पादन कर देता है। इन सूचनाओं का उपवोधन सहायक मान्य है। 'व्यक्तिगत निर्देशन (Personal Guidance) कार्य का साक्षात्कार ही प्रथम सूचनाएँ हैं। यहाँ यह स्पष्ट करना होगा कि एक मॉडल में ही इन महत्वपूर्ण सूचनाओं की प्राप्ति हो ही जानये आवश्यक नहीं। एक दिन तो साक्षात्कार कर्ता को साक्षात्कार में प्रयत्न

तात्काल्य स्थापित कर उसका विश्वास सम्पादन करना होगा।

(उ) पारिवारिक सूचनाएँ — व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि का ज्ञान भी साक्षात्कार के माध्यम से हो सकता है। उसका परिवार के अर्थ सम्स्या के साथ सम्बन्ध उसका प्रार्थिक एवं अर्थ कठिनायियाँ घर पर उपलब्ध अध्ययन हेतु साधन सुविधाएँ आदि का ज्ञान साक्षात्कार कर्ता को असाधनी से हो सकता है।

(ऊ) गान्धीय जीवन सम्बन्धी सूचनाएँ — छात्र को जिन विषयों में रुचि है वही स अध्य्यापक अध्येतृ जगत हैं जो विषय कठिन लगते हैं अथवा जिन अध्य्यापकों की कथा में उसका मन नहीं लगता इसके क्या कारण हैं? छात्र जिन प्रवृत्तियों में भाग लेता है यदि पाठ्य त्तर विद्याभ्यास में वह सक्रिय भाग नहीं लेता तो इसके क्या कारण हैं? अध्ययन सम्बन्धी छात्र की अर्थ क्या कठिनायियाँ हैं? आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ स प्रश्नोत्तर से प्राप्त की जा सकती हैं।

(ए) छात्र के समआयसाथी — छात्र के मित्र कौन हैं वे किस प्रकार के हैं क्या वे उसके विकास में सहायक हैं या उसे अनुचित मार्ग पर ले जा रहे हैं छात्र एकाकी है अथवा समूह द्वारा स्वीकृत आदि बातों का ज्ञान भी साक्षात्कार से प्राप्त सकता है। उनके समाजमैतिक स्तर का अधिक विस्तृत ज्ञान हम समाजमैतिक प्रविधियों में हो सकता है जिनकी सहायता हम प्राप्त करेगे।

(घ) साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार के प्रमुख दो प्रकार हैं सरचित साक्षात्कार एवं असरचित साक्षात्कार जिनका संक्षिप्त विवरण यहाँ अलग नहीं होगा।

(अ) सरचित साक्षात्कार — सरचित साक्षात्कार का मन्त्रादेश पूर्व निर्धारित प्रश्न सूची या साक्षात्कार सूची के आधार पर होता है। साक्षात्कारकर्ता नियमित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में ही रुचि रखता है। प्रश्नों का प्राप्ति पूर्व निर्धारित होने के कारण साक्षात्कार को अधिक संतुष्टिजनक बनाया जा सकता है तथा अनावश्यक दत्त सामग्री के संकलन की सम्भावना कम हो जाती है।

(आ) अ-सरचित साक्षात्कार — इसमें साक्षात्कारकर्ता को परिस्थितानुसार नए प्रश्न पूछने प्रश्नों को क्रम को बदलने अथवा पूरक प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होती है। इसमें साक्षात्कारकर्ता का उद्देश्य कोई सीमित सूचनाएँ एकत्रित करना नहीं है। इसमें व्यक्ति से सम्बन्धित अधिक से अधिक सूचनाएँ एकत्रित करना होता है। अतएव साक्षात्कार के मन्त्रादेश का कोई जड रूपरेखा नहीं हो सकती। इस साक्षात्कार की लक्ष्य ही साक्षात्कार का लक्ष्य है। अनेक बार तो ऐसे साक्षात्कार में हमें व्यक्ति के उन प्रायः के सम्बन्ध की सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं जिनकी हम कल्पना भी नहीं करते। असरचित साक्षात्कार में व्यक्तिनिष्ठता अज्ञान की सम्भावना अत्यधिक होती है किन्तु इसका लाभ यह है कि इसमें साक्षात्कारकर्ता को अपने व्यक्तित्व कौशल का नाम उठाकर अधिक सम्पन्न सूचनाएँ प्राप्त करने का अव

सर निश्चिता है। धीरे धीरे निश्चय एवं उपबोधन काय न ता हन अधिक्तर परि स्थितिवा न भवतिरहित साक्षात्कार वा हा प्रयोग करना पता है।

(क) साक्षात्कार के कुछ प्रमुख सिद्धांत

असाक्षि पहा कहा जा चुका है कि साक्षात्कार का सफलता बहुत अधिक सामान्य साक्षात्कारकर्त्ता की शुभलता एवं अनुभव पर निर्भर करता है। यथेता सफलता हेतु कोई निश्चित सांख्यिक सिद्धांतों का "तिपत्तन नही किया जा सकता क्योंकि अन्ततौरतया साक्षात्कारकर्त्ता की परिस्थिति विशेष का ध्यान म रखत हुए सूक्ष्मबुद्धि के आधार पर थोके विश्लेषण करना पड़ता है और साक्षात्कार की हर परिस्थिति अपने आप म एकक होता है। एक सफल साक्षात्कारकर्त्ता कभी कभी न अनुभव न पश्चात् सूचनाओं के सञ्चयन का अपनी अपेक्षा करता होता है इस शक्ती वा सहज स्थानांतरण नही किया जा सकता। फिर भी नए कार्यकर्त्ता के माधन हेतु कुछ प्रमुख सिद्धांतों का उचित उपयोग सिद्ध हो सकता है।

(अ) साक्षात्कार से साक्षात्कार्य— साक्षात्कार की सफलता ही इस बात पर निर्भर करती है कि साक्षात्कार्यता न साक्षात्कार्य के साथ यथेता साक्षात्कार्य स्थापित कर लिया है। सत्यता नञ्जा धर्मवा श्रम के दातावरण म विवक्षितता एवं महत्त्व पूर्ण सूचनाओं का सञ्चयन सम्भव नही हो सकता। साक्षात्कार का प्रारम्भिक समय नञ्जा कार्य के लिए लगाना साक्षात्कार की सफलता के लिए उचित उपयोग सिद्ध होता है।

(आ) सूचनाओं की शान्तीयता— साक्षात्कारकर्त्ता नञ्जा बार बार साक्षात्कार्य का विश्वास सम्पादन कर जाता है तो साक्षात्कार्य उस अपने धीमेन की धत्तत माधनीय घटनाएं नही बता देता है। ऐसी परिस्थिति म साक्षात्कार कता का धन परम पराजय हो जाता है कि नञ्जा साक्ष्य सूचनाओं की योगनीयता बनाए रख। नञ्जा केवल शीघ्रता साक्षात्कार्य न देना ही पर्याप्त नहीं। साक्षात्कारकर्त्ता की अपने "यथेता स शीघ्र सिद्ध करना हीमा कि उमम बनाए गए विश्वास का सुरक्षित नही हो रहा है। नञ्जा लिए साक्ष्यगी यह रली जा सरती है कि साक्षात्कार क समय साक्षात्कार्य को विश्वास व्यक्त की उपस्थिति की मातका न रह। दूसरा साक्ष्यगी नञ्जा बरता सक्त है कि साक्ष्य सूचनाएं किमा अनुचितत "यक्ति क रूप म न पाए। नञ्जा सध यह नहीं कि इन सूचनाओं का कोन उपयोग ही न किया जाए। सूचनाओं न आधार पर "यक्ति की सहायता करना तो निश्चयन का नञ्जा है ही। सूचनाओं की शान्तीयता बनाए रखत हुए की उसका साम "यक्ति की शान्तीयता जा सकता है।

(इ) साक्षात्कार का दातावरण— सफल साक्षात्कार के लिए उपयुक्त वातावरण का होना आवश्यक है। साक्षात्कार का स्थान एका हीमा पारिस्थितिक शोर गुरु व्यक्तियों का आधागधन टेलाफोन की बग्गी की खनलगाहट अथवा सञ्जा "यब

घान कम से कम हो। अनन्तर वार सामान्य छोटी मोटी मोनिक सुविधाएँ जैसे धारामनत्र बठन का स्थान कमर को सजावट भा साक्षात्कृत की मीनशा (Mood) का प्रभावित करता है।

(ई) साक्षात्कार के परिणामों का अभिव्यक्ति—साक्षात्कार के परिणामों का अभिव्यक्ति तुरन्त एक ठीक तर्क स र्था न किया गया तो स प्रविधि स प्राप्त दस्त की उपयोगिता कम हो जाती है। परिणामों के लिए दो विधियाँ अपनाई जा सकती हैं। एक तो साक्षात्कार के समय ही तथ्यों का अभिव्यक्ति कर दिया जाय। अथवा साक्षात्कार समाप्ति के तुरन्त पश्चात् परिणामों का अभिव्यक्ति किया जाय। दोनों के अपने नाम एक मीमाणा। साक्षात्कार के समय अभिव्यक्ति स परिणामों में कुत् की सम्भावना कम हो जाती है और काँ महत्वपूर्ण बात छू जाना की आशंका भी नही रहती। किन्तु कभी कभी कमा भा भेजा जाता है कि साक्षात्कार के समाप्ति के तुरन्त पश्चात् सचेत हो जाता है और उसके उत्तर में स्वाभाविकता नहीं रहती अथवा अनन्तर वार तो वह उत्तर तन म विचित्र-ह अनुभव करने लगता है। यदि उग य् ना हो जाए कि उसके उत्तरों को तो न किया जा रहा है। एसी परिस्थिति में धारामनत्र की दूसरी विधि को धारणा की य् है अर्थात् साक्षात्कार के तुरन्त पश्चात् अभिव्यक्ति काय पूरा कर दिया जाए। को भी विधि अपनाई जाय। अभिव्यक्ति या यह महत्वपूर्ण बिन्दुओं का रचना चाहिए कि धारणा एक अभिव्यक्ति में जितना अधिक समयान्तर होगा तथ्यों की विश्वसनीयता उतनी ही घटती जावगी। साक्षात्कार के परिणामों के अभिव्यक्ति में कुछ बात ध्यान में रखने योग्य है व हैं—

(१) अभिव्यक्ति सुचारु एवं स्पष्ट हो ताकि कुछ समय के पश्चात् भी अभिव्यक्ति में समाविष्ट तथ्य सञ्ज समझ में आ सके।

(२) अभिव्यक्ति में समस्त तथ्यों को तत्सत्यतापूर्ण समाविष्ट करना चाहिए। तथ्यों के प्रस्तुतिकरण में वस्तुस्थिति का ठीक ठीक वर्णन हो न तो का महत्वपूर्ण तथ्य छूटने पावे न हा तथ्यों में अतिशयोक्ति। साथ ही तथ्यों के प्रस्तुतिकरण में पूर्वाग्रहों का प्रभाव न होने पावे उसकी सावधानी रखनी चाहिए।

(३) साक्षात्कार द्वारा किया गया उत्तर ही महत्वपूर्ण नही होना उत्तर के समय उसकी भाव भविष्य किसी विदुष पर किया गया वन प्रादि भी महत्वपूर्ण सूचनाएँ स्तुत करते हैं और साक्षात्कारकर्ता को इन बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

(४) साक्षात्कार का समापन— जिस प्रकार सफल साक्षात्कारकर्ता साक्षात्कार के प्रारम्भ में उपयुक्त विधियाँ स साक्षात्कार से तादात्म्य स्थापित करता है एक उसका विश्वास सम्पादन करते का प्रयास करता है उसी प्रकार साक्षात्कार को समाप्त कराना भी एक कला है। साक्षात्कार के समापन के समय साक्षात्कार को यह आभास होना चाहिए कि उमने साक्षात्कारकर्ता के साथ भेंट में जो समय

व्यक्ति किंवा वह साधक रूप। साक्षात्कार ऐसे वातावरण में सम्पादित होना चाहिए कि साक्षात्कार मन में विश्वास एवं पुनः मट की इच्छा लेकर जाए। परिश्रमपूर्वक पुनः उसी व्यक्ति से साक्षात्कार करने का प्रयत्न भिन्न तो उससे पूर्ण सहयोग मिल सके।

अनेक बार साक्षात्कारकर्ता के आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर ध्यान पर भी साक्षात्कार अपनी शक्ति-शक्ति जारी रहता है। ऐसी परिस्थिति में साक्षात्कारकर्ता को कुशलतापूर्वक बिना साक्षात्कार को ठेक पहुँचाए पुनः मट का आश्वासन देते हुए साक्षात्कार को सम्पादित करना चाहिए।

(ब) साक्षात्कारकर्ता के कुछ वाञ्छनीय गुण — सफल साक्षात्कार के लिए कुछ निर्देशन बिन्दु उपयुक्त धनु-धेनु में वर्णित हैं। किन्तु जब तक साक्षात्कारकर्ता में कुछ वाञ्छनीय गुण नहीं होंगे तब तक वह साक्षात्कार का सफल संचालन नहीं कर सकता। साक्षात्कारकर्ता एक हसमुख मिलनसार धार्मिक व्यक्ति होना चाहिए। यक्तियों से सुस्त सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता साक्षात्कार की सफलता के लिए आवश्यक है। मानव स्वभाव के सम्बन्ध में अन्तःशक्ति भी साक्षात्कारकर्ता के लिए एक देन सिद्ध हो सकती है। दूसरा के विचारों को समानभूति सहानुभूति एवं शान्ति से सुनने की क्षमता साक्षात्कारकर्ता के लिए अनिवार्य है। अनेक बार व्यक्तियों में अपने विचार प्रस्तुत करने की इच्छा इतनी तीव्र होती है कि उनमें दमरे के विचार सुनने का धय ही नहीं होता। ऐसे व्यक्ति सफल साक्षात्कारकर्ता नहीं बन सकते। तथ्या का शोषणीय रहने की आदत भी साक्षात्कारकर्ता की प्रतिष्ठा बढ़ाने में अत्यन्त आवश्यक मानी जाती है।

(३) समाजमिति

व्यक्ति जिस समूह में रहता है उस समूह के सम्बन्ध के माध्यम से उसके अन्तःसम्बन्ध का प्रभाव उसके जीवन के विविध पक्षों पर पड़ना ही नहीं रहता। कक्षा में यदि बालक के अर्थ समाजमिति का अर्थ समझ नहीं है तो कक्षागत एवं कक्षाोत्तर कार्यों में उसे बढिनाई का आभास हो सकता है। सीखने पर समूह गतिक का प्रभाव होता है यह तथ्य तो प्रमुखतः द्वारा सिद्ध ही किया जा चुका है। अतः एक निर्देशन कार्यक्रम के लिए बालक के अर्थ माध्यम के अन्तःसम्बन्धों का ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। समाजमिति वह प्रविष्टि है जो हम समूह के व्यक्तियों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध के अर्थपूर्ण में सहायता प्रदान करती है।

(४) समाजमितिक स्तर का अध्ययन

व्यक्तियों के समाजमितिक स्तर का पता लगाने हेतु हम व्यक्तियों के सम्पूर्ण प्रवृत्तियों का माध्यम से कुछ ऐसी परिस्थितियाँ रचते हैं जिनमें वह अपने व्यक्तियों के साथ सामायतया शोषणीय क्रिया करता है। उदाहरणार्थ कुछ प्रश्न नीचे लिखे जा रहे हैं—

- (१) आप क्या म जिसके निम्न प्रश्न पत्र क म ?
- (२) आप अपने घर किस खाना खाने बुलाना पसन्द करेंगे ?
- (३) खेत में आप अपना साथी किसे बनाना चाहेंगे ?
- (४) आप जिसके साथ घूमने जाना पसन्द करेंगे ?

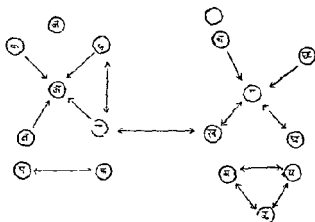
उपरोक्त परिस्थितियाँ क अनिर्दिष्ट भी ऐसी अनेक परिस्थितियाँ ठूनी जा सकती है जिनमें बालक अनिश्चित क्रिया करते हों। उपरोक्त सभ परिस्थितियों का समात्मक है यदि हम निरस्तुन बालकों का पना उगाना चाहें तो हम नकारात्मक प्रश्नों का भी समावेश कर सकते हैं जस आप किसके साथ बठना पसन्द नहीं करेंगे। उपरोक्त प्रश्नों की भाँति प्रश्न बना कर समूह के प्रत्येक सदस्य को अपनी राय प्रकट करने के लिए कहा जाता है। छात्रों द्वारा अभिप्रेत वरणा (Choices) क आवार पर यह पना उगाया जाता है कि प्रत्येक छात्र का निम्नो वार चाहा गया है और उसकी प्रावृत्ति गलत कर ली जाती है। इन आवृत्तियों का समाजमि-
तिक अर्थ कहते हैं। किसी व्यक्ति क समाजमि-
तिक अर्थ स यल पना उग सकता है कि उसका समाजमि-
तिक स्तर क्या है।

(ख) लोकप्रिय एकाकी एवं निरस्तुन सदस्य

समूह के सभस्यो क वरणो क आधार पर किसी भी सभस्य की समूह में वसा स्थिति है या उसका समाजमि-
तिक स्तर क्या है इस बात का पना उगाया जा सकता है। जिस सदस्य का अधिक व्यक्तिपना न पसन्द किया हा उस समूह का लोकप्रिय सदस्य कहते हैं। जिस व्यक्ति को समूह के निम्नो भी सभस्य न नदी चाहा हा उस एकाकी सदस्य कहते हैं। तथा जिसके साथ अधिक लोग ने रहना पसन्द न किया हा उसे निरस्तुन सदस्य कहते हैं।

(ग) समाज आनेख

किसी समूह क सभस्यो क बीच पारस्परिक सम्बन्धो को चित्र क रूप में भी प्रदर्शित किया जा सकता है। इस चित्र को समाज आनेख कहते हैं। समाज आनेख बनाने के लिए समूह के प्रत्येक सदस्य से यल पूछा जाता है कि किसी एक परिस्थिति में वह किन किन अर्थ सभस्यो को अपने साथ सयुक्त कना चाहेगा ? जैसे खेत के लिए यदि कोई टाँगा बनानी हो तो उसमें वह किन किन सभस्यो को लेना चाहेगा ? इसके उपरान्त समूह के सदस्यो द्वारा अभिप्रेत वरणो को निम्न प्रकार स चित्र क रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।



चित्र समान-आलेख

→ बरतण

←→ पारस्परिक धरतण

उपयुक्त चित्र को समान आलेख कहते हैं। इसमें एक समूह के सदस्यों के बीच के पारस्परिक सम्बन्धों को चित्रित किया गया है। इस समान आलेख का बनाने से यह पता होता है कि क तथा ख दोनों सत्य एकाद्री हैं जिन्हें समूह के किसी सत्य न गनी आहा है। प फ तथा म र य केवल आपस में एक दूसरे को चाहते हैं किन्तु य दोनों गूट समूह के अन्य सदस्यों से अलग हैं। अतः एक दृष्टि से ये भी एकाद्री हैं। सत्य अ तथा ग लोकप्रिय सदस्य हैं क्योंकि उन्हें समूह के अत्यधिक सत्स्यों ने आहा है। इस प्रकार समान आलेख से समूह के सत्स्यों के अन्तर्सम्बन्धों का पता आसानी से हो सता है।

व्यक्तिक अध्ययन के साधन

इस अध्याय के पूर्वार्ध में हमने व्यक्तिगत अध्ययन हेतु प्रयुक्त तीन प्रमुख प्रविधियों की चर्चा की। अब हम कुछ प्रमुख साधनों की चर्चा करेंगे जिनकी सहायता से निर्देशन कार्यकर्ता व्यक्ति के विविध पक्षों में जीवन सम्बन्धी सूचनाओं का सफल ढर मरना है। इन साधनों के प्रयोग से कुछ मूलमूल सिद्धान्तों का भी प्रत्यक्ष चर्चा की जाएगी।

व्यक्तिक अध्ययन हेतु प्रयुक्त साधना को हम प्रमुख त्रिणियों में बाँट सकते हैं।

(१) मानकीकृत साधन

(२) अमानकीकृत अथवा शिक्षक निर्मित साधन

(३) आत्म विवरणत्मक साधन (Self Reporting)

निर्देशन कार्यकर्ता के लिए यह विद्या निरर्थक है कि मानकीकृत साधन थप्ट है अथवा प्रायः। उसे तो परिस्थिति के अनुसार विभिन्न साधनों का योग करना चाहिए। यही नहीं बल्कि जमाकि अध्ययन के प्रारम्भ में कहा गया है उसे किसी एक साधन से प्राप्त सूचनाओं पर पूर्णतया निर्भर रहने की अपेक्षा विविध स्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त कर सूचनाओं की विश्वसनीयता को बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। अतः निदेशन सेवाओं में उपरोक्त तीनों प्रकार के साधनों का महत्व है। अब हम तीनों प्रकार के कुछ प्रमुख साधनों की चर्चा करेंगे।

(१) मानकीकृत साधन

मनोविज्ञान की एक मन्त्रपूर्ण देन मानव के बहुप्रायामी व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के मापन हेतु साधनों के रूप में रही है। मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि, अभिरुचि, अभिप्रेक्षा, अभिवृत्ति, शक्ति, शक्ति, उपनयन आदि अनेक पक्षों के मापन हेतु मानकीकृत साधन हमारे सामने रखे हैं जिनकी सहायता से इन गुणों का वृद्धि एवं विश्वसनीय मापन किया जा सकता है। प्रत्येक पक्ष के मापन हेतु इतने अधिक साधन उपलब्ध हैं कि प्रत्येक का वर्णन न तो संभव है न ही वांछनीय। मापन एवं मूल्यांकन तो अपने आप में एक अलग पुस्तक का विषय बन सकता है। यहाँ तो इन मानकीकृत साधनों के प्रमुख प्रकारों की चर्चा करना ही सम्भव हो सकता है।

समस्त मानकीकृत साधनों का वर्गीकरण विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है। वर्गीकरण को इन सब विधियों की यहाँ चर्चा करना आवश्यक नहीं। वर्गीकरण के दो प्रमुख आधारों की यहाँ चर्चा का आगामी वे हैं —

(क) विहित एवं निष्पादन साधन।

(ख) व्यक्तिक एवं सामूहिक साधन।

(क) लिखित एवं निष्पादन साधन

लिखित साधन वे साधन हैं जिनमें व्यक्ति को लिखित सामग्री को पढ़ कर लिखित रूप में उत्तर देने पड़ते हैं जबकि निष्पादन साधन व्यक्तिक सूचना संचयन के वे साधन हैं जिनमें व्यक्ति को मूल सामग्री के साथ कार्य कर अपने किसी गुण अथवा योग्यता को अभिव्यक्त करना पड़ता है।

(ख) लिखित साधन — लिखित साधनों का प्रयोग मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में अत्यधिक होता है क्योंकि इनके प्रयोग में पढ़ने का समय एवं शक्ति की बचत होती है।

साथ ही इनका प्रयोग समूह परीक्षणों में किया जा सकता है जब कि निष्पादन साधन अधिकतर व्यक्तिगत रूप से ही काम में लिए जा सकते हैं। लिखित साधन सुविधा से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाए जा सकते हैं। लिखित साधनों के प्रशासन में भी विशेष कठनाई नहीं पड़ती।

(I) लिखित साधनों का उपयोग—प्रायः तो व्यक्ति के व्यक्तित्व के लगभग सभी पक्षों के सम्बन्ध में सूचना एकत्रित करने के लिये लिखित साधनों का प्रयोग किया जाने लगा है। बुद्धि अभिरूचि प्रभिक्षमता अभिवृत्ति व्यक्तित्व शिक्षा उपलब्धि आदि सभी गुणों के मापन हेतु लिखित साधनों का प्रयोग किया जाता है।

(II) लिखित साधनों के प्रकार—लिखित साधनों का निर्माण परीक्षणों सूचियाँ चिह्नक सूचियाँ अभिवृत्ति मापनियों प्रश्नों एवं अथ प्रश्नी प्रविधियों के रूप में किया जाता है। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित अनुच्छेदों में किया जा रहा है।

परीक्षण

परीक्षणों में मापन से व्यक्ति के किसी न किसी गुण अथवा योग्यता का मापन किया जाता है। बुद्धि परीक्षण अभिक्षमता परीक्षण उपलब्धि परीक्षण निदानात्मक परीक्षण परीक्षणों के प्रमुख प्रकार हैं। परीक्षणों में विषयों को कुछ प्रश्नों को हल करना पड़ता है अथवा समस्याओं का विश्लेषण करना पड़ता है। अधिकतर परीक्षणों में व्यक्ति को निर्धारित समय में कुछ प्रश्न हल करने पड़ते हैं। व्यक्ति द्वारा दिये गये उत्तरों की जानकारी के आधार पर व्यक्ति के प्राप्त ज्ञान का मापन किया जाता है और फिर परीक्षण के मानकों के आधार पर व्यक्ति का योग्यता स्तर मापन किया जाता है। कुछ परीक्षण ऐसे भी होते हैं जिनमें व्यक्ति के कार्य करने की गति पर ध्यान न होकर शक्ति पर ध्यान होता है। ऐसे परीक्षणों में परीक्षण को पूर्ण करने का कोई निर्धारित समय नहीं होता। यदि हम यह जानना चाहते हैं कि व्यक्ति भाग की क्रिया में कहीं रुकता है तो उस समय वह भाग का ऐसा निदानात्मक परीक्षण दग जिसमें कितने समय में वह भाग कर सकता है इसकी जांच न होकर भाग की क्रिया के किस साधन में वह रुकता है इसका पता लगाने पर ध्यान होगा। लिखित परीक्षणों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(१) बुद्धि परीक्षण—डा. जलोटा डा. प्रयाग मेहता इलाहाबाद यूरोपिक सायकलाजी द्वारा निमित्त भारतीय परीक्षण लिखित परीक्षणों के उदाहरण हैं। रेहंस प्रोफ़ेसर सिव मटियोस टेस्ट ग्राम्मी आफ एव ग्राम्मी बीटा कैलिफ़ोर्निया मोटोरियम टेस्ट आफ मेटल एडिलिटि आदि विदेशी लिखित बुद्धि परीक्षणों के उदाहरण हैं। इनमें से कुछ परीक्षणों में भाषा का प्रयोग किया जाता है जबकि कुछ परीक्षणों में चित्रों अथवा सचेतों का प्रयोग किया जाता है। भाषा प्रयोग किए जाने

वाले परीक्षणों को शाब्दिक परीक्षण कहते हैं व जिनमें चित्रा आकृतियाँ अथवा सवता का प्रयोग होता है उन्हें अशाब्दिक परीक्षण कहते हैं। जिनमें मेहता आदि के परीक्षण शाब्दिक परीक्षण हैं जब कि रेड व प्रोग्रेसिव मट्रिक्स टेस्ट अशाब्दिक परीक्षण है। उपयुक्त वृद्धि परीक्षणों में कुछ शाब्दिक व कुछ अशाब्दिक परीक्षण हैं।

(२) निदानात्मक परीक्षण — शोरेल द्वारा निर्मित गणित व निगनात्मक परीक्षण प्रसिद्ध है। इसी प्रकार स्नफोल्ड गणनात्मक रीडिंग टेस्ट वाचन के क्षेत्र में निदानात्मक कार्य के लिए काम में लिया जाता है।

(३) उपनधि परीक्षण — विभिन्न विषयों में उपनधि की जाँच हेतु अनेक मानकीकृत उपनधि परीक्षणों का निर्माण किया जाता है। आयावा टेस्ट आफ वसिन्ग स्किन्स साउथ रिच एमोमियन्स एचवमट सीरीज मेट्रोपाॉलिटन एवीव मट टेस्ट आदि अनेक मानकीकृत विशेषी परीक्षण हैं जिनका उपयोग विभिन्न स्तरों पर अनेक अनेक क्षेत्रों में उपनधि मापन हेतु किया जाता है।

सूचियाँ

सूचियाँ का प्रयोग विशिष्टकर व्यक्ति व एव अभिरुचियों के मापन हेतु किया जाता है। बर्नरौटर परसनलिटी इन्वेंटरी (Bernreuter Personality Inventory) बस एडजस्टमेंट इन्वेंटरी (Bell's Adjustment Inventory) तथा मिन्सोटा मल्टिफेजिक इन्वेंटरी (Minnesota Multi phasic Inventory) व्यक्तिव सूचियों में कुछ उदाहरण हैं। भारतीय व्यक्तिव सूचियों में अस्थना एव सवसना की व्यक्तिव सूचियाँ प्रमुख हैं। सूचियों में विषयों से कुछ प्रश्न व उत्तर हा नहीं या निर्दिष्टन में स्तर को कहा जाता है। स्तरों के आधार पर व्यक्ति व व्यक्तिव का अध्ययन किया जाता है। सामान्यतया व्यक्तिव सूचियों से हमें व्यक्तिव के विभिन्न घातगुणा का पता चलता है। अभिरुचि सूचियाँ में सामान्यतया प्रयुक्त सूचियाँ निम्नलिखित हैं। कूडर प्रिफरेंस रेकार्ड (Kuder Preference Record) स्ट्रॉन्ग्स वोकेशनल इंटरेस्ट टेक (Strong's Vocational Interest Blank) आलपोर्ट-वर्नन स्टडी आफ वैल्यूज (Allport-Vernon Study of values)। भारत में डा. भिन्नरन ने स्ट्रॉन्ग्स वोकेशनल इंटरेस्ट टेक के आधार पर अभिरुचि सूची बनाई है।

चिह्नानुसूचियाँ

चिह्नानुसूचियों में व्यक्ति का दिए गए कथनों व सम्बन्धों में अपनी सहमति अथवा असहमति अथवा अनिश्चितता प्रकट करने को कहा जाता है। इनका प्रयोग भी व्यक्तिव एव अभिरुचियों के अध्ययन में किया जाता है। उदाहरणार्थ मनी प्रोब्लेम चेकलिस्ट (Mooney Problem checklist) में स्वास्थ्य अध्ययन घर तथा परिवार आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याएँ दी जाती हैं और व्यक्ति जिन

समस्याओं को धनुमत्न करता है उनको विचारित करता है। इस प्रकार व्यक्ति का जिन क्षेत्रों में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा है इसकी सूचना मिल सकती है। इस सूचना के आधार पर उपयुक्त आवश्यक निर्देशन कायम कर सकता है।

दूसरी प्रकार का मेहुता की अभिरुचि चिह्नान्त सूची भी प्रसिद्ध है। इसमें ३ अभिरुचि क्षेत्रों से सम्बन्धित विभिन्न क्रियाकलापों का उल्लेख है। प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित पाँच पाँच क्रियाकलाप लिए गए हैं। विषयी प्रयत्न क्रियाकलाप के प्रति प्रपनी रुचि अरुचि अनुभव उत्पत्तिना अभिप्रेत करता है। जिस क्षेत्र में अधिक क्रियाकलापों के प्रति रुचि व्यक्ति की गती व क्षेत्र विषयी के अभिरुचि का क्षेत्र माना जाता है।

प्रपेयी प्रविधियाँ — प्रपेयी वह प्रक्रम है जिसमें व्यक्ति अपने अंतरंग में निहित चिह्नों का आकाशाओं एवं विचारों को किसी बाहरी उद्घाटन पर धोपता है। बाह्य उद्घाटन का विषय वह इन चिह्नों का आकाशाओं एवं आवश्यकताओं के आधार पर करता है। मनोव्यक्तियों में इस मानव स्वभाव का लाभ उठा कर प्रपेयी एवं अध प्रपेयी प्रविधियों का निर्माण किया है। प्रपेयी प्रविधियाँ व्यक्ति के सम्मुख स्थायी व पत्रा प्रपेयी अस्पष्ट चित्रों के रूप में अस्वरचित उद्घाटन रख जाते हैं और व्यक्ति उनकी अपने अचेतन में जुड़े भावों व आधार पर सरचना करता है। एक ही स्थायी व धारा के अलग अलग व्यक्ति भिन्न भिन्न अर्थ उगात है और एक ही अस्पष्ट चित्र के आधार पर भिन्न भिन्न व्यक्ति बिल्कुल भिन्न कहानियों की रचना करते हैं। व्यक्ति का मन उत्तरो व विश्लेषण के आधार पर उनके व्यक्तित्व के मूल का पता चलता है। उद्घाटन में जितनी अस्पष्टता होगी व्यक्ति द्वारा प्रपेयी की उतनी ही अधिक सम्भावना होगी। प्रपेयी प्रविधियों के सामान्य नाम में नाँ जान जाने दो प्रमुख प्रविधियाँ हैं एक तो रोगा परीक्षण (Rorschach Test) व दूसरा थीमैटिक अपरसेप्शन टेस्ट (Thematic Apperception Test)

रोगा परीक्षण में स्थायी व धारा के दस चित्र विषयी के सम्मुख एक एक करके प्रस्तुत किए जाते हैं और उसकी अनुकियाएँ प्राप्त की जाती हैं। इन अनुकियाओं के विश्लेषण के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है। इसका आविष्कार हरमन रोगा (Herman Rorschach) नामक मनोवैज्ञानिक ने किया था।

डी ए डी पराक्षण मर एवं मोरगन (Murray and Morgan) नामक मनोवैज्ञानिकों की देन है। इस परीक्षण में ३१ वाड हात हैं जिनमें से एक कोरा हाता है व अन्य ३ कार्ड पर अध सरचित (Semi structured) चित्र रखे हुए हात हैं। विषयी इन चित्रों को देख कर प्रत्येक चित्र पर आधारित एक कहानी की रचना करता है। इन कहानियों के विश्लेषण के आधार पर विषयी के व्यक्तित्व

का अध्ययन किया जाता है।

प्रक्षपी प्रविधियाँ स प्राप्त परिणामों का निवचन इनका जटिल है कि जब तक स्वयं बोग का व्यक्ति को विश्वास परीक्षण प्राप्त न हो इन प्रविधियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यही कारण है कि यहाँ इनकी निवचन विधियों की चर्चा नहीं की गई है।

अथ प्रक्षपी प्रविधियाँ म रोभन-वग विकचर प्रस्थान स्टो फार विकचर टेस्ट सी ए टी घाँ प्रमुख हैं। वचन की कनाहृतियाँ अथवा रगहृतियाँ भी प्रक्षेपण प्रश्न के अध्ययन हेतु मूल गमनी के रूप में उपयोग में ली गई हैं। इसी प्रकार गुडियाघो व सेन को भी प्रक्षपी प्रविधि के रूप में काम में लिया गया है।

अथ प्रक्षपी प्रविधियाँ—इन विधियों में भी व्यक्ति के प्रक्षेपण की क्रिया के आधार पर उसका व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है। किन्तु स्मरण जो उद्दीपन होते हैं व रोगी तथा टी ए टी पराक्षणा जिनमें अस्मरचित नहीं होते। इन प्रविधियों में उद्दीपन अपूर्ण वाक्यों या कुछ शब्दों के रूप में होते हैं। व्यक्ति जब इन वाक्यों को पूरित करता है या शब्दों से वाक्य बनाता है तो ऐसी धारणा है कि वह अपनी अस्मृतियों अथवा अचतन इच्छाओं का वाक्यात्मक प्रक्षेपित करता है। इन पूरे किए गए वाक्यों के विनयण के आधार पर उसका व्यक्तित्व के शोचगुणों का पता लगाया जाता है। रॉटरस अनकम्प्लीट सेंटेंसेस ब्लैंक (Rotters Incomplete Sentences Blank) एवं वर्ड एसोसिएशन टेस्ट (Word Association Test) इस श्रेणी की प्रविधियों के उदाहरण हैं। रॉटरस अनकम्प्लीट सेंटेंसेस ब्लैंक में जिस प्रकार के वाक्यों का पूरित करने को कहा जाता है इसका कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

I like.....

A Mother.....

Boys.....

Reading.....

I failed.....

वाक्य बनाने हेतु दिए गए वाक्यांश अतः अस्मरचित होने हैं कि व्यक्ति अपनी अचतन इच्छाओं के अनुसार वाक्यपूरित कर सकता है।

(आ) निष्पादन साधन—निष्पादन साधन अथवा परीक्षण व परीक्षण हैं जिनमें व्यक्ति को किसी निश्चित समस्या का उत्तर देना पड़ता है किन्तु कुछ मुश्किल कार्य करना पड़ता है जैसे कुछ गुट्टों से कोई आकृति बनाना किसी पेड़ी (Box) में रखे हुए गुट्टों को खिसका कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखी हुई आकृति के अनुसार ले जाना चित्र के भागों को जोड़ कर सम्पूर्ण चित्र बनाना कुछ पुजों को जोड़ कर कुछ वस्तुओं का निर्माण करना अथवा अथर्व वेदों के मत काय बन

परीक्षण। ग विषयी से कर्वाए जाते हैं। निष्पादन परीक्षा का उपयोग सामान्य तथा बुद्धि एवं अभिज्ञमता मापन में किया जाता है। इन परीक्षाओं में कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं —

(i) बुद्धिमापन हेतु प्रयुक्त निष्पादन परीक्षण दोहस्त एक डिजाइन टेस्ट—यह परीक्षण बुद्धिमापन हेतु काम में लिया जाता है। इसमें १६ पनाकार लकड़ी के गुटके होते हैं जिनकी ६ मतलब अलग अलग रंगों से रंगी होता है। इन गुटकों के अतिरिक्त कुछ काष्ठ भी होते हैं जिन पर रंगीत आकृतियाँ बनी होती हैं। विषयी को इन गुटकों को जोड़ कर काम पर बाँधी आकृति जैसी आकृति बनाने को कहा जाता है। कुछ आकृतियाँ ४ गुटकों से बन सकती हैं। कुछ ८ में तथा कुछ समस्त १६ गुटकों से बनाई जाती है। प्रत्येक आकृति बनाने में लग समय को नोट कर लिया जाता है व फिर नियम पुस्तिका में दी गई विधि से बुद्धिलिपि प्राप्त की जाता है।

बुद्धिमापन हेतु अन्य निष्पादन परीक्षण भी काम में लिए जाते हैं जिनमें से प्रमुख हैं अलिक्सांडर पास अलोग टेस्ट (Alexander Passalong Test) क्यूब कन्स्ट्रक्शन टेस्ट (Cube Construction Test) भाटिया बटरी (Bhatia Battery) वेक्सलर एडल्ट इंटेलिजेंस स्केल (Wechsler Adult Intelligence Scale) तथा आर्थर प्वाइंट स्केल (Arthur Point Scal)।

निष्पादन परीक्षाओं की विशेषता यह है कि यदि कोई व्यक्ति पढ़ा लिखा नहीं है या किसी भाषा का नहीं जानता तो भी इन परीक्षाओं में उसकी बुद्धि का मापन किया जा सकता है।

(ii) अभिज्ञमता मापन हेतु प्रयुक्त निष्पादन परीक्षण—अभिज्ञमता मापन में अधिनतरी निष्पादन परीक्षाओं का उपयोग किया जाता है। कुछ अभिज्ञमताओं को निम्न मापनों में भी मापा जा सकता है। अभिज्ञमता मापन हेतु प्रयुक्त कुछ निष्पादन परीक्षाओं के उदाहरण निम्नलिखित हैं —

ओक्लेनर टधीकर डेक्लेरिटी टेस्ट—यह परीक्षण सर्वप्रथम एक विद्यार्थी वर्गों में विद्यार्थी माटरो एवं अन्य बच्चों को जोड़ने के लिए कार्यकर्ताओं के चयन हेतु बनाया गया था। फिर अन्य बच्चों के कार्यकर्ताओं पर भी इसका प्रयोग किया गया। इस परीक्षण के आधार पर ऊर्ध्वतियों के चयन का मापन किया जा सकता है। विशेषकर ऐसे बच्चों में जिनमें चिन्ते से सूदम वस्तुओं का उठाकर निर्धारित स्थान पर रखने की आवश्यकता हो। परीक्षा में या अन्य सूक्ष्म बच्चों से सम्बन्धित मननिवा में इस अभिज्ञमता की आवश्यकता होती है। इस परीक्षण में एक घण्टा का लट होती है जिसमें एक बार गूढ़-मा बना होता है तथा दोप भाग में १० दिनों में होते हैं। छिन्ने की दशा समानान्तर पलिया होती है व प्रत्येक पलिक में समान दूरी पर दस दिनों में होते हैं। परीक्षण के लिए अन्य आवश्यक सामग्री एक

चिमटी व सौ म अधिक पिन हानी हैं जो नि प्लेट म बन छिद्रा म घासाना से जा सकती हैं। परीक्षण म व्यक्ति का प्लेट म बने ग डे म रग्यो पिता का चिमटी की सहायता म छिद्रा म चलन को बड़ा जाता है। समस्त सौ छि। म पिन डानन व निरूप जितना समय लण्डा है उसका आधार पर कृपणता व कील का मापन लिया जाता है।

प्रभागमता मापन के कुछ प्रमुख निष्पादन परीक्षण हैं विंगटा "वॉग डिजाइन टेस्ट (Wiggly Block Design Test) स्टाविक्ल मक्निक्ल एसेंबली टेस्ट (Stenquist Mechanical Assembly Test) डेट्रोयट मनुष्यन एबिलिटी टेस्ट (Detroit Manual Ability Test) हैंड स्टेडिनेस टेस्ट (Hand Steadiness Test) प्रादि।

(ख) व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधन

व्यक्ति व अध्ययन हेतु प्रयुक्त साधनों म से कुछ एग हैं जिनका द्वारा एक समय पर एक ही व्यक्ति का परीक्षण किया जा सकता है एम साधनों का व्यक्तिगत साधन कहते हैं। कुछ साधन ऐसे होते हैं जिनके द्वारा एक साथ किसी भी समूह का परीक्षण किया जा सकता है एस साधनों को सामूहिक साधन कहते हैं।

(अ) व्यक्तिगत साधन—व्यक्तिगत साधना स हम एक साथ कई व्यक्तियों का परीक्षण नहीं कर सकते। एक कर्म कारण हैं। अधिकतर व्यक्तिगत साधन म परीक्षण हेतु कुछ उपकरणों का प्रयोग किया जाता है अत एक समय अधिक उपकरणों का उपनयन होना कठिन है। इन परीक्षणों म परीक्षण सामग्री उन कारणों के रूप में होना व कारण प्रत्येक व्यक्ति को अनग अनग निर्देश देने की आवश्यकता होती है अथवा परीक्षण में त्रुटि होना की प्राणना रहती है। व्यक्तिगत परीक्षणों म सामान्यतया किमा काय का व्यक्ति कितने समय म पूरा कर सकता है अथवा किसी काम म निनी त्रुटियाँ करता है इसका अभिनय रखना पता है। अत यह समूह म सम्भव नहीं हो सकता। चू कि व्यक्तिगत परीक्षणों म हम एक समय म एक ही व्यक्ति का परीक्षण करते हैं अत परीक्षण म त्रुटि की कम सम्भावना रहती है। साथ ही व्यक्ति जब परीक्षण म दी गई समस्या को हल करता है उस समय के उसका प्रय व्यवहारों का भी अध्ययन इन परीक्षणों म किया जा सकता है। किन्तु इन परीक्षणों का सबसे बड़ा दोष यह है कि इनमें अधिक समय लगता है। अत जब अधिक व्यक्तियों का परीक्षण करना हो तो इन साधनों के प्रयोग म कठिनाई हो सकती है।

अधिकतर निष्पादन परीक्षण व्यक्तिगत ही होते हैं। अत व्यक्तिगत परीक्षणों के अनग स उपाकरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं।

(आ) सामूहिक साधन—अधिकतर त्रिविध परीक्षण कई व्यक्तियों को एक साथ समूह में लिया जा सकता है। सामूहिक परीक्षण पुस्तिकाया के रूप में होते

हैं अतः एक साथ कई प्रतियाँ उपन ब हो सकती हैं। इन्हीं पुस्तिकाओं पर सामान्य तथा निष्पक्ष भी छप रहते हैं जोकि एक साथ कई व्यक्तियों को पढ़कर सुनाए जा सकते हैं। कि सामूहिक परीक्षणों में अधिकतर कुछ प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं अतः निर्देशों के समझने में विशेष कठिनाई होने की आशंका नहीं रहती। इन परीक्षणों में प्रत्येक व्यक्ति का काम करने का समय ज्ञात नहीं करना पड़ता किन्तु निश्चित अर्थों के पश्चात् उत्तर पुस्तिकाएँ वापस लनी होती हैं। अतः यह काम भी समूह में किया जा सकता है।

समूह परीक्षणों में जलोटा का सामान्य मानसिक योग्यता का परीक्षण प्रयोग महता का बुद्धि परीक्षण तथाहाथद ब्यूरो का साइकोलॉजी के बुद्धिपरीक्षण कूडर एवं स्ट्रॉग की अभिरुचि सूचियाँ महता की यावसायिक अभिरुचि चिह्नकाकन सूची राटर का वाक्यपूर्ति परीक्षण बी ए टी आदि परीक्षण उल्लेखनीय हैं। समूह परीक्षणों को ब्यक्तिव परीक्षणों के रूप में भी नाम में लिया जा सकता है किन्तु ब्यक्तिक परीक्षणों को समूह में एक साथ नहीं दिया जा सकता। इसमें जो कठिनाइयाँ हैं उनका बखान पहल किया जा चुका है।

समूह परीक्षणों का नाम यह है कि इनके द्वारा एक साथ कई व्यक्तियों का परीक्षण किया जा सकता है अतः समय की बचत होती है। साथ ही अधिक दृष्टि से भी इनमें कम व्यय होता है। जहाँ कई व्यक्तियों का परीक्षण करना हो वहाँ इन परीक्षणों का प्रयोग किया जा सकता है।

(२) अमानकीकृत अथवा शिक्षक निर्मित साधन—

निर्देशन वायवर्ता के लिये वेदत मानकीकृत परीक्षणों पर निर्भर रहना आवश्यक नहीं। वह ब्यक्तिक सूचनाओं को एकत्रित करने में कुछ अन्य साधनों का भी निर्माण कर सकता है। कभी कभी तो इन शिक्षक निर्मित अथवा अमानकीकृत साधनों से भी हमें ऐसी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं जो कि मानकीकृत साधनों से नहीं हो सकती। शिक्षक निर्मित साधनों का उपयोग हम पुरक साधनों के रूप में भी कर सकते हैं। मानकीकृत साधनों से व्यक्ति सम्बन्धी जो सूचनाएँ रह गई हों उनको हम शिक्षक निर्मित साधनों से एकत्रित कर सकते हैं। फिर हमारे देश में दो कारणों से शिक्षक निर्मित साधनों का ही अधिक उपयोग की सम्भावना हो सकती है। एक तो हमारे यहाँ अर्थानाव के कारण प्रत्येक ज्ञान में सभी आवश्यक मानकीकृत परीक्षणों के खरीदने की निकट शक्ति में कमी नहीं की जा सकती। फिर भारत में सभी क्षेत्रों में पर्याप्त मानकीकृत परीक्षण उपन ब भी नहीं हैं। हिंदी में तो फिर भी कुछ परीक्षण उपन ब हैं किन्तु अन्य प्रान्तीय भाषाओं में तो मानकीकृत परीक्षणों की और भी कमी पाई जाती है। अतः इन परिस्थितियों में सबसे यावहारिक हल जो उचितोचर होता है वह है शिक्षक निर्मित साधनों का। विदेशी परिस्थितियों में निर्मित एवं मानकीकृत साधनों के प्रयोग से अधिक वाछनीय तो यह

है कि हम शिक्षक निर्मित साधना का प्रयोग करें। शिक्षक निर्मित बुद्ध साधना के उदाहरण नाच प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

(क) निर्धारण मापनी—निर्धारण मापना के आधार पर हम किसी व्यक्ति व सम्बन्ध में अथवा व्यक्तिता का क्या राय है यह बात बतलाने हैं। यमिन व विभिन्न गुणा के सम्बन्ध में एक व्यक्तिता से राय प्राप्त की जाती है जिनका व्यक्ति से निकट का सम्बन्ध है। निर्धारण मापनी में किसी भी गुण को विभिन्न स्तरों पर परिभाषित किया जाता है और निर्धारक यह बताता है कि व्यक्ति में यह गुण किस स्तर पर है। क्वचन बहुत अधिक सामान्य या बहुत कम इस कारण व विशय पर्याय का प्रयोग करने की अपेक्षा गुण का एक स्तरों पर गुणात्मक रूप से यमनी व्यवहार अभिव्यक्ति का रूप में परिभाषित किया जाता है। हमारे प्रतिरिक्त प्रत्येक स्तर को १ २ ४ ५ आदि अङ्क दिए जाते हैं ताकि गुण निर्धारण गुणात्मक एवं परिभाषात्मक दाना रूप से किया जा सक। परिभाषात्मक गुण निर्धारण से हम समस्त कथा में कथा का स गण के सदृश में क्या स्थान है यह पता लगाने में सक्षम मिलती है तथा यदि तुलनात्मक अर्थ बनाने करना होता है तो भी परिभाषात्मक मूल्यांकन उपयोगी सिद्ध हो सकता है। उदाहरणार्थ—

स्वतंत्र प्रेरणा

१	२	३	४	५
नए कार्य या जिम्मेदारियाँ अपने अधिकारों के विचारता है।	किसी भी कार्य में अधिकार नहीं है।	दो गुरु जिम्मेदारियों को निष्ठा व साथ बन करता है।	निम्नकारी का काम करने में हिचकिचाए बिना प्रयत्न करता है।	किसी भी कार्य में अधिकार नहीं है।

निर्धारण मापना में व्यक्ति व स्वतंत्र प्रेरणा का मूल्यांकन करने हेतु निर्धारक दक्षता कि व्यक्ति सामान्यतया किस प्रकार का व्यवहार करता है और उसके अनुकूल स्वतंत्र प्रेरणा व्यक्ति में किस स्तर पर है इसका बड़ा चिन्ता करने का। किसी भी गुण को जितनी स्पष्टता से विभिन्न स्तरों पर परिभाषित किया जाएगा गुण का मापन में यमनी ही कम भ्रष्टि हान की शक्यता होगी। गुण को सुस्पष्ट परिभाषा निर्धारक का यह ज्ञान में सहायक होता है कि प्रत्येक गुण से हमारा क्या तात्पर्य है या उस गुण के अन्तर्गत किस प्रकार के व्यवहारों को अपनाया जा रहा है।

(ख) निर्धारण मापनी का लाभ—निर्धारण मापनी का सबसे बड़ा लाभ यह

हे कि उसे किसी भी विद्यालय में बनी सरलता से शिक्षकों द्वारा निर्मित किया जा सकता है। इससे उपयोग में आये साधनों की अपेक्षा अल्पतम कम खर्च होना है अतः भारतीय परिस्थितियों में इसकी अधिक उपादेयता है। इसके उपयोग हेतु विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती अतः कोई भी शिक्षक इसका उपयोग कर सकता है। इसमें उही गुणों का समावेश किया जा सकता है जिनके सम्बन्ध में हम सूचनाएँ प्राप्त करनी हैं।

(आ) निर्धारण मापनी के निर्माण एवं उपयोग सम्बन्धी कुछ प्रमुख सावधानियाँ

(i) निर्धारण मापनी की सफलता जसाकि पहले कहा जा चुका है बहुत सीमा तक इस पर निर्भर करती है कि गुणों की परिभाषा विभिन्न स्तरों पर बिलकुले स्पष्ट रूप से की गई है। कबल अत्यधिक अधिक सामान्य कम और बहुत कम इन स्तरों में गुणों का विद्वान्तरित करने के लिये पहला गुण के सही सूचकांक में सम्भाव्य नहीं होता। इन स्तरों पर गुणों का व्यवहार प्रामाण्य करना गुणों के सही सूचकांकों के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(ii) निर्धारण मापनी का उपयोग उही “यक्तियों को करना चाहिए जोकि विषयी संनिष्ठ रूपसे सम्बन्धित हों। तभी विश्वसनीय सूचनाएँ प्राप्त होने की सम्भावनाएँ हो सकती हैं।

(iii) किसी भी गुणों का निर्धारण करते समय अल्पकालीन प्रक्षणा के आधार पर अपना मत व्यक्त नहीं करना चाहिए। सभी अवधि तक यदि गुणों का प्रक्षण किया गया हो तभी इन अनुभवों के आधार पर गुणों निर्धारण करना वाञ्छनीय होगा।

(iv) अन्त में यह देखा गया है कि निर्धारक “यक्ति व गुणों के निर्धारण हेतु आवश्यक कष्ट नहीं लेते और कबल औपचारिकता निभाने हेतु कही भी चिह्न लगा देते हैं। इस सम्भावना को कम करने हेतु अन्त में निर्धारकों से जिन प्रश्नों के आधार पर गुणों का निर्धारण किया गया है उन्हें भी लिखने के लिए कहा जाता है।

(v) यह भी देखा गया है कि निर्धारक सामान्यतया नकारात्मक राय देने से सकोच करते हैं और केवल अच्छे प्रश्नों को ही प्रकाश में लाना चाहते हैं। फलस्वरूप अन्त में कोई “यक्ति ही हो जो वे उसे सम्बन्धित करते हैं। अतः निर्धारकों को स्पष्ट निर्देश दिए जायें कि वे निःसकोच गुणों का निर्धारण कर और यह भी आश्वासन दिया जायें कि उनके निर्धारण गोपनीय रहे जायेंगे।

(vi) निर्धारण मापनी का प्रयोग करते समय निर्धारक को यह सावधानी रखनी चाहिए कि अपने पूर्वग्रहों व्यक्तित्व संबंधी अरुचियों आदि का प्रभाव “यक्ति के गुणों निर्धारण पर न पड़ने पाए।

(vii) निर्धारण मापनी से प्राप्त सूचनाओं की विश्वसनीयता को बढ़ाने हेतु एक से अधिक “यक्तियों द्वारा किसी “यक्ति व गुणों का निर्धारण करवाना लाभ

प्रद सिद्ध हो सकता है। इसके घटिरिक्त किसी भी गण का निर्धारण वय म वय से नम दो तीन बार करना चाहिए क्योंकि हो सकता है वय क प्रारम्भ म या कुछ समय तक एक गण विरसित न हुआ हो किन्तु बाद मे वह गण विकसित हो जाए अत कई बार गण का निर्धारण करने से हमे विश्वसनीय सूचनाए प्राप्त हो सकती है।

(ख) उपाख्यान घत्त—यक्ति सम्ब धी सूचनाए एकत्रित करन का एक और अमानकावृत साधन हो सकता है उपाख्यान वृत्त। इस साधन मे शिक्षक यदि किसी बानक से सम्बन्धित बो म् स्वरूपण घटना देखता है तो उसका सक्षिप्त वर्णन एन प्रपत्र पर लिख कर निर्देशक तक पहुँचा देता है। व्यक्ति से सम्बन्धित ऐसी घटनाप्रा के सक्लन विवनेपण मे व्यक्ति के अध्ययन मे सहायता मिल सकती है। उपाख्यान वत्त जिस प्रपत्र पर लिखा जा सकता है उसका एक प्रस्तावित स्वरूप नीचे दिया जा रहा है।

विद्यालय का नाम

उपाख्यान वृत्त प्रपत्र

छात्र का नाम

वक्षा

घटना के प्रेक्षण का दिनांक

घटना का सक्षिप्त विवरण

घटना प्रेक्षक के हस्ताक्षर

इन उपाख्यान वृत प्रपत्रों को एकत्रित करने हेतु निर्देशन कद्र में एक पेटी रखी जा सकती है जिसमें शिक्षक उपाख्यान वक्त प्रपत्रों को कभी भी डाल सकते हैं। समय समय पर निर्देशन कार्यकर्ता इन प्रपत्रों को निवाल कर सम्बन्धित छात्र के सचित अभिलेख में रख सकता है। छात्र के सचित अभिलेख में ऐसे उपाख्यान वृत जब एकत्रित हो जाए तो उनसे प्राप्त सूचनाओं को अभिलेख में स्थाई रूप में स्थानांतरित किया जा सकता है। केवल महत्वपूर्ण सूचनाओं का ही सचित अभिलेख में स्थानान्तरित करना चाहिए।

(अ) उपाख्यान वक्त का महत्त्व— औपचारिक रीति से प्रिय प्रेक्षण की चर्चा हमने प्रारम्भ में की है किन्तु अनेक बार दतना विस्तृत निरीक्षण न तो सम्भव हो पाता है न ही तब इसकी आवश्यकता भी अनुभव की जाती है। फिर विस्तृत एव औपचारिक प्रेक्षण में समय भी अधिक लगता है। उपाख्यान वक्त भी एक प्रकार से व्यक्ति के व्यवहार सम्बन्धी प्रेक्षणों का अभिलेख ही। अन्तर केवल यह है कि ‘सम वक्त किसी घटना विशेष सम्बन्धी प्रेरणा का समावेश होता है तथा यह अधिक औपचारिक प्रेक्षण नहीं होता। घटनावक्त क्योंकि विभिन्न शिक्षकों से प्राप्त होता है अतः एक ही व्यक्ति के प्रेरणा में जो व्यक्तिनिष्ठता आ जाने की आशंका रहती है वह दोष कुछ सीमा तक इस साधन के प्रयोग से कम हो जाता है। फिर उपाख्यान वक्त का उपयोग हेतु प्रशिक्षण का आवश्यकता नहीं होती अतः नका उपयोग कोई भी शिक्षक कर सकता है।

(आ) उपाख्यान वक्त की आवश्यकता—वाचको के मन में यह शक उत्पन्न हो सकती है कि शिक्षक जिन व्यवहारों का दलत हैं उन्हें लिखित रूप में निर्देशन कार्यकर्ता के पास क्या पहुँचाना। इसके पाछे एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि जितने अधिक व्यक्तिगत प्रेक्षण निर्देशन कार्यकर्ता के पास होंगे उतनी ही अधिक विद्वसनीय रूप में वह छात्र के सम्बन्ध में बना सकता है। लिखित रूप से अपने प्रेक्षण उपवाचक के पास पहुँचाने में तथ्या में अन्तर पडने की सम्भावना कम हो जाती है। केवल स्मृति पर आधारित तथ्यों पर हम अधिक विश्वास नहीं कर सकते।

(इ) उपाख्यान वक्त में किन घटनाओं का समावेश किया जाए—एक किन्तु हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि उपाख्यान वक्तों में केवल महत्वपूर्ण घटनाओं का ही उल्लेख किया जाए। ये घटनाएँ ऐसी होनी चाहिए जिनमें हम व्यक्ति की क्षमताओं का समायुक्तियों के साथ अतः सम्बन्ध का पता चलता हो। छात्र के छात्रात्मक व्यवहार पत्राद्यन प्रवृत्ति सौहादपूर्ण व्यवहार आदि महत्वपूर्ण व्यवहारों से सम्बन्धित घटनाओं का कथन यदि किया जाए तो छात्र के पतित्व को अधिक अच्छी तरह से समझने में सहायता मिल सकती है। उपाख्यान वक्त में घटना की पृष्ठभूमि तथा घटना के महत्वपूर्ण तथ्य दोनों का समावेश होना चाहिए ताकि तथ्या

के निवचन में सुविधा हो सके। यदि उपाख्यान वचन निगम का या व्यक्ति घटना के आधार पर अपने लिखने भी लिखना चाहता है तो स्पष्ट रूप से अनुरोध करके लिखना चाहिए। घटनाएँ ऐसी होनी चाहिए जो या तो छात्र के किसी माना-संगणक का पुष्टि करती हों या छात्र सम्बन्धी किसी सामान्य धारणा के विपरीत हों। वचन का तात्पर्य यह कि घटनाएँ तभी मायक सिद्ध हो सकती हैं जब उनमें वस्तुनिष्ठ घटनाएँ सम्बन्धी हों।

(२) आत्म विवरणात्मक साधन

मानकीकृत एवं अनुभवकृत घटनाएँ शिक्षक निर्मित साधना के प्रतिरिक्त कुछ साधन एक भाग हो सकते हैं जिसमें छात्र स्वयं से सम्बन्धित सूचनाएँ स्वयं ही प्रदान करता है। इन्हें आत्म विवरणात्मक साधन कहा जाता है। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

(क) आत्मकथा—अनुभवकृत साधना में आत्मकथा भी एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है। भाषा के शिक्षक कक्षा-काय के रूप में छात्रों से अपनी घटनाएँ आत्मकथा लिखवा सकते हैं। इन आत्मकथाओं के अध्ययन एवं विश्लेषण से व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित अनुभव महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। आत्मकथा लिखने का कार्य अनौपचारिक ढंग में किया जाना चाहिए ताकि छात्रों में परीक्षण करना न जाग्रत हो जाए और वे अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं को अधिक सूक्ष्म भाव से लिख सकें।

(ख) घटना विवरण—कक्षा-कभी छात्र से सम्पूर्ण आत्मकथा लिखवाने की बजाय अपने जीवन से सम्बन्धित क्वचन एक या दो अनुभव सुख एवं अत्यन्त दुःख घटनाओं का वर्णन करने को कहा जाता है। इन घटनाओं से छात्र के जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

(ग) अनुभवार्थियाँ—अनुभवार्थियों के माध्यम से भी छात्रों के जीवन से सम्बन्धित सूचनाएँ उन्हीं से प्राप्त की जा सकती हैं। अनुभवार्थियों में ऐसी सूचनाओं का संग्रह करने का प्रयास करना चाहिए जिन्हें छात्रों द्वारा अध्यापक की सम्भावना नहीं है। छात्रों को अनुभवार्थियों सम्बन्धी समझने सम्बन्धी स्वाम्भ्य एवं परिवार सम्बन्धी सूचनाएँ अनुभवार्थियों द्वारा स्वयं छात्र से प्राप्त की जा सकती हैं।

(घ) व्यक्तिगत सूचना-संग्रह हेतु प्रयुक्त साधना के उपयोग के प्रमुख सिद्धांत

वाचक के मुख्य विभिन्न प्रकार के सूचना-संग्रह के साधना का एक विद्यमान विधि प्रस्तुत करने के पश्चात् अब हम इन साधना के उपयोग के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों की चर्चा करना चाहेंगे। सबसे प्रथम मानकीकृत साधना के प्रयोग के सिद्धान्तों की चर्चा की जाएगी तत्पश्चात् अन्य साधना के प्रयोग सम्बन्धी सिद्धान्तों का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा।

(क) मानकीकृत साधनों के उपयोग के सिद्धांत

(अ) मानकीकरण सम्बन्धी सूचनाएँ—किसी भी मानकीकृत साधन के प्रयोग से पूर्व हम उसके मानकीकरण सम्बन्धी सूचनाओं से अवगत हो जाना चाहिए अर्थात् हम देख लेना चाहिए कि साधन की विश्वमनीयता एवं बंधता स्तर सन्तोषजनक है कि नहीं। साथ ही इस बात से भी आश्वस्त हो जाना आवश्यक है कि जिन सर्वांगों पर साधन का मानकीकरण किया गया है उसमें और जिस समुदाय के लिए साधन का प्रयोग किया गया है उसमें साम्य है कि नहीं। अनेक बार यह देखा गया है कि अपरिपक्व कार्यकर्ता बिना परीक्षणों के बिना मोठे समझ प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार के परीक्षणों से प्राप्त सूचनाओं का व्यक्ति के अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्त्व नहीं होता।

(आ) साधन की उपयुक्तता—अनेक बार बहुत उच्च कोटि का साधन होते हुए भी हम यह देख लेना चाहिए कि जिन परिस्थितियों में हम साधन का प्रयोग करना है उन परिस्थितियों में उसका प्रयोग किया जा सकता है कि नहीं। साधन में प्रयुक्त भागा साधन की कीमत साधन के प्रयोग में लगने वाला समय साधन की जटिलता साधन के प्रयोग हेतु आवश्यक प्रशिक्षण आदि कुछ ऐसे बिन्दु हैं जो हम यह निर्णय लेने में सहायक हो सकते हैं कि हम साधन का प्रयोग कर सकते हैं या नहीं।

(इ) साधन से प्राप्त दत्त—साधन से दत्त जिन रूप में प्राप्त होता है यह भी साधन के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण निर्धारक कारक हो सकता है। आजकल किसी भी गुण का मापन एकात्मक प्राप्तांक के रूप में करने की बजाय विभेदक प्राप्तांक के रूप में करना अधिक उपयोगी समझा जाता है। अतः जिन परीक्षणों में बुद्धि का मापन बुद्धिलक्षि के रूप में किया जाता है उसके स्थान पर उन परीक्षणों को अधिक प्रबलता से जाती है जिनमें बुद्धि का मापन सांख्यिक सांख्यिक यांत्रिक गणितीय मापन तंत्रों के प्राप्तांकों के रूप में किया जाता है। इसी प्रकार व्यक्तित्व का मापन भी व्यक्तित्व के विभिन्न शीर्षकों के मापन में किया जाय तो इन परीक्षणों की अधिक साधकता हो सकती है। डिफरेंशियल एन्टिड्यूड बटरी बेकमलर एडिट इंटेलिजन्स स्केल जैसे परीक्षण हैं जिनमें एकात्मक प्राप्तांकों के स्थान पर विभेदक प्राप्तांक प्राप्त होते हैं। जबकि बिने स्केल एवं इसके आधार पर बनाए गए अन्य परीक्षणों तथा जटाटा आदिवा मेहता आदि के बुद्धि परीक्षणों में हम बुद्धिलक्षि (I Q) के रूप में एकात्मक प्राप्तांक प्राप्त होते हैं।

(ई) साधन के उपयोग पर उचित परिचित होना—किसी भी साधन का प्रयोग हम तब तक नहीं करना चाहिए जब तक हम उसकी सामग्री प्रशासन गणितीय विधि एवं अन्तर्गत विधि से पूर्णरूप से परिचित न हों। केवल परीक्षणों के सम्बन्ध में परीक्षण नियम पुस्तिका में पढ़ लेना मात्र पर्याप्त नहीं होता। अनेक बार

परीक्षण के उपयोग के समय प्रत्यक्ष कठिनायियाँ आ सकती हैं। अतः सर्वोत्तम उपाय यह होगा कि परीक्षण के उपयोग से पूर्व उसका मन्त्राध्ययन कर लिया जाय।

(उ) प्रशासन के समय सावधानियाँ—मानकीकृत परीक्षणों के मानकानुसार मनुष्य के निम्नलिखित विभिन्न तन्त्रों में सम्मिलित हानो है। अतः परीक्षण का प्रशासन ठीक उसी प्रकार से होना चाहिए जैसा कि नियम पुस्तिका में सुभाषा गया है। निम्नलिखित एव उनकी भाषा में भी अंतर करना आवश्यक नहीं होगा। अतः मन से नए निर्देश प्राप्त करना अथवा निर्धारित निर्देशों में परिवर्तन करना परिणाम को दूषित करता होगा। परीक्षण के प्रशासन से पूर्व परीक्षण सामग्री को पुनः जाँच कर लेनी चाहिए ताकि परीक्षण के समय अनवश्यक समय नष्ट न हो। परीक्षण के प्रशासन के समय भौतिक सुविधाओं का पूरा ध्यान रखना आवश्यक होता है। ठीक बैठने के बिलंब की व्यवस्था होना अथवा प्रकाश की ठीक व्यवस्था अथवा अंधकार की व्यवस्था का न होना उचित परीक्षण के लिए आवश्यक पूर्वनिर्धारण है। प्रशासन में पूर्व यह भी दायरे में चाहिए कि विषयी परीक्षण के दिन की मनस्थिति में है या नहीं। अतः मानसिक तन्त्रों की किसी अथवा काय की ओर आसक्तिपूर्ण शारीरिक अस्वस्थता आदि ऐसे कारण हैं जो परीक्षण के परिणामों पर निश्चित रूप से प्रभाव डालते हैं। अतः ऐसी परिस्थितियों में परीक्षण का प्रशासन निरर्थक होगा।

(क) परीक्षणों के परिणाम—जैसा कि हमने प्रारम्भ में कहा है हम व्यक्ति के सूचना, चित्त या स्वयं के सम्बन्ध में अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सक्षमता प्रदान करने हेतु एकत्रित करते हैं। अतः व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह इन साधनों से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग कर सके। इसका अर्थ यह नहीं कि हम उसे परीक्षण के परिणाम जस के तसे बता दें। अतः करने से व्यक्ति को सहायता करने के स्थान पर हम हानि पहुँचाने के। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के परिणाम उसी रूप में बता देना कि जो व्यक्ति के लिए किसी भी रूप में उपयोगी सिद्ध होगा न कि शक्यतो भी। हम तो परीक्षण परिणामों के निश्चय इन रूप में व्यक्ति के सम्मुख रखने हेतु जानते हैं कि वह समझ सके और उनका उपयोग कर सके। उदाहरणार्थ यदि हम किसी बालक को बता दें कि लघुशुद्धि शक्ति ७ है तो यह सूचना उस बालक के लिए किस तरह उपादेय सिद्ध होगी? उस निम्न बद्धि स्तर के क्या अभिप्राय अर्थ है उसकी मध्यम गोजनानुसार उसका किस तरह ध्यान रखा जा सकता है। यह सूचनाएँ यदि हम उस बालक को दें तो यह कदाचित् उसके लिए अधिक लाभप्रद सिद्ध होगी।

(घ) मानकीकृत साधन ही एकमेव साधन नहीं—नवान उसाही निर्देशन वाक्यताओं को मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रयोग का अत्यधिक गौण होता है एव कुछ अमरक धारणा भी मन में बन जाती है कि मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर ही निर्देशन वाक्य हो सकता है। अतः निर्देशन सेवाएँ परीक्षणों के आधार पर बन जाती हैं। एक बात यह कि निर्देशन पर प्रायोगिक मनोविज्ञान का अपना प्रभाव हो

गया था कि योग निर्देशन एव मानवनातिक परीक्षणों को एक दूसरे का पर्यायवाची ही समझते थे। किसी पाठशाळा में कुछ मानवनातिक परीक्षण कर लिए जाते थे और प्रधानाचार्य कहते थे कि हमारे यहां निर्देशन का काम बड़ा उत्तम चल रहा है। यह धारणा धीरे धीरे बुलबुल हुई। आज हम पर मानते हैं कि निर्देशन के अनेक साधनों में से मानवनातिक परीक्षण एक साधन है—एक मात्र साधन नहीं। अतः सूचनाओं को सम्पन्न बनाने हेतु हम अन्य साधनों एव प्रविधियों में भी सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

(रे) भारत में परीक्षणों के प्रयोग की विशेष सावधानियाँ—मानकीकृत साधनों के प्रयोग के सामान्य सिद्धांतों की चर्चा तो उपरोक्त अनुच्छेदों में कर दी गई है किंतु भारत में जब हम इन परीक्षणों का प्रयोग करते हैं तो हमें कुछ विशेष सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। भारतीय बच्चों के मन में परीक्षणों के प्रति भय रहता है। वे इन परीक्षणों को भी सामान्य शारीरिक परीक्षा जसा ही समझते हैं और अपने निराशा के उत्तम दशान हेतु अनुचित विधियाँ प्रयोजते हैं। अनेक को यह अनुभव है कि वाक्यपूति परीक्षण जैसे सामान्य परीक्षणों में भी बालक दूसरे बालकों द्वारा बताए गए उत्तरों की तबान करने का प्रयास करते हैं। अतः परीक्षण के प्रशासन के समय बालकों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह कोई परीक्षा नहीं है। इसके अंक उनकी परीक्षा के अंक में नहीं जुड़ेंगे। सूचियों चिह्नांकन सूचियाँ प्रदोषा अथवा अथ प्रदोषी विधियों में तो हम यह भी कर सकते हैं कि इन परीक्षणों में कोई एक उत्तर शीघ्र अथवा गलत नहीं है। अतः दूसरे व उत्तरो को देखने की आवश्यकता नहीं। भारतीय बालकों को मानवनातिक परीक्षणों का अभ्यास नहीं होता। अतः निर्देशन को स्पष्ट करने हेतु कम बार दोहराना पड़ सकता है। और परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व आवश्यक हो जाना आवश्यक होता है कि बच्चे निर्देशन समझ गए हैं अथवा नहीं।

(ख) अ मानकीकृत साधनों के उपयोग के सिद्धांत—अ मानकीकृत साधनों की विश्वसनीयता वस्तुनिष्ठता एव वप्रता यद्यपि राष्ट्रीय विधियों से सिद्ध नहीं की जाती फिर भी इन साधनों में उपयुक्त गुणों का होना आवश्यक है और यह गुण अभी आ सकते हैं जब हम न साधनों में निर्माण एव उपयोग में कुछ सावधानियाँ रखें। अ मानकीकृत साधनों से प्राप्त दत्तों की उपयोगिता बढ़ाने हेतु कुछ विद्युद्घ्यान में रखे जा सकते हैं।

(अ) निर्माण के प्रमुख सोपान—यदि किसी शिक्षक निर्मित साधन की उत्पादकता को हम बढ़ाना चाहते हैं तो उसका निर्माण वनातिक ढंग से किया जाना चाहिये। किसी साधन के निर्माण का सबसे प्रथम सोपान है—सम्बन्धित साहित्य पत्र क्षेत्र के विशयना की राय के आधार पर साधन में सम्मिलित की जाने वाली सामग्री का चयन। यदि हम गणित का उपसर्ग परीक्षण बना रहे हैं तो कुछ अनेक गणित शिक्षकों की राय इस बारे में जानी जा सकती है कि किस परीक्षण में

कौन-कौन से विद्यार्थियों का समावेश किया जाय। फिर निर्माता उन छात्रों में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर साधन का एक प्रारूप तैयार करे। इस प्रारूप को अंतिम न माना जाए। कुछ व्यक्तियों पर इस प्रारम्भिक प्रारूप का पूर्व परीक्षण किया जाय। पूर्व परीक्षण के परिणामों के आधार पर प्रारम्भिक प्रारूप में आवश्यक परिवर्तन किया जाना चाहिए और फिर साधन का अंतिम रूप निर्धारित करना चाहिए। अक्सर बार-बार प्रश्नावलियाँ काजूर पूर्व परीक्षण किया जाता है तो हम यह देखने को मिनता है कि कुछ प्रश्नों के उत्तर क्यों भी व्यक्ति नहीं देता अथवा कुछ प्रश्न स्पष्ट नहीं होने अथवा कुछ प्रश्नों का सत्र-परिष्कार एक जसा ही उत्तर दते हैं। अतः प्रश्नावली का अंतिम प्रारूप निर्धारित करते समय हम ऐसे प्रश्नों को या तो हटा देते हैं या उनको परिष्कृत कर देते हैं।

(आ) उपयोग से सम्बन्धित सावधानियाँ—अ-मानकीकृत परीक्षणों में व्यक्ति निष्पत्ता की मात्रा अधिक होती है। अतः जो व्यक्ति इन साधनों को काम में लाने से पहले उस बात का पूरी सावधानी रखनी चाहिए कि वह तत्स्थ ह्रासक व्यक्ति सम्बन्धी सूचनाएँ दे। सूचनाएँ प्रस्तुत करते समय अपने पूर्वाग्रहों, रुचियों अथवा प्रतिक्रिया का प्रभाव न पड़ने दे। व्यक्तिनिष्ठता के तत्त्व को कम करने हेतु अनेक बार हम एक ही साधन द्वारा एक से अधिक व्यक्तियों से विषयी सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करते हैं। जिन सूचनाओं में तालमेल न हो उन्हें हम काम में नाना लेते अथवा उनके सम्बन्ध में और अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

भारत में उपलब्ध परीक्षणों के कुछ उदाहरण

वसन्त में यथा स्थान विदेशी परीक्षणों के साथ साथ भारतीय परीक्षणों के उदाहरण भी प्रस्तुत किए गये हैं। फिर भाषा-साधनों की सुविधा हेतु कुछ भारतीय परीक्षणों की सूची भी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

बुद्धि परीक्षण—

बुद्धि परीक्षणों के क्षेत्र में भारत में सबसे अधिक काम हुआ है। हमारे देश में इस क्षेत्र में अग्रगामी काय सर्वप्रथम डा. राम (1922) तथा डा. कामराज (1935) ने किया। उनके सर्वप्रथम विदेशी स्केल से भारतीय अनुकूलनों का निर्माण किया। तत्पश्चात् इसी प्रकार के और अन्य परीक्षण भी हमारे सामने आये जिनमें (I E Individual scale of Intelligence) प्रमुख है जिसका कि निर्माण डा. उदयशंकर के मार्गदर्शन में किया गया। सामूहिक लिखित बुद्धि परीक्षणों में डा. एस. जलोटा डा. प्रयाग मेहता अलाहाबाद यूनाइटेड साइकोलॉजिकल द्वारा निर्मित परीक्षण प्रसिद्ध है। उनके अतिरिक्त डा. जोशी, डा. गरी, डा. सोहनान आदि मनोवैज्ञानिकों ने भी बुद्धि परीक्षण बनाकर इस क्षेत्र को सम्पन्न किया है। शिक्षकों के बुद्धिमापन हेतु बंगोदा की डा. प्रमिला पाटिल द्वारा गुण-स्केल का एक टेस्ट का भारतीय अनुकूलन किया गया है। इस प्रकार निष्पादन बुद्धिपरीक्षणों में डा.

की एम आठिया द्वारा निर्मित भाग्या बटरी प्रसिद्ध है।

यक्ति-व परीक्षण—भारत में भी अनेक यक्ति-व सूचिया वा निर्माण हुआ है जिनमें डा ग्रम्याना की समायाजन सूची डा सक्पना की यक्तित्व परव्य प्रश्ना वला विहार के शक्षिक व्यावसायिक यूरुो द्वारा निर्मित बल एडजस्टमेन्ट इन्स्ट्री का भारतीय अनुकूलन जोगी एव वा ड द्वारा निर्मित मनी प्रावन्तम नेक लिस्ट का हिन्दी अनुकूलन प्रमुख है। इनके अतिरिक्त लगभग २५ यक्तित्व सूचिया अथवा मापनिया और उपलब्ध हैं।

प्रमेया विधिया में डा उष्य पारीक नारा शिया गया रोजभवन (Rosen zweig) पिक्चर प्रन्टेज्म स्टडा वा भारतीय अनुकूलन उन्नेखनाय है। म्ती प्रवार अलाहावाद यूरुो ने डा ए टी (T A T) का भारतीय अनुकूलन तयार किया है।

अभिहवि परीक्षण—डा अिगरल ने स्ट्राग के योक्ेशनल इन्टरेस्ट चेक का तथा बिन्गर यूरुो आफ एयूक्ेशनल एण्ड योक्ेशनल गाइन्स न कूडर प्रिफरम रेकाड के भारतीय अनुकूलनो का निर्माण किया है। डा चेटर्जी डा धार पी सिंग डा पाण्डे डा कुनयड्ड आदि अनेक मनोवनानिका ने अभिहवि परीक्षा का निर्माण किया है। इसा प्रकार डा एव वा महता न अग्र जो में एक यावसा सिक अभिहवि चिह्नाकन सूची (Vocational Interest check list) का निर्माण किया है।

अधिसमता परीक्षण—अधिसमता परीक्षणो में डा गोहसन का बिनाम अधिसमता परीक्षण डा आभानद शना द्वारा निर्मित यात्रिक अधिसमता परीक्षण गाना उल्लेखनीय है। इन अतिरिक्त विहार यूरुो अम्बद गाव्देस यूरुो उत्तर प्रदेश मनोविानन धाला शानि सस्थाओं न भी अनेक अधिसमता परीक्षणो का निर्माण किया है।

भारत में प्रकाशित एव अथ अन्वेषणमिक परीक्षण सामायनया निम्न प्रका शका अथवा कम्पनिया के पास उपलब्ध हो सकते हैं।

- (१) पुरोन्ति एण्ड पुराहित पुना
- (२) गानसाधन ३२ नेताजी गुभाय माग देहली—६
- (३) म्पा सांकासोजिकन वारपोरेक्षण वाराणसी
- (४) रांकी सेटर ग्रीन पार्क यूरु देहली
- (५) वाशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस (डा सक्पना की यक्तित्व सूची क लिए)
- (६) मनोविानन कम् २४६ तनिया स्ट्रीट मरठ बट।
- (७) म्पियन माइकोनाजिफन वाराणसीन सखनऊ—७
- (८) सांकोनोन्विन टेस्टिंग सेटर आगरा—२

उपसहारात्मक कथन—इन अगाय में वयक्ति सूचनाया को एकनिव वरन हेतु प्रयुक्त विभिन्न प्रविधिया एव साधनो की खचा की ग है। वयक्ति सूचना एव

प्रित करन का काय निरक्षण काय के सफल सवालन हेतु प्रयत्न आवश्यक है। यक्ति से सम्बन्धित सूचनाएँ जितनी सम्पन्न तथा उतनी ही यक्ति को प्राप्तमान एवं प्राप्तनिष्पत्ति देने में सावधान होगी। व्यक्तियों की क्षमताओं को ध्यानपूर्वक के ध्यान के सम्भावना के लिए गए निष्पत्ति निरक्षणों को जाम दे सकत है। व्यक्तित्व सूचनाएँ तभी सम्पन्न हो सकती हैं जब हम विविध स्तरों में व्यक्तियों के बहुधायायी यक्तियों सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करें। इन विभिन्न स्तरों से स्वयं यक्ति भी सूचनाएँ का एवं आवश्यक एवं सम्बन्धपूर्ण स्रोत है। यक्ति से सूचनाएँ प्राप्त करन के विविध साधन हैं एवं अनेक विधियाँ हैं जिनका इस अध्याय में विस्तृत वर्णन किया गया है। कुछ साधन मानवनिर्माण के अर्थ पर निर्भरता की दृष्टि से विचार द्वारा वध एवं विश्वसनीय दत्त सामग्री प्राप्त हो सकती है। जबकि कुछ अन्य भी साधन हैं जिनका निर्माण शिक्षक स्वयं कर सकता है। इन शिक्षक निर्मित साधनों की सम्बन्धिष्टता वधता एवं विश्वसनीयता बढ़ान हेतु उनके निर्माण एवं उपयोग के समय कुछ सावधानियाँ रखनी चाहिए। इनका भी वर्णन इस अध्याय में किया गया है। मनोरंजन के मानकीकृत परीक्षण यद्यपि प्रयत्न वध एवं विश्वसनीय सूचनाएँ प्रदान करते हैं तथापि इनके दुुरुपयोग की अधिक प्राणकाल हैं। इनका वास्तविक रूप में उचित सूचनाएँ प्राप्त करन हेतु इनका उपयोग प्रयत्न सावधानी से करना चाहिए। इस सतरे से वचन के लिए इन मानकीकृत साधनों के उपयोग के कुछ आधारभूत सिद्धांत भी इस अध्याय में दिए गए हैं। फिर भारत में तो इन परीक्षणों को और भी अधिक सावधानी से काम में देने की आवश्यकता है। हमारे बच्चे परीक्षा के आगे नहीं होने परीक्षा के प्रति उनके मन में भय रहना है और परीक्षाओं के प्रति घनावस्था के बिना उनके मन में बनी रहती है। इन सब परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारतीय मानकों के परीक्षण में अधिक सतर्कता रखना आवश्यक है। अतः इस अध्याय में भारत में उपलब्ध कुछ मानकीकृत साधनों के भी उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अनेक अनेक अध्याय में पर्यावर्णीय सूचनाओं का एकत्रित करने की विधियाँ के सम्बन्ध में चर्चा का जाएगी।

पर्यावरणीय सूचनाएँ

(भ्रष्टाचरणा पर्यावरणीय सूचनाओं के सकलन के सिद्धांत—(१) सूचनाओं का सकलन छात्रों की आवश्यकताओं के आधार पर हो (२) भ्रष्टाचरणा (३) परिपुष्टता (४) व्यापकता (५) पूर्णता () सूचनाओं का उपयुक्त पर्यावरणीय सूचनाओं के क्षेत्र—(१) शांति सम्बन्धी सूचना (क) शांति भवन (ख) शांति नियम एवं परम्पराएँ (ग) शांति में उपलब्ध विषय (घ) शांति में उपलब्ध सुविधाएँ एवं सेवाएँ (च) पुस्तकालय (ज) पाठ्य सहाय्यी किताबें (२) विषय के धर्म सम्बन्धी सूचनाएँ () उच्च शिक्षण सम्बन्धी सुविधाएँ (४) व्यवसाय सम्बन्धी सूचनाएँ (५) आर्थिक सहायता सम्बन्धी सूचनाएँ () अध्ययन प्रोग्राम एवं नुशांताओं सम्बन्धी सूचनाएँ पर्यावरणीय सूचनाओं के स्रोत—(१) शिक्षण सत्याएँ (२) सार्वजनिक अभिकरण (३) राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण—(क) शांति सूचनाएँ (ख) आवासादिक सूचनाएँ (४) राष्ट्रीय अभिकरण (५) औद्योगिक प्रतिष्ठान एवं व्यापारिक सत्याएँ (६) स्वयंसेवा अभिकरण पर्यावरणीय सूचनाओं के सकलन की विधियाँ—(१) व्यावसायिक सर्वेक्षण (क) व्यावसायिक सर्वेक्षणों से प्राप्त महत्वपूर्ण सूचनाएँ (ख) व्यावसायिक सुनाव प्रवृत्ति (घ) नव व्यवसायों से परिचय (ङ) व्यवसायों के सम्बन्ध में विस्तृत परिचय (च) व्यावसायिक सर्वेक्षणों में छात्रों का संयुक्त करना (द) व्यावसायिक सर्वेक्षणों के संचालन से सम्बन्धित कुछ सिद्धान्त—(क) योजना (ख) व्यापारिक एवं औद्योगिक सत्याना से सम्बन्ध (ङ) आवश्यक सर्वेक्षण साधना का निर्धारण (इ) सकलित सूचनाओं का समन्वित प्रतिवेदन पर्यावरणीय सूचनाओं का निम्नोत्तरण एवं सग्रह—(१) सिद्धान्त (२) कार्यक्रम () म्यान पर्यावरणीय सूचनाओं का संचरण—(१) संचरण के सिद्धान्त—(क) प्रसारण (ख) सूचनाओं का प्राप्ति करण का मुलभ यवस्था (ग) समस्त भवनों का उपयोग (घ) विभिन्न व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त (२) संचरण विधि—(क) अनुस्थापन बनाएँ (ख) शांति के वातावरण से परिचय (घ) अध्ययन प्रोग्राम एवं नुशांताओं का प्राप्ति (ङ) नवान विधियों का परिचय (ई) व्यावसायिक अनुस्थापन (च) व्यावसायिक सूचना सम्पन्न (ख) व्यावसायिक सूचना सम्पन्न के आयोजन सम्बन्धी कुछ सुनाव विधि निर्धारण—छात्रों के संचरण का गठन—विशेषता से सम्बन्धित सम्पन्न का संचरण (घ) व्यावसायिक

सूचना सम्मेलन का मूल्यांकन (ग) कक्षागत वाय (घ) पर्यावरण त्रिपाठी के माध्यम से (च) अभिभावक त्विस (ज) निर्देशन त्विस (झ) गाता म उात न पयावर्णम सूचना सामग्री का प्रचार (ञ) उच्चस्तराव त्रिद्यातया स मउ उप सहारा मक धयन)

निर्देशन काय की सफरता दा प्रकार का सूचनाया पर निर्भर करती है एक तो यत्ति स सम्प्राधन सूचनाए एव दूसरी त्रिप पर्यावरण म सम्प्राधन समस्या उभूत हूँ है उस पर्यावरण सम्बधा मूरनाए । जस जस विनात एव तरनाती प्रगति हूँ है हमारा जीवन अधिवाधिक जटिल होना जा रहा है । पहन तो प र्कार धयने धाप म एक प्रापनिभर इकार था धन परिवार क वरिष्ठ सम्प्य ह्यो मउ था की लगभग सभा आवश्यकताया की पूर्ति कर दत थे । प्रध्ययन एव जीव कीराजन का काय भी वतना जन्मिल न । था जहा विविध त्रिपया धयवा व्यवसायों म से चयन करन का समस्या हो । किनु धाअ वृत्त बान नो री विपया तथा त्रिपयाया का वतना वाट्टुप हो गया है कि परिवार के सन्स्यो की सूचनाया के प्राधार पर काम नना चरता । धाअ जावन म वतनी गतिशाजता धा गउ है कि हूँ प्रध्ययन जाविकापाजन धयवा धय कारणों म एक म्यान स दूसरे म्यान प जाना पडता है । धनन बार तो परिवार क सन्सया क लिए नए वाावरण सम्बधी एसी सूचनाए द सकना वरिष्ठ हो जाता है । नन सब परिस्थि तथा क कनत्वस्व देगी सवागे की धा ररकता अधिवाधिक धनुभव की जान लगी है त्रियम हूँ शक्ति त्रिपया वक एक सामाजिक जावन गमउरी आवश्यक सूचनाए प्राप्त हो सके । इहा सूचनाया का उम पर्यावर्णम सूचनाए कहन है ।

व्यक्ति की धयनी क्षमतायो सीमितनाया का पूण धागाम हा किनु यत्ति उस पर्यावर्णम सूचनाए उपन न हा तो वह धयनी क्षमताया का समुचित विकास नहा कर सकता । एक उच्च कोटक विनात क विद्यार्थी को यति साम्स टेनउ सच (Science Talent Search) सम्बधी सूचना न हा ता व० इम योठना का नाम उठाकर धयनी विनात की प्रतिभायो को पूणतय स प्रम्पुरित नदी कर सकता । पर्यावर्णम सूचनाया क ही अभाव म एक धोर ता तरकनाकी प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति वकार बठे है तो दूसरी धार धनेक प्रतिष्ठाना म उपयुक्त तकनीशियना की कमी धनुभव की जा रही है । धत निर्देशन सेवाओं म पर्यावर्णम सूचना का एक महत्वपूण स्थान है । इस सेवा के अन्तगत यत्ति क जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्ब धित विभिन्न सूचनायो का मकनन वर्गीकरण विचरपण मिसीरीकरण निवचन एव उपयोग विधिवत रूप स िया जाता है । नन सूचनाया म उन सब सूचनाओं का समा धन किया जात है जिनकी आवश्यकता यत्ति का जीवन के धनक महत्वपूण निणय बुद्धिमत्तापूण धने हेतु पठ सकती है । असाकि अध्याय ४ म कहा गया है नस सवा का काय विस्तार भी निर्देशन के धावुनिक व्यापक सप्रयय के धनुहन केवल शक्ति व्यावसायिक सूचनाया क सकनन तक सीमित नही है । फिर भी त्रिपयायिक रूप

अधिकतम शालाया में छात्रों की तात्कालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक "यावमायिक सूचनाओं के सकलन एवं सचरण पर ही अधिक बल दिया जाता है। पर्यावरणीय सूचनाओं की सकलन विधियों एवं छात्रों में प्रति सम्बन्धित चर्चा से पूर्व इन सूचनाओं को अत्यधिक उपयोगी बनाने हेतु कुछ आधारभूत सिद्धांतों की चर्चा करना कदाचित् उपादेय सिद्ध हो सकता है। चूंकि इन सिद्धांतों में से कुछ की चर्चा ग्रन्थों में पर्यावरणीय सूचना सेवा के अंतर्गत की गई है अतः यहाँ इन सिद्धांतों की संक्षिप्त चर्चा ही की जावेगी।

पर्यावरणीय सूचनाओं के सकलन के सिद्धांत

(१) सूचनाओं का सकलन छात्रों की आवश्यकताओं के आधार पर हो

ज्ञान में उपलब्ध अधिक एवं मानवीय साधना का अधिकतम अधिक उपयोग करने हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि सूचनाएँ एकत्रित करने से पूर्व हम इस बात का पता लगायें कि हमारी शाला के लिए कितनी सूचनाओं की सर्वाधिक आवश्यकता है। इस बात का बोध छात्रों की आवश्यकताओं के सर्वोत्तम समझ सकता है। बिना इस सर्वेक्षण के सूचनाओं का सकलन करने से हासिल होता है कि छात्रों के लिए अत्यंत आवश्यक सूचनाओं का सकलन होने के स्थान पर बर्बाद सी अनावश्यक सूचनाओं का सकलन हो जाय। एक छोटा सा उदाहरण लेकर इस बिन्दु को स्पष्ट किया जा सकता है। ऐसे विद्यालय में जहाँ केवल वाणिज्य तथा कला ही हैं यदि हम इंजीनियरिंग एवं विज्ञान शास्त्र के महाविद्यालयों सम्बन्धी सूचनाएँ एकत्रित कर लें तो इन सूचनाओं का कोई लाभ नहीं होगा। दूसरा सिद्धांत यह भी है कि उपर्युक्त धनराशि में कौनसी सूचनाओं के सकलन को प्राथमिकता दी जाय यह भी मोक्ष विचार कर निर्धारित करना चाहिए। एकी सूचनाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए जोकि अधिक से अधिक छात्रों के लिए उपयोगी हो।

(२) अद्यतनता

सूचनाओं के सकलन के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सूचनाएँ अद्यतन हैं कि नहीं। सूचनाओं की उपयोगिता ही इस बात पर निर्भर करती है। चार वर्ष पूर्व किसी महाविद्यालय में जो विषय हो शायद उनमें आज परिवर्तन हो गया हो इसी प्रकार कुछ समय पूर्व किसी व्यवसाय में प्रवेश हेतु जो आवश्यक योग्यताएँ निर्धारित हैं उनमें परिवर्तन हो गया हो। अतः पुरानी सूचनाओं के आधार पर कोई विश्वासपूर्ण निर्णय नहीं लिया जा सकता। सूचनाओं का अद्यतन बनाए रखने के लिए केवल सकलन के समय ही ध्यान देना पर्याप्त नहीं है समय समय पर सकलित सूचनाओं की भी जाँच करके हमें आवश्यक होना चाहिए कि सूचनाएँ अद्यतन हैं या नहीं। पुरानी एवं अनुपयुक्त सूचनाओं को हटा देना चाहिए जिससे उपयोगी सूचनाओं का स्थान उत्तम गौण न रह जाय।

() परिणुद्धता

सूचनाएँ यदि परिणुद्ध नहीं होंगी तो ऐसी सूचनाओं के आधार पर व्यक्ति के अपनिर्देशित हो जान की सम्भावना हो सकती है। इस सम्बन्ध में अध्याय ४ में विषय चर्चा की गई है अतः उसे पुनः दोहराना आवश्यक नहीं।

(४) व्यापकता

छात्रों के लिए जितना अधिक से अधिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक अवसरों की सूचनाएँ छात्रों के सम्मुख होंगी छात्र उतने ही युक्तिपूर्वक ढंग से अपनी भविष्य योजनाओं सम्बन्धित निर्णय ले सकेंगे। अतः छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सूचनाओं को हम जितना अधिक से अधिक सम्पन्न बना सकें बनाने का प्रयास करना चाहिए।

(५) पूर्णता

सूचनाएँ सक्कल करते समय हम सूचनाओं की पूर्णता की ओर ध्यान देना चाहिए। अपूर्ण एवं अपर्याप्त सूचनाओं के आधार पर कोई साधक निर्देशन कार्य नहीं किया जा सकता। किसी व्यवसाय में प्रवेश हेतु क्या पूर्वावश्यकताएँ हैं? प्रवेश की रीति क्या है? साक्षात्कार निहित परीक्षा अथवा किस प्रकार प्रवेश प्राप्त किया जा सकता है? व्यवसाय में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है या नहीं? वेतन तथा अन्य सुविधाएँ क्या हैं? आदि अनेक ऐसी बातें जिनका विपूरण ज्ञान न हो तो कोई युक्तियुक्त निर्णय नहीं लिया जा सकता।

(६) सूचनाओं की उपयोगिता

सूचनाओं की उपयोगिता से हमारा तात्पर्य यह है कि छात्र सूचनाओं का उपयोग कर सकते हैं या नहीं। सूचनाएँ यदि अशुद्ध हैं तो छात्र उन्हें पढ़ न सकेंगे तो ऐसी सूचनाओं का छात्र प्रत्यक्ष उपयोग नहीं कर सकते। हम यह देखना चाहिए कि सूचनाओं का प्रस्तुतिकरण छात्रों के स्तरानुसार है या नहीं। अथवा सूचनाओं का उपयोग होने के स्थान पर वे पुस्तकालय की ही शोभा बटाती रहेगी।

पर्यावरणीय सूचनाओं के क्षेत्र

यदि जब जीवन में कोई नया कदम उठाता है तो उसे कुछ सूचनाओं की आवश्यकता होती है। चाहे वह नया काम किसी प्रवृत्ति के चयन का हो नए शिक्षण कार्यक्रम के चयन का हो विश्व यात्रा का हो मकान बनाने का हो अथवा विवाह हेतु जीवनसाथी चयन का हो। प्रत्येक महत्वपूर्ण निर्णय को ठीक ढंग से लेने के लिए नई परिस्थिति से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाओं का होना आवश्यक है। अब हम देखें कि सामान्यतया शाला में पढ़ने वाले छात्रों को किन किन प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता होती है।

(१) शिक्षा सम्बन्धी सूचनाएँ

जब ही बालक किसी नयी शाला में प्रवेश पाता है तो उस शाला से सम्ब

द्विधत अनेक प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता की अनुभूति होती है। अतः वार हम यह मानकर चलते हैं कि छात्र इन सब सूचनाओं से अवगत है किन्तु वस्तु स्थिति यह नहीं होनी। इन सूचनाओं के अभाव में बालक को व्यवस्थापन की कठिनाई अनुभव करनी पड़ती है। शाला मन के प्रारम्भिक काल में शाला जीवन सम्बन्धी सूचनाएँ यदि छात्रा को दे दी जाए तो उसे अनावश्यक कठिनाई अनुभव नहीं करनी पड़ेगी। सामान्यतया शाला सम्बन्धी सूचनाओं में निम्न सूचनाएँ प्रमुख हैं।

(क) शाला भवन—एक बालक को शाला भवन की जानकारी करवाना आवश्यक होता है। शाला में बालकालय प्रयोगशालाएँ कार्यालय प्रधानाध्यापक का कक्षा अध्यापक व न्यायि प्रमुख स्थान कहा कहा पर स्थित है खेल के भवन कहा हैं आदि सब भौतिक साधन सुविधाएँ सम्बन्धी सूचनाएँ छात्रा के लिए उपयुगी सिद्ध हो सकती हैं।

(ख) शाला नियम एवं परम्पराएँ—प्रत्येक शाला की कुछ विशेषताएँ एवं परम्पराएँ होती हैं। छात्रों का इन विशेषताओं नियम परम्पराओं एवं अपेक्षाओं से परिचित होना अवगत करा देना चाहिये ताकि नये छात्र शाला की मूल धारा के साथ तुरन्त समरस हो जाए।

(ग) शाला में उपलब्ध विषय—शाला की कक्षा के पश्चात् छात्रों को एक विषय का अध्ययन करना पड़ता है। अतः यह कक्षा के बालक को यह पता हो जाना आवश्यक है कि शाला में किन किन विषयों अथवा विषयों के सच्यों का प्रावधान है।

(घ) शाला में उपलब्ध सुविधाएँ एवं सेवाएँ—शाला के बालक को शाला की समस्त सेवाओं एवं सुविधाओं का ज्ञान होना चाहिए। जैसे निरीक्षण सेवाएँ प्रतिभावान बालक के विशेष शिक्षण की सुविधा कमजोर बालक की शिक्षा की व्यवस्था कराव छात्रा के लिए छात्रवृत्तियाँ की व्यवस्था आदि ऐसी सेवाएँ एवं सुविधाएँ हैं जिनका पता बालक को ठीक समय पर लगाने से वे इनका पूरा लाभ उठा सकते हैं।

(ङ) पुस्तकालय—छात्रों को पुस्तकालय में उपलब्ध सुविधाओं पुस्तकालय के नियमों पुस्तकों को प्राप्त करने की विधियों आदि का जानकारी दे देने से वे इस सुविधा का पूरा पूरा लाभ उठा सकते हैं।

(च) पाठ्यसह्यामी क्रियाएँ—शाला में कौन-कौन सा पाठ्यसह्यामी क्रियाओं का प्रावधान है कौन कौन से खेल एवं शाला के शिक्षण की सुविधा है इत्यादि आयोग एवं संचालन किस प्रकार होता है आदि सब बातों से छात्रा को अवगत कराना चाहिए।

(२) विषयो के चयन सम्बन्धी सूचनाएँ

छात्रों की कक्षा के वास्तवों को अपनी शक्ति में कौन-कौन से विषय नवमी कक्षा में चने जा सकते हैं इसका तो सचता मिलनी ही चाहिए। किन्तु इसका प्रतिरिक्त इन विषयों के चयन से कौन-कौन से उच्च शिक्षण प्रमा में भ्रम वा व्यवसायों में प्रवेश प्राप्त करने में सुविधा रहती है इन विषयों के अध्ययन हेतु क्या विशेष योग्यताएँ होनी चाहिए। यदि विद्यार्थी स सम्बन्धित छात्रों का अनुसंधान यदि किया जाए तो विषयों के सुनिश्चित चयन में उच्च सहायता मिल सकती है।

(३) उच्च शिक्षण सम्बन्धी सुविधाएँ

कक्षा दस एवं ग्यारह के विद्यार्थियों के मन में यह प्रश्न बना रहता है कि भ्रम भ्रमों उच्च कक्षा शिक्षण क्या है तथा उच्च शिक्षण हेतु अपने राज्य देश भ्रमों विदेशों में क्या सुविधाएँ प्राप्त हैं। अतः इन छात्रों की सहायता हेतु महाविद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों सम्बन्धी सूचनाएँ एकत्रित करना उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

(४) व्यवसायों सम्बन्धी सूचनाएँ

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक अध्ययन कर लेने के पश्चात् अनेक छात्र जीविकोपार्जन की सम्भावनाएँ खोजने लगते हैं। उनको सहायता हेतु उनके उपयुक्त व्यवसायों की सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं। भ्रम व्यवसायों सम्बन्धी सूचनाएँ भी विषयों के चयन निर्धारण में सहायक हो सकती हैं।

(५) आर्थिक सहायता सम्बन्धी सूचनाएँ

देश में अनेक ऐसी योजनाएँ हैं जिनमें निम्न किन्तु प्रतिभाशाली छात्रों की आर्थिक सहायता का प्रावधान है। इन योजनाओं का नाम किन्तु छात्रों को कैसे मिल सकता है यह सूचनाएँ यदि हम छात्रों को द सकें तो यह एक बड़ी महत्वपूर्ण सेवा होगी। इन सूचनाओं के अभाव में अनेक प्रतिभाशाली छात्रोंको अर्थिक अभाव के कारण अपनी प्रतिभाओं को पूर्णतया विकसित करने का अवसर नष्ट प्राप्त होता है।

(६) अध्ययन आदता एवं कुशलताओं सम्बन्धी सूचनाएँ

कक्षा में नाटक कैसे लिए जाए पुस्तकालय का सदस्यत्व स्वार्थीय के लिए कैसे किया जाय तथा भ्रम मन्त्रपूर्ण अध्ययन आदतों सम्बन्धी सूचनाएँ छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

पर्यावरणीय सूचनाओं के स्रोत

(१) शिक्षण संस्थाएँ

सामान्यतया उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों को भ्रम उच्च शिक्षण सम्बन्धी सुविधाओं की सूचनाओं की आवश्यकता होती है। उनसे सम्बन्धित उच्च शिक्षण की सुविधाएँ किन्तु महाविद्यालयों में प्राप्त हो सकती हैं उनमें प्रवेश प्राप्त

करने हेतु क्या विधि अपनाती जाती है ? आदि अनेक सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए ये छात्र आतुर होते हैं। अब विद्यालय में निर्देशन कार्यकर्ता को विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विवरण पत्र (Prospectus) भेजना पड़े चाहिए। जो विषय शाला में हो उनसे सम्बन्धित उच्च शिक्षण संस्थाओं के विवरण पत्र अथवा स अधिक भेजवाने चाहिए।

(२) अंतर्राष्ट्रीय अभिकरण

उच्च शिक्षा की विज्ञान में क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं तथा विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु कौन कौन सी सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं इन सम्बन्ध में हम विदेशी दूतावासों से सम्बन्ध स्थापित कर सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। यू.एस.ई.एफ.आई. (U S E F I) तथा ब्रिटिश कांसिल से भी अमेरिका तथा इंग्लैंड में कौन कौन से शैक्षिक अवसर छात्रों को प्राप्त हो सकते हैं। इस सम्बन्ध में सूचनाएँ मिल सकती हैं।

(३) राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण

(क) शैक्षिक सूचनाएँ — सूचनाओं के दूसरे प्रमुख स्रोत होते हैं राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण। उदाहरणार्थ शिक्षा मन्त्रालय से हम राष्ट्रीय स्तर पर जो छात्रवृत्तियों का योजना है उनके सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं जैसे शिक्षा मन्त्रालय द्वारा परीक्षा के आधार पर कुछ छात्रों का चयन किया जाता है व उच्च सरकार व उच्च पर पब्लिक स्कूलों में पठन की सुविधा दी जाती है। इसी प्रकार विद्युत् विद्युत् के छात्रों को श्रद्धा शिक्षण देने हेतु समाज कल्याण विभाग की भी कुछ योजनाएँ हैं। इनसे सम्बन्धित सूचनाएँ समाज कल्याण विभाग में प्राप्त की जा सकती हैं। इसी प्रकार राष्ट्रीय विज्ञान परिषद शिक्षा मन्त्रालय से हम साइंस टैलेंट सर्च (Science Talent Search) सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा मन्त्रालय में राष्ट्रीय स्तर पर एक सूची तैयार की है जिसमें कहा-कहा जितने प्रकार के उच्च शिक्षण की व्यवस्था है उसकी सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

(ख) व्यावसायिक सूचनाएँ — व्यावसायिक सूचनाओं के लिए भी राष्ट्रीय स्तर के कुछ अभिकरण उपयोग सिद्ध हो सकते हैं। कर्नाटक में पुनर्वास एवं नियोजन मन्त्रालय ने हमारे देश में जो विभिन्न व्यवसाय उपलब्ध हैं उनमें से कुछ व्यवसायों से सम्बन्धित सूचनाएँ व्यवसाय पुस्तिकाओं (Career Pamphlets) के रूप में प्रकाशित की हैं। प्रत्येक पुस्तिका में एक व्यवसाय से सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाओं का समावेश होता है। इन पुस्तिकाओं की मांगों दरा पर गांधी मन्त्रालय से अथवा स्थायी नियोजन कार्यालय (Employment exchange) से प्राप्त किया जा सकता है। अथवा पुनर्वास एवं नियोजन मन्त्रालय से प्रत्येक राज्य में तकनीकी प्रशिक्षण की क्या सुविधाएँ हैं इस सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। प्रत्येक राज्य के लिये एक पुस्तिका हेन्ड बुक ऑफ ट्रेनिंग फ़ैसिलिटीज (Handbook of Training facilities) तैयार की गई है जिससे उपरोक्त सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। इसी प्रकार

एन सी ई धारा टी (NCERT) के डिपार्टमेंट आफ एड्युकेशनल साइड कोरिजी एण्ड फाउण्डेशन आफ एड्युकेशनल साइड्स के विभाग से ६ म सुद्ध श्रव्य श्रव सामग्री प्राप्त हो सकती है जिससे हम व्यावसायिक सूचनाएँ छात्रों तक पहुँचा सकते हैं। श्री सत्यन के डिपार्टमेंट आफ टोकिंग गडस (Department of Teaching aids) से ५ म व्यवसायो सम्बन्धी फिल्म भेगवा सकते हैं।

(४) राज्य स्तरीय अभिकरण

प्रत्येक राज्य के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभागों में उच्च स्तर के गान्डेय युवा का एता समझाया जा सकता है तथा वे भी म शिक्षण एवं व्यावसायिक सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। राजस्थान का निर्देशक ब्यूरो बीकानेर में स्थित है। राजस्थान के निर्देशन वायव्यता इस ब्यूरो से सम्पर्क स्थापित कर सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। राज्य शिक्षा मंत्रालयों से तथा समान कर्माग मंत्रालयों से छात्रों की शिक्षा हेतु धार्मिक योजनाओं की सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

राज्य में स्थित सार्वजनिक स्कूलों के प्राचार्यों में सम्बन्ध स्थापित कर सार्वजनिक स्कूलों के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इनमें प्रवेश प्राप्त करने हेतु एवं छात्रवर्तियों प्राप्त करने हेतु क्या करना होता है उनकी सूचनाएँ पाँचवाँ कक्षा के छात्रों के लिए अध्ययन उपयोगी हो सकती हैं।

राज्य विज्ञान शिक्षण सम्स्थान राष्ट्रीय स्तर पर जो साइंस टेनेट मंच परीक्षा होती है, तब जो विद्यार्थी भाग लेना चाहते हैं उन्हीं से सहायता उद्योग मंत्रालय द्वारा करता है। इस सम्बन्ध में विज्ञान राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान से पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

(५) औद्योगिक प्रतिष्ठान एवं व्यापारिक समस्याएँ

विभिन्न औद्योगिक संस्थानों से ६ म दायर सक्ण्ट्री प्रथवा सक्ण्ट्री पास छात्रों के लिए कौन कौनसी नीतियाँ हो सकती हैं इन सम्बन्ध में सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक औद्योगिक प्रतिष्ठान में एक कार्मिक अधिकारी (Personnel officer) होता है उससे यह सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। इसी प्रकार धक आदि व्यापारिक संस्थाओं से भी नियोजन सम्भावनाओं की सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। धनक औद्योगिक प्रतिष्ठान अथवा व्यापारिक संस्थाएँ तो उचित पत्राचारों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षण भी देते हैं और फिर उन्हें उचित स्थान दिया जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण सुविधाओं का पता भी इन अधिकारियों से लग सकता है।

(६) स्थानीय अभिकरण

एक सजग निश्चयन कार्यकर्ता का स्थानीय परिवारों से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करने की सब सम्भावनाओं की खोज करनी चाहिए। अनेक बार हमारे आस पास जो शिक्षक एवं व्यावसायिक सुविधाएँ होती हैं उनकी भी पूरी सूचनाएँ हमारे पास नहीं होती। उदाहरण के तौर पर उदयपुर में जिक स्मार्ट सीमेन्ट

फवटरो डिस्ट्राक्टरो आधुर्वे लेबा म्ग रत्तवे जोनन ट्रनिंग स्कूल फिशरीज रिस्चव ट्रनिंग सेक्टर एण्टिस्टियन ट्रनिंग स्कूल एग्नाकल्चर कानज मन्किल कालज कानज ग्राम एग्नाकल्चरल एजोनियरिंग एण्ड टेकोलाजी एस टो सी स्कूल आदि ऐसे अनक सूचनाया के खोन हैं जिनसे प्राप्ता सूचनाएँ छाना के लिए उपयोगी हो सकती है। उपरोक्त वर्णित स्थानीय औद्योगिक प्रतिष्ठानों में क्या आवश्यक सम्भावनाएँ हैं उसकी भी जानकारी अनक धार हमारे छाना को नहा होती। इसी प्रकार स्थानीय शक्तिपूर्व सस्थाया के सम्बन्ध में सूचनाएँ भी छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अनेक बार हम यह मानकर चलते हैं कि स्थानीय शक्ति एवं वावसायिक सूचनाया से तो छात्र परिचित है ही किन्तु आवश्यक नहीं कि हमारी यह धारणा ठीक हो। अतः इन स्थानीय आा के प्रति हम उत्साहीन नहीं होना चाहिए।

जिना स्तरीय स्थानों पर नियोजन कार्यालयों (Employment exchanges) से यदि सम्पर्क रखा जाए तो छात्रों को रोजगार सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएँ समय समय पर उपलब्ध की जा सकती हैं।

पर्यावरणीय सूचनाओं के सकलन की विधियाँ

(1) वावसायिक सर्वेक्षण

स्थानीय पर्यावरण से परातया परिचित हो जाना एक निर्देन कार्यकता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। स्थानाय वावसायिक जगत में जो रोजगार सम्बन्धी सम्भावनाएँ हो उनकी निर्देशन कार्यकर्ता को यदि पूरी सूचनाएँ हों तो वह अपने छात्रों का व्यावसायिक निर्देशन अधिक कुशलता से कर सकता है। स्थानीय वावसायिक पर्यावरण सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करने की एक महत्वपूर्ण विधि हो सकती है व्यावसायिक सर्वेक्षण। वावसायिक सर्वेक्षणों में हम अनको महत्वपूर्ण तथ्या का पता लग सकता है। वावसायिक सर्वेक्षणों से जिन महत्वपूर्ण तथ्यों की सूचनाएँ मिल सकती हैं वह निम्नलिखित हैं—

(क) वावसायिक सर्वेक्षणों से प्राप्त महत्वपूर्ण सूचनाएँ

(ख) व्यावसायिक लकाव प्रवृत्ति — वावसायिक सर्वेक्षणों से हमें किसी भी समय की वावसायिक लकाव प्रवृत्तियाँ पता हैं उसका पता लग सकता है। अर्थात् किन वावसायों की अधिक माग है अथवा किन वावसायों में रोजगार सम्भावनाओं का वादृश्य है किन वावसायों में सन्तुष्टता आ गई है और रोजगार सम्भावनाएँ बहुत कम हैं आदि तथ्य निर्देशन कार्यकर्ता के सामने आसकत हैं जो कि वावसायिक निर्देशन के लिए और कुछ सीमा तक शक्ति निर्देशन के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

(ग) नए वावसायों से परिचय — वावसायिक सर्वेक्षणों के फलस्वरूप स्थानीय पर्यावरण की अनेक नई वावसायिक सम्भावनाएँ एवं निर्देशन कार्यकर्ता के सम्मुख आ सकती हैं। अनेक बार स्थानीय वावसायिक सम्भावनाओं से हम पूर्ण

रूपण परिचित नहीं होते अतः हमारा छात्रा को इनका पूरा-पूरा लाभ नही मिल पाता । उपरोक्त अनु-द्वेषों में एक शहर का उठाहरण लेकर यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि स्थानीय पर्यावरण में ही वितनी अधिक व्यावसायिक सम्भावनाएँ हो सकती हैं ।

(इ) व्यवसायों के सम्बन्ध में विस्तृत परिचय — स्थानीय व्यवसायों के सम्बन्ध में यावसायिक संवर्धनों के माध्यम से हम विस्तृत परिचय प्राप्त कर सकते हैं । व्यवसाय में प्रवेश हेतु धन-व्यय योग्यता व्यवसाय में उपलब्ध वेतन व्यवसाय में उन्नति की सम्भावनाएँ व्यवसाय में कार्य की प्रकृति आदि महत्वपूर्ण व्यावसायिक पहलुओं से सम्बन्धित विस्तृत सूचनाएँ हम व्यावसायिक सर्वेक्षण में प्राप्त कर सकते हैं ।

(ए) व्यावसायिक संवर्धनों में छात्रों को सज्जत करना — व्यावसायिक संवर्धन यावसायिक सूचनाएँ एकत्रित करने की विधि ही नहीं अपितु यावसायिक शिक्षण की भी एक प्रमुख विधि हो सकती है । अतः इन सर्वेक्षणों में यथासम्भव छात्रों को संयुक्त करना उचित उपयोगी सिद्ध हो सकता है । सामाजिक ज्ञान अथवा अर्थशास्त्र के शिक्षक यदि छात्रों से व्यावसायिक संवर्धन करवाएँ तो उन्हें अनेक व्यवसायों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं । छात्रों को इस प्रकार में यावसायिक जगत के सम्पर्क में लाने से उनकी प्राचीन व्यावसायिक शिक्षा हो सकती है ।

(ग) यावसायिक सर्वेक्षणों के संचालन से सम्बन्धित कुछ सिद्धांत

(अ) योजना — यावसायिक संवर्धनों को सफल बनाने हेतु एवं इसके माध्यम से योजनाबद्ध रीति से सूचनाएँ एकत्रित करने हेतु यह आवश्यक है कि स्थानीय व्यावसायिक जगत का संवर्धन करने की एक सुसंगठित एवं समन्वयित योजना बनाई जाय अथवा एक ही प्रकार की सूचनाएँ कई सर्वेक्षणों में एकत्रित हो जाने की ओर कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को ध्यान में रखना आवश्यक हो सकती है ।

योजना बनाने के समय इन सब शिक्षकों को साथ लेना उपादेय होगा जो यावसायिक संवर्धनों के संचालन में भाग ले रहे हैं । कौन कौन से शिक्षक संवर्धनों का संचालन करेंगे संवर्धनों की विधि क्या होगी सर्वेक्षण से किस प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित करने का प्रयास किया जाएगा आदि प्रमुख बिंदु इस समिति में स्पष्ट हो जान चाहिए ।

(आ) व्यापारिक और औद्योगिक संस्थानों से सम्पर्क — सफल व्यावसायिक संवर्धनों के लिए सर्वेक्षण विषय अर्थात् व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों का संयोग अत्यंत आवश्यक है अतः संवर्धनों का प्रारम्भ करने से पूर्व इन संस्थानों के प्रमुख अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर संवर्धनों के लिए उनकी अनुमति ले लेना अत्यंत आवश्यक है । अनुमति लेते समय सर्वेक्षण की उपादेयता से उन्हें अवगत करा देना चाहिए ।

(इ) आवश्यक सर्वशर्तों साधनों का निर्माण — सर्वशर्तों में प्रमुख प्रश्न बलिया साक्षात्कार सूचना अथवा प्रयोग सूचना का निर्माण यथावत् सर्वशर्तों प्रारम्भ से करन से पूर्व हो जानी चाहिए । साथ ही यह भी निश्चित हो जाना चाहिए कि कौन सी सूचनाएँ साक्षात्कार से प्राप्त होगी कौनसी प्रश्नावलियाँ से प्राप्त हो सकती हैं तथा किन प्रश्नियों से साक्षात्कार करना होगा ।

(ई) सकलित सूचनाओं का समेकित प्रतिवेदन — सकलित सूचनाओं को जबतक समेकित रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता तबतक उनका उपयोग सीमित ही रहता है । अतः व्यावसायिक संरक्षण से प्राप्त दत्त का निम्न बिन्दुओं के आधार पर समेकित करना चाहिए ।

— व्यवसाय का ज्ञान के छात्रों के लिए उपयोगी है ।

— व्यवसाय जिनमें रोजगार की सम्भावनाएँ अधिक हैं ।

— व्यवसाय जिनमें रोजगार की दृष्टि से सतृप्तता प्राप्य है ।

— व्यवसाय जिनमें प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है ।

— व्यवसाय जिनमें प्रशिक्षण की आवश्यकता है ।

— प्रत्येक व्यवसाय से सम्बन्धित निम्न सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए—

व्यवसाय व्यवसाय में प्रवेश हेतु शैक्षिक योग्यता पूर्व प्रशिक्षण चक्र व्यवसाय में प्रतिवृत्त होने वाले रिक्त स्थान व्यवसाय में प्रगति की सम्भावनाएँ व्यवसाय की कार्य सम्भावनाएँ उद्योग में प्राप्त सुविधाएँ आवश्यक श्रम (Occupational Hazard)

पर्यावरणीय सूचनाओं का मिसौलीकरण एवं सग्रह

(१) सिद्धांत —

पर्यावरणीय सूचनाओं का सग्रह मात्र करना पर्याप्त नहीं । जबतक उनका ठीक ढंग से मिसौलीकरण एवं सग्रह न किया जायगा व प्रबिक उपयोगी सिद्ध न होगी । सग्रह एवं मिसौलीकरण के दो प्रमुख सिद्धांत हैं — एक तो सूचनाओं की सुरक्षा एवं दूसरा उपयोग में सुविधा । पर्यावरणीय सूचनाएँ प्राप्त होने ही उनको इस प्रकार रखना चाहिए कि उनका खोना अथवा सराव होना का सम्भावना न हो । बार-बार उपयोग में आने वाली सूचनाओं का सुरक्षा का तो विशेष ध्यान रखना होगा । एसी सचनाएँ जो खालों द्वारा काम में ली जाती हैं उन्हें समय-समय पर जांच कर यह दायत रहना चाहिए कि वे उपयुक्त स्थिति में सुरक्षित हैं । सूचनाओं के सग्रह से हमारा अर्थ उन्हें किसी पत्नी या धानमारी में बन्द करने से नहीं है । सचनाओं का सिमा योजना के आधार पर सूचीकरण करना चाहिए ताकि आवश्यक सूचनाएँ कम से कम समय में उपलब्ध हो सकें । सूचनाओं का सग्रह भी ऐसे स्थान पर एवं इस ढंग से होना चाहिए कि उन्हें प्राप्त करने में कठिनाई न हो । सूचनाओं की जबतक छात्रों के सम्मुख प्रतिनिधित्व नहीं किया जायगा व इसका पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे ।

अतः सचनान्त्रो को किसी ऐस स्थान पर एव इस ढंग से रखना चाहिए जहाँ उन पर छात्रों की दृष्टि पना का अधिक से अधिक सम्भावना है।

(2) कार्मिक

सचनान्त्रा के सग्रह एवं मिसीनीकरण म यदि पुस्तकाध्ययन का सहयोग प्राप्त किया जा सक तो यह काय अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावोत्पाक ढंग स किया जा सकता है। अन्त्रा तो पक होगा कि यक काय पुस्तकाध्ययन को ही सापा जाए। उसके दो कारण हैं प्रथम तो पुस्तकाध्ययन को पुष्करो एवं अथ दस्तावेजों के सग्रह मिसीनीकरण एवं सचीकरण का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होता है अतः वह इस काय का अधिक अन्त्रे ढंग से मचानित कर सकता है। दूसरा कारण य है कि हमारे देश म सामान्य शालात्रा म पूणकालिक शिक्षण कायकर्ता नियुक्त नहीं किए जाते अतः जगतक मानाक अथ कायकर्ता निर्देशन काय के उत्तरणयित्वा म हाथ न आवागे इस काय का सकत सचानन अयम्भव होता। अथ काय का यदि पुस्तकाध्ययन ने तो वह इस अधिक प्रभावोत्पाक ढंग स कर सकेगा। साथ ही निर्देशन कायकर्ता अपनी शक्ति एवं समय अथ महत्वपूण निर्देशन क्रियाकलापों म लगा सकेगा।

(3) स्थान

अ कि पर्यावर्णीय सूचनात्रों क सग्रह की जिम्मेदारी पुस्तकाध्ययन को दना वाञ्छनीय कहा गया है अतः इसकी स्वाभाविक अनुमिति यह होगी कि इन सूचनात्रों का सग्रह भी पुस्तकानयन म ही। इन सूचनात्रों को हम पुस्तकानयन म ही किसी एक अलग निर्धारित स्थान पर रख सकते हैं और उस स्थान को निर्देशन कोण (Guidance Corner) कह सकते हैं। पुस्तकानयन म सामान्यत छात्रों का आवागमन अधिक रहता है अतः इस सामग्री के छात्रों के सम्मुख निर्देशन की अधिक सम्भवना हो सकती है।

पर्यावर्णीय सूचनात्रों का सचरण

किसी वस्तु का अधिक से अधिक उपयोग नाग करें स अनुयायी उसका अधिक से अधिक प्रचार करते हैं। अन्त्रा स अन्त्रा वस्तु प्रचार क अभाव म योगा तक नहीं पहुँच पाती है। यह सिद्धांत पर्यावर्णीय सचनान्त्रा पर भी लागू होगा है। जब तक हम इन सचनान्त्रों को छात्र के सम्मुख अभिर्देशित नहीं करेंगे तब अधिकधिक उपयोग के माग नहीं खोजेंगे इन सचनान्त्रों का पूरा-पूरा नाग छात्रों को नहीं पहुँचेगा। अतः निर्देशन कायकर्ता को इन सचनान्त्रों के विभिन्न सचरण विधियों से अवगत होना अत्यंत आवश्यक है।

न सचरण विधियाँ एवं अवसरों की चर्चा करने से पूव पर्यावर्णीय सूचनात्रों के सचरण के कुछ मूलसिद्धांतों का उन्नेख उपादेय सिद्ध हो सकता है।

(१) सचरण के सिद्धान्त

(क) प्रवर्तन— जितने प्रभावोत्पादक ढंग से सूचनाओं का प्रदर्शन किया जायगा उतना उपयोग की उतनी ही अधिक सम्भावना होगी।

(ख) सूचनाओं को प्राप्त करने की सुलभ व्यवस्था— सूचनाओं को प्राप्त करने की व्यवस्था जितनी सुलभ होगी उतनी ही सूचनाओं के उपयोग की सम्भावनाएँ बढ़ जाएँगी। यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि जिस पुस्तकालय में खुली शान्तकारी व्यवस्था होती है वहाँ ऐसे पुस्तकालय से अधिक पुस्तक काम में ली जाती है जहाँ पुस्तक ताली बन्द रहती है।

(ग) समस्त अवसरों का उपयोग— निश्चय यदि यह सोचे कि किसी विशेष समय पर छात्रों को बुलाकर उनका इन सूचनाओं से अवगत किया जायगा तो वह सूचनाओं का पूरा पूरा लाभ छात्रों को नहीं पहुँचा सकता। उसे तो कक्षा एवं कक्षा के बाहर ऐसे सब अवसरों को ढूँढना चाहिए जहाँ पर्यावरणीय सूचनाओं की संचारित किया जा सके और फिर ऐसे प्रत्येक अवसर का उसे लाभ उठाना चाहिए। किसी एक समय पर समस्त सूचनाओं को बालकों तक पहुँचाना न तो सम्भव है न ही इस प्रकार से प्रभावोत्पादक ढंग से सूचनाएँ छानो तक पहुँचाई जा सकती हैं।

(घ) विभिन्न व्यक्तियों का सहयोग आवश्यक— हमने उपरोक्त सिद्धान्त में कहा है कि सूचनाओं का सचरण हर सर्वांगीण परिस्थिति में किया जाना चाहिए। अतः हम बिन्दु से एक और सिद्धान्त निकलता है और वह यह कि सूचनाओं के सचरण में जहाँ तक शिक्षका पुस्तकालय आदि विभिन्न व्यक्तियों का पूर्ण सहयोग नही हुआ सचरण प्रभावोत्पादक ढंग से नहीं किया जा सकता है। विज्ञान सामाजिक ज्ञान अर्थशास्त्र कानून एवं अन्य विषयों के शिक्षक कक्षाव्यापन के माध्यम से भी इस सूचनाओं के सचरण में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

(२) सचरण विधियाँ

निर्देशन कार्यक्रमों को पर्यावरणीय सूचनाओं को छात्रों तक पहुँचाने के अधिक से अधिक अवसरों का पता लगाना चाहिए। इस कार्य में उस अन्य व्यक्तियों के सहयोग की भी आवश्यकता पड़ सकती है। निम्नलिखित अनुश्रेणी में पर्यावरणीय सूचनाओं की विभिन्न सचरण विधियों की चर्चा की जाएगी।

(क) अनुस्थापन विधि— अनुस्थापन विधि विभिन्न पर्यावरणीय सूचनाओं की छान तक पहुँचाने की एक उत्तम विधि है। अनुस्थापन का तात्पर्य किसी नई परिस्थिति से व्यक्ति को अवगत कराना अथवा किसी नवीन पर्यावरण में समन्वय हेतु उस पर्यावरण से व्यक्ति को अवगत कराना। अतः अनुस्थापन विधि में हम छात्रों को किसी नए वातावरण पाठ्यक्रम काय एवं प्रवृत्ति से अवगत कराते हैं ताकि वह उस नई परिस्थिति में कम कठिनतापूर्वक अनुभव करे। अनुस्थापन विधि में निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों से आयोजित की जा सकता है।

(अ) शांति के वातावरण से परिचय— शांति म जो छात्र नए ध्यान हैं उनको शांति क भवन सुविधाओं सवाओं नियम परम्पराओं प्राँ स भवगत कराना अत्यन्त आवश्यक है। अथवा क शांति म समञ्जन की कठिनाई प्रनुमन कर सकने हैं। शांति सम्पत्ती इन सुविधाओं को नए छात्रों का शीघ्रानिर्गमन बना चाँहिए। म काय के लिए सत्रा म म कृष्ण अनुस्थापन वार्ताओं का आयोजन उपाध्य मिद्ध हो सकता है।

(आ) अध्ययन छात्रों एवं कुशलताओं का ज्ञान— जय छात्र एक स्तर स दूसरे स्तर पर जाता है ता उमे कृष्ण न अध्ययन छात्रों विरसित करना होती हैं। प्राथमिक स्तर पर छात्र नोटम केना अथवा पुस्तकानय के उपयोग सम्बधी अध्ययन छात्रों विकसित नही होती किन्तु माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों म यय छात्र विकसित होना आवश्यक है। मी प्रकार जय छात्र नए विषय नता है तो उन विषयों स सर्वाधिक कृष्ण विषय अध्ययन छात्रों एक कुशलताओं की आवश्यकता हो सकती है। अत इन नई अध्ययन छात्रों एक कुशलताओं स छात्रों की अगत कराने के लिए भी अनु यान वार्ताओं आयोजित की जा सकता हैं। इन वार्ताओं म विषय अध्यापकों पुस्तकालयों प्राँ का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

(इ) नवीन विषयों का परिचय — कथा भाठ क छात्रों के सम्मुख सबसे महत्वपूर्ण समस्या होती है अथवा कथा म विषयों म चयन की। इन विषयों के चयन को अधिक से अधिक सफल बनाने हेतु यह आवश्यक है चयन स पूर्व छात्रों को नवीन विषयों से परिचित करवाया जाय। विषयों के सम्बन्ध म आवश्यक ज्ञान के अभाव म लिए गए निराश निराशा को जय दे सकत हैं। अत छात्रों कथा के छात्रों के लिए नवी कथा म उपनय विभिन्न कल्पित विषयों स सम्बन्ध अनुस्थापन वार्ताओं का आयोजन किया जाता चाँहिए। इसम भी विषय विरोधना का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

(ई) व्यावसायिक अनुस्थापन—विषयों के उचित चयन क लिए एक साथ म प्रवृत्त हेतु दोनों कार्यों क लिए व्यावसायिक अनुस्थापन आवश्यक है क्योंकि विषयों का चयन भी अन्तर्नोणत्वा किमी न किमी यवमय म पलापण हेतु ही किया जाता है। यदि छात्रों को यह पता न हो कि अमुक विषयों के चयन मे किम प्रकार के व्यवसायों म प्रवृत्त प्राप्त किया जा सकता है तो आगे चल कर उह निराशा का मूल देखना पन सकता है। अत छात्रों कथाओं के ज्ञान के लिए पाठ्यक्रम अनुस्थापन के साथ साथ व्यावसायिक अनुस्थापन भी आवश्यक है। साथ ही कमी एवं अन्तर्नोणत्वा के छात्रों क लिए भी अनुस्थापन का अत्यन्त आवश्यकता है इस स्तर पर अनेक छात्र ऐसे होंगे जोकि आगे अध्ययन चानू न रख कर जीविकोपाजन का साधन ढूँढना चाहेंगे। इन छात्रों क लिए उचित व्यावसायिक अनुस्थापन अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। व्यावसायिक अनुस्थापन वार्ताओं के लिए

व्यवसाय में कार्य करने वाले किसी व्यक्ति को बुलाया जा सकता है। ताकि जब साय के सभी महत्वपूर्ण पक्षों से सम्बन्धित विश्वसनीय सूचनाएँ दे सकता है। अनुच्छेद (द) एच (ई) में वर्णित अनुस्थापन वातावरण छात्रों के लिए भी महत्वपूर्ण है ही साथ ही अभिभावकों के लिए भी इनका बहुत महत्व है। क्योंकि विषयों एवं व्यवसायों के चयन में अभिभावकों भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अभिभावकों की अनभिज्ञता से भी अनेक बार छात्रों को अनुपयुक्त विषय दिनांक दिया जाते हैं जिससे छात्र बलवत्तर उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है। अतः अभिभावकों का भी इन दो प्रकार की अनुस्थापन वातावरणों में आमंत्रित किया जा सकता है।

(ख) व्यावसायिक सूचना सम्मेलन—व्यावसायिक सूचना सम्मेलन का आयोजन छात्रों को उनकी रचने के व्यवसायों सम्बन्धी सूचनाएँ प्रदान करने हेतु किया जाता है। अभिस्थापन वातावरणों में तो अधिकतर वातावरण व्यवस्थापन सम्मेलनों की सूचनाएँ प्रस्तुत करते हैं जबकि व्यावसायिक सूचना-सम्मेलनों का विशेषता यह होती है कि इनमें छात्र भी वातावरण से अपनी शक्याता एवं जिनासाधना का निवारण करते हैं।

व्यावसायिक सूचना सम्मेलन आयोजित करने की दो प्रमुख विधियाँ हैं। एक विधि में अलग अलग व्यवसायों के विशेषणों को सत्र में अलग अलग समय पर बुला कर विभिन्न व्यवसायों सम्बन्धी चर्चा आयोजित की जा सकती है। इस विधि का लाभ यह है कि प्रत्येक छात्र को प्रत्येक व्यवसाय सम्बन्धी चर्चा में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है और उसके फलस्वरूप उसे वह व्यवसायों सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। परन्तु इस विधि से वातावरण आयोजित करने में एक तो अधिक समय लगता है और दूसरा विद्यार्थी जिन व्यवसायों में रचने नहीं रखते उन व्यवसायों के सम्मेलनों में उन्हें सम्मिलित होने में कोई रचने नहीं होती। इस प्रकार उनका भी अधिक समय नष्ट होता है। इसकी प्रवृत्ति—व्यावसायिक सूचना-सम्मेलन आयोजित करने की दूसरी विधि अधिक उपलब्ध सिद्ध हो सकती है। इस विधि के अंतर्गत हम वय में किसी दो या तीन दिनों को व्यावसायिक सूचना सम्मेलन के लिए निर्धारित कर देते हैं। छात्रों की व्यावसायिक रचने का पता लगा कर उन्हें व्यावसायिक रचने सम्मेलन में बैठक दिया जाता है। प्रत्येक व्यावसायिक रचने सम्मेलन के लिए उनसे सम्बन्धित व्यवसायों के विशेषणों की वातावरणों एवं चर्चाओं का आयोजन किया जाता है ताकि छात्रों की वातावरणों में रचने बनी रहे। इस सम्मेलन का यदि उचित सम्मिलित समय चक्र बनाया जाए तो एक छात्र एक से अधिक चर्चाओं में भाग ले सकता है।

(ग) व्यावसायिक सूचना-सम्मेलन के आयोजन सम्बन्धी कुछ सुझाव—व्यावसायिक सूचना-सम्मेलन का सफल बनाने हेतु उनको सुनिश्चित रूप से आयोजित करना आवश्यक है। इन दिनों आयोजन सम्बन्धी कुछ प्रमुख सुझाव प्र

किये जा रहे हैं।

—**निधि निर्धारण**—एक सम्मेलन के निधि निर्धारण से पूर्व अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। सम्मेलन की तिथि छानना शान्ता तथा विश्रान्ता तीनों की सुविधा का ध्यान में रखकर रखना सम्मेलन की सफलता के लिए आवश्यक है। शान्ता में कोई अथ महत्वपूर्ण प्रवृत्ति चल रही हो ऐसी समय यदि व्यावसायिक सूचना सम्मेलन का आयोजन किया जाए तो उम्मीद हमें न तो शान्ता का संयोग मिलेगा न ही विचारधिया का। इसी प्रकार यदि विद्यार्थी परीक्षाओं या किसी अन्य महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त हो या कुछ दिनों में घर जाने के लिए आनुर हो ऐसी समय यदि हम एक सम्मेलनों का आयोजन करें तो उसकी उपयोगिता कम हो जाएगी। अन्तिम किन्तु प्रत्येक महत्वपूर्ण बात निधि निर्धारण में समय जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए वह है विशेषता की सुविधा। बिना विशेषता के तो सम्मेलन का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

—**छात्रों के रुचि समूहों का गठन**—व्यावसायिक सूचना सम्मेलनों के आयोजन से पूर्व हम प्रत्येक छात्र की व्यावसायिक रुचि का पता लगाकर उन्हें व्यावसायिक समूहों में बाँट देना चाहिए। समान रुचि वाले छात्रों को एक समूह में रखकर प्रत्येक समूह के लिए उनकी रुचि के अनुसार व्यावसायिक चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

—**विशेषज्ञों से सम्पर्क**—व्यावसायिक सूचना सम्मेलन में भाग लेने वाले विश्रान्ता से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर उन्हें एक सम्मेलन के उद्देश्य में अवगत करा देना चाहिए। वक्तव्यों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि एक घण्टे के समय में कथा घण्टा तो बाना के लिए रखा गया है और वेप समय छात्रों की जिज्ञासाओं एवं श्रद्धाओं के निवारण हेतु रखा गया है। व्यवसाय विशेषता की छात्रों के स्तर से भी अवगत करा देना चाहिए ताकि वे उसी अनुसार अपनी बातें तयार करें। विशेषज्ञों से अनुरोध किया जा सकता है कि वे अपनी बातों में अपने व्यवसाय से सम्बन्धित निम्न परिचय देने का प्रयास करें। व्यवसाय की पृष्ठभूमि आवश्यक योग्य ताएँ प्रशिक्षण कार्यवाही/स्थितियाँ भविष्य में प्रगति की सम्भावनाएँ वेतल एवं अन्य सुविधाएँ व्यवसाय में वेग की विधि आदि।

—**सम्मेलन का संचालन**—व्यावसायिक सूचना सम्मेलन की सफलता कुशल संचालन पर निर्भर करेगी। अतः इसके सम्बन्धित सब सावधानियाँ ध्यान में रखनी चाहिए। कुछ सुझाव यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। सम्मेलन की सफलता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है समय की पाबंदी का। निर्धारित समय पर यदि एक विश्रान्ता की बातें शुरू एवं समाप्त न हों तो अगली बातों का समय अक्षय्य अवस्थित हो जाएगा।

प्रत्येक समूह की चर्चा का निर्धारित वक्त एवं उसमें आवश्यक भीतर

सुविधाओं को व्यवस्था हानी चाहिए। निर्दोष वायुमंडल एवं साथ-साथ सब समूहों में उपस्थित रह कर चर्चाओं का संचालन नहीं कर सकता। अतः कुछ बरिष्ठ एवं अनुभवी अध्यापकों का सहयोग इसमें उपादेय सिद्ध हो सकता है।

(आ) व्यावसायिक सूचना सम्मेलन का मूल्यांकन—व्यावसायिक सूचना सम्मेलनों के स्तर को सुधारने हेतु इनका मूल्यांकन वाञ्छनीय है। मूल्यांकन छात्रों के मत जाते-वारे किया जा सकता है। मूल्यांकन हेतु छात्रों को एक प्रभावशाली दी जा सकती है जिसमें निम्न विद्युत् का समावेश किया जा सकता है।

—पाठसायिक सूचना सम्मेलन का समय उपयुक्त या अशुभ नहीं ?

—इसमें प्राप्त सूचनाएँ उपादेय प्रतीत हुईं या नहीं ?

—सम्मेलन में सब आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त हो सकी या नहीं ?

—छपनी गति के सब यवमायों से सम्बंधित सूचनाएँ प्राप्त हो सकी या नहीं ?

—क्या बार्ताकार की बार्ता संमेलन में रुचितार्थ हुई ?

—किन-किन बार्ताकारों को सम्मेलन में रुचितार्थ हुई ?

—कौन-कौनसे बार्ताकार अच्छी रहीं ?

—सम्मेलन की और अधिक प्रभावोत्पादक बनाने हेतु अन्य सुझाव छात्रों से प्राप्त सुझावों के आधार पर भविष्य में आयोजित व्यावसायिक सूचना सम्मेलनों को और अधिक प्रभावोत्पादक बनाया जा सकता है।

(घ) कक्षागत कार्य—कक्षागत कार्यों में माध्यम से भी व्यावसायिक सूचनाओं का संचरण सम्भव है। विभिन्न विषयों के शिक्षक समय-समय पर उनके विषयों का दिन-दिन व्यवसायों से सम्बंध है यह स्पष्ट कर सकते हैं तथा उन-यव सामग्री से सम्बंधित आवश्यक जानकारी भी दे सकते हैं। इसी प्रकार अपने विषयों से सम्बंधित उच्च शिक्षा की क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं इन उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों से छात्रों को अवगत कराया जा सकता है। विज्ञान के शिक्षक कृषि विज्ञान पशु विज्ञान चिकित्सा शास्त्र इंजीनियरिंग टैक्नोलॉजी आदि पाठ्यक्रमों के सम्बंध में चर्चा कर सकते हैं। इसी प्रकार ये-य विषयों के शिक्षक भी प्रायः ज्ञान कर उनका विषय किन-किन पाठ्यक्रमों एवं व्यवसायों में उपयोगी सिद्ध हो सकता है इनके सम्बंध में चर्चा कर सकते हैं।

(घ) पाठ्यपुस्तक क्रियाओं के माध्यम से—पाठ्यपुस्तक क्रियाओं के माध्यम से भी छात्रों को व्यावसायिक एवं शैक्षिक सूचनाएँ प्रदान की जा सकती हैं। छात्रों को विषयानुसार समूहों में बाँटकर कुछ शैक्षणिक अथवा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भेजा जा सकता है। इस प्रकार की भेंटों से छात्रों को 'पाठसायिक जगत' की जानकारी प्रायः प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो सकता है। इन भेंटों का अधिक उपयोगी बनाने के लिए इनका आयोजन व्यवस्थित रूप से किया जाना चाहिए।

प्रत्येक गट में पूर्व छात्रों को कुछ बिन्दु स्पष्ट हो जाने चाहिए तभी वे गैट का पूरा लाभ उठा सकते हैं। गैट से पूर्व छात्रों को गैट स्पष्ट हो जाना चाहिए कि गैट का क्या उद्देश्य है। गैट के दौरान दिन दिन पढ़ी जाय या अध्ययन करना है। गैट के दौरान दिन दिन व्यक्तियों से किस प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं प्राणि बिन्दु पूर्णतया स्पष्ट हो जाना चाहिए।

गैट के दौरान निरन्तर की आवश्यकता निर्देशन देना चाहिए एवं महत्वपूर्ण सूचनाओं की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

गैट के पश्चात् गैट का अनुवर्तन कार्य भी आवश्यक है। प्रत्येक छात्र को गैट के पश्चात् उसने जो सूचनाएँ प्राप्त की हैं उन्हें लिखने को कहा जाय तथा उन सूचनाओं में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु चुन गये तो उन्हें पूरा किया जाना चाहिए।

अतः कि पत्रों को बनाया जा चुका है छात्रों को यावसायिक सर्वेक्षणों में भी सम्मिलित किया जा सकता है। इन सर्वेक्षणों के माध्यम से भी उन्हें महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

(२) अभिभावक दिवस—शिक्षक एवं व्यावसायिक सूचनाओं का छात्रों के लिए तात्पर्य है तथा साथ ही अभिभावकों के लिए भी ये सूचनाएँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। यदि अभिभावकों के पास पर्याप्त शिक्षक एवं यावसायिक सूचनाएँ हैं तो वे अपने बच्चों का विषय अथवा व्यवसाय के चयन में अधिक सही तरह से मार्गदर्शन कर सकते हैं। भारत में तो अभिभावकों तक इन सूचनाओं का पहुँचाना और भी आवश्यक है क्योंकि हमारे यहाँ अधिकतम परिस्थितियाँ में माता पिता अथवा अभिभावक ही छात्रों के विषय अथवा व्यवसाय के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः निर्देशन कार्यक्रमों को अभिभावक दिवस के अवसर पर पर्यावरणीय सूचनाओं अभिभावकों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। इन अवसरों पर वातावरण प्रदूषण, सत्र प्रदर्शनियाँ आदि का आयोजन किया जा सकता है जिनके द्वारा अभिभावकों तक पर्यावरणीय सूचनाएँ पहुँचाई जा सकें।

(३) निर्देशन दिवस—निर्देशन दिवसों का आयोजन केवल पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण के लिए ही नहीं अपितु समस्त निर्देशन कार्यक्रमों को लाकप्रिय बनाने हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण है। निर्देशन दिवसों के आयोजन से हम अभिभावकों समाज व सम्स्या एवं छात्रों को इस बात में परिचित करवा सकते हैं कि निर्देशन सेवाओं के अन्तर्गत हम दिन दिन सेवाओं की श्रेणियों के नाम हेतु उपलब्ध कर रहे हैं। निर्देशन दिवसों के अवसर पर पर्यावरणीय सूचनाओं की प्रश्नोत्तरी किम्पनी व्यावसायिक एवं शैक्षिक वातावरण निर्देशन सेवाओं सम्बन्धी वातावरण निर्देशन सेवाओं सम्बन्धी चाट स एवं चित्र आदि अनेक प्रवृत्तियों का आयोजन कर सकते हैं। इस अवसर पर अभिभावकों एवं समाज व सम्स्या का भी आमंत्रित किया जा सकता है।

(४) शाला में उपलब्ध पर्यावरणीय सूचना सामग्री का प्रचार—असादि

पहले कहा जा चुका है छात्र पर्यावरणीय सूचनाओं का अधिक से अधिक उपयोग करें "सक" लिए यह आवश्यक है कि वे जान सकें कि शाळा में कौन-कौन सी पर्यावरणीय सूचना सामग्री उपलब्ध है। यह तभी सम्भव है जब पुस्तकालय एवं निर्देशन कार्यकर्ता इन सामग्री के प्रदर्शन एवं प्रचार के सब साधनों एवं अवसरों का पूरा पूरा साध उठाए। पुस्तकालय में इस सामग्री के प्रदर्शन हेतु डिस्प्ले रैक्स (Display racks) का प्रयोग किया जा सकता है। शाळा के विभिन्न उत्सवों के अवसर पर निर्देशन प्रदर्शनी का आयोजन शान्त पाठकाल में पर्यावरणीय सूचनाओं सम्बन्धी जानकारी प्रकाशित करना तथा अन्य अनेक ऐसे माध्यम खोज जा सकते हैं जिन्हें द्वारा पर्यावरणीय सूचना सामग्री का अधिक से अधिक प्रचार एवं प्रदर्शन हो सके।

(ज) उच्चस्तरीय विद्यालयों से भेंट—पर्यावरणीय सूचनाओं के अंतर्गत एक महत्त्वपूर्ण सूचना उच्चस्तरीय विद्यालयों के जीवन सम्बन्धी हो सकती है। छात्रों को वे भाग चलाकर जिन विद्यालयों में पढ़ जा रहे हैं उनसे अवगत कराया जाय तो उन्हें यहाँ जाने पर व्यवस्थापन सम्बन्धी कठिनायियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसका सर्वोत्तम तरीका हो सकता है इन उच्चस्तरीय विद्यालयों से भेंट करना। छात्रों को छोटे छोटे समूहों में ले जाकर इन विद्यालयों के जीवन से अवगत कराया जा सकता है। अनुच्छेद ७ में व्यापारिक प्रतिष्ठानों में भेंट के जो सिद्धान्तों की चर्चा की गई है उन्हीं सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए हम विद्यालय भेंटों का आयोजन करना चाहिए।

उपसंहारात्मक कथन

निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य है कि व्यक्ति में बुद्धिमत्तापूर्ण आचरण से सज्जने की क्षमता विकसित करना। यह क्षमता व्यक्ति में तभी विकसित हो सकती है जब व्यक्ति दो प्रकार की सूचनाओं के समुच्चय का अध्ययन कर दोनों के बीच ताल मेल बसा सके। इन दो सूचना समुच्चयों में एक समुच्चय तो है व्यक्ति के स्वयं की विशेषताओं-सीमितताओं सम्बन्धी सूचनाओं का और दूसरा समुच्चय है वह व्यक्ति जिस पर्यावरण से सम्बन्धित नियम ले रहा है अथवा समस्या मुलभूत का प्रयास कर रहा है उससे सम्बन्धित सूचनाओं का। निर्देशन के अन्तर्गत हम जो विभिन्न सेवाएँ व्यक्ति को प्रदान करने हैं उनमें से दो प्रमुख सेवाएँ इन सूचनाओं के सफल संधि-मिसौलीकरण निवचन एवं संचरण से सम्बन्धित हैं। व्यक्ति सूचना सेवा तो व्यक्ति का उसके स्वयं की क्षमताओं सीमितताओं से सम्बन्धित वह एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती है और पर्यावरणीय सूचना सेवा व्यक्ति के शैक्षिक व्यावसायिक एवं आर्थिक-सामाजिक पर्यावरण से सम्बन्धित सूचनाएँ प्रदान करती है। इस अन्वेषण में पर्यावरणीय सूचनाओं के छोटी सफल एवं संचरण विधियाँ से सम्बन्धित तथा प्रस्तुत किए गए हैं। शक्यतः एक संचरण दोनों को प्रभावशाली बनाने हेतु जो प्रमुख सिद्धान्त ध्यान में रखे जा सकते हैं इसका भी यथास्थान बखान किया गया है। निर्देशन कार्यकर्ताओं की सामान्य कठिनाई यह होती है कि हमारे देश में

व कौनसे अभिवरण हैं जिनसे पर्यावरण में सम्बन्धित विश्वमतीय सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। अतः इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए भारत में पर्यावरणीय सूचनाएँ प्राप्त करने के जो अभिवरण हैं सन्त है उनमें सम्बन्ध में भी अतः अध्याय में चर्चा की गई है।

पर्यावरणीय सूचना सेवा हमारे देश में वास्तविक के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा सिद्ध हो सकती है क्योंकि हमारे वास्तविक में धर्मशास्त्र ज्ञान ही अतः धार साधन सुविधाओं की जानकारी के अभाव में व अतः धर्मशास्त्रों का पूर्णतया विकसित नहीं कर पाते। सरकार द्वारा अनेक ऐसी योजनाएँ प्रारम्भ की गई हैं जिनमें अतः गत नियम किन्तु मयावी छात्रों की उत्तम शिक्षा का व्यवस्था है। किन्तु जन्म अतः योजनाओं की जानकारी उन अत्यन्त वास्तविक को नहीं होगा तबतक सरकार की अतः होत हुए भी व अतः योजनाओं का नाम नहीं उठा पावेगा। हमारे अनेक मयावी वास्तविक की प्रतिष्ठा अतः अतः सन्तमिता व का गत कुटिल हो जाती है अतः हर निम्न वास्तविकता का पर्यावरणीय सूचनाओं का सन्तमिता व वास्तविक तब पहचान का प्रयास करना चाहिए।

उपरोक्त उदाहरण से हम में न समझें कि वास्तविक गरीब छात्रों का ही पर्याप्त पर्यावरणीय सूचनाओं का ज्ञान नहीं है। आजकल हम जिस पर्यावरण में रहते हैं वह उत्तरोत्तर रूप से सन्तमिता जा रहा है। अतः अतः प्रकार के पाठ्यक्रम प्रशिक्षण व्यवस्थाओं अतः उच्च एवं विकसित हो रहे हैं कि एतः अतः वद दिखे अतः अतः वद प्रकार का पर्यावरणीय सूचनाओं का ज्ञान ही हो अतः आवश्यक नहीं। अतः उनमें लिए भी इस प्रकार का विशेष सेवा उपलब्ध सिद्ध हो सकती है। इस अध्याय में हमी सेवा के अतः वतः पर प्रकाश डाला गया है।

निर्देशन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण

(निर्देशन प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर — (१) प्रधानाध्यापका एवं प्रशासकों के लिए (२) सामान्य शिक्षकों के लिए (३) करियर मास्टर्स के लिए (४) शिक्षक उपवासका के लिए निर्देशन प्रशिक्षण के अधिकरण — (१) राष्ट्रीय शिक्षक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (२) स्टेट यूरो धाक गाव्डेस (३) शिक्षक महा विद्यालय प्रशिक्षण कार्यक्रम (१) प्रधानाध्यापका एवं प्रशासकों के लिए आशसन कार्यक्रम (क) उद्देश्य (ख) अवधि (ग) अभिकरण (घ) पाठ्यक्रम का अन्तवस्तु (२) प्रशिक्षण विधियाँ — (२) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (क) उद्देश्य (ख) अवधि (ग) अभिकरण (घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु (३) प्रशिक्षण विधियाँ (३) करियर मास्टर्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम — (क) उद्देश्य (ख) अवधि (ग) अभिकरण (घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु (२) प्रशिक्षण विधियाँ (४) शिक्षक उपवासका के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (क) उद्देश्य (ख) अवधि (ग) अभिकरण (घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु (३) प्रशिक्षण विधियाँ (घ) प्रथम — उपवीथकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (क) उद्देश्य (ख) अवधि (ग) अभिकरण (घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु (३) प्रशिक्षण विधियाँ उपसहारात्मक कथन)

निर्देशन कार्यक्रम का सफलता एक बहुत बड़ी सीमा तक उस कार्यक्रम का सन्तानित करने वाले कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। निर्देशन जिस सत्यतक तकनीकी कार्य को यदि अप्रशिक्षित एवं अपरिपक्व व्यक्तियों को सौंप लिया जाए तो उसमें छात्रों को अपेक्षित लाभ नहीं पहुँच सकता। इस समस्त अभाव में निर्देशन कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के विभिन्न स्तरों एवं प्रशिक्षण की स्तरताओं का विवरण दिया गया है। भारत में तो निर्देशन कार्यकर्ताओं के अल्पसंख्यक एवं दीर्घकालीन प्रशिक्षणों की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके दो कारण हैं। प्रथम— हमारे देश में निर्देशन अभी भी एक नई विचारधारा है अतः हमें देश में प्रशिक्षण व्यक्तियों का कमी है। दूसरा— यदि हम भारतवर्ष की प्रत्येक शाला में निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करना चाहे तो हम इतने अधिक निर्देशन कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होगा कि जबतक हम प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रावधान नहीं करते जबतक उस मांग की पूर्ति नहीं की जा सकती। इन कार्यक्रमों को हम सेवारत कार्यक्रमों एवं प्रीप्य

कालीन वायक्रीमा के रूप में भी चराना होगा तानि इनका नाम प्रथिन अध्यापन उठा सक ।

निर्देशन प्रशिक्षण के विभिन्न स्तर

निर्देशन प्रशिक्षण केवल अध्यापन अधिकांशक पूर्णकालिक निर्देशन कायकर्ताओं के लिए ही आवश्यक नहीं अपितु इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले समस्त कायकर्ताओं के लिए आवश्यक होता है । इस प्रशिक्षण का स्तर एव इसकी विधि अवश्य भिन्न भिन्न स्तर के कायकर्ताओं के लिए भिन्न होगी । निर्देशन कार्यक्रम के विभिन्न स्तरों का एक दूसरा भी कारण है । प्रत्येक शाखा में हम पूर्णकालिक निर्देशन कायकर्ता की अधिकांश उपबोधक की कल्पना नहीं कर सकते । अतः भारतीय परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए हम अध्यापन निर्देशन कायकर्ताओं अधिकांश वरिष्ठ मास्टर्स के प्रशिक्षण का भी प्रावधान रखना होगा । उपरोक्त कारणों से निर्देशन प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों पर विविध कार्यक्रमों के लिए आयोजित किया जा सकता है । निर्देशन कार्यक्रम के विभिन्न स्तरों को निम्नलिखित अनुच्छेदों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

(१) प्रधानाध्यापकों एवं शाला प्रशासकों के लिए

जसा कि पहले भी कई बार कहा जा चुका है कि जबतक प्रधानाध्यापक तथा अन्य प्रशासक निर्देशन कार्यक्रम में महत्त्व को नहीं समझते और वे शाला की एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार नहीं करते तबतक निर्देशन कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता । अतः सबसे पहले हम कुछ अध्यापकीय कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा जिनके द्वारा प्रधानाध्यापकों एवं शाला प्रशासकों में इस कार्यक्रम के प्रति आशसन (Appreciation) विकसित किया जा सके । इन कार्यक्रमों को आशसन पाठ्यक्रम (Appreciation Courses) का रूप दिया जा सकता है । इस स्तर के यक्तियों के लिए जो आशसन पाठ्यक्रम आयोजित किए जाए उनका स्वल्प अध्यापकीय कार्यक्रमों से बिल्कुल भिन्न होगा तथा इनके संचालन की विधि भी भिन्न होगी । इसकी चर्चा हम आगे करेंगे । यहाँ तो हम केवल इस बात पर ध्यान देना चाहते हैं कि निर्देशन कार्यक्रम के प्रति आशसन एवं प्रधानाध्यापकों के मन में उचित दृष्टिकोण एवं आशसन विकसित करने हेतु हम कुछ अध्यापकीय कार्यक्रम आयोजित करने होंगे ।

(२) सामान्य शिक्षकों के लिए

शाला में किसी भी नए प्रवृत्ति को प्रारम्भ करने से पूर्व शाला के शिक्षक समुदाय को उस प्रवृत्ति से अवगत कराना आवश्यक होता है । फिर निर्देशन कार्यक्रम तो एक बिल्कुल नए वृत्ति है अतः इसके विषय में शिक्षकों को अनुसंधान करने की आवश्यकता तो और भी अधिक है । इस प्रवृत्ति की एक और विशेषता यह है कि इसके सफल संचालन के लिए पद पद पर सभी शिक्षकों का सहयोग आवश्यक

हीना है। कुछ शिक्षकों को तो इस प्रवृत्ति में सम्बन्धित विशिष्ट उत्तरदायित्वों का भी भार वहन करना पड़ सकता है। अतः शाला के समस्त शिक्षकों के लिए भी एक सामान्य अनुस्थापन पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। यह कार्यक्रम कई स्वरूपों में आयोजित किया जा सकता है जिसकी चर्चा हम प्रायः करेंगे।

(३) करियर मास्टर्स के लिए

अधिकतर भारतीय शालाओं में निर्देशन कायकर्ता करियर मास्टर के रूप में ही होते हैं। इनका कार्य मूलतः 'यावसायिक सूचनाओं का संचयन विश्लेषण गितीचीकरण एवं संचरण' होता है। इस कार्य को कुशलतापूर्वक करने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। किसी भी एक शिक्षक को इस प्रशिक्षण हेतु भेजा जा सकता है जिसकी निर्देशन में धर्म एवं आस्था हो। करियर मास्टर को निर्देशन की समस्त सेवाओं का भार नहीं सौंपा जाता अतः इनका प्रशिक्षण भी अल्पकालीन ही हो सकता है। प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में जिसमें लगभग १० छात्र रहते हैं उसमें एक करियर मास्टर का होना आवश्यक है जिनके छात्रों को 'यावसायिक सूचनाएँ उपलब्ध करा सके।

(४) शिक्षक उपबोधकों के लिए

शिक्षक उपबोधक भी एक अशक्यता निर्देशन कायकर्ता होता है। जिस प्रकार करियर मास्टर का कार्य व्यावसायिक सूचनाओं का संग्रह एवं संचरण है उसी प्रकार शिक्षक-उपबोधक का कार्य पर्यावरणीय सूचनाओं तथा व्यक्तिगत सूचनाओं को संचयन का कार्यभार सम्भाल सकता है तथा कुछ सीमा तक छात्रों का समर्थन भी कर सकता है। किन्तु इन अशक्यता निर्देशन कायकर्ता से हम व्यक्तिगत उपबोधन की अपेक्षा नहीं कर सकते। शिक्षक उपबोधक मूलतः सामूहिक निर्देशन विधियों द्वारा ही छात्रों की सामूहिक समस्याओं को सुलभ करने में सहायता प्रदान कर सकता है। अतः इस कार्यभार के प्रतिक्षण में अभी पर ध्यान देना चाहिए।

(५) शाला उपबोधकों के लिए

पूणकालिक शाला उपबोधक भारतीय शालाओं में सामान्यतया नहीं पाए जाते—यद्यपि एक अच्छे उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लिए एक पूणकालिक उपबोधक होना आवश्यक है। साधारणतः लगभग १० छात्र संख्या वाले विद्यालयों में यदि एक पूणकालिक उपबोधक रखा जाए तो वांछनीय होगा। अथवा राजस्थान के कुछ प्रमुख नगरों में कई उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लिए सम्मिलित रूप से एक पूणकालिक उपबोधक का प्रावधान किया गया है। यह कोई अदृश्य स्थिति नहीं है फिर भी इस प्रायः निर्देशन के महत्त्व को समझ कर यह प्रावधान किया गया यह एक सन्तोष का विषय है। इन पूणकालिक उपबोधकों के लिए काफी विस्तृत प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इन उपबोधकों से लगभग सभी निर्देशन

सहायता व आयाजन की अपेक्षा का ता सजती है। इन उपबोधका व वपतिव उप बोधन की ता अप ता की जा सकती है। प्रत उनके प्रशिक्षण म उह म बना म दक्ष करने का प्रावधान हाना चािण।

निर्देशन प्रशिक्षण व अभिकरण

भागत म यद्यपि निर्देशन अभी भा एक नई विचारधारा है फिर भी हमारे देश म निर्देशन कायकर्ताप्रा व प्रशिक्षण व लिए विभिन्न अभिकरण क्रियाशाला हैं। तम से कुछ प्रमुख अभिकरण का यहाँ उल्लेख किया जा र। ३।

(१) राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N C E R T)

इस क्षेत्रीय सस्था के स्थापने के बाद एम्प्लूकेशन म कातामीण फाउण्डेशन आफ एम्प्लूकेशन (D E P F E) व निर्देशन विभाग द्वारा एक पाठ्यक्रम चलाया जाता है जिसम निर्देशन का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम एक वर्षीय पाठ्यक्रम है तथा म एगशिण्टशिप आफ नेशनल इम्प्लीमेंटेशन आफ एम्प्लूकेशन का नाम दिया गया है।

(२) स्टेट यूरो आफ गाइडेस

उपरोक्त प्रकार राज्य म निर्देशन पुरो स्थापित किए गए हैं जिनम विभिन्न स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान किए जात है। इन प्रशिक्षण कायक्रम का प्रमुख ध्येय करियर मास्टर तथा शाला उपबोधन तयार करना है। राज्य निर्देशन पुरो धवकाता म प्रशिक्षण निविर मगाष्टिया आदि आयोजित करके भी प्रशिक्षण काय मचानित करत है।

(३) शिक्षक महाविद्यालय

शिक्षक महाविद्यालय भी निर्देशन क प्रशिक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण काय करत है। आजकल स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रमो म निर्देशन का समावेश किया जाता है। या एन के पाठ्यक्रम मे उगमम सभी विषया म निर्देशन व किसी व किसी पथ का समावेश किया जाता है जिससे सामान्य शिक्षको को इस विद्याधारा से अत्यंत हान का अवसर प्राप्त होता है। शिक्षक प्रशिक्षण के बी एन कायक्रम म निर्देशन क विकासता पाठ्यक्रम का भी प्रावधान होता है। इसी प्रकार एम एन स्तर पर भा शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र म विशेष त्ता पाठ्यक्रम रखे जाते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अपने सवा प्रसार विभागा के माध्यम से भी कुछ शिक्षण का आयोजन कर सकते हैं।

प्रशिक्षण कायक्रम

उपरोक्त अभिकरण विभिन्न स्तरीय प्रशिक्षण कायक्रम आयोजित करत है। इन कायक्रमो की अवधि अतवस्तु एवं विधिया की चर्चा निम्नलिखित अनुच्छेदो म की जावगी —

(१) प्रधानाध्यापका एव प्रशासका के लिए आशसन पाठ्यक्रम

जसाकि पहले बताया जा चुका है निर्देशन कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रधानाध्यापका एव प्रशासकों को इस कार्यक्रम की उपयोगिता से अवगत करना आवश्यक है। इस अनुस्थापन कार्यक्रम को प्रशिक्षण की अपेक्षा आशसन पाठ्यक्रम यह तो अधिक उचित होगा। क्योंकि इनके फलस्वरूप हम कोई नया निर्देशन कार्य कक्षाओं का निर्माण करने का अवकाश नहीं रखते। प्रधानाध्यापकों एव प्रशासकों के लिए आयोजित आशसन पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं।

(क) उद्देश्य— इस कार्यक्रम के द्वारा हम कोई कुशल निर्देशन कार्यकक्षाओं का निर्माण नहीं करना चाहते। अतः इस पाठ्यक्रम में मानव शक्ति पर एव कुशलताओं पर बल बल रहना चाहिए तथा उचित दृष्टिकोण विकसित करने पर तथा आशसन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। मानव शक्ति का प्रस्तुतिकरण भी इस प्रकार किया जाना चाहिए कि प्रशासका एव प्रधानाध्यापका के मन में निर्देशन के विषय की गहन धारणाएँ विकसित जाएँ और वे इन उचित परिदृश्यों में खेल सकें। इन उद्देश्यों को व्यवस्थित रूप से निम्न प्रकार लिखा जा सकता है —

- निर्देशन की विकासत्मक पृष्ठभूमि से अवगत कराना।
- निर्देशन के स्वरूप एवं महत्त्व से अवगत कराना।
- निर्देशन का विविध सवालों से अवगत कराना।
- निर्देशन से सम्बन्धित कुछ भ्रामक धारणाओं को दूर करना।
- एक शाला के लिए 'सूक्ष्म' निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- निर्देशन कार्यक्रम के सगठन व सिद्धांतों का ब्यथ करना।
- इस कार्यक्रम के अधिक पक्ष की चर्चा करना।

इन सब उद्देश्यों के पक्षों एक प्रमुख उद्देश्य निरंतर क्रियाशील रहना चाहिए वह यह कि प्रधानाध्यापका एव प्रशासका के मन में इन कार्यक्रम के प्रति वास्तविक विकसित करना एव उनको सचेत करते हुए महत्त्व से परिचिन करवाना।

(ख) अवधि— प्रशासकों एव प्रधानाध्यापका की व्यस्तता को देखते हुए हम उनसे किसी क्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होने की अपेक्षा नहीं कर सकते। फिर यह प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भी कोई विशेष कार्यक्रमों का निर्माण करना नहीं है। अतः इस कार्यक्रम की अवधि अत्यन्त अल्प होनी चाहिए। तीन दिन की किसी सप्ताहिक में उपयुक्त उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है। अवधि के साथ साथ इन आशसन पाठ्यक्रमों का समय भी ऐसा होना चाहिए जब वे अधिकारी कुछ वक्त व्यस्त हों।

(ग) अभिज्ञान— प्रधानाध्यापका एव प्रशासका के लिए आशसन पाठ्यक्रम के संचालन का उत्तरदायित्व राज्य निर्देशन 'यूरो' ही सबसे उत्तम रीति से निभा सकता है। इस राज्य स्तरीय अभिज्ञान के पास उपयुक्त विशेषज्ञ भी होते हैं और

आवश्यक सत्ता भी। जिन शिक्षक महाविद्यालय में निर्देशन क विभाजन हुआ एवं सेवाएँ प्रशिक्षण क लिए साधन हैं व महाविद्यालय भी अपने सेवा प्रसार विभागों के माध्यम से प्रधानाध्यापकों एवं अन्य प्रशासकों के अनुस्थापन हेतु प्रपञ्चनीय सौख्य के आयोजन कर सकते हैं।

(घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु— प्रधानाध्यापकों एवं अन्य प्रशासकों को निर्देशन की विचारधारा एवं इसकी गतिविधियाँ से अवगत कराने हेतु जो पाठ्यक्रम चलाया जाय उसकी अन्तवस्तु क्या हो यह इस पाठ्यक्रम क उद्देश्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो सकता है। हमें अनुच्छेद ११ में इन उद्देश्यों की चर्चा की है। इन उद्देश्यों क साधन में यदि हम पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु की व्याख्या करने का प्रयत्न करें तो कदाचित् उसका स्वरूप निम्न प्रकार से उभरेगा—

- निर्देशन का विकासात्मक स्वरूप।
- सामुहिक जटिल समाज में निर्देशन की आवश्यकता।
- विभिन्न निर्देशन सेवाएँ।
- निर्देशक सम्बन्धी कुछ सामान्य सप्रत्यय— निर्देशन का समुचित प्रमाण पर आवश्यकता से अधिक बल।
- निर्देशन में शिक्षका का उत्तरदायित्व।
- निर्देशन सेवाओं का प्रशासनिक एवं वित्तीय पक्ष।
- निर्देशन कार्यक्रमों के उत्तरदायित्व एवं उनके लिए अपेक्षित सुविधाएँ।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर यदि सक्षिप्त में किन्तु प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला जाय तो शान्ता प्रशासकों को निर्देशन कार्यक्रम को उचित परिप्रेक्ष्य के दृष्टि से तथा इसके आशय में सहायता देना की जा सकती है।

(ङ) प्रशिक्षण विधियाँ— इस स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम में लम्बे भाषणों का कम से कम प्रावधान हो तथा चर्चाओं द्वारा श्रेय सामग्री के उपयोग एवं साहित्य प्रचयन आदि विधियों पर अधिक बल दिया जाय। पाठ्यक्रम के भाग साहित्यों के साथ विद्यार्थियों की तरह प्रकट करने की अपेक्षा उन्हें प्रकाश कराया जाय कि उनसे साथ चर्चा के माध्यम से शान्ता की प्रगति एवं छात्रों के विकास हेतु शिक्षा के एक नया आयाम की सम्भावनाओं को खोजा जा रहा है। इस नया विचारधारा के व्यावहारिक पक्षों की उपाययोजना को उभारने हेतु इन प्रशासकों को इस ध्येय के लिए प्रवृत्त किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी शालाओं में इस नई प्रवृत्ति को प्रारम्भ कर उसका सफल संचालन कर सकें।

(२) शिक्षका के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

शाला में कोई नया प्रयोग प्रारम्भ करने में पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि शाला के समस्त अध्यापक उससे पूर्यतया अवगत हो। वे सिद्धांत निर्देशन के साथ भी लागू होता है। हमारी शालाओं के लिए निर्देशन एक नूतन प्रयोग है अतः इसकी

सफलता हेतु शाला के प्रत्येक अध्यापक को इनके उद्देश्य प्रवृत्तियाँ उपादेयता आदि से अवगत कराना आवश्यक हो जाता है। शिक्षकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रबानाध्यापकों एवं प्रशासकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से उद्देश्य विधियों अंतवस्तु तथा अवधि में भिन्न होगा। प्रबानाध्यापक को तो निर्देशन के प्रशासकीय पक्ष से अधिक सम्बन्ध रहता है जबकि शिक्षकों का हम कार्यक्रम में वर्तमान रूप से सहयोग अपभिन होता है। छात्रों के सम्बन्ध में सूचनाएँ शिक्षकों द्वारा प्राप्त की जा सकती हैं। व्यक्तिगत सूचना सेवा एवं परिवर्णिय सूचना सेवाओं के संगठन में परिवर्णिय सूचनाओं व संचरण में व्यावसायिक एवं पेशिक समस्याओं को हल करने में तथा अन्य अनक परिस्थितियों में शिक्षकों का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। यह सहयोग अभी प्राप्त किया जा सकता है जब शिक्षकों को इस कार्यक्रम में प्राप्ता हो वे इससे पूर्णरूप से परिचित हों एवं वे इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण समझते हों। यह अभी सम्भव हो सकता है जब उन अध्यापकों का निर्देशन कार्यक्रम के प्रति उचित अनुस्थापन किया जाए। इस कार्यक्रम के उद्देश्य अंतवस्तु विधियाँ आदि के सम्बन्ध में निम्नलिखित अनुच्छेदों में चर्चा की जावगी।

(क) उद्देश्य — शिक्षकों के लिए जो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाए उसमें निर्देशन के प्रशासकीय पक्ष पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। इसमें प्रशासकीय एवं वित्तीय पक्ष पर अधिक बल देने की आवश्यकता नहीं होगी। इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हों सकते हैं —

- निर्देशन के इतिहास एवं तार्कालिक स्वरूप से अवगत करना।
- प्राथमिक जलित समाज में निर्देशन के महत्त्व को स्पष्ट करना।
- निर्देशन की विभिन्न सेवाओं का परिचय देना।
- भारतीय शालाओं के लिए 'पूततम निर्देशन कार्यक्रम' की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- निर्देशन कार्यक्रम में शिक्षकों की अपेक्षित भूमिकाओं से अवगत करना।
- निर्देशन सेवाओं के फलस्वरूप अध्यापन कार्य के उन्नयन में क्या सहायता मिल सकती है इसमें शिक्षकों को अवगत करना।

(ख) अवधि — शिक्षकों के लिए जो प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाए उसकी अवधि कम से कम एक सप्ताह की हो सकती है। हम लगातार एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं अथवा तीन दिनों के दो-तीन कार्यक्रम आयोजित कर उपयुक्त उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं।

(ग) अभिकरण — शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य कई अभिकरणों द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। निर्देशन कार्यक्रम स्वयं शान्त में इस कार्यक्रम का संचालन कर सकता है। राजकीय पुरो के किसी विज्ञेयन से इस कार्य में सहायता ली जा सकती है अथवा शिक्षक महाविद्यालयों के सेवा प्रसार विभागों के द्वारा

भी वम प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया जा सकता है। आजकल तो शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भी निर्देशन के मूल तत्त्वों का समावेश सामान्यतः किया जाता है जिससे प्रत्येक प्रशिक्षित अध्यापक को निर्देशन के मूल तत्त्वों से परिचित होने का अवसर मिलता है।

(घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु — शिक्षकों के लिए निर्देशन का जो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाय उसमें निम्नलिखित प्रमुख बिन्दुओं का समावेश किया जाना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में निर्देशन में शिक्षक के स्थान पर अधिक विस्तार से चर्चा होनी चाहिए। साथ ही निर्देशन के महत्त्व की चर्चा करते समय इस कार्यक्रम की छात्रों के लिए क्या उपयोगिता है तथा शिक्षकों के लिए यह कार्यक्रम किस प्रकार महत्वपूर्ण है इन बिन्दुओं पर भी प्रकाश डालना चाहिए। इस पाठ्यक्रम की स्वरूपा का प्रस्ताविक स्वरूप नीचे दिया जा रहा है।

— निर्देशन का इतिहास एवं इसका विकासात्मक स्वरूप।

— निर्देशन दशक।

— निर्देशन का शैक्षणिक चिन्तन समाज में महत्त्व।

— निर्देशन की प्रमुख सेवाएँ।

— निर्देशन संवादात्मक शिक्षकों का स्थान।

— व्यक्तिगत सचन, संचरण के प्रमाणात्मक साधन एवं शिक्षकों द्वारा इनका उपयोग।

— पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सार क्रियाएँ द्वारा पर्यावरणीय सूचनाओं का संचरण।

— छात्रों की सामान्य शैक्षणिक समस्याएँ।

(ङ) प्रशिक्षण विधियाँ — शिक्षकों के लिए जो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाए उसमें वास्तविक चर्चाएँ श्रेष्ठ दृश्य साधनों आदि का प्रयोग तो होना चाहिए किन्तु कुछ व्यावहारिक कार्य का भी प्रावधान होना चाहिए। शिक्षकों को उपस्थित वृत्तों की चिन्ता का अभ्यास दिया जाए। वृद्ध चिह्नांकन सूचियों का प्रयोग करने का अवसर दिया जाए अथवा सचित अभिनेता भरण का अभ्यास करवाया जाए।

() करियर मास्टर्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

एक श्रेष्ठ ऐसी शान्ति में जिनमें प्रत्येक शिक्षक ही करियर मास्टर्स का ही प्रावधान किया जा सकता है। इन संधन सुविधाएँ यदि उपलब्ध हों तो शान्ति उपबोधक अथवा पूर्ण कान्ति उपबोधन भी रखा जाय तो प्रसन्नता का ही विषय होगा। किन्तु सामान्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तो हम छोटी शान्ति में प्रारम्भ में करियर मास्टर्स की ही चर्चा कर सकते हैं। करियर मास्टर्स का प्रमुख कार्य व्यावहारिक निर्देशन के क्षेत्र में होना है। वह व्यावहारिक सूचनाओं का संचरण एवं संचरण करता है और जहाँ सम्भव हो

व्यावसायिक निर्देशन देने का प्रयत्न करता है। किन्तु इस कायकर्त्ता से हम व्यक्ति-उपयोग की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। इसका प्रमुख कार्य पर्यावरणीय सूचनाएँ एकत्रित करना उनका वर्गीकरण मिस्रीनीकरण आदि करना एवं संचरण करना है। इन सचनान्त्रियों को वातकी तब पहुँचाने के लिये व्यावसायिक वातान्त्रिकों का जो व्यावसायिक प्रदर्शनियों का आयोजन शिक्षक अभिभावक सम्मन्वयों आदि का आयोजन भी इसी कायकर्त्ता को करना होता है इन प्रमुख उत्तरदायित्वों को ध्यान में रखते हुए हम उनके लिये आयाजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य का प्रतिपादन करना चाहिये। यहाँ इस कार्यक्रम के कुछ प्रस्तावित उद्देश्य दिये गये हैं।

(क) उद्देश्य

- निर्देशन की एतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत करना।
- निर्देशन की आधुनिक धारणा से अवगत करना।
- निर्देशन की प्रमुख सेवाओं का सामान्य परिचय।
- पर्यावरणीय सचनान्त्रिकों का विस्तृत परिचय देना।
- करियर मास्टर के उत्तरदायित्वों से अवगत कराना।
- विभिन्न सचनान्त्रिकों से अवगत करना।
- सचनान्त्रिकों की सफलता संगठन एवं संचरण विधियों से अवगत करना।
- सचनान्त्रिकों से सम्बद्ध प्रमुख प्रवृत्तियों से अवगत करना एवं उनके आयोजन को क्षमता विकसित करना।

(ख) अवधि — करियर मास्टरों के प्रशिक्षण की अवधि कम से कम दो मास की होनी चाहिये। इस प्रशिक्षण के लिये परीक्षावकाश का उपयोग किया जा सकता है।

(ग) अभिकरण — इस प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व सामान्यतया राज्य निर्देशन दूरियों को देना चाहिये क्योंकि दूरियों के पास आवश्यक विशेषण उपलब्ध होते हैं तथा यह एक राजकीय एवं राज्यस्तरीय अभिकरण होने के कारण इसके द्वारा दिये गये प्रमाणपत्रों को सुसम्भता से मान्यता प्राप्त हो सकती है। फिर दूरियों की विभिन्न गतिविधियों में निर्देशन कार्मिकों का प्रशिक्षण भी एक प्रमुख प्रवृत्ति है।

(घ) पाठ्यक्रम की अंतवस्तु — करियर मास्टरों के उत्तरदायित्वों को देखते हुए उनके प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में पर्याप्त व्यावहारिक कार्य होना चाहिए। ऐसा वहें कि यह सम्पूर्ण कार्यक्रम ही पूर्णतया व्यावहारिक होना चाहिये। पर्यावरणीय सेवा के विविध आयामों में सम्बन्धित अनेक प्रवृत्तियों के संगठन संचालन की वास्तविक कुशलता निर्माण करना इस पाठ्यक्रम का ध्येय है। पुस्तकालय में निर्देशन केंद्रों की स्थापना से लेकर सचनान्त्रिकों के संचरण की विविध विधियों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी इन कार्मिकों को दी जानी चाहिए तथा इन उत्तरदायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाने की इनमें क्षमता उत्पन्न की जानी चाहिए। इन निर्देशन

सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए हमें हरियर मास्टर व प्रशिक्षण वाद्यत्रय की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

- निर्देशन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
- निर्देशन का आधुनिक सप्रत्यय।
- निर्देशन का महत्व।
- निर्देशन की प्रमुख सवाओं का परिचय।
- पर्यावरणीय सूचनाओं के स्रोत।
- पर्यावरणीय सवा का विस्तृत ज्ञान।
- निर्देशन का कारण का आयोजन।
- पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण के सिद्धान्त एवं विधियाँ।
- पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण की विधियाँ।
- व्यावसायिक वातावरण तथा व्यावसायिक दिवसा का आयोजन।
- निर्देशन त्विम तथा अभिभावक दिवसा का आयोजन।
- व्यावसायिक सर्वेक्षण।

“व्यावसायिक” वाद्य

- (१) निर्देशन कौशल का संगठन।
- (२) पर्यावरणीय सूचनाओं की समीक्षा।
- (३) व्यावसायिक सूचना पत्रों का निर्माण।
- (४) व्यावसायिक वातावरण की रूपरेखा बनाना।
- (५) व्यावसायिक सर्वेक्षण।

(६) प्रशिक्षण की विधियाँ — स प्रशिक्षण में भी सिद्धान्तिक वाद्य के प्रतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में व्यावहारिक वाद्य होना चाहिए। जो वाद्य हरियर मास्टर का करते हैं उनका पूरा अभ्यास उसे प्रशिक्षण काल में ही करना पड़ा जाना चाहिए। विविध पर्यावरणीय सूचनाओं से उसे अवगत किया जाना चाहिए। अत्यन्त ही विधियाँ का भी उसे प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए क्योंकि पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण हेतु उस इन विधियों का उपयोग करना पड़ता है।

(४) शिक्षक उपयोग के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रायः शिक्षक उपबोधक भी एक अनौपचारिक निर्देशन वाद्यकर्ता होता है किन्तु उसका वाद्यक्षेत्र हरियर मास्टर से अधिक विस्तृत होता है। अतः इसका प्रशिक्षण का मास्टर अधिक ऊँचा होना चाहिए। इसका वाद्य केवल व्यावसायिक सवाओं का संचरण — संचरण तक ही सीमित नहीं करना। यह शक्ति निर्देशन तथा कुछ सीमा तक व्यक्तित्व निर्देशन का भी वाद्य करता है। इसमें हम फिर भी व्यक्तित्व उपबोधन का अपना नहीं कर सकते। यह सामाजिक तथा सामूहिक निर्देशन विधियों को अपनाकर छात्रों की सामूहिक समस्याओं का मुलभूत का प्रयत्न करता

हे । एन गृष्ठभूमि म यन् हिम इन प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य प्रतिपादित करने का प्रयास करें तो अधिक उपयुक्त होगा ।

(क) उद्देश्य —

—निर्देशन की ऐतिहासिक गृष्ठभूमि से अवगत करना ।

—निर्देशन के आधुनिक संप्रत्यय से अवगत करना ।

—निर्देशन के प्रमुख सिद्धांतों से अवगत करना ।

—निर्देशन सेवाओं के संगठन के सिद्धान्तों एवं विधियों से अवगत करना ।

—शिक्षक उपबोधक के उत्तरदायित्वों एवं गुणों से अवगत करना ।

—भारतीय शालाओं के लिए 'पूतनम आदेश्यक' निर्देशन कार्यक्रम से अवगत करना ।

—व्यक्तिक सूचनाओं को सफल करने के प्रमानकीकृत साधनों से परिचित कराना ।

—पर्यावर्तित सूचनाओं के खोजा तकनन एवं सचरण विधियों से अवगत कराना ।

—सामूहिक निर्देशन की विधियों से अवगत करना ।

(ख) अवधि— शाला उपबोधकों का कार्यक्रम करियर मास्टरों की प्रपक्षा अधिक विस्तृत होता है अतः इनके प्रशिक्षण की अवधि भी अधिक होना स्वाभाविक है । कुछ यूरो के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एन कायवर्तिका के प्रशिक्षण की अवधि कम से कम ६ मास की होनी चाहिए । इसमें लगभग आधा समय व्यावहारिक कार्य (On the Job Training) के लिए तथा शेष व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए दिया जाना चाहिए ।

(ग) अधिकारण— इन कार्यक्रमों को भी चलाने का उत्तरदायित्व राज्य निर्देशन ब्यूरो को ही समझना चाहिए । बस शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के भी एड पाठ्यक्रम में भी निर्देशन में विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु कुछ पाठ्यक्रम रखे जाते हैं किन्तु एन व्यावहारिक कार्य नहीं के बराबर होता है और न ही भी एड के अन्तर्गत कार्यक्रम में हम इसकी अधिक अपेक्षा ही कर सकते हैं । अतः एन पाठ्यक्रमों का आधार पर एन एक सफल शिक्षक उपबोधक के निर्माण की प्रपक्षा नहीं कर सकते ।

(घ) पाठ्यक्रम की अनुवस्तु

(अ) सहायिक —

(१) निर्देशन की ऐतिहासिक गृष्ठभूमि ।

(२) निर्देशन का आधुनिक संप्रत्यय ।

(३) निर्देशन का आधुनिक जटिल समाज में महत्त्व ।

(४) निर्देशन सेवाओं का परिचय ।

- (५) निर्देशन सेवाओं के संगठन के सिद्धान्त ।
- (६) सामान्य भारतीय शाखाओं की निर्देशन आवश्यकताएँ ।
- (७) द्युनतम निर्देशन कार्यक्रम ।
- (८) प्रवर्तित सूचना संकलन के अमानकीकृत साधन एवं प्रविधियों तथा अमानकीकृत सामूहिक परीक्षण ।
- (९) अमानकीकृत एवं अमानकीकृत साधनों के उपयोग के सिद्धान्त ।
- (१०) पर्यावरणीय सूचनाओं का अन्तःकरण एवं संचरण विधियाँ ।
- (११) सामूहिक निर्देशन की विधियाँ ।

(आ) व्यावहारिक काम —

- (१) मनोवैज्ञानिक सामूहिक परीक्षणों का उपयोग ।
- (२) अमानकीकृत साधनों का निर्माण ।
- (३) पर्यावरणीय सूचनाओं का अध्ययन एवं समीक्षा ।
- (४) पर्यावरणीय सूचनाओं के प्रश्न हेतु श्रेष्ठ एवं सामग्री का निर्माण ।
- (५) व्यावसायिक वार्ताओं की रूपरेखा का निर्माण ।
- (६) व्यावसायिक सर्वेक्षण ।
- (७) सामूहिक निर्देशन का अभ्यास ।

(अ) प्रशिक्षण विधियाँ— सहायिक काम के लिए वार्ताओं, चर्चाओं तथा श्रेष्ठ दृश्य विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए । इस समस्या कार्यक्रम को तीन सोपानों में बाँटा जा सकता है ।

(अ) प्रथम सोपान— इस सोपान में प्रशिक्षार्थी को निर्देशन के सहायिक पक्ष से पुरातया अवगत कराना चाहिए तथा व्यावहारिक एवं संचरित ज्ञान प्रदान करना चाहिए । इसी सोपान में जिन विधियों, साधनों अथवा उपकरणों की हृदय चर्चा कर उनका प्रत्यक्ष उपयोग भी करवाया जाना चाहिए ताकि प्रशिक्षार्थी में उनके सम्बन्ध का ज्ञान ही विकसित न हो किन्तु क्षमता भी विकसित हो । इस सोपान में लगभग तीन मास का समय लगाया जाना चाहिए ।

(ब) द्वितीय सोपान — प्रथम तीन मास के प्रशिक्षण के पश्चात् प्रशिक्षार्थी को किसी शाला में पूर्णकालिक निर्देशन का कार्य करने के लिये रखा जाना चाहिए एवं उससे विशेषता के निर्देशन में निर्देशन कार्यक्रम संचरित करने का अवसर दिया जाना चाहिए । इस अवधि में प्रशिक्षार्थी को छात्रों की निर्देशन आवश्यकताओं के अध्ययन सामूहिक निर्देशन पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण एवं संचरण अमानकीकृत साधनों के प्रयोग व्यावसायिक वार्ताओं के आयोजन शिक्षक अभिभावक सम्मेलन आयोजन आदि महत्वपूर्ण निर्देशन प्रवृत्तियों का अनुभव प्राप्त होना चाहिये । इस महत्वपूर्ण सोपान के लिये लगभग दो या दोई मास की अवधि रखी जा सकती है ।

(इ) तृतीय सोपान — उपयुक्त साधन के पश्चात् प्रशिक्षार्थी पुनः एकत्रित होकर अपने अनुभवों की चर्चा कर सकते हैं तथा अपनी अपनी शालाओं के लिए एक यूनितम निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा बना सकते हैं। इस अन्तिम सोपान में प्रशिक्षार्थियों से कुछ क्षेत्र कार्य (Field work) करवाया जा सकता है जैसे व्यावसायिक सर्वेक्षण रचनात्मक व्यावसायिक जगत का अध्ययन कुछ शिक्षक निर्मित साधनों का निर्माण आदि।

इसी सोपान के अन्त में प्रशिक्षार्थियों का सम्पर्क भी हो जाना चाहिये।

(५) शाला उपबोधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस श्रेणी में वे निर्देशन कार्यक्रम आते हैं जिनका एकमेव कार्य निर्देशन एवं उपबोधन है। अतः इन कार्यक्रमों का प्रशिक्षण अत्यन्त गहन एवं व्यावहारिक होना चाहिये। इन से हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे निर्देशन की हर सेवा को कुशलतापूर्वक संचालित कर सकें। इस व्यक्तिगत उपवाचन की भी अपेक्षा की जा सकती है। इन सब अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए हमें इनके प्रशिक्षण में उद्देश्यों को प्रतिपादित करना चाहिये।

(अ) ज्ञानात्मक

- निर्देशन के इतिहास विकासामय स्वरूप महत्त्व एवं सिद्धान्तों से प्रशिक्षार्थी को अवगत करना।
- निर्देशन की प्रमुख सेवाओं के सम्बन्ध में जानकारी देना।
- व्यक्तित्व सूचनाओं के संचरण की मानकीकृत एवं अमानकीकृत विधियों से अवगत करना।
- पर्यावरणीय सूचनाओं के ज्ञाता संचरण एवं संचरण विधियों से अवगत करना।
- उपवाचन की प्रक्रिया से अवगत करना।
- व्यक्तित्व एवं समझन के मनोविज्ञान से अवगत करना।

(आ) कौशलमय

- निर्देशन सेवाओं के संचालन का अनुभव प्रदान करना।
- उपबोधन साक्षात्कार संचालित करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- मानकीकृत एवं अमानकीकृत साधनों का उपयोग कर एवम की क्षमता उत्पन्न करना।
- पर्यावरणीय सूचनाओं का समीक्षा कर सकने की क्षमता उत्पन्न करना।
- निर्देशन की एक निर्देशन प्रणाली द्वारा निर्देशन दिवस अभिभावक दिवस आदि आयोजित कर सकने की क्षमता उत्पन्न करना।
- पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण हेतु श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण कर सकने की क्षमता उत्पन्न करना।

व्यावसायिक कार्याण्ड सञ्चन का क्षमता उत्पन्न करना ।

सामूहिक तथा व्यक्तिगत निर्देशन विधियाँ को काम में लाने की क्षमता उत्पन्न करना ।

(ल) अवधि—सर्वविस्तृत प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि कम से कम एक वर्ष की होनी चाहिए तभी इतने विस्तृत सद्भाषितक एवं व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति का हम प्रयत्न कर सकते हैं । एक वर्ष का अवधि में सततगमन आधा समय व्यावहारिक कार्य (On the job training) तथा प्रत्यक्ष व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए रखा जाना चाहिए ।

(म) अभिकरण—एक प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्देशन ब्यूरो अथवा राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के निर्देशन एवं उपबोधन विभाग द्वारा ही उत्तम रीति में लिया जा सकता है । कम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी एक एक स्तर पर निर्देशन एवं उपबोधन के विशेषज्ञता पाठ्यक्रमों का प्रावधान होता है । विस्तृत पाठ्यक्रमों में एक ता पर्याप्त व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं मिल पाता और दूसरे कम विषय के अनिश्चित अवधि विषयों का भी अध्ययन करना होता है । अतः एक कुशल उपबोधक के प्रशिक्षण में जितनी गहराई आनी चाहिए वह नहा आ पाती । फिर शिक्षक महाविद्यालयों के पास समुचित व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु आवश्यक साधन मुविधाएँ भी नहीं होतीं । अतः प्रारम्भ में उल्लिखित राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय अभिकरण ही इस प्रशिक्षण को ठीक ढंग में संचालित कर सकते हैं ।

(घ) पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु—एक पाठ्यक्रम की सद्भाषितक एवं व्यावहारिक शैली अन्तवस्तु पर्याप्त विस्तृत होनी चाहिए । उपबोधक का निर्देशन के दान सिद्धान्तों एवं आधाराओं से पर्याप्त परिचित होना ही चाहिए साथ ही उसमें निर्देशन की विविध प्रवृत्तियों का सञ्चन संचालन कर सकने की भी क्षमता होनी चाहिए । शान्त उपबोधन के लिए आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के विस्तारण के फलस्वरूप हम निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रस्तावित करता चाहेंगे ।

(अ) सद्भाषितक

निर्देशन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ।

निर्देशन का विकासात्मक स्वरूप एवं प्राधुनिक सप्रयय ।

निर्देशन के दार्शनिक आर्थिक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार ।

शिक्षा एवं निर्देशन ।

सूत्रभूत निर्देशन मेवाएँ एवं इनके सगठन के सिद्धान्त ।

सामूहिक निर्देशन की विधियाँ ।

व्यक्तिगत उपबोधन एवं उपबोधन साधनकार ।

व्यक्तिगत सूचना सञ्चन के साधन एवं प्रविधियाँ ।

(ब) मानकीकृत (घ) अनुमानकीकृत ।

मानकाकृत एव अमानकीकृत साधनो के प्रयोग के सिद्धांत ।

पर्यावरणीय सूचनाओं का स्रोत ।

पर्यावरणीय सूचनाओं का संचयन संगठन एवं संचरण के सिद्धांत एवं विधियाँ ।

भारतीय जानाओं के लिए न्यूनतम आवश्यक निर्देशन कार्यक्रम ।

(आ) यावहारिक

सामूहिक निर्देशन का अनुभव ।

व्यक्तिक उपबोधन तीन या अधिक बालकों को उपबोधन देना ।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रयोग का पर्याप्त अनुभव ।

अ-मानकाकृत साधनों का निर्माण ।

पर्यावरणीय सूचनाओं की समीक्षा ।

पर्यावरणीय सूचनाओं का संचरण हेतु अथवा अन्य सामग्री का निर्माण ।

व्यावसायिक वाक्ताम्रो का आयोजन ।

निर्देशन दिवस निर्देशन प्रशिक्षण दिवस आदि प्रवृत्तियों का आयोजन ।

यावसायिक सर्वेक्षण ।

स्थानीय व्यावसायिक जगत का अध्ययन ।

कुछ समय तक किसी जाना में उपबोधन के स्तर में प्रत्यक्ष कार्य करने का अनुभव ।

(अ) प्रशिक्षण विधियाँ—शाला उपबोधन के प्रशिक्षण को भी तीन सोपानों में बाँटा जा सकता है ।

(अ) प्रथम सोपान—इसमें प्रशिक्षार्थियों को पर्याप्त सैद्धांतिक जानकारी वाक्ताम्रो चर्चाओं अथवा दृश्य सामग्री द्वारा साहित्य के अध्ययन व माध्यम से दी जानी चाहिए । इसी सोपान में व्यावसायिक व्यावहारिक कार्य भी करवाया जाना चाहिए । अतः मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की चर्चा के साथ प्रशिक्षार्थियों को उनके प्रयोग का यावहारिक अनुभव भी दिया जाना चाहिए ।

(आ) द्वितीय सोपान—इस सोपान में प्रशिक्षार्थियों को कुछ शालाओं के साथ संयुक्त कर उपबोधक के रूप में कार्य करने का अनुभव प्रदान किया जाना चाहिए । यह मागदर्शन हेतु आवश्यक विशेषज्ञों का भी प्रावधान होना आवश्यक है । यह अनुभव एक सफल उपबोधक बनने के लिए आवश्यक है ।

(इ) तृतीय सोपान—इस अंतिम सोपान में प्रशिक्षार्थियों के अनुभव के आधार पर कुछ प्रमुख सिद्धांतों की चर्चा की जा सकती है तथा उनकी कठिनाइयों का निराकरण पर चर्चा हो सकती है । इसी सोपान में प्रशिक्षार्थियों से व्यावसायिक सर्वेक्षण व्यावसायिक जगत का अध्ययन आदि कार्य भी करवाये जा सकते हैं । इस

सोपान के अन्त में प्रथि शिक्षिका की क्षमताप्राप्त मूल्यांकन का भी प्रावधान होना चाहिए ।

उपसंहारात्मक कथन

निर्देशन कार्यक्रम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रम का संचालन उपयुक्त प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा किया जाए । निर्देशन कार्यक्रम के संचालन में इनके यत्नियों द्वारा सहयोग लिया जाना है किन्तु प्रत्येक व्यक्ति का प्रशिक्षण एक समान हो यह आवश्यक नहीं । इस अध्याय में दो विभिन्न स्तरीय निर्देशन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की चर्चा की गई है । प्रत्येक कार्यक्रम के उद्देश्य तथा स्वरूप एवं उसके संचालन की विधियों में अन्तर होना स्वाभाविक है । अतः न विविध स्तरीय कार्यक्रमों की चर्चा निम्न विदुषा के अन्तर्गत की गई है—उद्देश्य अधि अधिबन्धन पाठ्यक्रम की अन्तवस्तु एवं प्रशिक्षण विधियाँ । इस अध्याय में चर्चित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत करने समय विभिन्न राज्य स्तरों एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित पाठ्यक्रमों तथा शिक्षक महाविद्यालय में प्रचलित निर्देशन पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखा गया है ।

भारत में निदेशन अभिकरण

(अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण) (१) केन्द्रीय शक्ति एवं व्यावसायिक यूरो (२) डाटरेकॉर्ड जनरल ग्राफ रीमटलमेट एण्ड एम्प्लायमेट (३) अभिकरण जिनमें किम तथा पिन्मिंटिम प्राप्त की जा सकती हैं। (४) प्रशासन विभाग (भारत सरकार) (५) विभिन्न केन्द्रीय मन्त्रालय (६) अखिल भारतीय शक्ति एवं व्यावसायिक निदेशन सच

राज्य स्तरीय अभिकरण—(१) राज्य शक्ति एवं व्यावसायिक निदेशन यूरो (२) राज्य मनावानिक यूरो (३) शिक्षक महाविद्यालय (४) विरव विद्यालय (५) नियोजन कार्यालय (६) रेडियो प्रसारण

अथ अभिकरण—(उपसहारात्मक कथन)

निदेशन की विचार-धारा को आगे बढ़ाने के लिए हमारे देश में विभिन्न अभिकरण क्रियाशील हैं। अनेक सरकारी अभिकरण तो निदेशन के क्षेत्र में कार्यरत हैं जो किन्तु कुछ सरकारी अभिकरण भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इस अध्याय में इन निदेशन अभिकरणों के सम्बन्ध में चर्चा की जाएगी। निदेशन अभिकरण निदेशन के क्षेत्र में अनेक कार्य कर सकते हैं। इन कार्यों में प्रशिक्षण प्रकाशन अनुसंधान परीक्षण निर्माण अनुसंधान एवं प्रत्यक्ष निदेशन सम्मिलित हैं। आवश्यक नहीं कि प्रत्येक अभिकरण इन सब कार्यों को हाथ में ले। हम इन अभिकरणों को चार स्तरों में बाँट सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण राष्ट्रीय स्तर के अभिकरण राज्य स्तरीय अभिकरण एवं अन्य अभिकरण। अब हम इन अभिकरणों की चर्चा निम्नलिखित अनुच्छेदों में करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण

यद्यपि इस अध्याय का शीर्षक भारत में निदेशन अभिकरण है फिर भी भारतीय निदेशन कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण वित्त प्रकार सहायक हो सकते हैं इसकी यहाँ चर्चा करना अनुपयुक्त नहीं होगा। U S E F I U N E S C O British Council U S I S आदि ऐसी संस्थाएँ हैं जिनसे सन्ध्या से भारतीय निदेशन कार्यकर्ताओं की निदेशन की नवीनतम विचार धाराएँ एवं कार्यपद्धतियाँ स प्रवृत्त करने हेतु कुछ कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारतीय निदेशन कार्यकर्ताओं को विदेशों में

भेजकर प्रशिक्षित करने का प्रावधान रखा जा सकता है साथ ही विदेशी निर्देशन विशेषज्ञों को भारत में बुलाकर यहाँ के कार्यकर्ताओं को अनुस्थापित करने का योजना बनाई जा सकती है। इस प्रकार निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना कार्यान्वित करने से निर्देशन कार्यक्रम पुरानी विचारधाराओं पर चलने की आशंका कम हो सकती है।

प्रशिक्षण एवं अनुस्थापन के अतिरिक्त भाष्य परतर्कीय अभिवरणों से हम निर्देशन सम्बन्धी सूचनाएँ तथा अन्य दृश्य सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

राष्ट्रीय स्तर के अभिवरण

निर्देशन के क्षेत्र में प्रमुख राष्ट्रीय स्तर का अभिवरण केंद्रीय शैक्षणिक एवं निर्देशन ब्यूरो है। इस केंद्रीय अभिवरण में राज्य स्तरीय अभिवरणों को निर्देशन एवं प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न माध्यम भी प्रयोग अथवा परीक्षण रूप से निर्देशन कार्यक्रम का सबल प्रदान हेतु किसी न किसी रूप में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

निम्नलिखित अनुच्छेदों में इन अभिवरणों के कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा।

(१) केंद्रीय शैक्षणिक एवं पाठसायिक ब्यूरो—Central Bureau of Educational and Vocation Guidance (C B E V G)

इस केंद्रीय ब्यूरो की स्थापना १९५४ ई. में हुई थी और इसका प्रमुख कार्य है भारत में निर्देशन की विचारधारा को प्रभावित रूप देकर इसके संचालन में सहायता प्रदान करना। प्रारम्भ में यह ब्यूरो मॉडर्न स्ट्रीट्यूट ऑफ एड्युकेशन ब्यूरो के एक अंग के रूप में कार्य करता रहा फिर नवगत इन्स्टीट्यूट ऑफ एड्युकेशन (एन सी ई आर टी) के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में इस सम्पत्ति को कार्य किया और अब एन सी ई आर टी के डिपार्टमेंट ऑफ एड्युकेशनल साइकोलॉजी एंड फाउंडेशन ऑफ एड्युकेशन के एक विभाग के रूप में यह ब्यूरो कार्य कर रहा है। इस ब्यूरो ने निर्देशन की विचारधारा को सफा बनाने हेतु अनेक प्रकार की गतिविधियों को हाथ में लिया है। इस ब्यूरो की अगभग सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण देन रही है।

(क) प्रकाशन—केंद्रीय ब्यूरो के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं जिनमें गार्डेस यूथ गामक एक पत्रिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह त्रमासिक पत्रिका निश्चय प्रकाशित की जाती है एवं प्रत्येक निर्देशन कार्यकर्ता के लिए अनन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस निर्देशन सम्बन्धी उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस प्रकार इस ब्यूरो द्वारा प्रकाशित गार्डेस रिह्यू भी एक उपयोगी त्रमासिक प्रकाशन है। इसमें निर्देशन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नैस अनुसंधान समीक्षाएँ एवं समाचार प्रकाशित किए जाते हैं। इन त्रमासिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त ब्यूरो

निर्देशन सम्बन्धी ग्रन्थ सूचनाएँ भी प्रकाशित करता है जैसे You and your future Know your air force Know your Navy आदि। केन्द्रीय ब्यूरो ने भारत सरकार के फिल्म दिव्यजन को वृद्ध फिल्म बनाने में भी सहयोग दिया है। इस अभिकरण से हम निर्देशन से सम्बन्धित अनेक फिल्म भी प्राप्त हो सकती हैं।

(ख) प्रशिक्षण—केन्द्रीय ब्यूरो का दूसरा प्रमुख प्रवृत्ति है निर्देशन कार्य वर्तमान का प्रशिक्षण। युवा पूषकात्मिक उपायोंको के लिए एक वर्षीय गार्डेनस्त्रिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है जिसमें एन एड की उपाधि प्राप्त किया हुए व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। इस एक वर्षीय कार्यक्रम के प्रतिरिक्त भी ब्यूरो ने संचारत शिक्षा के अनुसंधान के लिए अनेक प्रापकारीय पाठ्यक्रमों का संचालन किया है।

(ग) अनुसंधान—केन्द्रीय ब्यूरो एक राष्ट्रीय समस्या होने के कारण भारत में निर्देशन का क्या स्वरूप है? इस कार्यक्रम के संचालन में मानव बर्तिकाइयों का क्या हद निकाला जाय आदि विषयों पर अनुसंधान करने का भी उत्तरदायित्व इस संस्था पर आता है।

(2) डाइरेक्टर जनरल ऑफ़ रीसटलमेंट एण्ड एम्प्लायमेंट (DGR & E)

डा जी आर एण्ड ई केन्द्रीय एवं अल्प पुनर्वासन एवं नियोजन मंत्रालय का एक अंग है। यह भी निर्देशन का महत्वपूर्ण अभिकरण है। डा जी आर एण्ड ई ने निर्देशन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्र में विभिन्न नियोजन कार्यालय (Employment exchanges) हैं वे इस विभाग के अन्तर्गत आते हैं। इन नियोजन कार्यालयों की स्थापना के समय उनके प्रमुख कार्य पारिस्तान से आये हुए विस्थापितों को पुनर्वासित करना था। इन विस्थापितों के प्रतिरिक्त सना से संवर्धितवर्ग कामिका को असमान जीवन में पुनर्वासित करने का कार्य भी इन कार्यालयों ने किया। तत्परन्तु इन नियोजन कार्यालयों ने विभिन्न राज्य सरकारों को विद्यते जाति तथा अनुसूचित जाति के शक्तिता की शर्तों में सहायता प्रदान का। आज सब राज्यों के प्रत्येक जिले में एक निवासन कार्यालय स्थापित किया गया है जिसका कार्य नौकरी प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को नौकरी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना तथा निरोक्षिता का उचित कमचारिया के चयन में सहायता प्रदान करना है। वह भी निर्देशन की एक महत्वपूर्ण सेवा है। इस प्रक्रिया में नियोजन कार्यालय वणि शक्तिता को प्राथमिकता अवश्यत भाव से सर्वे तो और उपाय होगा।

डा जी आर एण्ड ई का निर्देशन के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण योगदान इस विभाग के प्रकाशन है। इस विभाग ने लगभग २५ भारतीय व्यवसायों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सूचना प्रदान करने वाले व्यवसाय सूचनात्र (Career Pamphlets) प्रकाशित किए हैं। इन्हें सीधे इस विभाग से उपलब्ध स्थानान्त निर्देशन

कार्यालयों में प्राप्त किया जा सकता है। यह विभाग ने देश में जो प्रशिक्षण सुविधाएँ हैं उनकी सूचनाओं को एक श्रेणियों के छात्रों के लिए फसिलिटीज नामक पुस्तिका में प्रकाशित किया है। इस विभाग ने व्यावसायिक सर्वेक्षण भी प्रकाशित किया है जिनमें व्यवसायों में सम्प्रेषित अधिक विस्तृत सूचनाएँ सम्मिलित हैं। ये सर्वेक्षण प्रतिवदन प्रत्येक निर्देशन यूरों तथा निर्देशन केंद्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

डी जे गार १ ने निर्देशन के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य भी किए हैं जिनमें राष्ट्रीय व्यवसायों का वर्गीकरण (National Classification of occupation) एक महत्वपूर्ण है।

डी जे गार १ ने नियोजन कार्यालयों के कार्यक्षेत्र को अधिक व्यापक बनाने हेतु विविध पंचवर्षीय योजनाओं में युवक नियोजन सेवाएँ (Youth Employment Service) की स्थापना की। विभिन्न नियोजन कार्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन केंद्र स्थापित किए गए। इन केंद्रों के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं (i) युवकों की सम्भावित व्यावसायिक सम्भावनाओं से अवगत करना (ii) व्यवसायों से सम्बंधित उच्च शिक्षण की सम्भावनाओं से अवगत करना (iii) युवकों का उचित व्यवसाय में प्रवेश प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना तथा (iv) नियोजन एवं प्रशिक्षण से संबंधित विविध समस्याओं के हल में सहायता प्रदान करना। इन व्यावसायिक निर्देशन केंद्रों में परिचित एवं सामूहिक दोनों विधियों से युवकों को उपवाहन सेवा प्रदान की जाती है।

डी जे गार एण्ड ई निर्देशन के क्षेत्र में प्रकाशित अनुसंधान प्रयत्न निर्देशन के अनिर्दिष्ट प्रशिक्षण का भी कार्य किया गया है। इस विभाग ने कई निर्देशन कार्यक्षेत्रों का प्रशिक्षण किया है जो नियोजन कार्यालयों अथवा व्यावसायिक निर्देशन केंद्रों को संचालित कर रहे हैं।

() अभिकरण जिनमें फिल्म तथा फिल्मस्टिप्स प्राप्त की जा सकती हैं

करियर मास्टर तथा शान्ता उपबोधना को पर्यावर्णीय सूचनाओं को प्रसारित करने हेतु फिल्म तथा फिल्मस्टिप्स का प्रयोग करना चाहिए। श्रेष्ठ दृश्य सामग्री के उपयोग से सूचनाएँ प्रभावोत्पादक रूप से प्रस्तुत की जा सकती हैं। फिल्म तथा फिल्मस्टिप्स के माध्यम से सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के फिल्म विभाजन राज्य शिक्षा विभागों के श्रेयस्थ विभागों के माध्यम से शिक्षक एवं व्यावसायिक निर्देशन यूरों के लिए फिल्मों का वितरण किया जाता है। इनके अनिर्दिष्ट एल मारविन स्ट्रीट ७६ गोधा स्ट्रीट फोटो बन्ध-१ आर्मा लिमिटेड दारुभाई नौरीजी रोड बम्बई १ तथा नेशनल एड्युकेशनल एण्ड इनफार्मेशन फिल्म लिमिटेड नेशनल हाउस अफाता बल्डर बम्बई १ व्यापारिक समस्याओं में निर्देशन सम्बन्धी फिल्म खरीदी जा सकती हैं। निर्देशन

स सम्बंधित उपयोगी कि-न तथा कि-मिस्टिप की सूची हेण्डबुक फार कवियर मास्टस (एन सी इ ग्रार टी) नामक पुस्तिका में स प्राप्त की जा सकती है।

(४) प्रकाशन विभाग (भारत सरकार)

निर्देशन के लिए उपयोगी सूचना सामग्री प्रकाशन विभाग भारत सरकार ग्रो-सक ट्रिएट देहली-६ शर भी प्रकाशित की जाती है। निर्देशन कार्यकर्ताओं को इस अभिकरण से भी सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। इस विभाग के प्रकाशनों में प्रमुख प्रकाशन निम्नलिखित हैं —

- 1 Government of India Scholarships for Students in India
- 2 Scholarships for Study Abroad
- 3 Directory of Institutions for Higher Education in India

उपयुक्त प्रकाशन को प्रत्येक निर्देशन कार्यकर्ताओं का धपनी जालाया के लिये अवश्य भवना वेन चाहिए।

(५) विभिन्न केन्द्रीय मन्त्रालय

छात्रा को व्यावसायिक एवं शक्षिक सूचनाए प्रदान करने हेतु विभिन्न मन्त्रालयों से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। शिक्षा मन्त्रालय प्रविरक्षा मन्त्रालय रेल मन्त्रालय आदि इस दिशा में योगदान दे सकते हैं। हगार छात्रा के लिए इन क्षेत्रों में क्या शक्षिक अवयवा व्यावसायिक सम्भावनाए हैं यह सूचनाए इन मन्त्रालयों से प्राप्त की जा सकती है।

(६) अखिल भारतीय शक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन सघ

(All India Educational and Vocational Guidance Association)

इस संस्था का भी निर्देशन की विचारधारा को आगे बढाने में योगदान रहा है। इस सघ के प्रमुख कार्यनिम्नलिखित हैं —

- (क) समस्त भारत में ही रहे निर्देशन कार्यों का समन्वय करना।
- (ख) निर्देशन की गतिविधिया का स्तर निर्धारण करना।
- (ग) निर्देशन की विचारधारा को लोकप्रिय बनाना।
- (घ) निर्देशन के क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं को एकत्रित कर विचारा का आदान प्रदान करना तथा क्षेत्र में रहे रहे अनुसन्धान एवं श्रम शक्ति का प्रसारित करना।

यह सघ जर्नल आफ बिहेविअल एण्ड एम्प्लोयेशन गाइडेंस नामक पत्रिका भी प्रकाशित करता रहा है जिसमें निर्देशन सम्बन्धी उपयोगी अनुभवान सामग्री एवं श्रम सूचनाए प्रकाशित होती हैं।

प्रत्येक निर्देशन कार्यकर्ता को इस अखिल भारतीय सघ का सम्बन्ध बन व्यावसायिक गतिविधिया से अवगत रहने का यत्न करना चाहिए।

राज्य स्तरीय अभिकरण

(१) राज्य शिक्षण एवं व्यावसायिक निर्देशन ब्यूरो

माध्यमिक शिक्षा आयोग (१९५२) ने बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की और इस सिफारिश को कई राज्यों में वास्तविक भी किया गया। बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना के फलस्वरूप शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की अधिकारिता आवश्यकता अनुभव की जानी गयी। निर्देशन की इस आवश्यकता को अनुभव करने के फलस्वरूप कई राज्यों ने अपने-अपने राज्य में निर्देशन कार्यक्रमों की स्थापना हेतु राज्य निर्देशन ब्यूरो स्थापित किए। अब लगभग सभी राज्यों में निर्देशन ब्यूरो पाए जाते हैं। राजस्थान शिक्षा विभाग ने भी मई १९५८ में राज्य निर्देशन ब्यूरो की स्थापना की जिसका कि कार्यालय बीकानेर में स्थित है।

इन राज्य स्तरीय निर्देशन ब्यूरो के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं —

(क) निर्देशन कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण— राज्य निर्देशन ब्यूरो वरिष्ठ मास्टर तथा शाला उपबोधकों का प्रशिक्षण हल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अनिश्चित अनुस्थान कार्यक्रम सगोष्ठियों सम्मेलन आदि आयोजित करना भी इन ब्यूरो की सामान्य गतिविधियाँ हैं।

(ख) प्रकाशन— राज्य निर्देशन ब्यूरो निर्देशन सम्बन्धी विविध सूचनाओं का भी प्रकाशन समय-समय पर करता है। राजस्थान ब्यूरो 'राजस्थान गाइड' नामक पत्रिका भी प्रकाशित करता है जिसमें निर्देशन सम्बन्धी उन राज्यों में जो क्षेत्र में। रही गतिविधियों का वर्णन उपबोधकों के लिए आवश्यक सूचनाएँ आदि महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है। प्रत्येक शाला में एक पत्रिका को मगवाना चाहिए।

(ग) अनुसंधान— निर्देशन के क्षेत्र में अनुसंधान करना भी इस अभिकरण का एक प्रमुख उत्तरदायित्व है। यहाँ प्रायोगिक निर्देशन कार्यक्रम होते हैं जो अनेक क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य हाथ में ले सकते हैं।

(घ) साधनों का निर्माण— भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त मानकीकृत एवं प्रमाणीकृत साधनों का भी निर्माण कई राज्यों में किया है। मन्त्रिण परिषद ने व्यावसायिक अभिरूचि सूचिका अभिभावक व्यावसायिक सम्पत्ति पत्र आदि ऐसे प्रमाणीकृत साधन हैं जो लगभग सभी ब्यूरो द्वारा निर्मित किए गए हैं। कुछ ब्यूरो ने मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का भी निर्माण अपना अनुभव किया है। जस उन्नीस ब्यूरो ने एक शालिक मानसिक परीक्षण का निर्माण किया है इसी प्रकार बिहार ब्यूरो ने वेबस्टर इटेलीजेंस स्केल वल गड जस्टमट नवेटरी रैन की स्टडी हैबिट इनवेटरी आदि परीक्षणों के भारतीय अनुकूलना का निर्माण किया है तथा कुछ नये परीक्षण भी बनाए हैं। इसी प्रकार

राज्य ब्यूरो की भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण बन रही है।

(७) राज्य में निर्देशन कार्यक्रमों का समन्वय तथा मागदर्शन—जाताप्राप्त जो निर्देशन कार्यक्रमों का कार्य करते हैं व मागदर्शन की प्रवृत्ति राज्य में ही करते हैं। अतः ब्यूरो अपना विभिन्न सेवाओं के माध्यम से इन कार्यक्रमों का मागदर्शन करता है। राजस्थान में यह नगरों में एक पूर्वाचारिक उपयोजक का प्रावधान किया गया है। इसके प्राथमिक दृष्टि में तो ये उपयोजक जिस शायद में इनका कार्य करना है वहाँ के प्रवृत्तियों के प्रदान होते हैं किन्तु राज्य मागदर्शन देने का कार्य एवं उनकी गतिविधियों के समन्वय का कार्य ब्यूरो द्वारा ही किया जाता है।

(ब) प्रत्यक्ष निर्देशन—यह राज्य ब्यूरो को वास्तविकता का प्रत्यक्ष अभिकरण एवं व्यावसायिक निर्देशन देने का भी कार्य संचालित करते हैं। राजस्थान राज्य ब्यूरो छात्रों को विषय वचन में निर्देशन का कार्य करता है।

(२) राज्य मनोविज्ञान ब्यूरो

कुछ राज्यों में मनोविज्ञान ब्यूरो भी हैं जो कुछ सीमा तक निर्देशन कार्य में सहायता प्रदान करते हैं। उत्तरप्रदेश के प्रोफेसर मनोवैज्ञानिक ब्यूरो का मानव कौशल परीक्षण निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी प्रकार अन्य ब्यूरोज गठित किए गए जोष कार्यों का भी लाभ निर्देशन कार्यक्रमों को दे सकते हैं।

(३) शिक्षक महाविद्यालय

जिनके महाविद्यालय भी अपने सेवा प्रदाता विभागों के माध्यम से प्रदान एवं प्रशिक्षण का कार्य करते हैं जिनका कि लाभ निर्देशन कार्यक्रमों को मिल सकता है। इन महाविद्यालयों के पुस्तकालय, मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तथा अनुसंधान विभागों का लाभ भी निर्देशन कार्यक्रमों को मिल सकता है।

(४) विश्वविद्यालय

जिन विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान विभाग हैं वहाँ से भी निर्देशन कार्य कर्ताओं को सहायता मिल सकती है। मानकीकृत साधनों प्रयुक्त इन विभागों द्वारा किया गए जोष कार्यों के रूप में हम इनका लाभ उठा सकते हैं।

(५) नियोजन कार्यालय

स्थानीय नियोजन कार्यालयों से सहयोग प्राप्त कर जहाँ के निर्देशन कार्य को संचालित किया जा सकता है। इन कार्यालयों में सूचना सामग्री श्रेष्ठ दृश्य सामग्री प्रादि प्राप्त की जा सकती है तथा छात्रों को नौकरी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करने में इन कार्यालयों का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

(६) रेडियो प्रसारण

आजकल रेडियो नगम सभी ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच गए हैं अतः रेडियो प्रसारण का उपयोग व्यावसायिक वातावरणों को तथा अन्य छात्रापीठों की सूचनाप्राप्त

को प्रसारित करन के लिए किया जा सकता है। हमने ग्रामीण छात्रा को भी निर्देशन सवादा का कुछ लाभ मिल सकता है। अभी हम अभिकरण व उपयोग की समस्या सम्भावनाओं को हमारे देश में नहीं खोजा गया है।

ग्राम अभिकरण

उपरोक्त अनुच्छेदों में हमने जिन राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय अभिकरणों का उल्लेख किया उनमें से अधिकांश राजकीय अभिकरण हैं। मिनू इन अभिकरणों व अतिरिक्त कुछ अराजकीय अभिकरणों की निर्देशन व क्षमता में क्रियाशील हैं और उनका योगदान भी इस क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। बस देना जाए ता भारत में निर्देशन सवादा का प्रारम्भ पारसी पंचायत नामक एक अराजकीय अभिकरण द्वारा ही किया गया था। अराजकीय अभिकरणों द्वारा मदत निर्देशन सूचना सामग्री के प्रकाशन का कार्य किया जाता है। कुछ अराजकीय अभिकरण प्रत्यक्ष यावसायिक निर्देशन का भी कार्य करते हैं। भारत में प्रमुख अराजकीय निर्देशन अभिकरणों में वा. एम. सी. ए. (Y M C A) नेटवर्क क्लब ऐस अभिकरण हैं जिन्होंने निर्देशन सम्बन्धी प्रकाशन महत्वपूर्ण हैं। अन्य अतिरिक्त गुजरात रिसेच सासायटी बम्बई बोर्डेशन एण्ड एजुकेशन गार्डेस सर्विस ग्लोबल पत्राव ये एम अराजकीय अभिकरण हैं जो निर्देशन एवं उपशोधन का कार्य भी करते हैं।

उपसहारात्मक कथन

एक कुशल निर्देशन कार्यक्रमों को अपने देश में जा भी निर्देशन अभिकरण है। उनसे परिचित होना चाहिए तथा उनसे सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। इन अभिकरणों से उस अनेक प्रकार की सम्पर्क सामग्री प्राप्त हो सकती है तथा अपने कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु आवश्यक भाग्यजन भी प्राप्त हो सकता है। उपरोक्त अभिकरणों में से अनेक अभिकरणों से नि:शुल्क सूचना सामग्री तथा अन्य आवश्यक सहायता प्राप्त कर कम दाय में निर्देशन कार्यक्रमों का स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है। अतः इच्छित एजुकेशन एण्ड बोर्डेशन गार्डेस एसोसिएशन का सदस्य बन कर निर्देशन कार्यक्रमों को प्राप्त विज्ञान के लिए क्रियाशील रह सकते हैं। इस अध्याय में अन्तराष्ट्रीय से लेकर राज्य स्तरीय एवं अराजकीय अभिकरणों का यथासम्भव परिचय देने का प्रयास किया गया है।

एक भारतीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लिए न्यूनतम आवश्यक निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा

निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने की कुछ पूर्वावश्यकताएँ

(१) प्रशासना को निर्देशन कार्यक्रम की प्रावश्यकता का आभास करवाना (२) अनुस्थापन कार्यक्रम (क) शिक्षा का अनुस्थापन (ख) छात्रा का अनुस्थापन (ग) माता पिताम्रा का अनुस्थापन (३) छात्रों की निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन (४) उपसंच साधना का सर्वेक्षण (५) निर्देशन समिति का निर्माण (६) निर्देशन कार्यक्रमों का निर्देशन के लिए पर्याप्त समय का प्रावधान (७) क्व कौन सहायता का प्रावधान (८) निर्देशन कार्यक्रम के लिए कुछ न्यूनतम भौतिक सुविधाओं का प्रावधान (९) निर्देशन पत्र (१०) सूचनाओं के संचरण एवं संचरण हेतु साधन ।

भारतीय विद्यालयों के लिए आवश्यक निर्देशन संवाएँ

(१) व्यक्तिगत सूचना सेवा का भारतीय परिस्थितियाँ में विशेष स्वरूप (क) सचित अभिजन पद्धति का उपयोग (ख) सचित अभिलेखा का अनुसंधान (ग) अध्यापकों का व्यक्तिगत सूचना सेवा के सफल में योगदान (घ) अमानकीकृत साधनों के उपयोग पर बत (ङ) व्यक्तिगत सूचना सेवा का उपयोग— (ञ) शिक्षा के लिए उपयोगिता (ण) छात्रों के लिए उपयोगिता (ट) माता पिताम्रा के लिए उपयोगिता ।

(२) पत्रावलीय सूचना का भारतीय परिस्थितियाँ में विशेष स्वरूप (क) पुस्तकालय का सहयोग (ख) पत्रावलीय सूचनाओं के संचरण का धार्मिक पत्र (घ) ऐसे सूचना स्रोतों का पता लगाना जहाँ से निष्पन्न सूचना कम व्यय में सूचनाएँ प्राप्त हो सकें (ङ) राय माग्नेना चूरी एवं अभिकरणी से सम्पर्क (च) व्यावसायिक सूचना पत्रों का निर्माण (ज) प्रत्येक छात्रों के लिए उपयोगिता न्यूनतम पर्यावलीय सूचनाएँ (घ) पत्रावलीय सूचनाओं के संचरण के प्रवसर ।

शास्त्रा निर्देशन कार्यक्रमों के उत्तरादित्य

(१) सत्र व कार्यक्रम की योजना (२) निर्देशन उपसमितियाँ व कार्य-समन्वयन (३) अनुस्थापन कार्य (४) यावत्सापेक्ष-वार्ताओं के व्यावसायिक सम्मेलनों एवं निम्नतम दिवसों का आयोजन (५) नए छात्रों का अनुस्थापन (६) अध्ययन-आवृत्तियों के विषय में मागदर्शन (७) विषयों के चयन में सहायता (८) व्यवसायों के चयन में सहायता (९) छात्रों को महाविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने में सहायता (१०) औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों, महाविद्यालयों, छात्रावासों का आयोजन (११) अनुस्थापन कार्य (१२) अभिभावक शिक्षण सभाओं का संचालन उपमहाराष्ट्रमक चयन

विगत तीसरे अध्याय में हमने निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन तथा दिविध प्रवृत्तियों का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन अध्यायों में निर्देशन कार्यक्रम में विश्व में जो आपत्तियाँ विचारधाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ प्रचलित हैं उनमें सम्मिलित विषय-वर्षों की सूची है। निर्देशन की प्रारम्भिक सम्भावित संवादात्मक वाचकता का अवगत कराने का आशय यह रहा है कि यदि किसी शास्त्र में सुविधाएँ हैं तो वहाँ व कार्यक्रमों की इस कार्यक्रम में निर्देशन होना चाहिए न संवादात्मक विधि-वैधानिक ढंग से आयोजित एवं संचालित कर सकें। जब हमने इन संवादात्मक एक-आपत्तियों को प्रस्तुत किया तब हमारे सम्मेलन-समाज-भारतीय-शास्त्रियों की गोमित्तवादात्मक न हो ऐसी बात नहीं। हमारा उद्देश्य सर्वप्रथम शास्त्रियों को निर्देशन कार्यक्रम के एक-आपत्तियों के स्वरूप से अवगत कराना था ताकि उनका मन में निर्देशन का एक-सर्व-विषय बन सकें। इस-पश्चात् हम भारतीय परिस्थितियों में क्या हो सकता है इसकी भी चर्चा प्रस्तुत अध्याय में करेंगे। हम सम्पूर्ण अध्याय में इसी विषय की चर्चा का आशय है। एक-समाज-भारतीय-विद्यालयों का सामान्य स्वरूप उमम-कौन-सी-पूतम-एवं-आवश्यक-निर्देशन-प्रवृत्तियाँ-प्रारम्भ-का-जा-सकती-हैं-इसकी-एक-स्वरूप-यहाँ-प्रस्तुत-की-जाएगी। रूप-या-प्रस्तुत-करते-समय-हमारे-विद्यालयों-में-सामान्य-सुविधाओं-की-गोमित्तवादात्मक-विधि-वैधानिक-ध्यान-में-रखा-गया-है। यही कारण है कि हम-बहु-अधिक-महत्वाकांक्षी-न-बनाने-एवं-भी-यह-ध्यान-रखा-गया-है-कि-निर्देशन-कार्यक्रम-की-प्रमुख-प्रवृत्तियाँ-ठीक-से-चल-सकें। जहाँ-भी-सम्भव-हो-शास्त्रियों-में-सामान्यतः-उपलब्ध-संवादात्मक-सुविधाओं-का-निर्देशन-कार्यक्रम-में-किस-प्रकार-उपयोग-किया-जा-सकता-है-इस-बन्ध-पर-विचार-किया-गया-है। ताकि-निर्देशन-कार्यक्रम-का-शास्त्रों-पर-कम-से-कम-अनिरिक्त-आधिपत्य-भार-हो। जो-सुभाष-चन्द्र-बोस-हैं-इस-प्रकार-का-है-कि-निर्देशन-कार्यक्रम-शास्त्रों-का-प्रमुख-धारा-के-साथ-समरूप-हो-सकें। इस-कार्यक्रम-की-स्वरूप-प्रस्तुत-करते-समय-हमारे-विद्यालयों-में-छात्रों-की-बधा-विशेष-आवश्यकता-हो-सकती-है-इसका-विशेष-ध्यान-रखा-गया-है। इस-स्वरूप-की-प्रस्तुत-करने-से-पूर्व-में-कह-दना-आवश्यक-होगा-कि-यह-स्वरूप-काई-जड़-स्वरूप-

नहीं है। यह तो एक प्रस्तावित तत्काली रूपरेखा है जिसमें स्थानीय परिस्थितियों का मुविधाओं एवं आवश्यकताओं का ध्यान भी रखते हुए आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं और किए जान चाहिए।

निर्देशन कार्यक्रम प्रारम्भ करने की कुछ पूर्ववश्यकताएँ

भारतीय शालाओं के लिए एक निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करने से पूर्व इस कार्यक्रम की सफलता की कुछ पूर्ववश्यकताएँ हैं जिनकी हम सबसेप्रथम चर्चा करना चाहेंगे। इन पूर्ववश्यकताओं को ध्यान में रखकर एक इनकी पूर्ति होना पर ही निर्देशन कार्यक्रम जाना में प्रारम्भ करना चाहिए।

(१) प्रशासकों को निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता का आभास करवाना

माली से माली शिक्षक योजना भी सफल हो सकती है यदि शाला प्रशासकों को उसमें आस्था न हो। और यदि उसे महत्वपूर्ण न समझे। यह सिद्धांत निर्देशन कार्यक्रम के लिए भी लागू होता है। जबतक शाला प्रशासक निर्देशन कार्यक्रम को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण न समझें और जबतक उनकी 'तत्कालीन' सफलता में पूर्ण आस्था न होगी तबतक इस कार्यक्रम की सफलता अनिश्चित ही रहेगी। यदि प्रधानाध्यापक ने आस्था न होत हुए नवन दिशाओं के लिए इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करना स्वीकार कर भी लिया तो न तो इन कार्यक्रम का शाला जीवन में काँ महत्वपूर्ण स्थान मिल पाएगा न ही इसके सफल संचालन हेतु आवश्यक साधन मुविधाएँ भी प्राप्त हो पावेंगे। जिस योजना का शाला प्रमुख का आशीर्वाद प्राप्त नहीं है उस योजना का संचालन में शाला में प्रयत्नशीलता का भी सहाय्य मिलना कठिन है जिसकी कि निर्देशन सेवाओं जैसे कार्यक्रम की सफलता हेतु अत्यन्त आवश्यकता रहती है। शाला प्रशासकों के मन में प्रत्येक कार्य के लिए उत्पन्न होना चाहते हैं जो शाला के सामिल शिक्षक एवं अन्य साधनों में यह नया कार्यक्रम प्रारम्भ करना कहा तब वाञ्छनीय है? शाला के पढ़ने ही अस्त जीवन में इस नयी प्रवृत्ति का जोड़ना कहा तब उपयुक्त है? इस प्रकार का शकाओं का समाधान करते हुए निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता से शाला मुख में प्रथमतः कराना आवश्यक है।

(२) अनुस्थापन कार्यक्रम

निर्देशन कार्यक्रम की सफल बनाना हेतु इसके संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रयात शिक्षक, पुस्तकालयक आदि कार्यकर्ताओं द्वारा एवं अभिभावकों का समुचित अनुस्थापन आवश्यक है। निर्देशन हमारे विद्यालयों में छात्रों एवं अभिभावकों के लिए एक नई सेवा है अतः 'तत्कालीन' छात्रों को तभी निश्चित सकता है जब मया तत्कालीन 'यदि' इस कार्यक्रम के उद्देश्य एवं प्रवृत्तियों का पूर्णतः परिचित हो।

(क) शिक्षकों का अनुस्थापन—शाला में जब भी नया नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाय तो उसकी सफलता के लिए शिक्षकों का समुचित अनुस्थापन

आवश्यक है। जिन्होंने जो इस कार्यक्रम की दार्शनिक दृष्टिभूमि उद्देश्य महत्त्व एवं सम्बन्ध अभिप्रेत धर्मों से पूरकतया प्रवृत्त करा देना चाहिए। इस कार्यक्रम से शिक्षण कार्यक्रम का अधिक संचय बनाने में किस प्रकार सहायता मिल सकती है यह बात शिक्षकों को स्पष्ट करने से उनकी सज्जता एवं सहयोग प्राप्त करने में सुविधा हो सकती है। शिक्षण के अनुस्थापन में हम निर्देशन कार्यक्रम में शिक्षण का सामान्य उत्तराधिकार क्या होगा यह स्पष्ट करना चाहिए। साथ ही प्रशासनात्मक के माध्यम में किन किन शिक्षकों को कौन कौन सी विशिष्ट जिम्मेदारी देना होगी यह भी इस अनुस्थापन कार्यक्रम के अन्तर्गत स्पष्ट करना चाहिए।

(ख) छात्रों का अनुस्थापन—निर्देशन कार्यक्रम अन्तर्गत छात्रों को अपनी शैक्षिक आवश्यकताएँ एवं व्यक्तिगत समस्याओं का हल ढूँढने में सहायता करने का उद्देश्य से प्रारम्भ किया जाता है। इन छात्रों को इस कार्यक्रम से सम्बन्धित सम्बन्धित जानकारी होना आवश्यक है। निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों के लिए कौन कौन-सी सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं तथा इन सेवाओं का सम्बन्धित नाम उठाने हेतु छात्रों से करा प्रोत्साहित है। यह इस अनुस्थापन कार्यक्रम में छात्रों की समस्याओं का आवश्यक है। निर्देशन कार्यक्रम को अन्तर्गत के लिए हमारे छात्रों की बुद्धि शक्ति एवं परम्परागत आत्मता को बचाने का आवश्यकता होगी। सामान्यतया यह कहा जाता है कि हमारे बालक अपनी समस्याओं के सम्बन्ध में मुक्त रूप से बात करने में सक्षम का अनुभव करते हैं। सम्बन्धित अपनी सीमाओं समस्याओं के सम्बन्ध में अपनी रूढ़ियों से विचार विमर्श करने में सक्षम करना हमारी संस्कृति में ही निहित है। इस सांस्कृतिक शीलगुण को अन्तर्गत में परिवर्तित करने में सक्षम नहीं होने तक शायद छात्र निर्देशन सेवाओं का पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। दूसरी सांस्कृतिक विशेषता जो हमारे बालकों में पाई जाती है वह है आत्मनिष्ठा एवं लक्ष्य की कमी। सामान्यतया हमारे बालक अधिकतर निष्ठा लेने में अपने माता पिताओं पर निर्भर रहते हैं। या तो कहें कि अधिकतर परिस्थितियों में माता पिता बालकों के सम्बन्ध में निष्ठा ले लेते हैं। बालक कौन-से विषय लेगा या कौन-सा व्यवसाय चुनेगा यह माता पिताओं की इच्छाओं पर निर्भर करता है। किसी तरह अनुस्थापन कार्यक्रम में हम बालकों को आत्मनिष्ठा बनाने एवं आत्मनिष्ठा लेने की प्रेरणा प्रवृत्त कर सकें ता शायद निर्देशन कार्यक्रम अधिक लाभप्रद सिद्ध हो सकेगा।

तीसरी विशेषता हमारे बालकों में जो पाई जाती है वह है विशेषता से प्रथम विशेषता अभिव्यक्ति से सूचनाएँ प्राप्त करने की ओर उन्मुखता। उदाहरण के रूप में यदि किसी छात्र को किसी अनिर्दिष्ट कॉलेज में प्रवेश प्राप्त करने से सम्बन्धित सूचनाएँ चाहिए हैं तो वह कई मित्रों एवं सम्बन्धियों से इस सम्बन्ध में पूछना शिष्ट बजाय इसके कि वह सम्बन्धित कानून से निश्चय सूचनाएँ मगाए। निर्देशन सेवाओं में पर्यावरणीय सूचना सेवा एक महत्वपूर्ण सेवा है इन छात्रों को

भा उ मा वि के लिए न्यूनतम आवश्यक नि कायक्रम की रूपरेखा २३६

इन सूचनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

(ग) माता पिताओं का अनुस्थापन—जिसकि उपरोक्त अनुदेशों में कहा गया कि हमारे महा अधिनियम माता पिता अपने बच्चे से सम्बन्धित निष्पत्तियों पर निर्भर हैं और उन निर्णयों को बच्चे पर लागू करते हैं। कभी कभी बच्चे पर माता पिता की ऐसी हानि आनायाएँ होर दी जाती हैं कि जिनका माता की क्षमताओं अभिरक्षिया एव अभि रमताओं से कोई तालमेल नहीं बैठता । फलतः छात्रों को अनवरत भ्रमशाओं का गुह दणना पन्ता है । अतः यह आवश्यक है कि छात्रों के अभि रक्षणा की अनुस्थापन में यह समझना जय कि हमारी हानि वालका पर थापने की बजाय यदि हम बालक को उनकी क्षमताओं अभिरक्षिया एक अभिरमताओं के आधार पर निर्णय लेने में सहायता दें तो शायद यह उनका विकास की दृष्टि से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है । माता पिताओं को यह सन्देश में निर्देशन भवाओं का क्या वागमन हो सकता है यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए । फिर बाला में निर्देशन कायक्रम के अतगत भाग की सहायता हेतु कौन कौन सी सेवाएँ प्रारम्भ की जा रही है इससे भी माता पिताओं को अवगत करना आवश्यक होगा ।

(३) छात्रों की निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन

भारतीय शालाओं में निर्देशन कायक्रम अभी भी एक नई प्रवृत्ति है जो प्रारम्भिक अवस्था में हम इस कायक्रम को एक छोटे पमाने पर प्रारम्भ करते हैं उसका उपयोगिता का सिद्ध करने का प्रयास करना चाहिए । इस कायक्रम में हम कौन सी गतिविधियाँ नो प्रदानता है यह हमें सचप्रथम निश्चित करना होगा । इन प्राथमिकताओं को निर्धारण करने में छात्रों की आवश्यकताओं को प्रदानता देनी चाहिए । कोई भी कायक्रम तभी सफल हो सकता है जब वह छात्रों का मूलभूत अनुभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो । यदि एक विद्यालय में केवल बाणिज्य एक कला सहाय है तो उसमें सायंस टेन्ट सच स्कीम (Science Talent Search Scheme) इजीनियरिंग काटेज तथा मेडिकल काटेज सम्बन्धी मूल्याएँ कल्पित करी में धन राशि व्यय करना निरर्थक होगा । निर्देशन कायक्रम की हर सेवा की योजना बनाते समय छात्रों की आवश्यकताओं का गान उपयोगी सिद्ध हो सकता है । अतः यह आवश्यकताओं के अध्ययन को एक महत्वपूर्ण पूर्वविवशयता माना गया है ।

(४) उपनयन साधना का सर्वेक्षण

हमारी शालाओं के लिए निर्देशन कायक्रम की रूपरेखा तैयार करने में सहायता का ध्यान रखना आवश्यक है कि हमें कम से कम तर्कों का किस प्रकार बताया जाए । यदि हम अपनी भीतिक साधन सुविधाओं का सूची बतल लखवा बना दें तो सम्भवतः एक आर्थिक बोझ के कारण हमारे कार्यक्रम को स्वीकृति मिलने में कठिनाई होगी अतः निर्देशन कायक्रमों का इस विधा में अपनी सुभक्क का प्रयोग करना चाहिए कि किस तरह से उपनयन साधन-सुविधाओं का अधिक से अधिक

उपयोग कर रोग व रोग प्रतिरक्षा गुणधर्मों का भी माँग करते हुए निर्देशन कार्यक्रम को प्रारम्भ किया जाए। पुस्तकालय का उपयोग सूचना सेवा के लिए कम किया जा सकता है। शान्ता में उदात्त किमी कमरे का ही निर्देशन कम का रूप कम दिया जाता है। इन बातों की धार हमारा सत्त्व ध्यान रखना चाहिए।

जब मैं शान्ता में उदात्त माधना के प्रांगण पर निर्देशन संवादा व गृहन का बात करत हूँ तो हमारा आशय केवल भौतिक माधना से ही नहीं है। हम सत्त्व भी देखना चाहिए कि शान्ता की विनिरित प्रवृत्तियों का निर्देशन कार्यक्रम में सम्मिलित किया जा सकता है। जमाकि पत्र के अध्याय में कहा जा चुका है कि शान्ता की सविन्य अभिवृत्त पद्धति टन पद्धति शनिवारीय समाप्ता प्राप्ति को निर्यात कार्यक्रम के साथ सम्मिलित किया जा सकता है। शान्ता के तात्कालिक कार्यक्रम में कम से कम उत्तराधिक जोड़ते हुए तथा उसके तात्कालिक कार्यों का हाताभ उदात्त रूप यदि हम निर्देशन कार्यक्रम की योजना बनायेंगे तो उभय प्रविष्ट सफलता मिलन की सम्भावना होगी।

अधिकतर शान्ताया में हम अशान्तिर निर्देशन कार्यक्रमों की ही सदाएँ प्राप्त हो सकती है। प्रत्येक शान्ता के गुणधर्मिक शान्ता उपबोधक की न तो कार्यना की जा सकती है न ही हमारी स्वीकृति मिलना सम्भव है। अतः शान्ता के अर्थ शान्ता की सहायता किस प्रकार निर्देशन कार्यक्रम में की जा सकती है। सके सम्बन्ध में भी चिन्तन करना आवश्यक है। हम हम सीमा को ध्यान में रखते यदि निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा बनायेंगे तो हम निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

(५) निर्देशन समिति का निर्माण

जमाकि पत्र में भी कहा जा चुका है निर्देशन कार्यक्रम के आयोजन एवं सफलतापूर्वक के लिए एक निर्देशन समिति का गठन आवश्यक है। इस समिति को अध्यक्षता प्रधानाध्यापक को करनी चाहिए। इस समिति में निर्देशन कार्यक्रमों के आयोजन तथा उनके अर्थ अध्यापकों को रखना चाहिए। त्रिकोणीय इस कार्य में रचित है। निर्देशन समिति शान्ता का आवश्यकताओं साधन-सुविधाओं आदि को ध्यान में रखते हुए निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा बना सकती है। निर्देशन समिति के प्रमुख उत्तरदायित्व निम्न हो सकते हैं—

शान्ता की निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन।

शान्ता में उपलब्ध साधन-सुविधाओं का अध्ययन एवं उनका निर्देशन कार्यक्रम में किस प्रकार कार्य पर उपयोग किया जा सकता है इसकी आयोजना।

उपरोक्त दो बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा का निर्माण।

निर्देशन कार्यक्रम में अध्यापकों के उत्तरदायित्वों का निर्धारण ।

निर्देशन कार्यक्रम से सम्बंधित नीति निर्धारण ।

निर्देशन तथा अन्य शाला कार्यक्रमों में सम्बन्धन स्थापन ।

निर्देशन कार्यक्रम का अनुगमन (Follow up)

निर्देशन समिति निर्देशन कार्यक्रम को सफल संचालन के लिए कुछ उपसमितियों का निर्माण कर सकती है। जिनको कि निर्देशन कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों का उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है। उदाहरणार्थ एक उपसमिति को व्यक्तिगत सूचना सेवा का कार्य सौंपा जा सकता है। दूसरी उपसमिति को पर्यावरणीय सूचना सेवा का कार्य सौंपा जा सकता है। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार अन्य उपसमितियों का भी गठन किया जा सकता है। प्रत्येक उपसमिति का भी एक सयाजक होना चाहिए। समय-समय पर निर्देशन समिति मित्रकार न उपसमितियों द्वारा किए गए कार्यों का सिद्धावचोकन कर सकती है।

(६) निर्देशन कार्यकर्ता को निर्देशन कार्य के लिए पर्याप्त समय का प्रावधान

यद्यपि हमारे अधिस्ततर विद्यालयों में अशक्तानि निर्देशन कार्यरता की ही कल्पना की जा सकती है फिर भी निर्देशन कार्य की सफलता हेतु यह आवश्यक है कि जिस किसी भी अध्यापक को यह कार्य सौंपा जाय उसे अन्य कार्यों से यथा सम्भव मुक्त रखा जाय ताकि वह निर्देशन कार्यक्रम का संचालन प्रभावोत्पादक ढंग से कर सके। अन्य शिक्षकों की अपेक्षा उसे अध्यापन कार्य भी कम मिलना चाहिए। उस वितना अध्यापन कार्य लिया जाय वह तो विद्यालय विषय की परिस्थितियों पर नियंत्रण करेगा इससे सम्बंधित कोई सामान्य नियम प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। जिस शाला में पर्याप्त अध्यापक हैं वहाँ निर्देशन कार्यकर्ता को अध्यापन कार्य से अधिक मुक्त रखा जा सकता है। जहाँ अध्यापकों की कमी है वहाँ निर्देशन कार्यकर्ता को उनकी सुविधाएँ नहीं दी जा सकती। हम यहाँ तो केवल इस सामान्य सिद्धान्त की धोर ध्यान दिवाना चाहते हैं कि जिस सीमा तक निर्देशन कार्यकर्ता को निर्देशन कार्यक्रम के लिए समय लिया जायगा उस सीमा तक निर्देशन कार्यक्रम की सफलता नियंत्रण करेगी।

निर्देशन कार्यकर्ता के कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए हम एक और सन्धि से सावधान रहना चाहिए। सामान्यतया विद्यालयों में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि जिस अध्यापक के अध्यापन कालाह कम होता है उसे या तो किसी अन्य बलवीर्य कार्य सौंप दिया जाता है अथवा किसी अनुपस्थित शिक्षक को कार्यालय में बसाया जाता है। यदि निर्देशन कार्यकर्ता को भी हमने इसी प्रवृत्ति का शिकार बना दिया तो शाला में निर्देशन कार्यक्रम सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। निर्देशन कार्यकर्ता को अन्य कार्यों से मुक्त रखने का आशय ही यह है कि वह अपने

काय का संचालन सफलतापूर्वक कर सके। वास्तव में देवों तो उनका वायभार भयंकर शिक्षकों के समक्ष ही नहीं उनसे अधिक है।

(७) क्लर्कीय सहायता का प्रावधान

बिस्मिल या योजना के सफल संचालन हेतु 'यूनितम क्लर्कीय सहायता' की आवश्यकता होती है। यदि विद्यार्थियों को क्लर्कीय कार्यों में समय देना पड़े तो यह उनकी क्षमताओं का दुरुपयोग है। यह निदान्त निर्देशन काय के लिए भी नागू होता है। यदि निर्देशन कार्यक्रम का धनक क्लर्कीय कार्यों में घटना समय एवं शक्ति योग्यता पड़ तो उस सीमा तक वह घण्टी सवाए निर्देशन काय को नहीं दे सकेगा। अतः इस कार्यक्रम की सफलता के लिए कुछ न्यूनतम क्लर्कीय सहायता की आवश्यकता होगी जिसका कि यथामर्यादा प्रावधान होना चाहिए। उदाहरणार्थ सचित धनित्त फाइल फोल्डर बनाना उन पर छात्रों के नाम आदि लिखना उन्हें सुव्यवस्थित ढंग से रखने की व्यवस्था करना निर्देशन कार्यक्रम से सम्बंधित पत्र व्यवहार का आदेश रखना आदि अनेक ऐसे काय हैं जिनके लिए यदि उचित क्लर्कीय सहायता मिल सके तो निर्देशन कार्यक्रम के समय एवं शक्ति की बचत हो सकती है जिसे यह अधिक महत्वपूर्ण कार्यों में लगा सकता है। इस विन्दु का विशेषकर यहाँ उल्लेख करने की आवश्यकता इसलिए अनुभव की गई है क्योंकि हमारे विद्यार्थियों में क्लर्कीय काय अध्यापकों पर बोझों की एक सामान्य प्रवृत्ति पाई जाती है।

(८) निर्देशन कार्यक्रम के लिए कुछ यूनितम भौतिक सुविधाओं का प्रावधान

हमने इस बात पर कई बार आग्रह रखा है कि निर्देशन कार्यक्रम का संचालन में छात्रों में उपयुक्त साधन सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु कुछ भी अनिश्चित साधनों की आवश्यकता नहीं होगी। जो प्रवृत्ति प्रारम्भ करने हेतु कुछ यूनितम साधन-सुविधाओं का उपयोग करना तो स्वाभाविक ही है। अब हमें देखना यह चाहिए कि यूनितम अनिश्चित साधन सुविधाओं की कम से कम माँग करते हुए हम निर्देशन कार्यक्रम का संचालन कैसे कर सकते हैं।

निर्देशन कार्यक्रम के लिए कुछ आवश्यक भौतिक साधन सुविधाओं की सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है इसमें विद्यालय विभाग की परिस्थिति के अनुसार व परिवर्तन किया जा सकता है।

(क) निर्देशन कक्ष—निर्देशन कार्यक्रम का कक्ष ही निर्देशन कक्ष है। निर्देशन कार्यक्रम को सफलतापूर्वक चलायें हेतु एक निर्देशन कक्ष का प्रावधान आवश्यक है। छात्रों का गौरव होना चाहिए कि इसका नाम जाकर हम अपनी समस्याओं का समाधान हेतु सहायता प्राप्त कर सकते हैं। निर्देशन कक्ष के लिए

भा उ मा वि के लिए 'यूनितम आवश्यक नि कायक्रम की रूपरत्ना २४३

एक टेबल एक उपबोधक के लिए कुर्सी प्रतिधिया के लिए कुछ कुर्सिया सामान्य लखन सामग्री दो अन्तमारियाँ एक सूचनापट्ट एक छात्रा के मुभावो एष समस्याओ के लिए पटी तथा एक उपाख्या वृत्त पटी आदि कुछ अनिवाय भौतिक सुविधाए हैं। इनके अतिरिक्त कक्ष के आतावरण का सुंदर बनाने हेतु जो भी कुछ किया जाय सराहनीय होगा।

(ख) सूचनाओं के सञ्चालन एवं संचरण हेतु साधन—पुस्तकालय मन्त्रालय काय के निर्माण हेतु कुछ प्रलमारिया डिस्पे रेक बुलटीन बोर्ड आदि का प्रावधान अनिवाय है। डिस्पे रेक एवं बुलटीन बोर्ड सूचनाओं के संचरण को प्रभावोत्पादक बनाने हेतु आवश्यक है।

भारतीय विद्यालयों के लिए आवश्यक निर्देशन सेवाए

जसाकि हम पहले भी कई बार कह चुके हैं हमारे विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम एक नई प्रवृत्ति है तथा अधिकतर विद्यालयों में साधन सुविधाए भी सीमित हैं अतः प्रारम्भ में एक व्यापक निर्देशन कार्यक्रम की कल्पना करना निरवकाश होगा। हमारे लिए तो वास्तविक यह होगा कि हम छोटे पैमाने पर इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करें और जो भी थोड़ा बहुत कार्य हम कर सकते हैं उसे अधिक प्रभावोत्पादक ढंग से करने का प्रयास करें। बहुत अधिक करने के उपास में हो सकता है कि हम कुछ भी उपलब्ध न हों। निर्देशन की सब सेवाए इस सीमित साधनों में न तो सम्भव हैं न अनिवाय भी। प्रारम्भ में तो हम दो प्रमुख निर्देशन सेवाओं को प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रारम्भ कर सकते हैं और ये दो सेवाए हैं (१) व्यक्तिगत सूचना सेवा एवं (२) पर्यावरणीय सूचना सेवा। इसका अर्थ यह नहीं कि जिन विद्यालयों में सम्भव हो सके उनमें अथ सेवाए प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए। उपरोक्त दो सेवाए तो प्रत्येक विद्यालय में प्रारम्भ की जा सकती हैं। ध्यान रहे कि यहाँ हम 'यूनितम आवश्यक निर्देशन' की चर्चा कर रहे हैं। निर्देशन की समुचित सेवाओं का वणन तो हम पहले ही अध्याय चार में कर चुके हैं।

(१) व्यक्तिगत सूचना सेवा का भारतीय परिस्थितियाँ में विशेष स्वरूप

यदि तो अध्याय ४ में प्रत्येक निर्देशन सेवा के संगठन सम्बन्धी आधारभूत सिद्धांतों की विस्तृत चर्चा की गई है। वे सब सिद्धांत तो भारतीय विद्यालयों में प्रारम्भ की जाने वाली निर्देशन सेवाओं के संगठन के समय ध्यान में रखने ही चाहिए। किन्तु भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इन सेवाओं के संगठन एवं संचालन के समय जो विद्वु विशेषकर ध्यान में रखने योग्य हैं उनकी यहाँ चर्चा करना आवश्यक होगा। उपरोक्त अनुच्छेदों में पूर्वोक्तताओं के रूप में कुछ सामान्य सिद्धांतों की तो चर्चा दी गई है किन्तु प्रत्येक सेवा से सम्बंधित कुछ और विशिष्ट निर्देशक तत्व हो सकते हैं उनकी यहाँ चर्चा करना वर्याचित अनुपयुक्त नहीं होगा। प्रथम हम व्यक्तिगत सूचना सेवा के संगठन संचालन

के समय जो विदु ध्यान में रखते योग्य हैं उनकी चर्चा करेंगे तत्परवात् पर्यावर्तित सूचना सेवा से सम्बन्धित विद्युत् का उपयोग करेंगे।

(क) संचित अभिलेख पद्धति का उपयोग—अर्थात् पहले हम उद्देश्य बत चुके हैं निर्देशन सेवाओं का निर्माण शान्ति में उपनयन मायना सेवाओं के आधार पर होना चाहिए। इससे पत्र संचित एवं संचयन का अर्थ हो सकती है। साथ ही निर्देशन कार्यक्रम को शान्ति समुदाय द्वारा स्वीकृति मिलने में सरलता हो सकती है। संचित अभिलेख पद्धति (Cumulative Record System) आजकल प्रत्येक प्रगतिशील शान्ति में अपनाई जाती है। मानकों के अन्तर्गत के विविध भाषाओं में सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करने की कोशिशें विभिन्न सभ्यताओं में पाई जाती हैं। इसी को आधार बनाकर हम अर्थात् संचयन सेवा का निर्माण करना चाहिए। शान्ति में प्रचलित संचित अभिलेख पत्र में आवश्यकतानुसार सुधार प्राप्त कर लिया जा सकता है।

(ख) संचित अभिलेखों की अनुरक्षण—संचित अभिलेखों के अनुरक्षण के लिए किसी एक विधक को इसका उत्तरदायित्व सौंपना आवश्यक होगा। निर्देशन समिति द्वारा निर्मित अर्थात् संचयन उपसमिति के किसी सदस्य को यह कार्य दिया जा सकता है। इस शिपन को देयता यदि निर्देशन शिपन उनमें सम्बन्धित व्यक्तियों के संचित अभिलेख समय पर पूरे करते हैं या नहीं। यदि किसी बालक का संचित अभिलेख पूरा नहीं तो सम्बन्धित अध्यापक से मिलकर इस पूरा करवाना भी इसी समोजक का उत्तरदायित्व होगा। जब विभिन्न शिक्षक इन संचित अभिलेखों को कई बार काम में लेंगे तो उनकी सुरक्षा की शीघ्र विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक होगा। इन अभिलेखों को सही विधि में रखना चाहिए। इन सब कार्यों को इसी एक निर्धारित सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए।

(ग) अध्यापकों का व्यक्तिगत सूचना सेवा के सगठन में योगदान—भारतीय शान्ति में कक्षा अध्यापक पद्धति अथवा दल पद्धति पाई जाती है जिससे अलग-अलग अध्यापक एक कक्षा अध्यापक दल का प्रमुख होता है। इस पद्धति की शीघ्र अधिक विस्तृत कर इसका उपयोग निर्देशन कार्यक्रम हेतु दिया जा सकता है। प्रत्येक कक्षा अध्यापक अथवा दलपति को उसकी देख रेख में जो बालक हैं उनकी व्यक्तिगत अध्ययन करने को कहा जा सकता है शीघ्र उनी शिक्षक को उसकी कक्षा अध्यापक दल के छात्रों के संचित अभिलेख का पूरा करने का उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है। कक्षा अध्यापक अथवा दलपतियों का कुछ छात्रों से अधिक निवृत्त का सम्बन्ध होता है अतः वे इन छात्रों के संचित अभिलेख अधिक सही तरह से भर सकते हैं। साथ में एक सप्ताह की अवधि में कक्षा अध्यापक अभिलेखों की पूर्ति हेतु रखा जा सकता है।

(घ) अमानकीकृत साधनों के उपयोग पर बल— हमने अध्याय ६ में व्यक्तिगत सूचना संचयन हेतु प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न प्रविधियों एवं उपकरणों की चर्चा की है। किन्तु अधिकतर भारतीय विद्यालयों की परिस्थितियों की ध्यान में रखते हुए यदि हम यह कहें कि हम मनोवैज्ञानिक परीक्षणों पर कस तथा शिक्षक निर्मित प्रश्नोत्तर अथवा अमानकीकृत उपकरणों एवं प्रविधियों पर अधिक आग्रह रखना चाहिए तो कदाचित् अनुचित न होगा। अधिकतर भारतीय विद्यालयों के लिए न तो बहुत अधिक मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए धन उपलब्ध करना सम्भव होगा न ही हमारे विद्यालयों में उन परीक्षणों के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित व्यक्ति मिलेंगे। फिर इनके क्षेत्रों में तो अभी हमारे देश में अच्छे कोटि के मानकीकृत परीक्षा का प्रभाव भी पाया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्तिगत सूचना सेवा के सगठन के समय निदेशन कार्यक्रमों को ऐसे अमानकीकृत साधनों का प्रयोग करना चाहिए जिनसे व्यक्ति की प्रतिभावा-सामिन्ता का पता लग सके। इन साधनों में उपाध्याय वृत्त समाजमित्रिकी साधन निरीक्षण साक्षात्कार आत्मचरित्र बर्णन विशिष्ट घटना वर्णन आदि उल्लेखनीय हैं जिनकी अध्याय ६ में पर्याप्त विवरण चर्चा की जा चुकी है। इनके अनिरीकृत शनिवारीय सभाओं साप्ताहिक कायक्रमों भ्रमणों आदि में मानक के व्यवहारा का प्रयोग कर उनके व्यक्तित्व में विविध आयामों सम्बन्धी सूचनाओं का संचयन किया जा सकता है।

(इ) व्यक्तिगत सूचना सेवा का उपयोग —

(अ) शिक्षकों के लिए उपयोगिता— यदि हम हमारे विद्यालयों में व्यक्तिगत सूचना सेवा की स्थापना कर तो इन सेवा का उपयोग प्रत्येक अवसरों पर किया जा सकता है। सम्पादन छात्र एवं अभिभावक सभी इस सेवा का उपयोग कर सकते हैं। इस सेवा में उपलब्ध छात्र संसर्गात्मक सम्पन्न व्यक्तिगत सूचनाओं का उपयोग छात्रों से सम्बन्धित इनके समस्याओं का हल करते हेतु किया जा सकता है। शिक्षक स्वयं सूचना सेवा का उपयोग कक्षा में नए छात्रों की पृष्ठभूमि को समझने हेतु कर सकते हैं। छात्रों के सामन्यात्मक पाठ्यक्रमों को समझने में भी व्यक्तिगत सूचना सेवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर सकती है। कक्षा में कौन से छात्र प्रतिभावान हैं कौन निरुत्साह हैं किन्हीं सामाजिक पुनर्स्थापन की आवश्यकता है आदि ऐसी महत्वपूर्ण सूचनाएँ हैं जिनका उपयोग शिक्षक सम्पादन काम में कर सकते हैं।

(आ) छात्रों के लिए उपयोगिता— छात्रों की दृष्टि में तो यह सेवा अत्यन्त महत्वपूर्ण है ही क्योंकि छात्र स्वयं इस सेवा के अन्वयन अपनी क्षमताओं सीमाओं से परिचित हो सकते हैं। यह जान उन्हें हर महत्वपूर्ण निष्पत्ति में उपयोगिता सिद्ध हो सकता है। विषयों एवं व्यवसायों के चयन से पूर्व तो छात्रों की अपनी क्षमताओं परिस्थितियों अभिभावकों एवं सीमाओं का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः छात्रों को कक्षा एवं दसवी तथा ग्यारहवी कक्षा में छात्रों के लिए यह सेवा विशेष रूप

से उपयोगी सिद्ध हो सकती है। छात्र जब नवमा कक्षा में विषयों का चयन करें तो उपबोधक को उन्हें उनकी क्षमताओं की सीमाओं तथा सश्रवणता के अनुसार दत्त करना चाहिए।

(इ) माता-पिताओं के लिए उपयोग—माता-पिताओं को भी अपने बच्चों के विषय में विश्वमनीय एवं सम्पन्न सूचनाएँ प्राप्त हो सकें तो इन सूचनाओं का बच्चे की परिस्थितियों में उपयोग कर सकते हैं। समय पर माता-पिताओं का यदि अपने बच्चों की प्रवृत्तियों का ज्ञान हो जाय तो वे इन प्रवृत्तियों का दूर करने का उपाय कर सकते हैं। अनेक बार अभिभावक आपत्ति उठाते हैं कि उन्हें उनके बच्चों की कमजोरियों का आभास समय पर नहीं करवाया जाता जब तक वे अपने बच्चों के अन्त में जब बच्चे किसी विषय में अनपक होना है उसी समय उन्हें अपने बच्चों की सीमाओं का पता लगना है। इन समय समय पर अभिभावक दिवसा का आयोजन कर अभिभावकों को उनके बच्चों की व्यक्तिगत सूचनाओं से अवगत कराया जा सकता है। अभिभावक को व्यक्तिगत सूचनाओं का उपयोग छात्रों को विषय अथवा व्यवसाय चयन में सहायता प्रदान करने हेतु कर सकते हैं।

(२) पर्यावरणीय सूचना सेवा का भारतीय परिस्थितियों में विशेष स्वरूप

अध्याय पाच में पर्यावरणीय सूचनाओं के सञ्चन विस्तारण मिनीलीकरण एवं संचरण के सामान्य सिद्धांतों की चर्चा की गई है। किन्तु भारतीय शालाओं की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इन सेवाओं का क्या स्वरूप हो सकता है अध्याय पाच में विभिन्न विधियों में कति पर अधिक श्रावण होना चाहिए अर्थात् विद्या का स्पष्टीकरण इस अध्याय के अन्तर्गत की दृष्टि से अमयन नहीं होगा।

(क) पुस्तकालयों का सहयोग—जैसा कि अध्याय ५ में कहा जा चुका है पर्यावरणीय सूचनाओं के सञ्चन विस्तारण एवं मिनीलीकरण का कार्य पुस्तकालयों के सौंपना उपयुक्त होगा। उदात्त अधिकतर विद्यालयों में अशुभानिर्देशकों की ही कल्पना की जा सकती है अतः ऐसी परिस्थिति में तो पुस्तकालयों के सहयोग की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। पुस्तकालयों को यह कार्य सौंपने में पूर्व उनके इस कार्य में उद्देश्य एवं प्रकृति से अवगत कराना आवश्यक होगा। निर्देशन कार्यकर्ता को इस अनुसंधान कार्य का उत्तरदायित्व देना चाहिए। पुस्तकालयों को उनके उत्तरदायित्वों से पूरुणतया अवगत करा देना चाहिए जिससे इस सेवा का संचालन सुचारु रूप में हो सके। पुस्तकालयों के निम्नलिखित उत्तरदायित्वों को संचालित कर सकते हैं—

निर्देशन कार्यकर्ता द्वारा जो सूचनाएँ प्राप्त होती हैं सूच्ये वस्तुओं को सम्बन्धित स्रोतों से उपलब्ध करना।

जैसे ही सामग्री प्राप्त हो उसकी जाँच कर उसका निर्धारित रजिस्टर में अंतर्गत करना।

विद्यार्थियों में उपलब्ध समस्त सूचना सामग्री का वितरण करना एवं

ऐसी सूची बनाना जिससे आवश्यक सामग्री शीघ्रातिशीघ्र उपलब्ध हो सके।

पुस्तकालय में एक आवश्यक निर्देशन बॉग का निर्माण करना।

नई सूचना सामग्री का प्रदर्शन करना।

अनावश्यक एवं पुरानी सूचना सामग्री को छाँटकर अलग करना।

सामग्री के संचरण में सहायता प्रदान करना।

(ख) पर्यावरणीय सूचनाओं के संचालन का आर्थिक पक्ष— पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण हेतु सामान्य विद्यालयों में अधिक धनराशि के प्रावधान की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः निर्देशन कार्यकर्ता को सदैव इस बात के लिए प्रयास करना होगा कि कम से कम धनराशि में अधिक से अधिक सूचनाओं का संचरण कैसे किया जा सकता है। इस दिशा में निम्नलिखित सुझाव उपायों के सिद्ध हो सकते हैं —

(अ) ऐसे सूचना स्रोतों का पता लगाना जहाँ से निःशुल्क अथवा कम व्यय में सूचनाएँ प्राप्त हो सकें— भारतीय शालाओं में वायव्य करने वाले निर्देशन कार्यकर्ताओं को एक बात सदैव ध्यान में रखनी होगी और वह यह कि निर्देशन कार्यक्रम को कैसे कम से कम खर्चों में चलाया जाय। यह बात पर्यावरणीय सूचना संचरण के लिए भी लागू होती है। निर्देशन कार्यकर्ता को उन सभी स्रोतों का पता लगाकर उनसे लाभ उठाना चाहिए जहाँ से निःशुल्क अथवा कम खर्चों में सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं। शिक्षा एवं समाज विभाग मंत्रालय, नम एन पुनर्वासि मंत्रालय, प्रतिरक्षा मंत्रालय वगैरह निर्देशन यूरो (एन सी ई आर एन टी)। राज्य निर्देशन यूरो वार्ड एम सी ए परिवर्तित हाउस बनावट-१६ आदि ऐसे स्रोत हैं जहाँ से कम खर्च में सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। मसूर स्टेट यूरो आफ एड्युकेशनल एण्ड वोकेशनल गाइडेंस ने कई शिक्षक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सम्बन्धित सूचनाओं को प्रकाशित किया है जिन्हें निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार महाराष्ट्र सरकार की दम्बई स्थित इन्स्टीट्यूट आफ वोकेशनल गाइडेंस ने भी कई पर्यावरणीय सूचनाओं का प्रकाशन किया है जिन्हें इस सत्या से बिना मूल्य प्राप्त किया जा सकता है। भारतवर्ष में किन किन स्थानों से बौद्ध-बौद्ध की सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं इसकी विस्तृत जानकारी हेतु प्रत्येक निर्देशन कार्यकर्ता को एक पुस्तिका एन० सी ई० आर० टी० से सम्बन्धित 'मैन्वैल' लेनी चाहिए। इस पुस्तिका का नाम है Hand Book for Career Masters इस पुस्तिका को मसूर सरकार के निर्देशन यूरो ने तैयार किया है तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (National Council of Educational Research and Training) ने प्रकाशित किया है। इस एन सी ई आर टी के पब्लिकेशन यूनिट ६ इस्टन एंजिल महारानी बाग यू देहली-१४ से प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार एक और पुस्तिका Practical Hand Book of Guidance in Seco

ndary Schools भारतीय निर्देशन कार्यक्रमों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है। नवका निर्माण डा एम एम मोहसीन ने किया है। और बिहार स्टेट यूरो ग्राफ एजुकेशन एण्ड गा डे म ने इसे प्रकाशित किया है। उपरोक्त दोनों प्रतिवाए केवल पर्यावरणीय सूचना सभा के संगठन में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण निर्देशन कार्यक्रम के संगठन एवं संचालन में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

(आ) राज्य गाइडेंस ब्यूरो एवं अन्य अभिकरणों से सम्पर्क — पर्यावरणीय सचना पर ध्यान कम करने हेतु निर्देशन कार्यक्रमों को राज्य गाइडेंस ब्यूरो से निरंतर सम्पर्क बनाए राना चाहिए एवं वहाँ से जो भी सामग्री निशुल्क प्राप्त हो सके प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इसी प्रकार स्थानीय विपणन कार्यालय में सम्पर्क स्थापित करना भी निशुल्क सामग्री प्राप्त की जा सकती है। स्थानीय एवं प्रान्तीय स्तर पर व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा शिक्षण संस्थाओं से भी निशुल्क सचना सामग्री प्राप्त की जा सकती है।

(इ) व्यावसायिक सूचना स्रोतों का निर्माण — व्यावसायिक सर्वेक्षणों के माध्यम पर शाखा में ही विभिन्न व्यवसायों में सम्बन्धित सचना पत्रों का निर्माण किया जा सकता है। इसमें छात्रों का भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे सचना पत्र में व्यवसाय के विविध पक्षों से सम्बन्धित सूचनाओं का समावेश होना चाहिए जैसे—व्यवसाय का नाम व्यवसाय के लिए आवश्यक योग्यताएँ, वेतन, उन्नति के अवसर, कार्य श्रेणियाँ, आदि। इस प्रकार शाखा में व्यवसाय सूचना पत्रों के निर्माण से पर्यावरणीय सूचना संचालन पर ध्यान कम किया जा सकता है।

(ए) प्रत्येक शाखा के लिए उपयोगी न्यूनतम पर्यावरणीय सूचनाएँ — वैसे तो हमारे पास पर्यावरणीय सूचनाओं का संचय जितना सम्पन्न होना उचित है सम्मुख हम विविध योजनाएँ हेतु उतने ही विविध विकल्प प्रस्तुत कर सकेंगे। किन्तु वस्तुनिष्ठता की ध्यात में रखते हुए हम न्यूनतम प्रतिवाय सूचनाओं की सूची बनाकर कम से कम उन्हें एकत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। सामान्य रूप से एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लिए निम्नलिखित सूचनाएँ आवश्यक मानी जा सकती हैं।

शाखा में उपलब्ध विषयों से सम्बन्धित उच्च शिक्षण की सुविधाओं सम्बन्धित सूचनाएँ।

विभिन्न विषयों के अध्ययन पत्रस्वरूप व्यावसायिक सम्भावनाओं में सम्बन्धित सूचनाएँ।

विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित सूचनाएँ। विशेषकर उन व्यवसायों की सूचनाएँ जो शाखा में पढ़ाए जाने वाले विषयों से सम्बन्धित हैं।

स्थानीय पर्यावरण की व्यावसायिक सम्भावनाओं के विषय में सूचनाएँ। प्रशिक्षण सुविधाओं से सम्बन्धित सूचनाएँ।

निधन किन्तु मध्यावी छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों, धन एवं अन्य शिपण

सुविधाओं से सम्बंधित सूचनाएं ।

उपरोक्त सूचनाओं के सफलतापूर्वक साधन एवं प्राप्ति के अभिकरणों का विशद विवेचन अध्याय ७ में किया गया है अतः उसकी यहाँ पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

(घ) पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण के अवसर — जैसा कि हम इस अध्याय में प्रारम्भ में यह चुन रहे हैं एक सफल निर्देशन कार्यक्रमों का शान्ति की विभिन्न प्रवृत्तियों का ज्ञान निर्देशन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कस उठाया जा सकता है इस ओर मदद चिन्तनशील रहना चाहिए । पर्यावरणीय सूचनाओं के संचरण में भी यह सिद्धांत लागू होगा है । शान्ति की विभिन्न प्रवृत्तियों का माध्यम से पर्यावरणीय सूचनाओं का संचरण अधिक से अधिक करने से एक ही समय की बचत होगी तथा निर्देशन कार्यक्रमों शान्ति के अन्य कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग बन जाएगा । शान्तिवादी सभाओं शान्ति का वाणिज्योत्सव शान्ति पत्रिका शिक्षक अभिभावक सम्मेलन आदि कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं जो सामान्यतया प्रत्येक भारतीय शान्ति में पाई जाती हैं । इन अवसरों अवसर प्रवृत्तियों का लाभ उठाकर व्यावसायिक दानाओं व्यावसायिक सम्मेलनों व्यावसायिक प्रदर्शनों आदि माध्यम से पर्यावरणीय सूचनाओं का संचरण किया जा सकता है । शान्ति पत्रिका के कुछ सामयिक निर्देशन विशेषांक निकाल कर उनमें पर्यावरणीय सूचनाएं प्रसारित की जा सकती हैं । उदाहरणस्वरूप सत्र के प्रारम्भ में नए छात्रों के लिए शान्ति के नियमों परम्पराओं सुविधा संवाओं के सम्बंध में सूचनाएं दी जा सकती हैं तथा नवमी वक्षा के छात्रों के लिए विषय चयन से सम्बंधित कुछ उपयोगी जानकारी प्रकाशित की जा सकती है । सत्र के मध्य में अध्ययन आदता से सम्बंधित सूचनाएं छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं । परीक्षा से पूर्व परीक्षा की तैयारी से सम्बंधित कुछ मुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं । इसी प्रकार सत्रान्त में उच्च शिक्षा की सुविधाओं शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्राप्ति कि विधियाँ व्यावसायिक अवसरों आदि पर प्रकाश डाला जा सकता है ।

यदि शान्ति में सुविधा हो तो इस कार्य के लिए निर्देशन केन्द्र में एक निर्देशन प्रकाशन विभाग अलग से प्रारम्भ किया जा सकता है जो समय चयन पर सूचना दुर्घटन प्रसारित करने का उत्तरदायित्व संभाल सकता है ।

सूचनाओं की संचरण विधियों की विषय चयन अध्याय ७ में की जा चुकी है अतः उनका यहाँ पुनः बखानना अनावश्यक होगा ।

शान्ति निर्देशन कार्यक्रमों के उत्तरदायित्व —

निर्देशन कार्यक्रमों वैसे ही समस्त निर्देशन कार्यक्रमों के सफल संचरण एवं संचालन के लिए उत्तरदायी होता है । किन्तु विशेष रूप से एक सत्र में उसे कौन कौन से प्रमुख उत्तरदायित्वों को निभाना है इसका यदि उसे अभास ही तो वह

अपने काय को अधिक कुशलता से विभा सकता है। इन उत्तरदायि का वे स्पष्ट विषय के आधार पर वह प्रधानाध्यापक को भी इस बात का आभास करवा सकता है कि इन उत्तरदायि का सफलता से निम्नान हेतु उमे शाला के अथ कायों से क्या सम्भव अधिक से अधिक मुक्त रखना आवश्यक है। अतएव इस अध्याय में एक करियर मास्टर एवं शिक्षक उपबोधक (आवृत्तिक निर्देशन कार्यकर्ता) के उत्तरदायित्वा की चर्चा करना आवश्यक समझा गया है।

(१) मन्त्र के कायक्रम की योजना

निर्देशन कायक्रम के सफल संचालन हेतु यह आवश्यक है कि निर्देशन कायकर्ता को पूरे वर्ष भर के कायक्रमा की एक योजना बना लेनी चाहिए। इस योजना से प्रत्येक प्रवृत्ति का आयोजन प्रभावोत्पादक ढंग से किया जा सकता है। वार्षिक योजना बनाते समय शाला की अथ प्रवृत्तियों अथवाशः परीक्षाओं प्राप्ति का पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए। ताकि निर्देशन कायक्रमों के आयोजन में कोई बाधा उपस्थित न हो। यह वार्षिक योजना सत्रारम्भ के पर्याप्त समय पूर्व बन जानी चाहिए। यदि प्रीम्नावकाश के पूर्व यह योजना बन सके तो बहुत ही उत्तम होगा। जिसके फलस्वरूप प्रीम्नावकाश में निर्धारित कायक्रमों की तयारी की जा सकती है। व्यावसायिक घातोंकारों से सम्बन्ध स्थापित करना व्यापारिक एवं प्रौद्योगिक प्रतिष्ठानों को भट के लिए उनकी अनुमति लेना सूचना सामग्री संचालन के लिए सम्बन्धित अधिकरणों को लिखना किन्मा तथा फिन्मिस्ट्रिप्स की पूर्व समीक्षा करना प्राप्ति कार्य यदि प्रीम्नावकाश में कर लिए जाए तो सत्र के व्यस्त कायक्रम में निर्देशन कार्यक्रम का प्रियावित्त करन में पूर्ण शक्ति एवं समय लगाया जा सकता है। यह वार्षिक योजना निर्देशन समिति के परामर्श से बनाई जाना उपादेय होगा। इस समिति में सामान्यतया प्रधानाध्यापक एवं अन्य करिष्ठ अध्यापक होते हैं अतः उनकी अनुमति से बन हुए कायक्रम के संचालन में कम से कम बाधाएं उपस्थित होने का आशका रहेगी।

(२) निर्देशन उपसमितियों के काय का समन्वयन

यद्यपि बर्षात्मक सूचना सेवा पर्यावर्णीय सूचना सेवा निर्देशन प्रकाशन प्रादि के संचालन के लिए उपसमितियों का निर्माण किया जाना चाहिए, फिर भी इन समितियों को उचित माग दर्शन देना एवं इनके कायों के समन्वयन का उत्तरदायि निर्देशन कार्यकर्ता का ही होता है। समय समय पर इन उपसमितियों को बैठकें बुलाकर इनके काय का सिद्दावलोकन किया जा सकता है भविष्य की योजनाओं पर विचार किया जा सकता है तथा कठिनार्या के हल ढूँढन का प्रयास किया जा सकता है।

() अनुस्थापना काय

असाकि अध्याय के प्रारम्भ में कहा गया है कि निर्देशन कायक्रम की सफ

भा उ मा वि के लिए न्यूनतम आवश्यक नि कार्यक्रम की रूपरेखा २११

सता क लिए इस कार्यक्रम त सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का यचित अनुस्थापन होना आवश्यक है। यह कार्यक्रम कार्यकर्ता के अनिरिक्त और कोइ भी व्यक्ति नहीं कर सकता। अत निर्देशन कार्यकर्ता का यह भी एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। उसे प्रधानाध्यापक शिक्षका छात्रों एवं अभिभावकों का अनुस्थापन उचित अवसरों एवं उपयुक्त विधिया से करना चाहिए। प्रधानाध्यापक का अनुस्थापन चर्चा द्वारा शिक्षकों का अनुस्थापन अध्यापक मण्डल की बैठकों में अनुस्थापन वार्तालाप द्वारा छात्रों का अनुस्थापन सत्रारम्भ में अनुस्थापन वार्तालापों द्वारा तथा अभिभावकों का अनुस्थापन अभिभावक सम्मेलनों के अवसर पर अन्य अन्य विधियों तथा चर्चाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

(४) वार्षिक वार्तालाप वार्षिक सम्मेलनों एवं निर्देशन दिवसों का आयोजन

निर्देशन कार्यकर्ता का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है निर्देशन कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाना एवं सूचनाओं का प्रभावोत्पाक विधियों से संचरण करना। इसके लिए निर्देशन कार्यकर्ता विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर सकता है। इनमें वार्षिक वार्तालाप वार्षिक सम्मेलन निर्देशन दिवस निर्देशन प्रदर्शनियाँ प्रमुख हैं। इन सब प्रवृत्तियों के आयोजन की विधियों की चर्चा अध्याप ३ म की जा चुकी है।

(५) नए छात्रों का अनुस्थापन

अनुच्छेद ३ म हमने छात्रों के निर्देशन कार्यक्रम के प्रति अनुस्थापन की आवश्यकता पर बल दिया है। यहाँ हम निर्देशन कार्यक्रम के एक और उत्तरदायित्व की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे। प्रवेशकाल में प्रतिवचन कुछ नए छात्र प्रवेश प्राप्त करते हैं वह अतिने शीघ्र काल जीवन की विशेषताओं से अवगत कराया जाएगा वह काल के अन्तर्गत में समन्वय में उनकी ही सुविधा होगी। काल में काल की सुविधा सुविधा परम्पराओं अपेक्षाओं आदि से अवगत कराने का यह निर्देशन कार्यकर्ता को सौंपा जा सकता है।

(६) अध्ययन आदतों के विषय में भाग-दखन

काल विषयों में उच्च उपलब्धि हेतु उचित अध्ययन आदतों एवं कुशलताओं के विकास की आवश्यकता सर्वविशित है। दुर्भाग्यवश इस ओर हमारी कालों में उच्च दुर्लक्ष्य होना है। अतः तो प्रत्येक विषय अध्यापक का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने छात्रों में विषय से सम्बन्धित उचित अध्ययन आदतों का विकास करे। फिर भी निर्देशन कार्यकर्ता सामान्य अध्ययन आदतों के सम्बन्ध में छात्रों का भाग-दखन कर सकता है।

(७) विषयों के चयन में सहायता

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सबसे बड़ी निर्देशन सेवा हो सकती है

नवमा वक्षा के छात्रों को विषय चयन में सहायता प्रदान करने की। माता में उपलब्ध विभिन्न विषयों की जानकारी देना विभिन्न विषयों की क्या व्यावसायिक सम्भावनाएँ हो सकती हैं, इन विषयों में किस प्रकार की उच्च शिक्षा तथा प्रशिक्षण की सम्भावनाएँ हो सकती हैं, प्राप्ति विषयों से छात्रों को अवगत कराया जा सकता है। विषयों एवं व्यक्तिक योग्यताओं के सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला जा सकता है। छात्रों के साथ उनके अभिभावकों को भी इन सब पहलुओं से अवगत कराना प्रायः शक्य है क्योंकि भारतीय परिस्थितियों में विषय चयन में माता पिताओं की इच्छाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

(८) व्यवसायों के चयन में सहायता

प्रत्येक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कुछ छात्र ऐसे भी होंगे जोकि आगे शिक्षा प्राप्त करने में जीविकोपार्जन के साधन ढूँढना चाहें। निर्देशन कार्यकर्ता ऐसे छात्रों की सहायता कर सकते हैं। उनकी योग्यताओं के अनुसार कौन से व्यवसायों में प्रवेश मिल सकता है अथवा कौनसी प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध हैं, प्राप्ति विषयों से छात्रों को परिचित कराया जा सकता है। इस कार्य के लिए नियोजन कार्यालयों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि से सहायता प्राप्त किया जा सकता है।

(९) छात्रों को महाविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने में सहायता

हमारे छात्र महाविद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने में सामान्य छोटी मोटी शैक्षिक योग्यताओं से भी अनभिज्ञ होते हैं। प्रवेश आवेदन पत्र कैसे प्राप्त किए जाते हैं, उनकी पूर्ति किस की जाती है, आदि कार्यों में छात्रों की सहायता करने से उनकी घनेको उनमें दूर हो सकती है। उच्च शिक्षा की सुविधाओं की सूचनाएँ तो ग्यारहवीं वक्षा के छात्रों को पहले ही दी जानी चाहिए ताकि वे समय पर यह निरायण के मक कि उन्हें किस महाविद्यालय में प्रवेश देना है।

(१०) औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों महाविद्यालयों आदि से भट्टों का आयोजन

छात्रों की व्यावसायिक जगत तथा उच्च शिक्षण संस्थाओं के जीवन से परिचित करवाने हेतु निर्देशन कार्यकर्ता का समय-समय पर औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों तथा शैक्षणिक संस्थाओं से भट्टों की व्यवस्था करनी चाहिए। इन भट्टों के आयोजन का विशद रूपरेखा अध्याय ७ में प्रस्तुत की गई है।

(११) प्रकाशन कार्य

निर्देशन गतिविधियों के उचित प्रचार हेतु निर्देशन कार्यकर्ता को कुछ प्रकाशन कार्य का भी उत्तरदायित्व सम्भालना होगा। माता पत्रिकाओं में अथवा अन्तः से निर्देशन समाचारों अथवा स्तम्भों का प्रकाशन निर्देशन कार्यक्रम की प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार व्यावसायिक सूचना पत्रों के निर्माण का भी कार्य निर्देशन कार्यक्रम को कम अर्थात् बनाने में सहायक हो सकता है।

इसके प्रतिरिक्त शाला के बला अध्यापक एवं छात्रा की सहायता से कुछ नए दृश्य सामग्री का भी निर्माण किया जा सकता है जिससे निर्देशन की विभिन्न सेवाया की भन्नकियां प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत की जा सकें ।

(१२) अभिभावक शिक्षक सगमो वा सचालन

निर्देशन कार्यक्रम की प्रत्येक सवा न पद पत्र पर अभिभावको के सन्योग की आवश्यकता होती है । अत निर्देशन कार्यक्रमो को अभिभावको से निकट सम्पर्क स्थापित करना चाहिए । इसका एक माध्यम अभिभावक शिक्षक सगम है । प्रत्येक शाला न निर्देशन कार्यक्रमो को उस प्रकार के सगमो की स्थापना एवं सचालन का उत्तरदायित्व लेना चाहिए । इन सगमा स शाला और अभिभावका के बीच की दूरी कम हो सकती है तथा अभिभावक शाला की प्रत्येक प्रवृत्ति न अधिक रचि लेन की सम्भावना बन सकती है । इन सगमा को सुदृढ बनाने हेतु समय-समय पर अभिभावक सम्मेलनो का आयोजन किया जा सकता है । इन सम्मेलनो के प्रतिरिक्त शिक्षक अभिभावको से समय समय पर घर पर जाकर भी सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं तथा पत्र-व्यवहार द्वारा भी अभिभावका के साथ निकट के सम्बंध स्थापित किए जा सकते हैं । शिक्षक अभिभावक सगमो को सुदृढ बनाने का उत्तरदायित्व निर्देशन कार्यक्रमो का ही है । अभिभावक सम्मेलनो का अनुस्थापन कार्यक्रम तथा सूचना सचरण हेतु किम प्रकार लागू उठाया जा सकता है इसकी चर्चा पहले ही नर्न बार की जा चुकी है ।

प्रयागाध्यापको एवं शिक्षको को यदि निर्देशन कार्यक्रमो के उपरोक्त वर्णित उत्तरदायित्वो का स्पष्ट ज्ञान हो तो वे निस्सन्देह उसे शाला के उत्तरदायित्वो से मुक्त रख सकते हैं ।

उपसंहारात्मक कथन

इस सम्पूर्ण पुस्तक न निर्देशन कार्यक्रम के प्राधुनिकतम सिद्धान्तो एवं वायविधाया को चर्चा करते हुए अत न भारत मे भारतीय विद्यालया क लिए एक न्यूनतम आवश्यक निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । प्रथम नौ अध्याया न आदेश परिस्थितिया न निर्देशन सेवाया का क्या स्वरूप होना चाहिए इसकी चर्चा की गई है जबकि इस अन्तिम अध्याय मे एक सामान्य भारतीय विद्यालय मे कौनसी न्यूनतम निर्देशन सेवाएं प्रारम्भ की जा सकती हैं इस और चर्चा किया गया है । इस न्यूनतम आवश्यक कार्यक्रम की रूपरेखा को प्रस्तावित करत समय हमारे अधिकांश विद्यालया को भौतिक एवं वार्षिक सीमायो का पूरा एपेक्षा ध्यान रखा गया है । इस न्यूनतम कार्यक्रम के अन्तगत कुछ आवश्यक निर्देशन प्रवृत्तियो को सुझाया गया है । नसका अर्थ यह नहै कि जिन शालायो मे अधिक साधन सुविधाएं उपलब्ध हो वे अन्य सेवाएं न प्रारम्भ करें । फिर इस अध्याय न जो रूपरेखा है जिसन प्रत्येक शाला की एकक आवश्यकताया साधन

सीमाओं को ध्यान में रखते हुए आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं।

इस यूननम कायत्रम की रूपरेखा में स्थान-स्थान पर इस बात पर ध्यान दिया गया है कि जहाँ तक हो सके निर्देशन कायत्रम की किसी भी प्रवृत्ति में शान्ति की उपनयन प्रविष्टि साधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए ताकि निर्देशन कायत्रम शान्ति पर एक अतिरिक्त भार के रूप में प्रतीत न हो। शान्ति की अत्यप्रवृत्तियों के साथ इस कायत्रम को जितना समाकलित किया जाएगा उतनी ही शीघ्रता से अध्यापक छात्र एवं प्रधानाध्यक्ष इस कायत्रम को स्वीकार करेंगे।

इस अध्यापक यूननम कायत्रम प्रारम्भ करने की कुछ पूर्वनिश्चितताओं का उल्लेख किया गया है जिनकी पूर्ति के बिना निर्देशन कायत्रम सफलता से संचालित नहीं किया जा सकता।

सामान्य रूप से प्रत्येक भारतीय शान्ति में कम से कम दृष्टिकोण सूचना सेवा पर्यावरणीय सूचना सेवा की स्थापना की जानी चाहिए। इन सेवाओं का भारतीय शान्ति में क्या विशेष स्वरूप हो सकता है इसकी भी इस अध्यापक चर्चा की गई है।

अतः एक अशक्य शान्ति निर्देशक के क्या प्रमुख उत्तरदायित्व हो सकते हैं इस ओर वाचकों का ध्यान आकर्षित किया गया है। अपने उत्तरदायित्व की पूर्ण जानकारी के बिना कोई भी व्यक्ति प्रभावशाली ढंग से कार्य नहीं कर सकता।

शब्दावली

-४-

अग्रदर्शी	Forward looking
अतिक्रमो	Intruder
अतिरिक्त निर्देशन सेवा	Referral Service
अधिकार पत्र	Bill of Rights
अधिग्रह	Surplus
अनिर्पत्रित प्रेक्षण	Uncontrolled Observation
अनुकूलन	Adaptation
अनुगमन	Follow Up
अनु मिति	Corollary
अनुरक्षण	Maintenance
अनुप्राप्ति	Sanction
अनुस्थापन	Orientation
अनुस्वापन वार्ताए	Orientation Talks
अनुनात्मक	Permissive
अभिग्रहण	Assumption
अभिदर्शन	Exposure
अभिदर्शित	Exposed
अभिन्नति	Bias
अभिनिर्धारणार्थ	Identification data
अभिप्रेत अर्थ	Implications
अभिमुख-शब्दा	Interview
अभिर्लब्धि	Interest
अभि-त्ति	Attitude
अभिवृत्ति मापनी	Attitude Scale
अभिज्ञानता	Aptitude
अभिज्ञान	Identity
अभ्युपगम	Assumption
अमानकीहित	Non Standardized
अवप्रकाय	Malfunctioning

अशाब्दिक	Non Verbal
असंरचित साक्षात्कार	Unstructured Interview
अहंमान	Dominance Feeling
अंकन	Scoring
अंशकालिक	Part Time
अंतर्भूत	Involve
अंतर्भाव	Content
अंतर्गमन	Inter Communication
अंतर्गमन शिष्टाचार	Interaction
अंतर्गमन शिष्टाचार प्रविष्टि	Semi Projective Techniques

-आ-

आपद	Hazards
आत्मसिद्धि	Self realization
आत्म विवरण	Self reporting
आयात	Import
आशासन	Appreciation
आशावाद	Optimism

-ए-

एक-एक सम्बन्ध	One to one Relationship
एकाकी	Isolate
एकतात्मक	Unitary
एकक	Unique

-उ-

उपलब्धि परीक्षण	Achievement Test
उपसिद्धांत	Corollary
उपस्थानवृत्त	Anecdotal Record
उपक्रम	Corollary

-क-

कार्मिक	Personnel
कार्य-कृत्य	Job-Tasks

-ग-

गुट	Cliques
-----	---------

-३-

चिह्नानु सूची

Check List

-४-

तकनीषान
तात्विक
ताथ्यिक
तिरस्कृत

Technician
Metaphysical
Factual
Rejected

-६-

द्व द्व

Conflicts

-८-

निदानात्मक परीक्षण
नियम पुस्तिका
नियोजन कार्यालय
निराशावाद
निर्देश-तत्र
निर्धारणमापनी
निष्प्र म
नियन्त्रित प्रेक्षण
निवचन

Diagnostic Test
Manual
Employment Exchange
Passivism
Frame of reference
Rating Scale
Unequivocal
Controlled Observation
Interpretation

-९-

परस्पर व्यापिता
परास
परीक्षण

Overlapping
Range
Test

-१०-

प्रकारात्मक
प्रबुद्ध
प्रवस्थाकरण
प्रविधि
प्रश्नावली
प्रशासना
प्रशासन

Functional
Enlightened
Phasing
Technique
Questionnaire
Serenity
Administration

प्रक्षयण	Projection
प्रक्षयीप्रविधिर्वा	Projective Techniques
प्राप्तांक	Scores
	प-
पुस्तकाध्यक्ष	Librarian
	-पू-
पूर्णकालिक	Full Time
पूर्व परीक्षण	Tryout
	-द-
बुद्धि बभव	Talent
	-न-
भाग ग्रन्थही प्रेक्षण	Non Participant Observa tion
भागग्राही	Participant
भागग्रन्थी प्रेक्षण	Participant Observation
	-म-
मणिमप्राजनता	Crystal Clarity
भाग दशन	Refrral
मानकीकृत	Standardised
मितीनीकरण	Filing
मह	Concrete
सत्तावादी	Authoritarian
समसायुसथी	Peer Group
समानुपाती	I rportionate
समसामू	Peer Group
समात्रमितिक स्तर	Sociometric status
समात्रमिति	Sociometry
समादर-सूची	Honours List
समकित	Consolidated

स्वरूप	Tone
स्वयं द्रापह	Volunteer
स्व वास्तवीकरण	Self actualization
सर्वाधिकारी	Totalitarian
सहनालिक	Simultaneous
साधन	Tools
साधन सन्पन्नता	Resourcefulness
साक्षात्कृत	Interviewee
साक्षात्कार	Interview
साक्षात्कारकर्ता	Interviewer
सांख्यिक	Numerical
सांस्कृतिक प्रतरात्र परचता	Cultural Lac
सांस्कृतिक आघात	Shock
स्वीकार्य	Acceptable
सूचकांक	Index
सूची	Inventory
सूचीकरण	Indexing
संचरण	Dissemination
संचित अभिलेख	Cumulative Record
सभरण	Supply
संरचित साक्षात्कार	Structured Interview
संरक्षण	Conservation
संस्कृति मुक्त	Cultural Free
संनापन योग्यता	Communicative Ability
यांत्रिक	Mechanical
लून पार्श्वी	Lopsided
लोकप्रिय	Popular

-ब-

वरण	Choices
वाग्मबवादी	Realistic
वास्तविकता अभिविपार	Reality Orientation
विभेदक	Differential
विमृचि	Disoust
विषयी	Subject

व्यावसायिक सर्वेक्षण	Occupational Survey
व्यावसायिक सूचना-सम्मेलन	Career Conference

-३-

शाब्दिक	Verbal
शीलगुण	Traits
शुभाशायी	Well Intentioned

-४-

क्षतिभय	Risk
क्षेत्रकार्य	Field Work

शुद्धि पत्र

प० सं०	परा	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	१३	निर्व्याखी	नि र्याखी
३	२	८	वमिन्नय	वमिन्नय
५	२	८	राशि के ?	राशि के प्रेषण
६	४	४	क्षतिमय	क्षतिभय
७	३	४	त्रिधात्व	द्विधात्व
१		२	ध्येया के	शिक्षा के ध्येया का
१५	२	३	असमय हो	असमय होता जा रहा है ।
१६	१	४	व्यवहार को	व्यवहार के
१६	२	४	प्रार्थनात्मक	प्रार्थनात्मक
१७	३	५	क्षतिमय	क्षतिभय
१८	५	५	कर	के
२	२	१	लोक-हितपी	लोक हितपी
२१	४	१	बीजाकुरो	बीजाकुरो
२४	२	६	सिनसिनेटी	सिनसिनेटी
२५	३	३	टूमन	टूमन
२६	३	२	व्यक्ति न	व्यक्ति का न
३४	२	८	की	की
३६	४	७	निरश्चय	निरश्चय
४७	१	१	दिया जाती थी	दिया जाता था
३७	२	२	तय	तय
३८	४	२	शब्दावलिषी	शब्द
३८	४	२	दोनों ही पद शब्द	ये दोनों ही शब्द
४१	४	२	हम जींच सके	खींचन रा हमन प्रयास किया ।
८१	४	२	प्रशिक्षमात्रो	प्रशिक्षमात्रा
५१	४	५	द्विधात्व	द्विधात्व
५७	३	११	त्रिधात्व	द्विधात्व
६१	२	५	परिमाणस्वरूप	परिणामस्वरूप
६२	१	१७	कुछ मुर्द	कुछमु
६७	१	६	चर्चाए	चर्चा

प० सं०	परा	शक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	१	२	सम सामग्री	सम्बन्धित सामग्री
८८	२	१	अनुमित	अनुमित
१२	५	३	विशिष्ट म	विशिष्ट संदम म
१६	४	२	कायभाषायोगन	काय के भाषायोगन
११६	३	३	क्षतिमय	क्षतिमय
१२७	५	६	मणिम	मणिम
१३६	१	१	अदवाय	धातावरण
१३६	३	१	होकर	होना
१५६	२	८	निम्न-पौं से विश्वसनीय	निम्न-पौं से कम विश्वसनीय
१७२	१	१	हम प्रमुख	हम तीन प्रमुख
१७४	४	७	स्तरों	उत्तरो
१८८	४	५	I E	C I E
१६६	१	५	प्रतिष्ठानों मे	प्रतिष्ठानों एवं अथ संस्थाओं मे
२३२	५	४	सम्पत्ति	सम्पत्ति
२३६	२	११	परिस्थितियां मे क्या	परिस्थितियां मे निर्देशन काय कम का स्वरूप क्या
२४३	२	२	कुलेटिन	कुलेटिन
२४५	१	४	कम	कम
२४८	३	१	स्रोतों	पत्रों
२५	२	११	अधिकरणों	अधिकरणों
२५६	-	३१	Shock	Cultural Shock